युगपुरुष ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज का 125वाँ जयन्ती वर्ष

राष्ट्रसंत ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज का जन्म शताब्दी वर्ष

साधना-पथ

स्मारिका

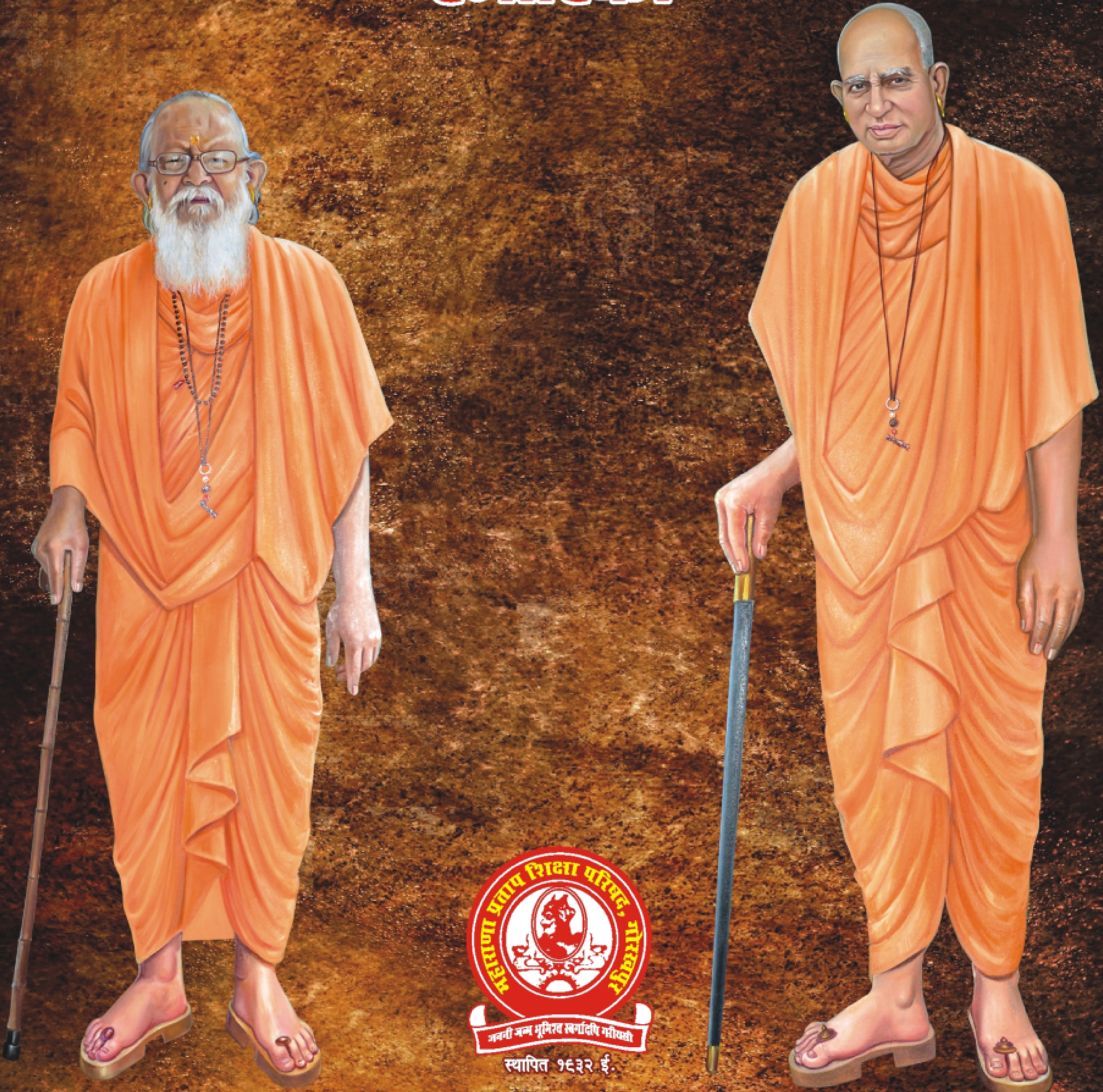

स्थापित १९३२ ई.

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद्

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद, गोरखपुर

कुल गीत

यह महाराणा प्रतापाख्यावती शिक्षा-परिषद् ज्ञान की मन्दाकिनी।।
नाथ-मन्दिर की अखण्ड-ज्योति से
प्रज्वलित यह भारती की आरती।
यह भगीरथ से व्रती व्यक्तित्व की
दिग्विजय की यशो-गाथा पावनी
यह महाराणा प्रतापाख्यावती शिक्षा-परिषद् ज्ञान की मन्दाकिनी।।
सिद्ध गुरु गोरक्ष की विज्ञान-भू में
बुद्ध-वीर-कबीर की निर्वाण भू में
ज्ञान की धात्री चरित्र-विधान की
राप्ती तट पर प्रकट विद्या-वनी
यह महाराणा प्रतापाख्यावती शिक्षा-परिषद् ज्ञान की मन्दाकिनी।।
हों प्रताप समान फिर युवजन कृती
देशभक्त, स्वधर्म-निष्ठ, कुलव्रती।
इसलिए सारस्वतानुष्ठान यह
शैक्षणिक जागर्ति की कादम्बिनी।।
यह महाराणा प्रतापाख्यावती शिक्षा-परिषद् ज्ञान की मन्दाकिनी।।

महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ

श्रीगोरक्षनाथ मन्दिर

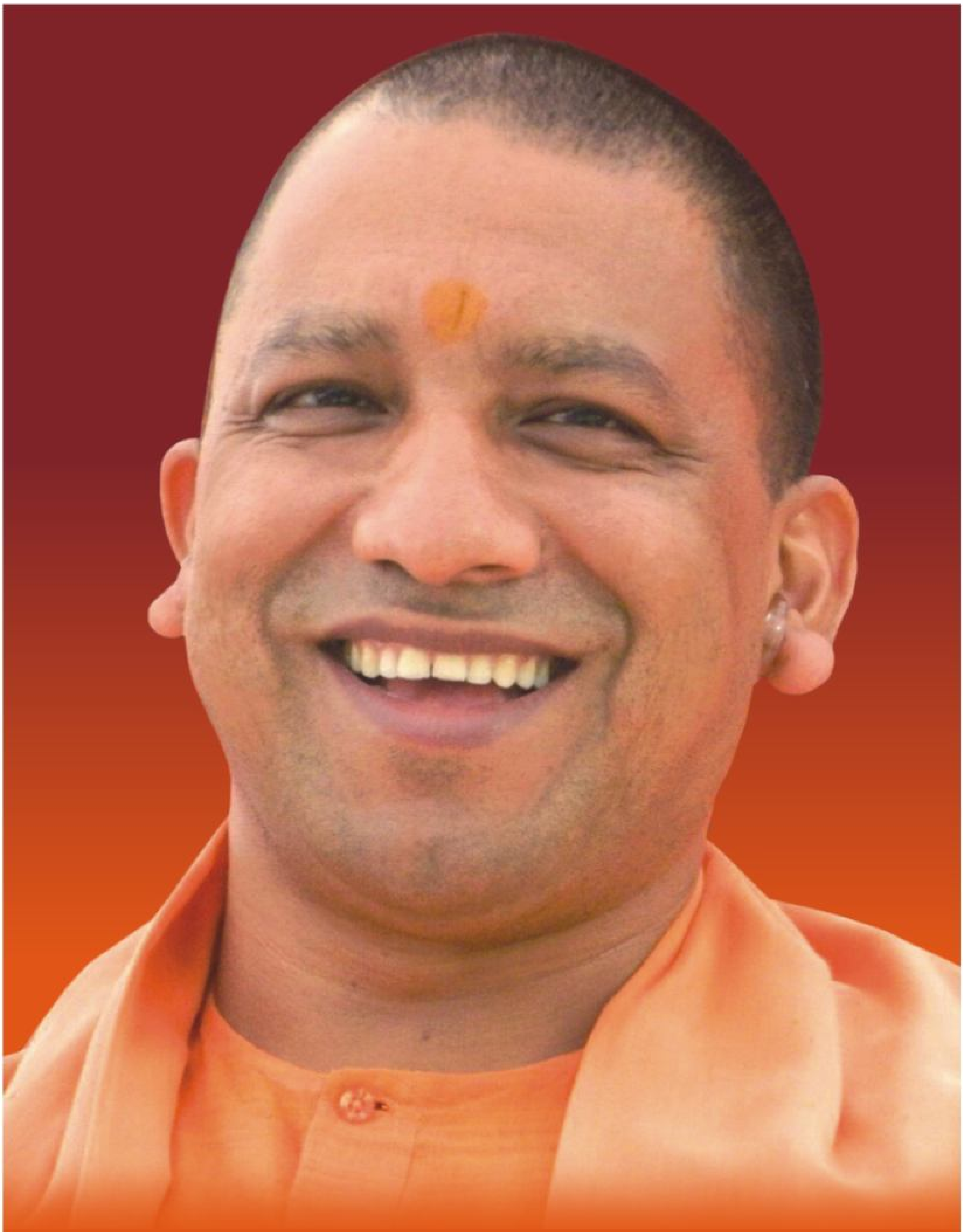

गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त योगी आदित्यनाथ जी महाराज

मंत्री/सचिव, महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद्, गोरखपुर

माननीय मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश

प्रो. उदय प्रताप सिंह

अध्यक्ष, महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद्, गोरखपुर

पूर्व कुलपति, वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर

समर्पण

श्रीगोरक्षपीठ द्वारा संचालित
महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद्
शिक्षा-क्षेत्र की एक अग्रणी संस्था है।
पूर्वी उत्तर प्रदेश में गोरखपुर को केन्द्र बनाकर
प्राथमिक से उच्च शिक्षा तक लगभग साढ़े तीन दर्जन से अधिक
शिक्षण-प्रशिक्षण संस्थानों एवं सेवा केन्द्रों का संचालन करने वाली
''महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद्''
की स्थापना सन् 1932 ई. में
गोरक्षपीठाधीश्वर
महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज द्वारा की गई तथा
उनके शिष्य गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने
इसे पुष्पित पल्लवित किया।

युगपुरुष ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज
के 125वें जयन्ती वर्ष

एवं

राष्ट्रसंत ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज
के जन्म शताब्दी वर्ष

पर अपने संस्थापकों की पुण्य स्मृति को समर्पित।

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के संस्थापक

युगपुरुष ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज का 125वाँ जयन्ती वर्ष

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् को वृहत्तर स्वरूप प्रदान करने वाले

राष्ट्रसंत ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज का जन्म शताब्दी वर्ष

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् की संस्थाओं में स्वास्थ्य, सेवा, चिकित्सा, शिक्षा, लोक कल्याण, सामाजिक समरसता, पर्यावरण, परराष्ट्र सम्बन्ध, हिन्दूत्व इत्यादि से सम्बन्धित विषयों पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन

क्र. सं.	संस्था	संगोष्ठी / विषय	तिथि	अतिथि
1	महाराणा प्रताप सीनियर सेकेण्ड्री स्कूल, मंगला देवी मन्दिर, बेतियाहाता, गोरखपुर	महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद एवं महन्त दिग्विजयनाथ गोरक्षपीठ का लोक कल्याणकारी अभियान एवं महन्त अवेद्यनाथ	05 अक्टूबर 2019, शनिवार 05 अप्रैल, 2020 रविवार	प्रो. सदानन्द प्रसाद गुप्त डॉ. वेद प्रकाश पाण्डेय
2	चौक बाजार– महाराजगंज की संस्थायें	नाथपंथ का लोक–कल्याणकारी अभियान एवं महन्त दिग्विजयनाथ सामाजिक समरसता एवं महन्त अवेद्यनाथ	12 अक्टूबर, 2019 शनिवार 05 अप्रैल, 2020 रविवार	प्रो. संतोष शुक्ला, दिल्ली डॉ. यू.पी. सिंह, प्रयागराज
3	गुरू श्री गोरक्षनाथ संस्कृति विद्यापीठ / महायोगी गुरू गोरखनाथ योग संस्थान, श्री गोरखनाथ मन्दिर	संस्कृत भाषा एवं महन्त दिग्विजयनाथ योग एवं महन्त अवेद्यनाथ	20, अक्टूबर , 2019 रविवार 23 फरवरी, 2020 रविवार	डॉ. वाचस्पति मिश्र, लखनऊ प्रो. के.के. शर्मा, काशी
4	महाराणा प्रताप बालिका इण्टर कालेज, सिविल लाइन, गोरखपुर	महिला शिक्षा एवं महन्त दिग्विजयनाथ महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद एवं महन्त अवेद्यनाथ	10 नवम्बर, 2019 रविवार 19 अप्रैल, 2020 रविवार	प्रो. विनोद सोलंकी, गोरखपुर प्रो. यू.पी. सिंह, गोरखपुर
5	दिग्विजयनाथ पी.जी. कालेज, सिविल लाइन्स, गोरखपुर	स्वातन्त्र समर एवं महन्त दिग्विजयनाथ राष्ट्रवादी राजनीति एवं महन्त अवेद्यनाथ	17 नवम्बर, 2019 रविवार 02 फरवरी, 2020 रविवार	डॉ. ओम जी उपाध्याय, दिल्ली प्रो. योगेन्द्र प्रताप सिंह, प्रयागराज

क्र. सं.	संस्था	संगोष्ठी / विषय	तिथि	अतिथि
6	महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज एवं महाराणा प्रातप कृषक इण्टर कालेज, जंगल धूषड़, गोरखपुर	भारत–नेपाल सम्बन्ध एवं महन्त दिग्विजयनाथ सांस्कृतिक राष्ट्रवाद एवं महन्त अवेद्यनाथ	13 अक्टूबर, 2019 रविवार 05 जनवरी, 2020 रविवार	प्रो. टी.पी. सिंह, वाराणसी प्रो. रामअचल सिंह, गोरखपुर
7	महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केन्द्र एवं दिग्विजयनाथ इण्टर कालेज चौक माफी, गोरखपुर	गोरक्षा एवं महन्त दिग्विजयनाथ आधुनिक कृषि एवं महन्त अवेद्यनाथ	27 सितम्बर, 2019 शनिवार 12 अप्रैल, 2020 रविवार	श्री अतुल सिंह, उपा. गौ सेवा आयोग डॉ. यू.एस. गौतम/ श्री संजय सिंह
8	महाराणा प्रताप महिल पी.जी. कालेज/ महाराणा प्रताप इण्टर कालेज, रामदत्तपुर, गोरखपुर	सांस्कृति राष्ट्रवाद एवं महन्त दिग्विजयनाथ महिला शिक्षा एवं महन्त अवेद्यनाथ	24 नवम्बर, 2019 रविवार 11 जनवरी, 2020 शनिवार	डॉ. मानेन्द्र प्रताप सिंह, प्रयागराज डॉ. भारती सिंह, प्राचार्या उन्नाव
9	दिग्विजनाथ एल.टी. प्रशिक्षण महाविद्यालय	राष्ट्रीय शिक्षा नीति एवं महन्त दिग्विजयनाथ श्री रामजन्तभूमि आन्दोलन एवं महन्त अवेद्यनाथ	15 दिसम्बर, 2019 रविवार 23 फरवरी, 2020 रविवार	प्रो. हरिकेश सिंह, कुलपति प्रो. के.एन. सिंह, कुलपति
10	गुरू श्री गोरक्षनाथ चिकित्सालय, दिग्विजयनाथ आयुर्वेद चिकित्सालय व गुरू श्री गोरक्षनाथ कालेज ऑफ नर्सिंग	राष्ट्रवादी राजनीति एवं महन्त दिग्विजयनाथ आरोग्यता एवं महन्त अवेद्यनाथ	29 दिसम्बर, 2019 रविवार 29 मार्च, 2020 रविवार	डॉ. कन्हैया सिंह, आजमगढ़ डॉ. राजकिशोर सिंह, गोरखपुर/ डॉ. शीलेन्द्र गुप्त, पीलीभीत
11	महाराणा प्रताप इण्टर कालेज, गोरखपुर	श्रीरामजन्म भूमि आन्दोलन एवं महन्त दिग्विजयनाथ संस्कृत भाषा एवं महन्त अवेद्यनाथ	18 जनवरी, 2020 शनिवार 17 मई, 2020 रविवार	डॉ. बालमुकुन्द पाण्डेय, नई दिल्ली डॉ. राजनारायण शुक्ल, लखनऊ
12	महाराणा प्रताप पालीटेक्निक, गोरखपुर	तकनीकि शिक्षा एवं महन्त दिग्विजयनाथ नाथपंथ एवं महन्त अवेद्यनाथ	17 नवम्बर, 2019 रविवार 01 मार्च, 2020 रविवार	प्रो. गोविन्द पाण्डेय, गोरखपुर डॉ. अनुज प्रताप सिंह, सोनभद्र
13	गुरू श्रीगोरक्षनाथ विद्यापीठ, भरोहिया, गोरखपुर	राष्ट्रीय सुरक्षा एवं महन्त दिग्विजयनाथ गो सेवा एवं महन्त अवेद्यनाथ	04 जनवरी, 2020 शनिवार 26 अप्रैल, 2020 रविवार	प्रो. आर.पी. यादव, पटना डॉ. देवी प्रसाद सिंह, काशी
14	मॉ पाटेश्वरी पब्लिक स्कूल एवं थारू जनजातीय बलरामपुर	नाथपंथ एवं महन्त दिग्विजयनाथ वनवासी समाज एवं महन्त अवेद्यनाथ	01 दिसम्बर, 2019 रविवार 10 मई, 2020 रविवार	प्रो. रामदेव शुक्ल, गोरखपुर डॉ. विपिन कौशिक, कानपुर

साधना-पथ

10 दिसम्बर 2019 ई.

मार्गशीर्ष शुक्ल त्रयोदशी, संवत् 2076

अनुक्रम

1. श्री गोरखनाथ मन्दिर 1-19
2. महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ एवं नाथपंथ 20-33
3. योगिराज बाबा गम्भीरनाथ 34-47
4. युगपुरुष महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज 48-74
5. परम पूज्य महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज 75-113
6. महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद्, गोरखपुर 114-117
7. हिन्दुआ-सूर्य महाराणा प्रताप 118-127
8. महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् कार्य एवं कार्यपद्धति 128-141
9. हम और हमारी संस्था 142-155
10. गोरखपुर को ज्ञान का शहर बनाएं 156-159
11. श्री गोरक्षनाथ संस्कृत विद्यापीठ, गोरखनाथ, गोरखपुर 161-163
12. दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गोरखपुर 164-174
13. दिग्विजयनाथ एल.टी. प्रशिक्षण महाविद्यालय, गोरखपुर 175-176
14. महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर 177-187
15. महाराणा प्रताप महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामदत्तपुर गोरखपुर 188-189
16. गुरू श्री गोरक्षनाथ कालेज ऑफ नर्सिंग, गोरखनाथ, गोरखपुर 190-193

17. गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त अवेद्यनाथ महाविद्यालय, चौक बाजार, महराजगंज............. 194–195

18. महाराणा प्रताप इण्टर कॉलेज, गोरखपुर 196–201

19. श्री गोरक्षनाथ संस्कृत उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, गोरखनाथ, गोरखपुर................ 202

20. दिग्विजयनाथ इण्टर कॉलेज, चौक बाजार, महराजगंज.. 203–204

21. महाराणा प्रताप बालिका इण्टर कॉलेज, सिविल लाइन्स, गोरखपुर......................... 205–208

22. महाराणा प्रताप कन्या इण्टर कॉलेज, रामदत्तपुर, गोरखपुर.................................... 209–210

23. महाराणा प्रताप कृषक इण्टर कॉलेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर 211–213

24. दिग्विजयनाथ इण्टर कॉलेज, चौकमाफी, गोरखपुर 214

25. महाराणा प्रताप सीनियर सेकण्डरी स्कूल, बेतियाहाता, गोरखपुर 215–216

26. गुरु गोरखनाथ विद्यापीठ, भरोहिया, पीपीगंज, गोरखपुर.. 217–218

27. आदि शक्ति माँ पाटेश्वरी पब्लिक स्कूल, भवनियापुर, तुलसीपुर, बलरामपुर........... 219–221

28. महाराणा प्रताप शिशु शिक्षा विहार, लालडिग्गी, गोरखपुर 222

29. दिग्विजयनाथ बालिका पूर्व माध्यमिक विद्यालय, चौकबाजार, महराजगंज................ 223

30. श्री गोरक्षनाथ संस्कृत छात्रावास, गोरखनाथ, गोरखपुर 224

31. प्रताप आश्रम, गोलघर, गोरखपुर.. 225

32. महाराणा प्रताप मीराबाई महिला छात्रावास, गोरखपुर 226

33. दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महिला छात्रावास, गोरखपुर.. 227

34. योगिराज बाबा गम्भीरनाथ सेवाश्रम : छात्रावास 228

35. महाराणा प्रताप पालीटेक्निक, गोरखपुर.. 229–232

36. महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केन्द्र, चौकमाफी, गोरखपुर 233–234

37. गुरु श्री गोरक्षनाथ चिकित्सालय, गोरखनाथ, गोरखपुर 235–241

रक्षति
रक्षितः
विजयतेतराम
धर्मस्ततो
यतो
जयः

श्रीगोरक्षपीठ

आध्यात्मिक एवं सामाजिक अवदान

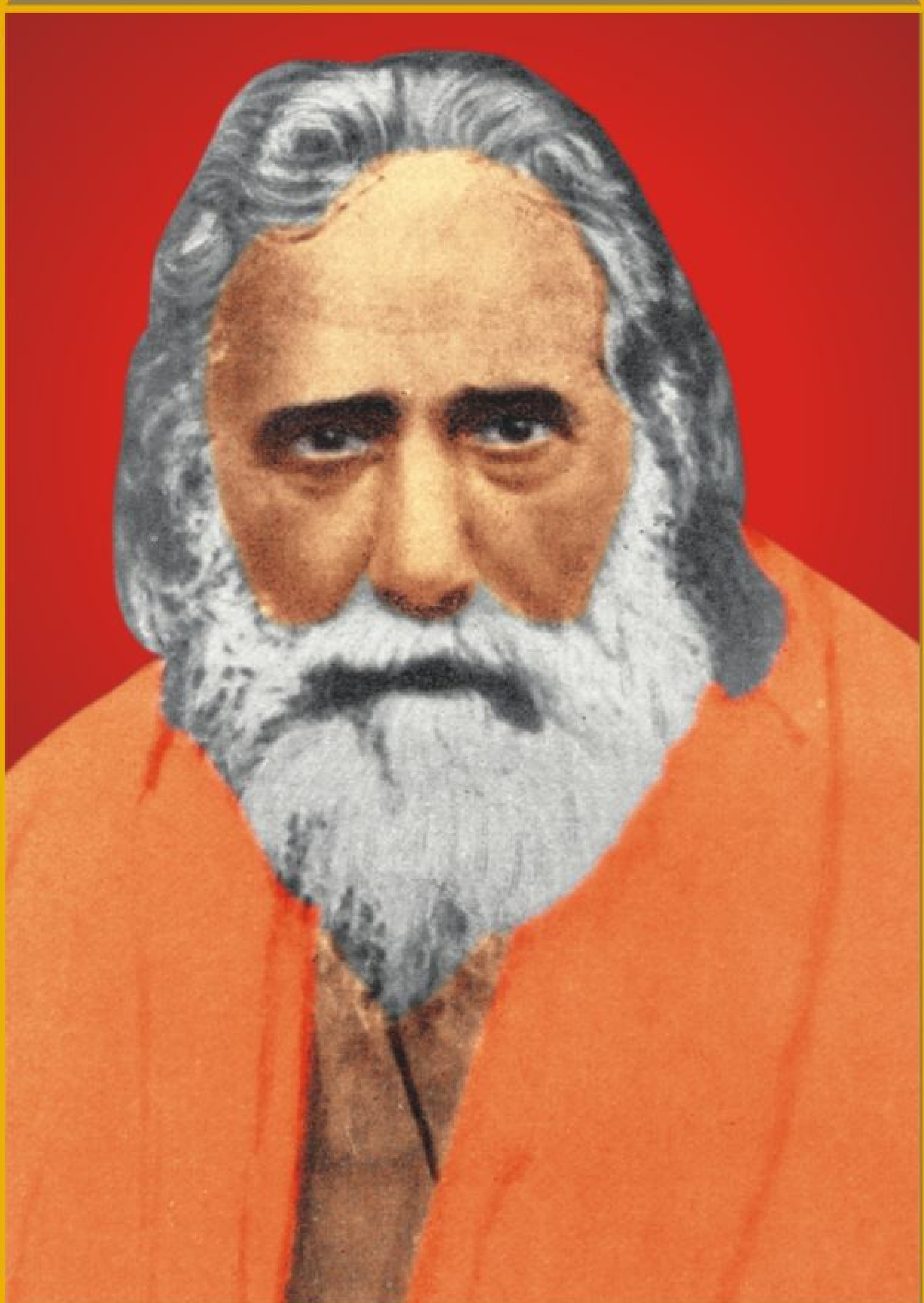

श्रीगोरक्षनाथ मन्दिर के आधुनिक शिल्पी

ब्रह्मलीन योगिराज बाबा गम्भीरनाथ जी महाराज

श्री गोरखनाथ मन्दिर

महायोगी श्री गुरु गोरक्षनाथ जी की त्रेतायुगीन पावन तपोभूमि गोरखपुर में, जो कालान्तर में उन्हीं के नाम से स्थापित जनपद, मण्डल, नगर एवं महानगर के रूप में प्रख्यात हुई, पहली बार कब, किसके द्वारा, किस आकार-प्रकार के श्री गोरक्षनाथ जी के मन्दिर तथा मठ का निर्माण हुआ था, यह बताने के लिए आज कोई साक्ष्य नहीं उपलब्ध है, किन्तु इतना निश्चित रूप से अनुमान किया जा सकता है कि यहाँ बहुत प्राचीन काल से ही महायोगी गुरु श्री गोरक्षनाथ जी द्वारा प्रज्वलित धूनी और उनकी चरण-पादुका प्रतिष्ठित है, जिसकी सुरक्षा के लिए तथा जहाँ साधना के लिए रह रहे योगियों के आवास आदि के लिए भी किसी न किसी आकार-प्रकार के मन्दिर या मठ का निर्माण अवश्य हुआ। ज्ञात इतिहास में, मध्यकालीन भारतीय इतिहास के सल्तनत काल में मुस्लिम बादशाह अलाउद्दीन खिलजी द्वारा महायोगी गोरक्षनाथ जी की तपोभूमि वर्तमान गोरखपुर नगर में बने मन्दिर के तोड़े जाने का जिक्र मिलता है, जिसे खिलजी या उसके सिपहसालारों के वापस जाते ही कुछ समय बाद किसी न किसी रूप में पुनः बना दिया गया। दूसरी बार फिर मुगल बादशाह औरंगजेब के शासन काल में यहाँ बने श्री गोरक्षनाथ मन्दिर को ध्वस्त किए जाने का उल्लेख मिलता है, किन्तु पुनः शीघ्र ही नाथ सम्प्रदाय के योगियों और उनके अनुयायियों ने यहाँ अपना मठ-मन्दिर बना लिया, जहाँ पूजा स्थान तथा धूना पूर्ववत स्थापित कर दिए गये। 19वीं शताब्दी में विद्यमान जिस मठ और मन्दिर का उल्लेख ब्रिग्स नामक सुधी विद्वान् ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक में किया है, उसके चित्र आज भी उपलब्ध हैं।

हिन्दू मन्दिर वास्तुकला-नागर शैली के आधार पर निर्मित वर्तमान श्री गोरक्षनाथ मन्दिर उत्तर भारतीय वास्तुशिल्प का एक अत्यन्त भव्य और उत्तम उदाहरण है। प्राचीन मन्दिर के गर्भ गृह को वर्तमान मन्दिर के गर्भ गृह के आकार में समाविष्ट करते हुए इसका निर्माण ईस्वी सन् के 7वें दशक में ब्रह्मलीन गोरक्षपीठाधीश्वर श्री महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज ने अपने कार्यकाल में प्रारम्भ किया, जिसे उनके ब्रह्मलीन होने के पश्चात् उनके सुयोग्य शिष्य और उत्तराधिकारी गोरक्षपीठाधीश्वर श्री महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने पूर्ण करा कर लोकार्पित किया। इसके पूर्व मन्दिर के गर्भगृह में अखण्ड ज्योति के अलावा मध्य भाग में बने एक वेदी पर श्रीनाथ जी की चरण पादुका प्रतिष्ठित कर पूजा की जाती थी। वर्तमान भव्य मन्दिर के गर्भगृह में आसनबद्ध योगमुद्रा में समासीन श्री गोरक्षनाथ जी की संगमरमर निर्मित एक प्रतिमा की प्राण-प्रतिष्ठा कर दी गयी है जो अत्यन्त भव्य और भावपूर्ण एवं आकर्षक है तथा बरबस लोगों का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट कर लेती है और

उसी के सामने श्री नाथ जी की चरण पादुका पूर्ववत प्रतिष्ठित है। मन्दिर के गर्भ गृह के भीतर जहाँ दक्षिण की ओर शताब्दियों से अखण्ड ज्योति प्रदीप्त होती चली जा रही है, वहीं गर्भ गृह के बाहर परिक्रमा मार्ग में दक्षिण की ओर आदिनाथ नटराज भगवान् शिव, दक्षिण दिशा स्थित प्रवेश द्वार के एक ओर श्री गुरु गोरक्षनाथ जी के गुरु महायोगी मत्स्येन्द्रनाथ जी, दूसरी ओर महायोगी जालन्धरनाथ जी, उसके बाद दक्षिण-पश्चिम के कोने की ओर ऋद्धि-सिद्धि से समलंकृत गज कंथणीनाथ, श्री गणेशजी, तदन्तर पश्चिमी दिशा की दीवाल पर श्री कानिफानाथ जी, श्री भर्तृहरिनाथ जी, श्री गहनिनाथ जी और उत्तर-पश्चिम के कोण भाग में महाकाली जी की मूर्तियाँ प्रतिष्ठित हैं, काली जी के बाद उत्तरी प्रवेश द्वार के पश्चिम और पूर्व दिशा में श्री नागनाथ जी एवं चर्पटीनाथ जी के बाद पूर्व दिशा में पश्चिमाभिमुख मुद्रा में श्री काल भैरवनाथ जी की मूर्ति प्रतिष्ठित है। मन्दिर के गर्भ गृह के सामने विशाल सुसज्जित प्रासाद (हाल) बना है। इसकी दीवालों पर गोरखवाणी के कुछ छन्द अंकित हैं। सम्प्रति प्रायः ५२ एकड़ प्रशस्त भू-भाग में स्थित मन्दिर परिसर के चतुर्दिक ऊँचा प्राकार (चहारदीवारी) निर्मित है, जिसमें दक्षिण-पूर्व और उत्तर दिशा में प्रवेश के लिए गोपुर से युक्त द्वार बने हैं। पूरे मन्दिर परिसर को मुख्य या मध्य, उत्तरी और दक्षिणी तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है। मन्दिर के मुख्य या मध्य भाग में आगे-पीछे रंग-बिरंगे फूलों-पौधों-वृक्षों, तराशी हुई मखमली घास से सुसज्जित उद्यानों के बीच संगमरमरजटित मध्य भाग सहित चारों दिशाओं में बने शिखरों से युक्त विशाल भव्य मन्दिर बना हुआ है। मुख्य भाग में स्थित मन्दिर के दक्षिण भाग में जहाँ भव्य मठ, उद्यान से सुसज्जित साधना भवन, ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज, ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज, ब्रह्मलीन योगिराज गंभीरनाथ जी महाराज और ब्रह्मलीन श्री महन्त ब्रह्मनाथ जी महाराज की समाधि मन्दिरों के आगे भीम मन्दिर और स्वच्छ जल से भरा ऐतिहासिक भीम सरोवर, गंगा माता, सूर्य भगवान्, छट्ठ माता का सम्मिलित मन्दिर बना हुआ है, वहीं उत्तरी भाग में यज्ञशाला, श्री राधा-कृष्ण मन्दिर, हनुमान मन्दिर, श्री राम दरबार मन्दिर, हट्ठी माता मन्दिर, बाल देवी मन्दिर, संतोषी माता मन्दिर, नवग्रह एवं शनि देव मन्दिर, श्री विष्णु देव मन्दिर, अखण्ड धूना, श्री शीतला माता मन्दिर, श्री भैरवनाथ जी का त्रिशूल मन्दिर, शिवलिंग समलंकृत भगवान् शिव का मन्दिर, श्री दुर्गा मन्दिर, ब्रह्मलीन योगियों के समाधि मन्दिर के आगे धर्मशाला एवं सन्त निवास बना हुआ है।

श्री गोरखनाथ मन्दिर पर्यटकों के आकर्षण का प्रमुख केन्द्र है। भारत-नेपाल सहित दुनिया भर में फैले नाथपंथी साधु-सन्यासियों, भक्तों के साथ-साथ बड़ी संख्या में पर्यटक इस मन्दिर में आते हैं। शाम होते ही रंग-बिरंगी रोशनी में नहाया मन्दिर का दृश्य देखते बनती है। मन्दिर परिसर स्थित सरोवर में प्रतिदिन स्वयं लाइट एण्ड साउण्ड शो के माध्यम से महायोगी गोरखनाथ जी के जीवन वृत्त एवं श्री गोरखनाथ मन्दिर की महन्त परम्परा का अत्यन्त सजीव चित्रण दर्शनार्थियों के आकर्षण का प्रमुख केन्द्र है।

मुख्य मन्दिर के पृष्ठ भाग में पश्चिम दिशा में ब्रह्मलीन गोरक्षपीठाधीश्वर श्री महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज की पुण्य स्मृति में निर्मित विशाल और भव्य श्री दिग्विजयनाथ स्मृति भवन स्थित है। इस भव्य भवन में भूतल में जहाँ किनारे-किनारे हिन्दू धर्म के विभिन्न अवतारों, देवी-देवताओं, ऋषियों-मुनियों और अन्य महापुरुषों की मूर्तियाँ प्रतिष्ठित हैं, वहीं बीच में विशाल सभागार है, जिसके दक्षिणी भाग में ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज एवं ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज के विशाल चित्र के साथ श्री गोरक्षनाथ मन्दिर, गोरखपुर के ब्रह्मलीन अन्य श्री महन्तों और सन्तों के चित्रों से अलंकृत प्रशस्त व्यास पीठ बनी हुई है। इसी स्मृति भवन के ऊपरी तल में पूर्वी, उत्तरी और पश्चिमी दीर्घाओं (गैलरियों) में शोध संस्थान तथा विशाल पुस्तकालय स्थापित है। स्मृति भवन के प्रवेश द्वार के दक्षिण की तरफ श्री गोरखनाथ मन्दिर से प्रकाशित नाथ साहित्य एवं आध्यात्मिक साहित्य बिक्री हेतु उपलब्ध रखा जाता है। स्मृति भवन के पीछे पश्चिम दिशा में ही मन्दिर की विशाल गौशाला बनी हुई है, जिसमें भारत में प्राप्त प्राय: सभी देशी नस्लों की गोवंश के पालन, पोषण एवं संवर्धन की सुचारु व्यवस्था उपलब्ध रहती है।

मन्दिर परिसर के मुख्य भाग के उत्तर में, जहाँ यात्री निवास, हिन्दू सेवाश्रम, संस्कृत विद्यापीठ एवं छात्रावास, योग प्रशिक्षण केन्द्र, आधुनिक व्यायामशाला, दिग्विजयनाथ आयुर्वेदिक चिकित्सालय, महायोगी गुरु श्री गोरखनाथ कॉलेज ऑफ नर्सिंग एवं अत्याधुनिक चिकित्सकीय सुविधाओं और उपकरणों से सुसज्जित 400 शय्याओं वाला महायोगी गुरु श्री गोरक्षनाथ चिकित्सालय बना है, इसके अंतर्गत आँख, कान, गला, हृदय, अस्थि, बाल रोग, स्त्री रोग आदि से सम्बन्धित विभाग और ब्लड बैंक भी स्थापित है, वहीं दक्षिणी भाग में पंक्तिबद्ध वृक्षों के साथ खुला हुआ प्रशस्त मैदान है, जिसमें मकर संक्रान्ति के समय प्रतिवर्ष प्राय: मासपर्यन्त मेला लगता है। इसी भाग में पंजाब नैशनल बैंक की एक शाखा, दूरभाष एक्सचेंज और डाकखाना भी स्थित है। दक्षिणी प्रवेश द्वार से उत्तरी प्रवेश द्वार तक मन्दिर की चहारदीवारी के अन्दर विभिन्न सुसज्जित दुकानें बनी हुई हैं, जिनमें पूजा से सम्बन्धित सामग्री, धार्मिक साहित्य के अलावा, दैनिक उपयोग की सामग्रियाँ और जलपान आदि भी उपलब्ध होते हैं। पूरा मन्दिर परिसर रात्रि के अन्तिम प्रहर 3.00 बजे से प्रारम्भ होने वाली परंपरागत नाथ जी की पूजा से जाग्रत् रहता हुआ पुन: रात्रि में 8.00 बजे पूजा के बाद विश्राम आदि के लिए बन्द होता है। सुबह से रात्रि तक मुख्य मन्दिर में श्री गोरक्षनाथ जी की घण्टा, नगाड़ा, शंख ध्वनि और मंत्रोच्चारण के बीच नियमित त्रिकाल पूजा होती है।

श्री गोरखनाथ मन्दिर का आध्यात्मिक वैशिष्ट्य

गोरखपुर का गोरखनाथ-मन्दिर और मठ उत्तर भारत की इस प्रकार की संस्थाओं में एक विशिष्ट स्थान रखता है, परम्परागत मान्यता यह है कि यह मन्दिर और इसके साथ के मठ ठीक उसी स्थान पर बनाये गये हैं, जहाँ रहकर सिद्ध योगिराज श्री गोरखनाथ ने बहुत दिनों तक गहनतम समाधि

का अभ्यास किया था। मुस्लिम शासनकाल में अनेक बार अनेक प्रतिकूल परिस्थितियों के रहते भी इसने शताब्दियों तक सतत रूप से यौगिक संस्कृति के एक जीवित केन्द्र के रूप में अपना अस्तित्व अक्षुण्ण रखा है। नाथयोगिसम्प्रदाय के महान् प्रतिष्ठापक ने जब इस स्थान को अपने आध्यात्मिक अतिमानवीय गौरव से पवित्र किया था, तब यह एक वन प्रदेश था और बहुत ही कम आबाद था। यहाँ के निवासी भी असभ्य थे। गुरु श्री गोरखनाथ ने इस स्थान को ही अपनी साधना के लिए चुना था। स्वभावत: इस क्षेत्र की सीधी-सादी जनता इस दिव्य मानव के प्रति आकर्षित हुई। यद्यपि वे स्वभावत: अवलोकित मन:स्थिति में रहते थे और सांसारिक परिस्थितियों पर बिल्कुल ध्यान नहीं देते थे, फिर भी दीन-हीन जनता स्वभावत: उनके प्रति भक्तिभावना से भर गई और जब कभी वे इसकी ओर अनुग्रह की भावना से प्रेरित होकर उसकी कोई शारीरिक सेवा स्वीकार कर लेते थे, तो वह अपना अहोभाग्य मानती थी। इस दिव्य व्यक्तित्व की पवित्र उपस्थिति में इस क्षेत्र का सम्पूर्ण वातावरण आध्यात्मिक हो गया। इन निरक्षर प्राणियों में उनके आशीर्वादात्मक उपदेशों ने एक गतिशील आध्यात्मिक चेतना जाग्रत कर दी। वे अनुभव करते थे कि महायोगेश्वर शिव कृपापूर्वक मानवरूप में उनके बीच उपस्थित हैं। वे शिवगोरक्ष के रूप में उनकी पूजा करते थे। उनके देवत्व की कहानी एक-दूसरे से होती हुई विभिन्न दिशाओं में फैल गई। बहुत से सच्चे सत्यान्वेषक उनके पास आने लगे और उनकी कृपा की भीख माँगने लगे।

उनका अतिमानवीय चरित्र और सीधे सरल उपदेश सच्चे आध्यात्मिक जिज्ञासुओं को त्याग, तपस्या और योगसाधना के जीवन की ओर आकर्षित करने लगे। उनके व्यक्तित्व के प्रभाव से स्वत: एक साधनाश्रम विकसित होने लगा। उनके अनुग्रह से उनके शिष्य आध्यात्मिक जागृति के पथ पर आश्चर्यजनक गति से आगे बढ़ने लगे। वे आध्यात्मिक साधना में सफल शिष्य विभिन्न क्षेत्रों में उनकी शिक्षाओं के प्रचार में जुट गए। उन्होंने विभिन्न आश्रमों एवं प्रशिक्षण केन्द्रों की स्थापना की। इस प्रकार गोरखपुर केन्द्र योगसाधना के अनेक छोटे-छोटे केन्द्रों का प्रधान केन्द्र हो गया, यद्यपि आश्रम के पूर्णत: स्थापित हो जाने के थोड़े ही दिनों बाद आश्रम के महान् स्वामी ने शरीरत: उस स्थान को छोड़ दिया, फिर भी उनकी आध्यात्मिक उपस्थिति का अनुभव सभी लोग करते रहे। लोगों के मन में यह विश्वास घर कर गया कि वे मानवरूप में साक्षात् शिव थे, वे जन्म-मरण से रहित थे, जो उनका भौतिक शरीर प्रतीत होता था, वह भी भौमिक और सृष्टिसम्बन्धी नियमों के अधीन नहीं था। निमिषमात्र में वे इस प्रकार के अनेक शरीर उत्पन्न कर सकते थे और जब भी चाहते, शरीरों को दृश्य या अदृश्य कर सकते थे। वे सारे कृत्य उनके लिये लीलामात्र थे, और यह सब कुछ उन्होंने जनता की भलाई के लिए किया था।

ऐसा समझा जाता था कि उनका व्यक्तित्व अमर और सर्वव्यापक था। उनके द्वारा स्थापित आश्रम विकसित होता गया और साथ ही उसके आध्यात्मिक प्रभाव के क्षेत्र का भी विस्तार होता गया। काल-क्रम से इस सम्पूर्ण क्षेत्र का भौतिक उत्थान भी हुआ और ऐसा समझा गया कि यह उन्हीं

की कृपा का परिणाम है। यहाँ से लेकर नेपाल तक की सम्पूर्ण जनता गोरखनाथजी के नाम से प्रेरणा प्राप्त करती थी।

यद्यपि यह मठ संसार से विरक्ति रखने वाले तथा ईश्वर के अन्वेषक तपस्वियों की संस्था थी, जिसका कोई सम्बन्ध देश के आर्थिक और राजनीतिक विषयों से न था, फिर भी मुस्लिम शासनकाल में हिन्दुओं एवं बौद्धों के अन्य सांस्कृतिक केन्द्रों की भाँति इसे भी प्रायः अनेक भयंकर आपत्तियों का सामना करना पड़ा। आततायियों के इस ओर विशेष ध्यान देने का एक कारण इस मठ की दूर तक फैली प्रसिद्धि और प्रभाव था। ऐसा कहा जाता है कि एक बार अलाउद्दीन खिलजी के समय यह मठ नष्ट कर दिया गया था और यहाँ के योगियों को मारकर भगा दिया गया था, किन्तु जनता के हृदयों से निश्चय ही गोरखनाथजी को नहीं निकाला जा सकता था, मठ का पुनः निर्माण किया गया, योगी लोग लौट आये और यौगिक संस्कृति के प्रमुख केन्द्र के रूप में इसकी महत्ता इस क्षेत्र में पुनः प्रतिष्ठित हो गयी। इस केन्द्र से असाधारण योगशक्ति तथा गहनतम आध्यात्मिक अनुभूति रखने वाले अनेक महायोगी उत्पन्न हुए, जिनका आध्यात्मिक महत्त्व पूरे देश में स्वीकार किया गया। यह मठ विरोधियों के नेत्रों में पुनः खटकने लगा और औरंगजेब के शासनकाल में इसे एक बार फिर नष्ट किया गया, किन्तु शिवगोरख के अनुग्रह ने मानो इस स्थान को अमरत्व प्रदान कर दिया था। इन सभी धक्कों और आपत्तियों के बाद भी इसका विकास होता रहा। आगे चलकर अवध के एक मुसलमान शासक ने इस मठ को दैनिक पूजा एवं परिव्राजक योगियों की सेवा के लिए अच्छी भू-सम्पत्ति प्रदान की। इस मठ का प्रमुख मन्दिर जिस रूप में आज विद्यमान है, निश्चय ही यह अधिक पुराना नहीं। यह पूर्णतया सम्भव है कि मन्दिर को बार-बार निर्मित करना पड़ा, किन्तु विश्वास यह है कि गोरखनाथ जी की तप:स्थली कभी भी छोड़ी नहीं गयी, जब कभी मन्दिर का निर्माण हुआ, उसी पवित्र भूमि पर ही हुआ। इस पवित्र मन्दिर की एक प्रमुख विशेषता उल्लेखनीय है। मन्दिर के केन्द्र में एक विस्तृत यज्ञस्थली है, जो गोरखनाथजी के पवित्र आसन के रूप में मानी जाती है। यहीं पर नियमतः पांथिक विधि के अनुसार नित्यप्रति पूजा की जाती है। आध्यात्मिक दृष्टि से यह स्थान उस परम सत्य और आदर्श की ओर संकेत करती है, जिसका स्मरण और भावना प्रत्येक योगी के ध्यान और पूजा का अन्तिम लक्ष्य है और जिसका न कोई विशिष्ट नाम है, न रूप है। वह सम्पूर्ण गोचर सत्ता का मूलाधार है। वह जीव और शिव, आत्मचेतना-विश्वचेतना 'अहं'-इदं', 'चेतना और पदार्थ' तथा मन और दिव्य मन की एकत्व-अनुभूति है। वह अविभाज्य है, वह परमपूर्ण है, उसमें सत् और असत् की एकरूपता है। पूजा का आदर्शरूप यह है कि आराधक का हृदय इस परम एकत्व की अनुभूति से भर जाय। वह आन्तरिक रूप से उसके साथ मिलकर एक हो जाय। इस पूर्ण एकत्व की अनुभूति करने वाला हृदय ही सच्चे नाथसिद्ध या अवधूत का हृदय है। 'गोरक्षसिद्धान्त संग्रह' में नाथ का स्वरूप इस प्रकार वर्णित है:

निर्गुणं वामभागे च सव्यभागेऽद्भुता निजा।
मध्यभागे स्वयं पूर्णस्तस्मै नाथात ते नमः॥
वामभागे स्थितः शम्भुः सव्ये विष्णुस्तथैव च।
मध्ये नाथः परं ज्योतिस्तज्ज्योतिर्मे तमोहरम्॥

मैं उस नाथ को नमन करता हूँ, जिसके वाम भाग में निर्गुण ब्रह्म तथा दक्षिण भाग में रहस्यमयी आत्मशक्ति (विश्वप्रपंच का त्यागात्मक आधार) है और जो मध्य में स्वयं पूर्ण प्रदीप्त चेतनात्मक स्थिति में परम सत्ता के उक्त द्विविध रूपों द्वारा आलिंगित है। शम्भु या शिव उसके वाम भाग में और विष्णु उसके दक्षिण भाग में स्थित हैं और नाथ उन दोनों के मध्य परम ज्योति के रूप में सुशोभित हैं अर्थात् दोनों को अपने में एकान्वित किये हुए हैं। नाथ की यह परम ज्योति मेरे अज्ञानान्धकार को दूर करे।

निर्गुण ब्रह्म और विश्व-प्रपंच सर्व-निरपेक्ष शिव और सर्वव्यापी विष्णु दोनों नाथ की पूर्ण प्रकाशित दिव्य चेतना में एकान्वित हैं। वे ही श्रीनाथजी मन्दिर के प्रधान देवता हैं। वे योगी गुरु हैं। अज्ञान-अन्धकार को दूर करने के लिए उनकी प्रार्थना की जाती है।

मन्दिर के भीतर वेदी की एक ओर निश्चल दीपशिखा है, जो रात-दिन सततरूप से मन्द-मन्द जलती रहती है और जिसे कभी भी बुझने नहीं दिया जाता। यह परमज्योति का उपयुक्ततम प्रतीक है, जिसमें शिव और विष्णु परमतत्त्व के निरपेक्ष और सापेक्ष स्वरूप एक ही रूप में अभिव्यक्त होते हैं, जिसमें निर्गुण ब्रह्म और उनकी विश्व-जननी और अनिर्वचनीय महाशक्ति एक आनन्दमयी चेतना के रूप में एकान्वित है। यही आत्मज्योति परम चेतना है, जो प्रत्येक योगी के द्वारा अनुभूत होने वाला परम सत्य एक परमादर्श आराधकों के सम्मुख अखण्ड ज्योति के रूप में सदैव विद्यमान रहता है। यह दीपशिखा वायु के झोकों या अन्य बुझा सकने वाले प्राकृतिक उपकरणों से प्रयत्नपूर्वक सुरक्षित रखी जाती है और इसे सतत प्रदीप्त रखने के लिए दीप को घी से सींचते रहते हैं। यह ज्योति पूजकों और साधकों को स्मरण दिलाती रहती है कि मन को क्रमशः दिव्य आध्यात्मिक अनुभूति की ओर उन्मुख करने के लिए आवश्यक है कि उसे उन सांसारिक प्रपंचों तथा ऐन्द्रिय विषयों और वृत्तियों से सुरक्षित रखा जाय, जो इसे अशुद्ध कर देते हैं। यही नहीं, नियमपूर्वक ध्यान-धारणा के द्वारा सुसंस्कृत मन्दिर के भीतर वेदी और ज्योतिशिखा-इन दो महत्त्वपूर्ण प्रतीकों के अतिरिक्त बुद्ध-मूर्तियाँ भी मन्दिर से ही सम्बद्ध हैं। शिव के असीम वक्षस्थल पर नित्यरूप से नृत्य करती हुई माता काली की मूर्ति है। जिन लोगों को योगसाधना के दार्शनिक आधार का थोड़ा भी ज्ञान है, वे इस पवित्र मूर्ति का आध्यात्मिक महत्त्व भली-भाँति समझ सकते हैं।

यह कहा जा चुका है कि परमतत्त्व के निरपेक्ष स्वरूप का प्रतिनिधित्व शिव करते हैं और माता काली या विश्वजननी निर्वचनीय महाशक्ति उसके गत्यात्मक स्वरूप को, जो कालातीत,

स्थानातीत, स्वयं प्रकाशित निरपेक्षस्वरूप को अपना मूलाधार बना कर नित्य समय और स्थान की सीमाओं में अपने को अनेक रूपों में व्यक्त करता है। काली शिव का ही गतिशीलस्वरूप है। शिव के वक्षस्थल पर काली का नृत्य इस तथ्य की ओर संकेत करता है कि सतत परिवर्तनशील नानात्वमय जगत् एक अपरिवर्तनशील परमात्मा की ही अभिव्यक्ति है, जो अपनी सम्पूर्ण अभिव्यक्ति के मूल में स्थित रहता है। इन सभी परिवर्तनों, सभी परस्पर विरोधी तत्त्वों-जीवन और मृत्यु की स्थितियों, सुखों और दुःखों, सघंर्षो एवं मैत्रियों, पुण्यों और पापों में, जिसके माध्यम से महाकाली अपने को व्यक्त करती है, आधारभृत शिव-तत्त्व की आनन्दमयी एकता सदैव अक्षुण्ण रहती है। विश्वजननी अपने सभी सत्यान्वेषी पुत्रों को यह दिखाना चाहती है कि शिव सभी सीमित और क्षणिक अस्तित्वों के मूलाधाररूप में स्थित हैं। वह अनेक में एक, परिवर्तनशीलों में अपरिवर्तित, सीमाओं में असीम, द्वैत में अद्वैत के सत्य को भी प्रत्यक्ष कराना चाहती है। काली पूजा का उद्देश्य स्वयं अपने में और सम्पूर्ण वातावरण में शिव-तत्त्व की अनुभूति करना है। योगियों की दृष्टि में इसका विशिष्ट महत्त्व है।

गणेश या गणपति की मूर्ति भी मन्दिर के कोने में रखी है। अतिप्राचीनकाल से ये भारत के सर्वाधिक लोकप्रिय देवताओं में से एक हैं। इन्हें गजानन तथा लम्बोदर के रूप में मूर्त किया जाता है। आँखें भीतर की ओर धँसी हुई दिखाई जाती हैं और एक आदर्श योगी के समान इन्हें सदैव गहन ध्यान की मुद्रा में चित्रित किया जाता है। इनकी धारणा शिव-शक्ति के पुत्ररूप में की जाती है अर्थात् इन्हें परम तत्त्व के निरपेक्ष एवं गत्यात्मक दोनों रूपों की एकता की गौरवमयी अभिव्यक्ति के रूप में समझा जाता है। इनके रूप में बाह्यतः कामना रखने वाले व्यक्ति के हृदय में ज्ञान की ज्योति प्रज्वलित रहनी चाहिये। सभी प्रकार की इच्छाएँ और आसक्तियाँ, सभी प्रकार की अपवित्रता और चंचलता वैराग्य की अग्नि में जल जानी चाहिए। सभी प्रकार के सांसारिक विरोध और विभेद इस वैराग्य-भावना से मिट जाने चाहिए। सब प्रकार की परस्पर विरोधी वस्तुएँ, जो सांसारिक जीवन में अनेक प्रकार के विरोधी मूल्य रखती हैं, जलकर आग के रूप में एकाकार हो जाती हैं और सांसारिक दृष्टि से यह राख व्यर्थ समझी जाकर हेय मानी जाती है। योगी अपने शरीर को इसी राख से विभूषित करते हैं, जो वस्तुओं के परस्पर विरोधी नाम-रूपों और मूल्यों के समाप्त हो जाने पर उनके मूल में निहित एकता की अभिव्यक्ति के रूप में अवशिष्ट रह जाती है।

महायोगी एक प्रकार से विरोधी तत्त्वों को परमतत्त्व की एकता में बदल देता है। शिव, जो सभी योगियों के आदि गुरु और स्वामी हैं, विध्वंस के देवता समझे जाते हैं, क्योंकि वे आध्यात्मिक एकत्व की अभिव्यक्ति या सभी विरोधी तत्त्वों को परम तत्त्व की निरपेक्ष एकता में परिणत कर देते हैं। शिव के लिए प्रसिद्ध है कि वे अपना सम्पूर्ण शरीर राख से विभूषित करते हैं, जिसका तात्पर्य यह है कि उनका सम्पूर्ण व्यक्तित्व सभी प्रकार की सत्ताओं के एकत्व की चेतना से शाश्वत रूप में प्रकाशित है। मठ में ही योगियों का मृत भौतिक शरीर समाधिस्थ किया जाता है, जिनकी अमर

आत्माएँ उसे मिट्टी में मिलाने के लिए छोड़ जाती हैं। देव-मन्दिर के पार्श्व में स्थित महन्त के समाधि मन्दिर सभी लोगों को सतत रूप से इस भौतिक जीवन के अनिवार्य अन्त तथा सांसारिक प्रभुत्व और उपलब्धियों की व्यर्थता का स्मरण दिलाता रहता है। यह दृश्य वैराग्य-भावना को घनीभूत करता है और दर्शक का नित्य परमतत्त्व की ओर बलात् ध्यान आकर्षित करता है। उस परमतत्त्व के प्रति एकान्त भक्ति ही आत्मा को आनन्दमयी अमरता प्रदान कर सकती है, जीवन को सम्पूर्ण बना सकती है। मन्दिर और श्मशान भूमि असीम नित्य आनन्दमयी आध्यात्मिक अस्तित्व और सीमित, क्षणिक, दु:खपूर्ण भौतिक अस्तित्व की विरोधात्मक स्थिति उपस्थित करती है और मनुष्यों को दोनों में किसी एक को चुनने की प्रेरणा देती है। श्मशान भूमि इस पृथ्वी-मृत्युलोक का प्रतिनिधित्व करती है, मन्दिर कैलास आत्मा की निवास-भूमि है, अमरता के क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करता है।

भोग का मार्ग श्मशान भूमि की ओर ले जाता है और योग का मार्ग मन्दिर की ओर। श्मशान भूमि जीवित व्यक्तियों के सभी विरोधों को मृतक भूमि की एकता में बदल देती है। यहाँ जीवन की तुष्टि नहीं है, वे आत्माएँ, जो भौतिक मृत्यु के उपरान्त भ्रमवश सूक्ष्म शरीर से सम्बद्ध रहती हैं, अपूर्ण वासनाओं द्वारा पीड़ित की जाती हैं। मन्दिर सभी प्रकार के विरोधों को आत्मा की आनन्दमयी एकता में बदल देता है। यहाँ जीव की तुष्टि हो जाती है, आत्मा शिव से अभिन्न हो जाता है। जब आध्यात्मिक प्रकाश-ज्ञान सभी प्रकार के भ्रमात्मक विरोधों को मिटा देता है और सभी प्रकार की सत्ताओं का एकत्व प्रकट कर देता है, तब शिव अपने पूर्ण गौरव के साथ प्रकाशित होते हैं।

इस मठ ने शताब्दियों से अपना अस्तित्व सुरक्षित रखा है और सहस्रों व्यक्तियों को योगमार्ग की ओर आकर्षित किया है। इस मठ की परम्परा में अनेक विख्यात योगी आते हैं, जिन्हें आश्चर्यजनक आध्यात्मिक शक्तियाँ उपलब्ध थीं और जिन्होंने अनेक युवकों को योगमार्ग में दीक्षित किया था। यह मठ योग-संस्कृति का केन्द्र है और यह देश के आध्यात्मिक वातावरण को बहुत दूर तक प्रभावित करता है। सदियों से लोग अपनी जिज्ञासा को लेकर यहाँ आते रहे हैं और आज भी प्रेरणा और दीक्षा के लिए यहाँ आते हैं। अनेक तीर्थयात्री गोरखनाथ की इस तपोभूमि और उनके नाम से प्रसिद्ध पवित्र मन्दिर के दर्शन के लिए बारहों महीने आते रहते हैं। प्रतिदिन बड़ी संख्या में आने वाले अतिथियों, विशेष रूप से भ्रमणशील साधुओं के लिए मठ को भोजन और अन्य सुविधाएं मन्दिर की ओर से रहती है। मकरसंक्रान्ति के दिन लाखों की संख्या में भक्त परम देवता के दर्शन से अपने को पवित्र करते तथा उन्हें खिचड़ी चढ़ाते हैं। इसके अतिरिक्त मंगलवार सामान्यत: श्रीनाथजी के दर्शन के लिए एक विशिष्ट पवित्र दिन माना जाता है और प्रत्येक मंगलवार को सभी जातियों-वर्गों के अनेक श्रद्धालु स्त्री-पुरुष मन्दिर में दर्शनार्थ एकत्र होते हैं। मठ से सम्बद्ध एक गोशाला भी है, जिसमें गायें सावधानी से पाली जाती हैं। मन्दिर में सांस्कृतिक पूजा तो प्राय: थोड़ी-थोड़ी देर के बाद रात-दिन बराबर होती रहती है।

पूरी संस्था एक योगी के प्रबन्ध में है, जिसे महन्त कहते हैं। मठ में महन्त का स्थान बड़ा ही उच्च और पूज्य माना जाता है। वह योगी गुरु गोरखनाथ का प्रतिनिधि समझा जाता है और इस संघटन से सम्बद्ध सभी योगियों का आध्यात्मिक नेता या प्रधान माना जाता है। व्यावहारिक दृष्टि से वह गोरखनाथजी का प्रधान सेवक है और इस संस्था के संचालक के रूप में गुरुओं के गुरु गोरखनाथ द्वारा प्रतिष्ठित महान् आध्यात्मिक आदर्श की सुरक्षा के लिये मुख्यत: उत्तरदायी है। वह निश्चित समय पर निर्धारित विधि के अनुसार होने वाली दैनिक पूजा के नियमित सम्पादन के लिए उत्तरदायी है, साथ ही वर्ष की विभिन्न ऋतुओं में निश्चित पर्वों और त्योहारों के उचित ढंग से मनाये जाने के लिए भी उत्तरदायी है। उसे मठ के आध्यात्मिक और नैतिक वातावरण की पवित्रता और शान्ति का भी ध्यान रखना पड़ता है। आने वाले अतिथियों को उचित सेवा की व्यवस्था करनी पड़ती है, गोरखनाथजी के नाम पर आने वाले एक-एक पैसे के उचित व्यय पर दृष्टि रखनी होती है और अन्तत: उसे आश्रम-जीवन के सभी क्षेत्रों से सम्बद्ध सभी प्रकार के व्यक्तियों के उचित सम्मान का ध्यान रखना होता है।

अपने व्यक्तिगत जीवन में वह त्याग, संयम, विनय तथा शान्ति के आदर्श का प्रतिमान होता है, चाहे उसे व्यावहारिक और सामाजिक जीवन में कितने ही परस्पर विरोधी कर्तव्यों का पालन या विपरीत स्थितियों का मुकाबला क्यों न करना पड़ा हो। उसे निश्चित रूप से अपने को सभी प्रकार के सांसारिक आकर्षणों और महत्त्वाकांक्षाओं से, सभी प्रकार की चारित्रिक दुर्बलताओं से तथा शरीर-सुख की आसक्तियों से ऊपर रहना चाहिए। मठ के महन्त मे भारतीय संस्कृति, सामाजिक-राष्ट्रीय जीवन के उत्थान में भी वैसे ही उनकी सक्रियता की अपेक्षा की जाती है, जैसे महायोगी गोरक्षनाथ जी द्वारा सामाजिक-सांस्कृतिक परिवर्तन का शंखनाद किया गया था। गोरखपुर का यह गोरखनाथमठ निश्चय ही इस दृष्टि से बड़ा भाग्यशाली रहा है कि इसकी महन्त-परम्परा में कुछ विलक्षण साधना वाले महायोगी हुए हैं, जो अपने आध्यात्मिक ज्ञान और असाधारण योगशक्ति के लिए दूर-दूर तक विख्यात रहे हैं। भारत के स्वतंत्रता संग्राम में श्री गोरक्षपीठ की सक्रियता ने इस पीठ धर्मपीठ को और महत्त्वपूर्ण बना दिया। शिक्षा-स्वास्थ्य को सेवा-साधना का माध्यम बनाकर इस पीठ की आधुनिक महन्त परम्परा ने गरीब-पीड़ित जनता के आँसू पोछने तथा लोक कल्याण को जन-सरोकारों से साक्षात् एकाकार कर दिया। आज श्री गोरक्षपीठ एवं श्री गोरखनाथ मन्दिर की प्रतिष्ठा उसके धार्मिक-आध्यात्मिक प्रभाव के साथ-साथ इस लोक-कल्याणकारी भूमिका के कारण भी है।

श्रीगोरखनाथ मन्दिर की महन्त-परम्परा

श्री गोरखनाथ मन्दिर शिवावतारी महायोगी गोरक्षनाथ द्वारा प्रवर्तित नाथपंथ का सर्वोच्च केन्द्र है। नाथपंथ की परम्परानुसार श्री गोरखनाथ मन्दिर के महन्त श्री गुरु गोरक्षनाथ के प्रतिनिधि स्वरूप होते हैं। इस मन्दिर के महन्त नाथपंथी योगियों के आध्यात्मिक नेता माने जाते हैं। श्री गोरखनाथ

मन्दिर के मठ के महन्तों की परम्परा अविचल निष्ठा एवं गुरुभक्ति में आदर्श है। नाथपंथ की परम्परा में गुरुभक्ति को सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त हुआ। महायोगी श्री गोरक्षनाथ की भी प्रतिष्ठा गुरु रूप में है। श्री गोरखनाथ मन्दिर की महन्त-परम्परा में गुरुभक्ति के आदर्शतम स्वरूप का दर्शन होता है। श्री गोरखनाथ मन्दिर के महन्त का आवास 'श्री गोरक्षपीठ' अथवा 'मठ' कहा जाता है। मठ अथवा श्री गोरक्षपीठ का अधिपति अथवा अधीश्वर एवं श्री गोरखनाथ मन्दिर के महन्त पद पर नाथपरम्परानुसार अभिषिक्त नाथपंथ का योगी श्री गोरक्षपीठाधीश्वर के पद से भी विभूषित होता है। श्री गोरक्षपीठ का पीठाधीश्वर एवं महन्त जीवनपर्यन्त इस आध्यात्मिक पीठ पर आसीन रहता है। पीठाधीश्वर द्वारा घोषित उत्तराधिकारी-शिष्य उनकी समाधि से पूर्व नाथपंथ के योगेश्वरों द्वारा पीठाधीश्वर-महन्त पद पर परम्परानुसार अभिषिक्त कर दिया जाता है। इस प्रकार श्री गोरक्षपीठ एवं श्री गोरखनाथ मन्दिर की महन्त-परम्परा गुरु-शिष्य की श्रेष्ठ परम्परा का वाहक है।

श्री गोरखनाथ मन्दिर की महन्त-परम्परा की एक मौलिक विशेषता है कि पदासीन महन्त धर्म-अध्यात्म-योग के साथ-साथ राष्ट्रीयता को सर्वोपरि मानते हैं। उनकी मान्यता है कि हिन्दुत्व ही राष्ट्रीयता है। राष्ट्रीयता की इस अवधारणा को गोरक्षपीठाधीश्वर श्री महन्तों ने श्री गोरखनाथ मन्दिर एवं उसकी महन्त-परम्परा के साथ एकाकार किया। परिणामतः नाथपंथ की परम्परा के साथ-साथ 'हिन्दुत्व' अर्थात् भारतीय संस्कृति की श्रेष्ठ परम्पराएँ श्री गोरखनाथ मन्दिर के आयोजनों-उत्सवों-समारोहों-पर्व-त्योहारों का हिस्सा बनीं। शारदीय नवरात्र एवं विजयादशमी पर्व पर देवी-पूजन, शस्त्र-पूजन एवं गोरक्षपीठाधीश्वर-महन्त का भक्तों-श्रद्धालुओं द्वारा अभिषेक, श्री गोरखनाथ मन्दिर से मानसरोवर एवं श्रीरामलीला मैदान तक श्री गोरक्षपीठाधीश्वर-महन्त की विजययात्रा, उनके द्वारा श्रीराम का राज्याभिषेक की परम्परा श्री गोरखनाथ मन्दिर की महन्त-परम्परा का हिस्सा बन चुकी है। इसी प्रकार होली पर्व पर गोरखपुर महानगर में घण्टाघर से निकलने वाले होलिकोत्सव-यात्रा का शुभारम्भ श्री गोरक्षपीठाधीश्वर-महन्त द्वारा भगवान् नृसिंह की आरती से प्रारम्भ होता है, भगवान् नृसिंह के रथ पर आसीन श्री गोरक्षपीठाधीश्वर-महन्त जनता के साथ रंग खेलते हुए होलिकोत्सव-यात्रा में सम्मिलित रहते हैं। हिन्दू धर्म-संस्कृति के सभी महत्त्वपूर्ण पर्व-त्योहार श्री गोरखनाथ मन्दिर में परम्परागत रूप से मनाया जाता है और श्री गोरक्षपीठाधीश्वर-महन्त उस पर्व-त्योहार के अनिवार्य हिस्सा होते हैं।

श्री गोरखनाथ मन्दिर की महन्त-परम्परा में अभिषिक्त श्रीमहन्तों-पीठाधीश्वरों में अनेक महन्त महान् योगी हुए हैं, जो अपने आध्यात्मिक ज्ञान और योगशक्ति के लिए विश्रुत हैं। इन महन्तों ने महायोगी गोरक्षनाथ की योगसाधना को अपने शिष्यों के माध्यम से आगे बढ़ाया। कई महन्त योग-अध्यात्म के साथ-साथ प्रत्यक्ष लोक-कल्याण एवं जन-सेवा के माध्यम से सामाजिक चेतना को जागृत किया और सामाजिक परिवर्तन में अपनी महत्त्वपूर्ण उपस्थिति दर्ज करायी। यद्यपि कि श्रीमहन्त-पीठाधीश्वरों का कालानुक्रम में प्रामाणिक विवरण उपलब्ध नहीं है तथापि महन्त श्री

वरदनाथ जी श्री गोरक्षपीठ के पहले महन्त कहे जाते हैं। उनके बाद ख्यातनाम सिद्ध महन्तों में बाबा अमृतनाथ, परमेश्वरनाथ, बुद्धनाथ, रामचन्द्रनाथ, वीरनाथ, अजबनाथ तथा पियारनाथ जी के नाम उल्लेखनीय हैं। 1758 ई. से 1786 ई. तक श्रीबालनाथ जी यहाँ के महन्त थे। वे एक उच्चकोटि के अलौकिक शक्ति सम्पन्न योगी थे। उनके बाद के महन्तों की परम्परा सुज्ञात है। ये सभी तत्कालीन प्रसिद्ध योगी थे। उनके नाम क्रमशः इस प्रकार हैं- श्री माननाथ जी (1811 ई. तक), श्री संतोषनाथ जी (1831 ई. तक), श्री मेहरनाथ जी (1855 ई. तक), श्री गोपालनाथ जी (1880 ई. तक), श्री बलभद्रनाथ जी (1889 ई. तक), श्री दिलवरनाथ जी (1896 ई. तक)।

तदनन्तर श्री दिलवरनाथ जी के उत्तराधिकारी श्री सुन्दरनाथ जी इस मठ के महन्त बने। महन्त सुन्दरनाथ जी के समय में ही मन्दिर की व्यवस्था के सुचारू संचालन का दायित्व सिद्धयोगी गम्भीरनाथ जी ने संभाला। गम्भीरनाथ जी अपने समय के महान् सिद्धयोगी थे जिनकी योगसिद्धि की चमत्कारिक घटनाएँ आज भी प्रसिद्ध हैं। सुन्दरनाथ जी के समाधिस्थ होने पर महान् योगी गम्भीरनाथ जी के शिष्य ब्रह्मनाथ जी महन्त बने। उनके पश्चात 1934 ई. में एकान्त साधना में नैष्ठिक योगी, साथ-ही-साथ देश प्रसिद्ध लोकसंग्रही और विख्यात हिन्दू नेता श्री दिग्विजयनाथ जी महाराज पीठाधीश्वर (महन्त) बने। उन्होंने अपनी युग-पुरुषोचित चेतना से श्री गोरक्षनाथ मन्दिर की परिसर भूमि का विस्तार तथा मन्दिर-मठ को अभिनव स्वरूप एवं युगोचित गौरव प्रदान किया। इस अवतारी शक्ति के ब्रह्मलीन होने पर उनके एकमात्र शिष्य, सुयोग्य उत्तराधिकारी, लोकसंग्रही भाव से जनोत्थान कार्यनिरत, प्रखर-विद्वान्, जनसेवी मनोवृत्ति और व्यापक-उदार दृष्टिकोण वाले महन्त अवेद्यनाथ जी गोरक्षपीठाधीश्वर हुए जिन्होंने अपने प्रातः स्मरणीय लोकविख्यात गुरु के पदचिह्नों का अनुसरण करते हुए न केवल उनकी प्रारम्भ की हुई योजनाओं को पूर्ण किया अपितु विविध क्षेत्रों में मन्दिर के धार्मिक, आध्यात्मिक एवं सेवा कार्य को बढ़ाया। श्रीगोरक्षनाथ मन्दिर का वर्तमान स्वरूप और सुचारु प्रबन्धन इनकी एकनिष्ठ तत्परता और उच्चकोटि की सुरुचि का परिचायक है। 12 सितम्बर 2014 को महन्त अवेद्यनाथ जी के ब्रह्मलीन हो जाने के बाद उनके सुयोग्य उत्तराधिकारी योगी आदित्यनाथ जी महाराज सम्प्रति गोरक्षपीठाधीश्वर पद को गौरवान्वित कर रहे हैं।

श्री गोरखनाथ मन्दिर के सामाजिक सरोकार

गोरखपुर महानगर में स्थित गोरखनाथ मन्दिर नाथपंथ के प्रवर्तक महायोगी गुरु श्री गोरक्षनाथ की तपःस्थली के रूप में प्रसिद्ध है। नाथपन्थ की परम्परा में गुरु श्री गोरक्षनाथ भगवान् शिव के अवतार माने गये हैं। नाथ-परम्परा उन्हें अजन्मा एवं अमर मानती है। भारतवर्ष के कोने-कोने में उनके अनुयायी आज भी पाये जाते हैं। भक्ति-आन्दोलन के पूर्व सबसे शक्तिशाली धार्मिक आन्दोलन श्री गोरक्षनाथ का ही था। भारतवर्ष की ऐसी कोई भाषा नहीं है जिसमें श्री गोरक्षनाथ सम्बन्धी कहानियाँ न पायी जाती हों।..... गोरक्षनाथ अपने युग के सबसे बड़े नेता थे। वस्तुतः भारत के

सामाजिक-धार्मिक इतिहास में महात्मा बुद्ध, आदि शंकराचार्य और महायोगी श्री गोरक्षनाथ ऐसे धार्मिक नेता हुए जिन्होंने अपने युग की धारा को ही मोड़ दिया। गोरखपुर नगर का नाम गुरु श्री गोरक्षनाथ के ही नाम पर पड़ा। महायोगी श्री गोरक्षनाथ और श्री गोरखनाथ मन्दिर का नेपाल के साथ अन्योन्याश्रित सम्बन्ध है। महायोगी गुरु गोरक्षनाथ ने नेपाल को आर्य अवलोकितेश्वर के प्रभाव से निकालकर शैव बनाया। उनकी कृपा से ही नेपाल में शाह राजवंश की प्रतिष्ठा हुई। नेपाल की मुद्राओं पर गुरु श्री गोरक्षनाथ जी का चित्र आज भी छपा होता है। नेपाल नरेश की खिचड़ी आज भी मकर संक्रान्ति पर्व पर श्री गोरखनाथ मन्दिर में चढ़ती है। ऐसे विश्वप्रसिद्ध सामाजिक क्रान्ति के नायक महायोगी गुरु श्री गोरक्षनाथ की तपस्थली श्री गोरखनाथ मन्दिर अपने सामाजिक सरोकारों के प्रति आज भी सचेष्ट है, संवेदनशील है और निरन्तर सक्रिय है।

श्री गोरखनाथ मन्दिर के महन्त महायोगी गुरु श्री गोरक्षनाथ के प्रतिनिधि होते हैं। श्री गोरक्षपीठ के पीठाधीश के रूप में उनका अभिषेक होता है। नाथपन्थ एवं श्री गोरखनाथ मन्दिर का संचालन वे गुरु श्री गोरक्षनाथ के प्रतिनिधि-रूप में करते हैं। आडम्बर एवं धार्मिक पाखण्ड के विरुद्ध अभ्युदित नाथपन्थ के योगी सामाजिक विभेदीकरण को अस्वीकार करते हैं। योगमार्ग के द्वारा मानव को मुक्ति का मार्ग दिखाने वाली नाथपन्थी परम्परा मानव दुःख के परित्राण हेतु सदैव संवेदनशील रही है। श्री गोरखनाथ मन्दिर के महन्त महायोगी गुरु श्री गोरक्षनाथ के योगमार्ग का अनुसरण करते हुए सदैव समाज के साथ जुड़े रहते हैं। सामाजिक जनजागरण नाथपन्थी योगियों एवं गोरखनाथ मन्दिर के श्रीमहन्तों की उपासना का ही एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा है। नाथपन्थी योगी भक्ति-आन्दोलन को प्रभावित करने से लेकर 1857 ई. के स्वाधीनता संग्राम में जनजागरण के सूत्रधार रहे हैं। गोरखनाथ मन्दिर के महन्त युगानुसार अपनी सामाजिक-राष्ट्रीय भूमिका का निर्वाह करते रहे हैं। बीसवीं शताब्दी के प्रथम चतुर्थांश तक (अर्थात् योगिराज बाबा गम्भीरनाथ जी के समय तक) श्री गोरखनाथ मन्दिर मुख्यतः योग-साधना के माध्यम से प्राणिमात्र की मुक्ति के मार्ग का पथ-प्रदर्शक बना रहा। यद्यपि योगिराज बाबा गम्भीरनाथ ने गोरखनाथ मन्दिर के महन्त पद को स्वीकार नहीं किया तथापि उनकी देख-रेख में गोरखनाथ मन्दिर की सम्पूर्ण व्यवस्था संचालित होती रही।

सामाजिक सरोकारों का बहुआयामी विस्तार

योगिराज बाबा गम्भीरनाथ जी के अहेतुक कृपापात्र महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज के समय से श्री गोरखनाथ मन्दिर की राष्ट्रीय-सामाजिक भूमिका का बहुआयामी विस्तार हुआ। उनके नेतृत्व में योग-अध्यात्म के साथ-साथ विविध सामाजिक सरोकारों से श्री गोरखनाथ मन्दिर जुड़ता गया।

शिक्षा-प्रसार

आजादी के संघर्ष के समय देश में आधुनिक शिक्षा के महत्त्व और उसकी उपादेयता को

समझते हुए, भारतीय संस्कृति के अनुरूप शिक्षा-संस्थानों की स्थापना का प्रयत्न कई महापुरुषों द्वारा प्रारम्भ हुआ। इस शृंखला में 1916 ईस्वी में महामना मदनमोहन मालवीय जी द्वारा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की नींव रखी गयी। उसी दिशा में गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त दिग्विजयनाथ जी ने गोरखपुर में 1932 ईस्वी में 'महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद्' की स्थापना की और भारत के आजाद होते-होते प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक के कई शिक्षा-संस्थान खड़े कर दिये। गोरखपुर नगर में विश्वविद्यालय की स्थापना (01 मई 1950 ई.) के पूर्व सेण्ट एण्ड्यूज कॉलेज के अतिरिक्त उच्च शिक्षा के दो केन्द्र और थे। ये थे- महाराणा प्रताप महाविद्यालय और महाराणा प्रताप महिला महाविद्यालय (दोनों का स्थापना वर्ष 1946 ई.)। दोनों मन्दिर द्वारा संस्थापित और संचालित थे। 1958 ई. में उक्त दोनों संस्थाओं को विश्वविद्यालय में विलय कर महन्त दिग्विजयनाथ जी ने गोरखपुर विश्वविद्यालय की स्थापना का मार्ग सुगम ही नहीं बना दिया प्रत्युत् उसकी श्रीवृद्धि में एक उल्लेखनीय योगदान भी दिया।

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् द्वारा आज विविध सेवाकेन्द्रों सहित प्राथमिक से लेकर उच्च शिक्षा तक कुल 44 संस्थाएँ संचालित हो रही हैं। इनमें तकनीकी, शिक्षण, प्रशिक्षण, संस्कृत महाविद्यालय, नर्सिंग जैसे शिक्षण संस्थान एवं चिकित्सालय शामिल हैं। मन्दिर द्वारा संचालित समस्त केन्द्रों पर सम्प्रति लगभग 50 हजार छात्र-छात्राएँ शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् द्वारा संचालित शिक्षण-प्रशिक्षण संस्थाओं में भारतीय संस्कृति का प्रसार, शिक्षा के साथ संस्कार, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का पाठ पढ़ाया जाना लक्षित है।

संस्थापक-सप्ताह समारोह (प्रत्येक वर्ष 4 से 10 दिसम्बर)

श्री गोरखनाथ मन्दिर द्वारा संचालित 'महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद्' द्वारा सन् 1981 ईस्वी से प्रत्येक वर्ष 4 से 10 दिसम्बर तक 'संस्थापक-सप्ताह समारोह' मनाया जाता है। संस्थापक-सप्ताह समारोह का उद्घाटन 4 दिसम्बर को भव्य शोभा-यात्रा के साथ होता है। इस शोभा-यात्रा में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् की संस्थाओं के साथ गोरखपुर महानगर की अनेक प्रमुख संस्थाएँ भी सम्मिलित होती हैं। लगभग दस हजार छात्र-छात्राओं की यह शोभा-यात्रा समाज को अनेक जन-समस्याओं के समाधान के प्रति जागरूक करती है। शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण, संस्कृति, राष्ट्रीय एकता के प्रति जन-जागरण के साथ-साथ कुरीतियों-रूढ़ियों, धार्मिक पाखण्डों-आडम्बरों के प्रति समाज को सचेत करते हुए विभिन्न झाँकियों सहित छात्र-छात्राएँ हाथों में स्लोगन-पट्टिकाएँ लिए नारों के समवेत स्वर-निनाद के साथ सड़कों पर पद-संचरण करते हैं। इस समारोह के अन्तर्गत सप्ताहपर्यन्त चलने वाली विविध प्रतियोगिताओं के लिए प्राथमिक से उच्च शिक्षा तक के विद्यार्थियों के तीन वर्ग (प्राथमिक, कनिष्ठ एवं वरिष्ठ) बनाये जाते हैं। अकादमिक से लेकर क्रीड़ा तक के 108 समूहों में कुल 36 प्रतियोगिताएँ सम्पादित की जाती हैं।

इस समारोह के समापन अवसर पर 10 दिसम्बर को मुख्य महोत्सव आयोजित किया जाता है, जिसमें शोभा-यात्रा में सम्मिलित सभी संस्थाओं की (कक्षा छ: से स्नातकोत्तर स्तर तक) सभी कक्षाओं के योग्यता क्रम में प्रथम दो स्थान प्राप्त विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है। पारितोषिक वितरण समारोह में ही सप्ताह भर चली सभी प्रतियोगिताओं के विजेता तथा प्रथम तीन स्थान प्राप्त विद्यार्थी पुरस्कृत किये जाते हैं। इस अवसर पर महायोगी गुरु श्री गोरक्षनाथ स्वर्ण पदक, योगिराज बाबा गम्भीरनाथ स्वर्ण पदक, महन्त दिग्विजयनाथ स्वर्ण पदक, महन्त अवेद्यनाथ स्वर्ण पदक, महाराणा मेवाड़ स्वर्ण पदक सहित ग्यारह विशिष्ट पुरस्कार भी प्रदान किये जाते हैं। निस्सन्देह रूप से विद्यार्थियों को केन्द्र में रखकर किया जाने वाला पूर्वी उत्तर प्रदेश का यह सबसे बड़ा एवं विशिष्ट सांस्कृतिक आयोजन है, जिसमें साठ-सत्तर हजार विद्यार्थी सम्मिलित होते हैं और लगभग सात सौ विद्यार्थी पुरस्कृत किये जाते हैं। पुरस्कार में अच्छी-खासी रकम खर्च की जाती है।

संस्कृत एवं संस्कृति का अनुरक्षण

संस्कृत एवं संस्कृति के अनुरक्षण एवं संवर्द्धन की दृष्टि से संस्कृत-शिक्षा के क्षेत्र में मन्दिर की भूमिका उल्लेखनीय है। गोरखनाथ मन्दिर-परिसर में सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय से सम्बद्ध महाविद्यालय संचालित है। मन्दिर-परिसर में ही संस्कृत विद्यालय का छात्रावास भी है जहाँ लगभग तीन सौ विद्यार्थी रहकर नि:शुल्क शिक्षा ग्रहण करते हैं। उनका समस्त व्यय-भार मन्दिर द्वारा वहन किया जाता है।

चिकित्सा-शिक्षा एवं चिकित्सालय

चिकित्सा एवं चिकित्सा-शिक्षा का प्रारम्भ गोरक्षनाथ आयुर्वेद महाविद्यालय एवं दिग्विजयनाथ आयुर्वेदिक चिकित्सालय की स्थापना के साथ हुआ। 1972 ई. में स्थापित यह आयुर्वेदिक कॉलेज 1984 ई. में बन्द हो गया किन्तु दिग्विजयनाथ आयुर्वेदिक धर्मार्थ चिकित्सालय चलता रहा। 2003 ईस्वी में गुरु श्री गोरक्षनाथ चिकित्सालय की स्थापना हुई और अत्याधुनिक संसाधनों से युक्त आज यह पूर्वी उत्तर प्रदेश का एक प्रतिष्ठित चिकित्सालय है, जहाँ न्यूनतम खर्चे में चिकित्सा सुविधाएँ उपलब्ध हैं। दिग्विजयनाथ आयुर्वेदिक चिकित्सालय भी उच्चीकृत हो चुका है।

श्री गोरखनाथ मन्दिर द्वारा संचालित यह चिकित्सालय पश्चिमी बिहार, पूर्वी उत्तर प्रदेश तथा नेपाल के तराई क्षेत्र की गरीब जनता के लिए वरदान सिद्ध हुआ है। दम तोड़ती सरकारी चिकित्सा सुविधा और लूट-खसोट पर आधारित महँगी एवं शुद्ध व्यावसायिक निजी चिकित्सा-व्यवस्था के बीच यह चिकित्सालय आज प्राणवायु प्रदान कर रहा है। स्वास्थ्य मेला के रूप में गाँव-गाँव में मन्दिर के चिकित्सा शिविर आयोजित होते हैं। सम्प्रति 16 विद्यालयों एवं अनेक गाँवों में 'महन्त अवेद्यनाथ स्मृति नि:शुल्क प्राथमिक उपचार केन्द्र' का संचालन किया जा रहा है। इस केन्द्र के माध्यम से रोगी

के घर पर स्वास्थ्य-सुविधा निःशुल्क रूप में सुलभ है। मन्दिर का यह प्रकल्प श्लाघनीय है।

'गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेस' नाम से एक मेडिकल कॉलेज खोलने की दिशा में मन्दिर ने अपने कदम बढ़ा दिये हैं। गुरु श्री गोरखनाथ स्कूल ऑफ नर्सिंग के अन्तर्गत ए.एन.एम., जी.एन.एम. की पढ़ाई के साथ सत्र 2016-2017 से बी.एस-सी. नर्सिंग पाठ्यक्रम प्रारम्भ हो गया है।

इस प्रकार आज चिकित्सा एवं चिकित्सा-शिक्षा के विविध आयामों पर मन्दिर कार्य कर रहा है। मन्दिर के इस सद्प्रयास से पूर्वी उत्तर प्रदेश की जनता एवं भावी पीढ़ी को स्वास्थ्य एवं शिक्षा की सम्यक सुविधा न्यूनतम खर्च पर उपलब्ध हो सकेगी।

भण्डारा

श्री गोरखनाथ मन्दिर के भण्डारे में दोपहर-रात्रि दोनों समय हजारों साधु-गरीब-निराश्रित प्रसाद रूप में भोजन पाते हैं। नाथपन्थ की मान्यता है कि महायोगी गुरु श्री गोरक्षनाथ का खप्पर न कभी खाली हुआ, न भरा। जितना चाहिए उतना मिलेगा। अत: भोजन सामग्री की आपूर्ति की कोई चिन्ता किये बिना मन्दिर का भण्डारा चलता रहता है। महायोगी श्री गोरक्षनाथ के प्रतिनिधिस्वरूप महन्त जी का आदेश है कि मन्दिर-परिसर एवं आस-पास कोई भूखा न सोए। भण्डारे में प्रसाद पाने के लिए किसी परिचय की जरूरत नहीं, कोई जाति-पाँति का निषेध नहीं, बस श्रद्धा-भाव से कोई भण्डारा तक पहुँचे। उसे प्रसाद रूप में भरपेट भोजन मिल जाएगा।

गो-संवर्द्धन

मन्दिर-परिसर में एक विस्तृत एवं व्यवस्थित गोशाला है जिसमें सैकड़ों गायों, बछड़ों और साँड़ों का पोषण होता है। ये पशु मन्दिर की शोभा हैं। गो-पालन एवं गो-भक्ति का संदेश यह मन्दिर अपने कर्मों से देता है। गोरखपुर प्रवास के समय सुबह-शाम महन्त जी महाराज का अपनी गौवों के बीच होना उनकी दिनचर्या का अनिवार्य हिस्सा है। गायों-बछड़ों के बीच उनकी उपस्थिति पशुओं के प्रति उनके प्रेम और उनके प्रति पशुओं के प्रेम की कहानी कहती है। दोनों का एक दूसरे के प्रति प्रेमभाव, लाड़-प्यार, मान-मनुहार के रूप में देखते बनता है। इन्हीं गौवों के दूध से निर्मित मट्ठा मन्दिर आने वाले भक्तों एवं अतिथियों को प्रसाद के रूप में उपलब्ध होता है। विशेष उत्सवों पर 'रोट' के अतिरिक्त 'मट्ठा' ही श्री गोरखनाथ मन्दिर का वास्तविक प्रसाद है, जो प्रकारान्तर से गो-सेवा - गो-भक्ति का संदेश देता है।

योग केन्द्र

श्री गोरखनाथ मन्दिर योग-प्रधान केन्द्र है। भारत में महर्षि पतंजलि और श्री गोरक्षनाथ योग

की दो समानान्तर धाराओं के जनक हैं। गोरक्षपीठ एक सिद्ध योगपीठ है। योग-दर्शन एवं उसके व्यावहारिक पक्ष पर निरन्तर क्रियाशील यह मन्दिर प्रतिदिन निःशुल्क योग केन्द्र संचालित करता है। मन्दिर की ओर से प्रतिवर्ष 'सप्तदिवसीय राष्ट्रीय योग-शिविर' आयोजित किया जाता है।

पुस्तकालय

योग-दर्शन, नाथपन्थ और भारतीय धर्म-साधना के प्रचार-प्रसार हेतु मन्दिर में एक समृद्ध पुस्तकालय है। इस पुस्तकालय में नाथपन्थ से सम्बन्धित अनेक पाण्डुलिपियाँ, मन्दिर से प्रकाशित 'योगवाणी' के सभी अंक, श्री गोरखनाथ मन्दिर के द्वारा प्रकाशित सभी ग्रन्थ तथा भारतीय धर्म-दर्शन से सम्बन्धित विविध साहित्य उपलब्ध हैं।

योगवाणी

धर्म, अध्यात्म, योग एवं संस्कृति केन्द्रित मासिक पत्रिका 'योगवाणी' का प्रकाशन 1972 ई. से निरन्तर मन्दिर के तत्वावधान में हो रहा है। पत्रिका के दर्जनों विशेषांक संग्रहणीय एवं लोकप्रिय हैं।

प्रकाशन

मन्दिर का अपना प्रकाशन अनुभाग है। इसके द्वारा अब तक लगभग तीन दर्जन महत्त्वपूर्ण पुस्तकों का प्रकाशन किया गया है। पुस्तकालय में पुस्तकें प्रतिदिन प्रात: 8 बजे से सायं 8 बजे तक विक्रय हेतु उपलब्ध रहती हैं।

पान्थिक एकता

श्री गोरखनाथ मन्दिर हिन्दू धर्म के वैविध्य का सम्मान करता है। यहाँ नाथपन्थ की परम्परा के साथ-साथ सनातन संस्कृति के सभी प्रमुख देवी-देवताओं के मन्दिर हैं। यहाँ की मूर्ति दीर्घा में नाथपन्थी योगियों के साथ समस्त भारतीय देवी-देवताओं एवं महापुरुषों की मूर्तियाँ प्रतिष्ठित हैं। यह मन्दिर भारतीय पान्थिक विविधताओं को एकात्मता के सूत्र में पिरोने का अन्यतम दायित्व निभाता है।

सामाजिक समरसता एवं स्पृश्यता निवारण

महायोगी श्री गोरक्षनाथ द्वारा प्रदत्त सामाजिक समरसता के महामंत्र का निर्वाह मन्दिर पूरी निष्ठा के साथ कर रहा है। जाति-पाँति आधारित भेद, छुआछूत, ऊँच-नीच जैसे विभेदीकरण के विरुद्ध जनजागरण का कार्य मन्दिर के नेतृत्व में बराबर जारी है। मन्दिर के पूर्व श्रीमहन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने सामाजिक समरसता के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी थी। उन्होंने गाँव-गाँव जाकर सहभोज किया, काशी के डोमराजा के घर साधु-संन्यासियों के साथ भोजन किया था। कई मन्दिरों के महन्त अथवा पुजारी के रूप में दलित को प्रतिष्ठित किया। महन्त जी ने अपना जीवन

सामाजिक समरसता के लिए समर्पित कर रखा था। आज भी मन्दिर द्वारा सामाजिक समरसता का यह अभियान जारी है।

राजनीतिक प्रतिनिधित्व

जनसेवा और लोक कल्याण के लिए श्री गोरखनाथ मन्दिर के महन्त राजनीति के दलदल में भी कूदने से नहीं हिचके। मान-अपमान, जय-पराजय की चिन्ता किये बिना गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज गोरखपुर संसदीय सीट से 1967 ई. में सांसद बने। सांसद रहते हुए ही वे ब्रह्मलीन भी हुए।

गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज मानीराम विधानसभा सीट से 1962 ई. से 1980 ई. तक चुने जाते रहे। मीनाक्षीपुरम् में हुए धर्मपरिवर्तन की घटना से विचलित महन्त अवेद्यनाथ जी राजनीति से संन्यास लेकर सामाजिक समरसता के महाभियान में लग गये। राजनीतिज्ञों द्वारा चुनाव जीतने की दी गयी चुनौती तथा धर्माचार्यों के आग्रह पर वे 1989 ई. में गोरखपुर संसदीय सीट से चुनाव लड़े और विजयी हुए। 1998 ई. में उन्होंने अपने उत्तराधिकारी योगी आदित्यनाथ जी को अपनी राजनीतिक विरासत भी सौंप दी। 1998 से लेकर 2017 तक गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त योगी आदित्यनाथ जी महाराज गोरखपुर लोकसभा सीट मे पूर्वांचल की सशक्त आवाज बनकर लोकसभा में जनता का प्रतिनिधित्व करते रहे। 2017 से उत्तर प्रदेश के यशस्वी मुख्यमंत्री के रुप में आमजन की आशा की किरण बनकर उभरे हैं। इस प्रकार राजनीतिक परिदृश्य पर भी मन्दिर का वर्चस्व बरकरार है और मन्दिर के प्रतिनिधि अपने दायित्व का निर्वहन जिम्मेदारी के साथ कर रहे हैं।

पर्व-त्योहार

श्री गोरखनाथ मन्दिर सामाजिक पर्वों-त्योहारों के माध्यम से भी समाज के साथ गहराई से जुड़ा रहता है। विजयदशमी, मकर संक्रान्ति और होली ऐसे विशेष पर्व हैं जिनके साथ परम्परागत रूप से मन्दिर का तादात्म्य स्थापित है। विजयदशमी पर्व पर शस्त्र-पूजन, गोरक्षपीठाधीश्वर का भक्तों द्वारा तिलक एवं भव्य शोभायात्रा, मानसरोवर पहुँचकर श्रीराम के राजतिलक में गोरक्षपीठाधीश्वर द्वारा श्रीराम की आरती, तत्पश्चात् मन्दिर में सहभोज का कार्यक्रम मन्दिर को समाज के साथ जोड़ता है।

मकर संक्रान्ति मन्दिर का प्रमुख पर्व है। महायोगी गुरु श्री गोरक्षनाथ का खप्पर भरने लाखों की संख्या में भक्त खिचड़ी लेकर पहुँचते हैं। इस अवसर पर श्री गोरखनाथ मन्दिर में एक माह का मेला लगता है।

होली पर्व में भी गोरक्षपीठाधीश्वर होली की पूर्व संध्या पर भगवान् नृसिंह की यात्रा एवं

होली के दिन घण्टाघर से निकलने वाले होलिकोत्सव के रथ पर सवार होकर जनता के बीच होली खेलने निकलते हैं। इसी तरह महाशिवरात्रि, नागपंचमी, कृष्ण जन्माष्टमी, छठ जैसे पर्वों पर भी मन्दिर के परम्परागत आयोजन में जन-सहभागिता बनी रहती है।

शिविर, संगोष्ठी, सम्मेलन

मन्दिर धर्म, दर्शन, अध्यात्म, योग, संस्कृति और सदाचार जैसे धार्मिक-सांस्कृतिक तथा अनेक समसामयिक अकादमिक विषयों पर वर्ष पर्यन्त व्याख्यान, शिविर, संगोष्ठी का आयोजन करता रहता है। इनमें भाद्रपद शुक्ल द्वादशी से आश्विन कृष्ण तृतीया तक चलने वाले साप्ताहिक श्रद्धांजलि समारोह का विशिष्ट स्थान है। सन् 1970 ईस्वी से अनवरत युगपुरुष महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज की स्मृति में आयोजित इस विशिष्ट समारोह के साथ राष्ट्र-सन्त महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज की पुण्य स्मृति भी जुड़ गयी। अब भाद्रपद शुक्ल त्रयोदशी से आश्विन कृष्ण चतुर्थी तक साप्ताहिक श्रद्धांजलि समारोह आयोजित किया जाने लगा है। सात दिन तक चलने वाला यह आयोजन धर्म-संसद तथा जन-संसद दोनों का प्रतिनिधित्व करता है। एक सत्र में जहाँ धार्मिक कथा के माध्यम से हजारों भक्तों-श्रोताओं के बीच धर्म-चर्चा होती है तो दूसरे सत्र में राष्ट्रीय एकता-अखण्डता से सम्बन्धित कतिपय समसामयिक ज्वलन्त मुद्दों के साथ-साथ सामाजिक समरसता, संस्कृत एवं संस्कृति, राष्ट्रभाषा, गो-संवर्द्धन, योग और सदाचार विषय पर देश के जाने-माने विद्वानों, धर्माचार्यों, सन्त-महात्माओं के विचार हजारों की संख्या में उपस्थित जनता को सुनने का अवसर मिलता है।

मन्दिर के तत्वावधान में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् की विभिन्न संस्थाओं में भी निरन्तर अकादमिक गतिविधियाँ संचालित होती हैं। इस प्रकार प्रत्येक वर्ष देश-दुनिया के धार्मिक-सामाजिक-राजनीतिक-आर्थिक-शैक्षिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्रों में श्री गोरखनाथ मन्दिर अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करता है। सबकी सुनता है - अपनी सुनाता है। भारतीय संस्कृति के संरक्षण एवं संवर्द्धन में स्वयं के साथ समाज को सतत सक्रिय रखने की प्रक्रिया से श्री गोरखनाथ मन्दिर की आज अलग पहचान बन चुकी है।

गोरखनाथ मन्दिर के श्रीमहन्तों ने अपने आध्यात्मिक साधना के साथ-साथ सामाजिक सरोकारों के बल पर ही श्री गोरक्षपीठ को अपार जन-समर्थन का केन्द्र बना दिया है। मन्दिर ने धर्म, अध्यात्म, योग, संस्कृति एवं राष्ट्रीयता के एकात्म भाव को जन-जन तक पहुँचाया है। यह मन्दिर आस्था का एक ऐसा केन्द्र है जिसकी सक्रियता शैक्षिक, चिकित्सकीय, सामाजिक-सांस्कृतिक और राजनीतिक सभी क्षेत्रों में बनी हुई है। यही कारण है कि इसे व्यापक जन-स्वीकृति प्राप्त है और लोक-आस्था का सर्वमान्य केन्द्र के रूप में आमजन के हृदय में रचा बसा है।

श्रीगोरखनाथ मन्दिर से प्रकाशित पुस्तकें एवं पत्रिकाएं

1. **गोरखदर्शन**
   अक्षय कुमार बनर्जी
2. **महन्त दिग्विजयनाथ स्मृति ग्रन्थ**
   डॉ. भगवती प्रसाद सिंह
3. **नाथ योग**
   अक्षय कुमार बनर्जी
4. **आदर्श योगी**
   रघुनाथ शुक्ल
5. **महायोगी गुरु गोरखनाथ एवं उनकी तपस्थली**
   रामलाल श्रीवास्तव
6. **गोरखबानी**
   रामलाल श्रीवास्तव
7. **गोरक्षसिद्धान्त संग्रह**
   रामलाल श्रीवास्तव
8. **श्री गोरक्ष वैदिक पूजा पद्धति**
   वेदाचार्य - रामानुज त्रिपाठी
9. **अमनस्क योग**
   रामलाल श्रीवास्तव
10. **गोरक्ष पद्धति**
    रामलाल श्रीवास्तव
11. **विवेक मार्तण्ड**
12. **महार्थ मञ्जरी**
13. **गोरखचरित्र**
    रामलाल श्रीवास्तव
14. **हठयोग प्रदीपिका**
    रामलाल श्रीवास्तव
15. **सिद्धसिद्धान्त पद्धति**
    रामलाल श्रीवास्तव
16. **योग रहस्य**
    अक्षय कुमार बनर्जी
17. **योग बीज**
    रामलाल श्रीवास्तव
18. **शाबर चिन्तामणि**
    नित्यनाथसिद्ध मत्स्येन्द्रनाथ
19. **योगी सम्प्रदाय (नित्कर्म संचय)**
20. **गोरख चालीसा**
21. **नाथसिद्ध चरितामृत**
    रामलाल श्रीवास्तव
22. **नाथपन्थ गढ़वाल के परिप्रेक्ष्य में**
    विष्णुदत्त कुकरेत्ती
23. **अमरकाया महायोगी गोरखनाथ**
    श्रीमती माया देवी
24. **युगपुरुष महन्त दिग्विजयनाथ ने कहा था**
    महन्त योगी आदित्यनाथ
25. **गोरखनाथ और नाथसिद्ध**
    डॉ. अनुज प्रताप सिंह
26. **गोरक्षदर्शन**
    विजयपाल सिंह
27. **तन प्रकाशश्रीश्री 108 बाबा चुन्नीनाथ जी**
28. **हठयोगी : स्वरूप एवं साधना**
    महन्त योगी आदित्यनाथ
29. **यौगिक षट्कर्म**
    महन्त योगी आदित्यनाथ
30. **नाथ सिद्धों का तात्त्विक विवेचन**
    अनुज प्रताप सिंह
31. **गोरखमहिमा**
    महेन्द्रनाथ गोस्वामी
32. **सुभाषित त्रिशती**
    रामलाल श्रीवास्तव
33. **राष्ट्रीयता के अनन्य साधक - महन्त अवेद्यनाथ (3 खण्ड में)**
    प्रो. सदानन्द गुप्त
34. **राजयोग : स्वरूप एवं साधना**
    महन्त योगी आदित्यनाथ
35. **Philosophy of Gorakhnath**
    A.K. Banerjee
36. **The Nath - Yogi Sampradaya and The Gorakhnath Temple**
37. **An Introduction to Nath-Yoga**
    A.K. Banerjee

महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ एवं नाथपंथ

महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ महाअवतारी महापुरुष थे। वे एक ऐसे योगी थे, जिनसे प्रभु श्रीराम और श्रीकृष्ण भी चमत्कृत हुए। कहा जाता है कि देवताओं और महापुरुषों के पास अलौकिक शक्तियाँ होती हैं, उनके लिए समय, दिशा, युग और स्थान का कोई महत्त्व नहीं होता। देवता किसी भी समय, किसी भी स्थान, किसी भी काल में उपस्थित हो सकते हैं, लेकिन क्या मनुष्य के लिए प्रत्येक युग में रहना सम्भव है? कहते हैं मानव शरीर नश्वर होता है, लेकिन क्या इस नश्वर शरीर के बावजूद वह मृत्यु को जीतकर हर युग में उपस्थित रह सकता है?

हठयोग के प्रवर्तक गुरु श्रीगोरक्षनाथ के विषय में ऐसा ही कहा जाता है कि मुनष्य स्वरूप (काया) में अवतरित होने के बावजूद उन्होंने चारों युगों में अपनी उपस्थिति और प्रतिष्ठा स्थापित की थी। नाथ परम्परा को पूर्ण व्यवस्थित और विस्तारित करने वाले गुरु श्रीगोरक्षनाथ मत्स्येन्द्रनाथ के शिष्य और स्वयं शिव के अवतार थे।

महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ के आविर्भाव और अवतार को लेकर स्वाभाविक मतान्तर हैं। विभिन्न परम्पराओं, अनुश्रुतियों, मान्यताओं और देश-विदेश के अनेक साहित्यों और साहित्यकारों एवं कथाओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि गुरु श्रीगोरक्षनाथ एक अवतारी महापुरुष थे। यह अवधारणा अनेक स्रोतों से स्पष्ट है। एक अनुश्रुति से यह पता चलता है कि एक बार गुरु श्रीगोरक्षनाथ समाधि में लीन थे जिसे देखकर माँ पार्वती ने भगवान् शिव से उनके बारे में पूछा, तो भगवान् शिव बोले- "मानव समाज को योग-शिक्षा देने के लिए मैंने ही गोरखनाथ के रूप में अवतार लिया है।" इसलिए श्रीगोरक्षनाथ को शिवावतारी कहा जाता है। इसी प्रकार 'श्री वल्लभदिग्विजय' ग्रन्थ में उल्लिखित है कि महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ सब समय यथास्थान सिद्धदेह में प्रकट होते रहे हैं, वे अमरकाय और अकाल हैं। कौलावली तंत्र, श्यामरहस्य, सुधाकर चन्द्रिका इत्यादि ग्रन्थों में भी गुरु श्रीगोरक्षनाथ को ईश्वर का अवतार कहा गया है। ऐसे ही गुरु श्रीगोरक्षनाथ जी की उत्पत्ति की एक कथा फैजुल्लारचित 'गोरखविजय' जैसे बँगला काव्य में उल्लिखित है कि शिव की नाभि से मत्स्येन्द्रनाथ, हाड़ से हाड़िया, कान मे कानपा (कनिपा) और जटा (ललाट) मे गुरु श्रीगोरक्षनाथ की उत्पत्ति हुई है।

गुरु श्रीगोरक्षनाथ जी के आविर्भाव के सम्बन्ध में एक विवरण से पता चलता है कि जब भगवान् विष्णु कमल में प्रकट हुए, तब गुरु श्रीगोरक्षनाथ पाताल में तपस्या कर रहे थे। भगवान् विष्णु चारों ओर जल की समस्या से चिंतित होकर गुरु श्रीगोरक्षनाथ जी के पास सहायता के लिए गये,

गुरु श्रीगोरक्षनाथ ने उन्हें धूनी से विभूति (भभूति) दी, जिससे पृथ्वी की रचना हुई और सृष्टि का कार्य सुगम हो सका। 'कल्पद्रुमतन्त्रान्तर्गत गोरक्षस्तोत्रराज' में योगेश्वर भगवान् कृष्ण ने महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ को प्रणाम करते हुए उनकी महिमा ज्ञापित की है कि "हे गोरखनाथ! आप निरंजन, निराकार, निर्विकल्प, निर्भय, अगोचर हैं। आप हठयोग के प्रवर्तक शिव हैं, आप सिद्धों में महासिद्ध हैं, ऋषियों में ऋषीश्वर हैं, योगियों में योगीन्द्र हैं।" इस प्रकार अनेक विशेषणों से गुरु श्रीगोरक्षनाथ जी का महिमा मण्डन किया गया है।

मान्यताओं और भारतीय एवं विदेशी विद्वानों के उद्धरणों, जिनमें प्रमुख रूप से जॉर्ज ग्रियर्सन और ब्रिग्स इत्यादि की मान्यता है कि गुरु श्रीगोरक्षनाथ का आविर्भाव सभी युगों में रहा है, तदनुसार सतयुग में गुरु श्रीगोरक्षनाथ ने पंजाब में तपस्या की, त्रेतायुग में उन्होंने उत्तर प्रदेश के गोरखपुर में रहकर साधना की। यह भूमि गुरु श्रीगोरक्षनाथ की योग साधना, तपस्या की रही है।

उनकी प्रतिष्ठा इसी से स्पष्ट है कि उन्हें भगवान् श्रीराम के राज्याभिषेक के लिए निमंत्रण भेजा गया था, लेकिन तपस्या में लीन होने के कारण स्वयं उपस्थित नहीं हो सके, परन्तु उन्होंने अपना आशीर्वाद भेजा था। यह भी उल्लेख मिला है कि भगवान् श्रीराम ने उनसे योग सम्बन्धी उपदेश ग्रहण किया था। द्वापर युग में द्वारिका (हरमुज) में अवतरित हुए जो गुरु श्रीगोरक्षनाथ की तपोस्थली रही है। इसी स्थान पर रुक्मिणी और भगवान् कृष्ण के विवाह में उत्पन्न हो रहे विघ्न को दूर करने के लिए देवताओं के आग्रह पर गुरु श्रीगोरक्षनाथ ने उपस्थित होकर विवाह सकुशल सम्पन्न करवाया था। इसी युग से सम्बन्धित एक उल्लेख यह भी मिलता है कि जब धर्मराज महाराज युधिष्ठिर द्वारा आयोजित राजसूय यज्ञ में महाबली भीम गुरु श्रीगोरक्षनाथ जी को आमंत्रित करने उनके तपोभूमि गोरखपुर आये तो उस समय भी वे तपस्या में लीन थे। उन्हें प्रतीक्षा करनी पड़ी। जहाँ पर महाबली भीम ने विश्राम किया, वहाँ सरोवर बन गया, जो आज भी श्रीगोरखनाथ मन्दिर के भव्य प्रांगण में अवस्थित है। इसी प्रकार कलियुग में सौराष्ट्र के काठियावाड़ जिले में गोरखमढ़ी गुरु श्रीगोरक्षनाथ का अवतार माना जाता है।

एक अन्य मान्यतानुसार गुरु श्री गोरक्षनाथ के गुरु मत्स्येन्द्रनाथ हनुमान जी की आज्ञानुसार त्रियाराज्य (वर्तमान में चीन के समीप) में गृहस्थ आश्रम का जीवन व्यतीत कर रहे थे। जब इस विषय में गुरु श्रीगोरक्षनाथ को पता लगा, वे त्रियाराज्य की ओर प्रस्थान किये। हनुमान जी ने गुरु श्रीगोरक्षनाथ का मार्ग रोक लिया। दोनो में युद्ध हुआ। हनुमान जी गुरु श्रीगोरक्षनाथ को पराजित नहीं कर पाये, तब हनुमान जी ने अपने असली रूप में प्रकट होकर वरदान दिया और मत्स्येन्द्र आज्ञामुक्त हुए। इसी स्थान पर हनुमान जी ने प्रहरी बनकर रहने का वचन दिया। इसी स्थान को सिद्धबली बाबा कहा जाता है, कौमुद द्वार भी।

गुरु श्रीगोरक्षनाथ के विषय में कुछ और उद्धरण मिलते हैं, जिनसे उनकी अलौकिक क्षमता

और सिद्ध पुरुष होने की प्रामाणिकता स्पष्ट होती है। कहा जाता है कि राजकुमार बप्पा रावल जब किशोरावस्था में अपने साथियों के साथ राजस्थान के जंगलों में शिकार के लिए गए थे, उस समय गुरु श्रीगोरक्षनाथ ध्यान में लीन थे। बप्पा रावल, वहीं रहकर गुरु श्रीगोरक्षनाथ की सेवा करना प्रारम्भ कर दिये। जब गुरु श्रीगोरक्षनाथ ध्यान से जागे तब प्रसन्न होकर उन्होंने बप्पा रावल को एक दिव्य तलवार दी, जिसके बल पर चित्तौड़ राज्य की स्थापना हुई। इसी प्रकार राजस्थान के महापुरुष गोगाजी का जन्म गुरु श्री गोरक्षनाथ के द्वारा दिये गये प्रसाद गुगल नामक फल के खाने से हुआ, जिन्होंने आगे चल कर राजस्थान में बहुत प्रतिष्ठा अर्जित की।

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि गुरु श्रीगोरक्षनाथ सभी युगों में उपस्थित रहे हैं। उनके काल खण्ड को लेकर विद्वानों में मत विभिन्नता दिखलाई पड़ती है। विद्वानों ने अपने-अपने स्रोतों से उनके आविर्भाव काल को निर्धारित करने का प्रयत्न किया है। ब्रिग्स गुरु श्रीगोरक्षनाथ का समय 11वीं ई. शती से पूर्व मानते हैं। मेवाड़ के महापुरुष बप्पा रावल से सम्बन्धित गोरक्ष का समय 8वीं ई. शती से 12वीं ई. शती के मध्य माना जाता है। नेपाली वंशावली पर्वतिया के अनुसार मत्स्येन्द्रनाथ और गुरु श्रीगोरक्षनाथ का मिलन नेपाल में नरदेव के समय 8वीं शती के मध्यकाल में हुआ था। डॉ. मोहन सिंह ने सम्भावना व्यक्त की है कि गुरु श्रीगोरक्षनाथ जी 9वीं शती में विद्यमान रहे हैं। प्रो. सिल्वा लेबी, डॉ. शहीदुल्ला जैसे विद्वानों के अनुसार नाथपंथ के संस्थापक सातवीं शताब्दी में अवश्य विद्यमान थे। कुछ विद्वान् भर्तृहरि से सम्बन्ध के आधार पर गुरु श्रीगोरक्षनाथ को छठीं शताब्दी का मानते हैं। एक परम्परा के अनुसार जीसस क्राइस्ट ने हिमालय में नाथ योगी गुरु श्री गोरक्षनाथ से योग शिक्षा ग्रहण की थी।

डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार मत्स्येन्द्रनाथ और जालंधरनाथ समसामयिक थे और दोनों के शिष्य क्रमशः गुरु श्री गोरक्षनाथ एवं कानुपा (कृष्णपाद) थे। इस आधार पर इनका आविर्भाव 9वीं ई. शती माना जाना चाहिए। डॉ. कल्याणी मल्लिक ने गुरु श्री गोरक्षनाथ का समय 10वीं ई. शती के पूर्व माना है। इसी प्रकार कश्मीरी आचार्य अभिनव गुप्त ने गुरु श्री गोरक्षनाथ का अविर्भाव काल दसवीं शताब्दी के अन्त और ग्यारहवीं शताब्दी के आरम्भ में माना है। राहुल सांकृत्यायन ने विभिन्न विवरणों के आधार पर निष्कर्ष निकाला है कि मत्स्येन्द्रनाथ 9वीं शताब्दी के मध्य या अंत भाग तक वर्तमान थे, अतः गुरु श्रीगोरक्षनाथ जी का भी आविर्भाव काल यही माना जाना चाहिए। चालुक्य राजा मूलराज से भी गुरु श्रीगोरक्षनाथ के सम्बन्धों का उल्लेख मिलता है। मूलराज ने राज्यभार संवत् 993 आषाढ़ी पूर्णिमा को ग्रहण किया था। विवरण यह भी मिलता है कि महाकवि कबीर और गुरुनानक जी के साथ भी गुरु श्रीगोरक्षनाथ जी का संवाद हुआ था। इस आधार पर 14वीं शताब्दी के आस-पास गुरु श्रीगोरक्षनाथ जी का आविर्भाव काल माना जाना चाहिए।

उपर्युक्त विवरणों और उल्लेखों के आधार पर गुरु श्रीगोरक्षनाथ जी का एक निश्चित

आविर्भाव काल सम्भव नहीं है। कारण भी है, क्योंकि गुरु श्रीगोरक्षनाथ जी की उपस्थिति सर्वकालिक एवं सर्वव्यापक मानी जाती है। वैसे भी ऐसे महापुरुष, दिव्य पुरुष प्रकृति को वशीभूत कर प्राकृतिक नियमों को अपने वश में कर लेते हैं। किसी भी रूप में कहीं भी उत्पन्न हो जाते हैं। वैसे भी गुरु श्री गोरक्षनाथ अवतारी महापुरुष हैं, इसलिए प्रारम्भ में ही कहा गया है कि उनकी उत्पत्ति को लेकर मतान्तर स्वाभाविक है, वे सर्वकालिक हैं, सर्वत्र व्याप्त हैं। उनकी महिमा और आशीर्वाद सभी युगों में समाज को मिलता रहा है।

गुरु श्री गोरक्षनाथ एवं नाथ साहित्य

महायोगी गोरक्षनाथ साक्षात् योगेश्वर भगवान् शिव के स्वरूप शिवगोरक्ष हैं। वे अमरकाय स्वसंवेद्य अलख निरंजन द्वैताद्वैत विवर्जित परमात्मतत्त्व में प्रतिष्ठित चारों युग में विद्यमानता की उपाधि से समलंकृत हैं।

गुरु गोरक्षनाथ के नाम से सम्बन्धित सम्प्रदाय का विशाल साहित्य संस्कृत तथा भारतवर्ष की अन्य प्रान्तीय भाषाओं में उपलब्ध है। संस्कृत में लिखे बहुत से ग्रन्थों के रचनाकार स्वयं गुरु गोरक्षनाथ माने जाते हैं। गुरु गोरक्षनाथ के नाम से छोटी-छोटी बहुत सी प्रेरणादायक तथा उपदेशात्मक कविताएँ भारतवर्ष में प्रचलित भाषाओं, जैसे- राजस्थानी, बँगला, हिन्दी के प्राचीनतम रूपों में पायी जाती हैं।

महायोगी गोरक्षनाथ के नाम से प्रचलित या उनके द्वारा रचित बतायी जाने वाली पुस्तकों के सन्दर्भ में विद्वानों के अलग-अलग मत हैं। प्राचीन धार्मिक साहित्य उनके पवित्र नाम से सम्बन्धित है, जो उनके द्वारा रचित है, या उपदेशों के आधार पर रचित होने के कारण उनके विचारों का सच्चा प्रतिनिधित्व करता है।

योगिराज गुरु गोरक्षनाथ द्वारा दिये गये उपदेश, जो भारत की विभिन्न भाषाओं में दिये गये हैं, गोरखबानी के नाम से संकलित हैं तथापि संस्कृत भाषा में रचित ग्रन्थ उनके चिरकालिक योगोपदेशामृत के युगों-युगों से सुरक्षित वाङ्मय है। हिन्दी के अतिरिक्त, बँगला, राजस्थानी, पंजाबी, मराठी, गुजराती एवं निकटवर्ती राष्ट्र नेपाल की भाषा नेपाली एवं तिब्बती भाषा में भी सिद्धों एवं नाथों का साहित्य प्राप्त होता है, जो यद्यपि गुरु गोरक्षनाथ द्वारा रचित नहीं है, किन्तु उनकी साधना एवं सिद्धान्तों को प्रदर्शित करता है।

गुरु गोरक्षनाथ द्वारा संस्कृत भाषा में रचित पुस्तकों में निम्नलिखित प्रमुख हैं-

1-गोरक्षशतक, 2-योगबीज, 3-सिद्धसिद्धान्तपद्धति, 4-विवेकमार्तण्ड, 5-अमरौघप्रबोध, 6-अमनस्कयोग, 7-गोरक्षपद्धति, 8-अमरौघशासन, 9-महार्थमंजरी

हिन्दी में गोरखनाथ के नाम से प्रचलित लगभग 40 रचनाओं का विवरण डॉ. पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल ने दिया है, जिसमें से 13 प्राचीन रचनाओं को उन्होंने 'गोरखबानी' नाम से सम्पादित किया है–

1–सबदी, 2–पद, 3–सिष्या दरसन, 4–प्राण संकली, 5–नरवैबोध, 6–आत्मबोध, 7–अभैमात्रा योग, 8–पन्द्रह तिथि, 9–सप्तवार, 10–मछींद्र गोरखबोध, 11–रोमावली, 12–ग्यान तिलक, 13–पंच मात्रा

महायोगी गुरु गोरक्षनाथ द्वारा रचित संस्कृत ग्रन्थों में उनके चिरकालिक योगोपदेशामृत संकलित हैं। उन्होंने इन ग्रन्थों में योग–साधना व आत्म साक्षात्कार पर विस्तृत प्रकाश डाला है।

सिद्धसिद्धान्त पद्धति

परम करुणामय शिव गोरक्ष महायोगी गोरक्षनाथ जी ने इस ग्रन्थ के माध्यम से अलख निरंजन के साक्षात्कार का मार्ग प्रशस्त किया है। उनके वचन उपदेश के रूप में उपलब्ध हैं। इन उपदेशों में कहा गया है कि अण्ड–पिण्ड का ज्ञान हो जाने पर उसकी आधारशिला पारमार्थिक सत्ता का जीवात्मा साधक को बोध हो जाना सरल होता है। इस ग्रन्थ में पिण्डोत्पत्ति, पिण्डविचार, पिण्ड संविति, पिण्डाधार, पिण्डपद समरसभाव और नित्यावधूतलक्षण आदि का निरूपण कर नित्यनिर्विकार परम सत्ता को ही जीवात्मा–योगसाधक के लिये प्रतिपाद्य स्वीकार कर उसके स्वरूप बोध की पद्धति सुनिश्चित की गयी है। गोरखनाथ जी ने कहा है कि हमारा शरीर भौतिक शरीर मात्र नहीं है, हमारा व्यष्टि शरीर एक आध्यात्मिक तत्त्व में अभिव्यक्त है। इस व्यष्टि शरीर में योगी, सकल चराचर को व्याप्त जानकर पिण्ड संविति होती है। पाञ्चभौतिक व्यष्टि शरीर में ही व्यावहारिक रूप से अनन्त शाश्वत ब्रह्माण्ड–व्यवस्था के दर्शन किये जा सकते हैं। गोरक्षनाथ जी की दृष्टि में परब्रह्म शिव परम पद, अपरम्पर, शून्य, निरंजन हैं।

अपरम्परं परमपदं शून्यं निरंजनं परमात्मेति।

(सिद्धसिद्धान्तपद्धति 1/16)

इस ग्रन्थ में हठयोग की साधन–प्रक्रिया का मर्म स्पष्ट किया गया है। योगी सम्प्रदाय में ही नहीं अपितु दार्शनिक विद्वानों में भी इस ग्रन्थ के प्रति समुचित आदर–भाव एवं श्रद्धा का दर्शन होता है।

योगबीज

महायोगी गुरु गोरक्षनाथ द्वारा रचित योगबीज, शिव–पार्वती संवाद के रूप में योगज्ञान सागर के मंथन का उपदेशामृत है। योगबीज, भगवान् गोरखनाथ की अनुभूति का योग वाङ्मय है। इसमें

नाथ सिद्धमत की योगसाधना, हठ योगाभ्यास का विवेचन किया गया है। इसमें जीवन्मुक्ति, अमरकायत्व तथा कैवल्यपद में प्रतिष्ठित होने का वर्णन किया गया है। इसमें कहा गया है कि -

योगात्परतरं पुण्यं योगात्परतरं सुखम्।
योगात्परतरं सूक्ष्मं योगमार्गात्परं न हि।।

(योगबीज -87)

न तो योग से श्रेष्ठ कोई पुण्य है, न कोई सुख है, न तो सूक्ष्म ज्ञान है, न साधना का कोई श्रेष्ठ मार्ग है। योगाग्नि में पका कर योगी, अपने शरीर को मृत्यु का ग्रास बनने से बचा लेता है। योग से रहित शरीरधारी का शरीर, मृत्यु के वश में हो जाता है। वह सिद्ध देह प्राप्त कर जीते जी मुक्त हो जाता है। योग से श्रेष्ठ मोक्ष प्रदान करने वाला दूसरा मार्ग नहीं है। जीवात्मा का परमात्मा से साक्षात्कार ही कैवल्यप्राप्ति है। योग मोक्ष का शास्त्र है, योग सार्वभौम और सर्वमान्य, सर्वग्राह्य जीवन विज्ञान है। यही योगबीज रचना का प्रतिपाद्य है।

गोरक्षशतक

मानव जीवन में योग साधना की उपयोगिता परम सिद्ध है। योग ही एक ऐसा निरपेक्ष साधन मार्ग है, जिसके आश्रय में सर्व-सामान्य को जीवन की व्यावहारिकता और अपने सच्चिदानन्द स्वरूप का ज्ञान सुलभ होता है। गोरक्षशतक के अध्ययन एवं तात्त्विक विवेचन से साधक का मन विषय भोगों के रसास्वाद से निवृत्त होकर परमात्मा के स्मरण ध्यान एवं चिन्तन में लीन हो जाता है। इस ग्रन्थ में अजपा गायत्री, प्राणायाम, कुण्डलिनी जागरणपूर्वक सहस्रार से द्रवित चन्द्रामृत पान, महामुद्रा, खेचरी मुद्रा, बन्धत्रय-जालन्धर आदि पर प्रकाश डाला गया है। इन ग्रन्थ में गोरक्षनाथ जी ने आन्तरिक शरीर विज्ञान को जानने पर विशेष बल दिया है। उनका मानना था कि यदि साधक शरीर में स्थित त्रयलक्ष्य, पंच आकाश, षोडशाधार, मन एवं दसों इन्द्रियों का सम्यक ज्ञान नहीं प्राप्त करता है तो उसके लिये प्राणायाम, मुद्राबन्ध, कुण्डलिनी जागरण, नादोपासना और मन के उन्मनीकरण में सफल हो पाना संभव नहीं है।

विवेकमार्तण्ड

इस ग्रन्थ की रचना के माध्यम से महायोगी गोरखनाथ ने षडंगयोग या हठयोग की साधन प्रक्रिया प्रस्तुत कर परब्रह्म अलख निरंजन के साक्षात्कार को सहज सुलभ कर दिया। विवेकमार्तण्ड में सात चक्र बताये गये हैं, पहला आधार चक्र, दूसरा स्वाधिष्ठान चक्र, तीसरा मणिपुर, चौथा अनाहत, पाँचवाँ विशुद्ध, छठाँ आज्ञा चक्र और सातवाँ महा चक्र है। शरीर में स्थित चक्रों का भेदन गुरु के मार्गदर्शन में ही करना चाहिये। जीवात्मा तब तक संसार बन्धन में रहता है, जब तक वह अनाहत चक्र में ध्यानस्थ होकर परमात्मा का साक्षात्कार नहीं कर लेता है। परब्रह्म शिव ब्रह्मात्मक

तेज का ध्यान कर तत्त्व बोध प्राप्त कर योगी, परम कैवल्य में स्थित हो जाता है। इस ग्रन्थ में गुरु गोरक्षनाथ जी ने अपना प्रकाण्ड योगानुभव व्यक्त करते हुए इसे परमार्थ स्वरूप भवभय दावाग्नि से छूट दिलाने वाला एवं स्वर्ग का सोपान बताया।

अमरौघप्रबोध

अमरौघप्रबोध, नाथ योग साधना की सिद्धि की तात्त्विक एवं प्रक्रियात्मक पृष्ठभूमि पर नाथयोग दर्शन के परिप्रेक्ष्य में एक असामान्य कृति है, जिसमें अलख निरंजन स्वसंवेद्य परमात्मा के साक्षात्कार का युक्तिपूर्वक विवेचन प्रतिपादित है। यह शिवशक्ति के सामरस्य के अमृतत्त्व में योगसाधक, नाथ योग साधना में सम्पूर्ण निष्णात सिद्ध पुरुष की स्वरूपावस्थिति, स्वरूपात्मक सम्प्रतिष्ठा का अक्षर-अमृत योग वाङ्मय है। वास्तव में प्राण अपान के ऐक्य द्वारा, हठयोग की साधना में कुण्डलिनी जागरण आदि की सिद्धि तथा तद्गत शिव से सामरस्य मात्र ही हठ योग की सिद्धि नहीं है, बल्कि बिन्दु रूप शिव, रजरूप शक्ति, योग भाषा में चन्दरूप बिन्दु तथा सूर्य रूप रज का सामरस्य ही नाथयोग प्रतिपादित राजयोग में हठयोग की भूमिका है, जिसमें विहार कर आत्म योगी, परमात्म योगी, अलख निरंजन हो जाता है। यही अमरौघप्रबोध का प्रतिपाद्य विषय है।

अमनस्कयोग

महायोगी गुरु गोरक्षनाथ ने साधना की सिद्धि के मार्ग में मन की अमनस्कता व उन्मनीकरण पर अत्यधिक बल दिया है। उनका कहना है कि शून्य, निरंजन, परमपद ही परम शिव अलख निरंजन परमात्मा है। इस परमपद की प्रतिष्ठा मन की उन्मनी स्थिति है। प्राणी मात्र को कायिक, वाचिक और मानसिक अन्धकार से बाहर निकालने तथा परमात्म स्वरूप में प्रतिष्ठित कर भवसागर से पार उतारने के लिये गुरु गोरक्षनाथ जी ने शाश्वत, सनातन, प्राणसंजीवनी महा ज्ञान स्वरूप योगामृत का प्रकाशन किया है। यह ग्रन्थ वामदेव एवं शिव के संवाद के रूप में है, जिसमें शिव ने वामदेव की जिज्ञासा के समाधान रूप में तारक योग के रहस्य, योगी गुरु के लक्षण और महत्त्व अथवा गुरुत्व योग साधना के स्थान, योगासन, क्रिया योग आदि का प्रतिपादन करते हुये मन के निरंजन परमात्म तत्त्व में विलीनीकरण अथवा लयसाधन का मर्म अत्यन्त सरल सुबोध भाषा में समझाया है। इसके दो खण्ड हैं। प्रथम खण्ड में साधना के स्तर पर बाह्याडम्बर और व्यर्थ की बाह्य साधना के प्रति उपेक्षात्मक दृष्टि को अपनाया गया है जबकि दूसरे खण्ड में तारक योग एवं अमनस्क योग में भेद का निरूपण किया गया है।

गोरक्षपद्धति

इस ग्रन्थ में नाथयोग की भाषा में स्वसंवेद्य परमतत्त्व के साक्षात्कार का उपाय वर्णित है। आधि दैविक, आधि भौतिक एवं आधि दैहिक, त्रय ताप का शमन चित्तविश्रान्ति से होता है, जिसकी

प्राप्ति के लिये यम-नियम-व्यतिरिक्त आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान एवं समाधि, इन षडंगयोग का प्रतिपादन गोरक्षपद्धति में किया गया है। हठयोग साधना की पूर्णता में षडंगयोगाभ्यास एक महत्तम विशिष्ट क्रम है। उसके बाद षट्चक्र निरूपण, षोडशाधार, अन्तर्बाह्य द्विलक्ष्य, पंचव्योम, मन एवं शरीर के नवद्वारों के सम्बन्ध का वर्णन किया गया है।

अमरौघशासन

गुरु गोरक्षनाथ द्वारा रचित इस ग्रन्थ में कण्ठचक्र तथा उससे ऊर्ध्वस्थ अनेक तालुचक्र, आज्ञाचक्र तथा सहस्रार चक्र और आकाश चक्र में कुण्डलिनी जागृतिपूर्वक अमृतपान के द्वारा राजयोग की सिद्धि का मार्ग निर्दिष्ट किया गया है। प्रारम्भ में वर्णित इस प्रक्रिया को सारणा, कर्मान्तर सारणा, शंखिनी सारणा, प्रति सारणा और महासारणा आदि मुद्राओं के षड्ध्वगा - छः प्रकार की प्रक्रियाओं अथवा साधना विधियों के रूप में निरूपित किया गया है एवं विस्तारपूर्वक हठयोग एवं राजयोग के समन्वय के माध्यम से निरुत्थानपूर्वक स्वरूपावस्थान रूप परम पद में सुप्रतिष्ठित होने का मार्ग प्रशस्त किया गया है।

ग्रन्थ के दूसरे भाग में नाथयोग प्रतिपादित मोक्ष के स्वरूप पर प्रकाश डालते हुए कहा गया है कि जब सहज समाधि के द्वारा मन से मन को ही प्रज्ञात्मा रूप में देखा जाता है, उसका साक्षात्कार किया जाता है, तब जो अवस्था प्राप्त होती है, वही मोक्ष है। मोक्ष की दशा में जीव विषय प्रपंच से पूर्णतया अतीत होकर जीवन्मुक्ति पद की प्राप्ति से योगसिद्ध हो जाता है। इस तरह की सिद्धि ही मोक्ष पद में प्रतिष्ठा का रसास्वादन है, यही स्वसंवेद्य तत्त्व साक्षात्कार है, जो नाथयोगसम्मत राजयोग के धरातल पर राजयोग की सिद्धि का परम-चरम फल है।

महार्थमंजरी

महायोगी गुरु गोरक्षनाथ जी ने इस ग्रन्थ के माध्यम से महार्थतत्त्व का स्वात्म बोध और लोक व्यवहार के संयमन के लिये सहज स्वरूपावस्थान परम पद प्राप्त करने का मार्ग प्रदर्शित किया है। इस ग्रन्थ में कृष्ण गुरुपद एवं अर्जुन शिष्यभाव अथवा प्रपत्ति के रूप में है। इसमें स्पष्ट किया गया है कि गुरु के अनुग्रह अथवा कृपा से ही शिष्य का समुद्धार होता है एवं उसके दुख की आत्यन्तिक निवृत्ति होकर स्वसंवेद्य पद की प्राप्ति होती है। परमात्म चिन्तन हमारे हृदय में स्थित स्पन्दित परमेश्वर विमर्श स्वरूप-भाव का विवेक है, परम ज्ञान है। जिस परमतत्त्व में मन पूर्ण विश्रान्ति का अनुभव करता है, वही हमारे कल्याण का श्रेयस्कर साधन है, जो सर्वथा अक्षरणीय है। यही योगज्ञानामृत के रसास्वादन की सम्पूर्ण वैद्यता है।

शिवयोगसागर

सौ श्लोकों की आकृति में रचित यह ग्रन्थ नाथयोग साधना पद्धति पर यथेष्ट प्रकाश डालता

है। गुरु गोरक्षनाथ जी ने इस ग्रन्थ में नाथज्योति के ध्यान का महत्त्व प्रकाशित करते हुए कहा है कि ज्योति का ध्यान कर योगी को सिद्धि प्राप्त कर लेनी चाहिये। यह समस्त प्राणियों के हृदय में प्रदीप्त अग्नि के समान प्रकाशित है। यह ज्योति अन्तरात्मा के नाम से प्रसिद्ध है और निस्सन्देह यह जगत् का नेत्र है। यह अन्तरात्मक ज्योति ही अपरम्पार सदाशिव है, परमपद है।

संस्कृत के अतिरिक्त अन्य भारतीय भाषाओं में भी गुरु गोरक्षनाथ जी की रचनाएँ मिलती हैं, जिनका संकलन गोरखवाणी के नाम से किया गया है, जिसके माध्यम से हमें उनके दार्शनिक विचार, सामाजिक व्यवस्था से सम्बन्धित विचार के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त होती है। आपकी रचनाओं को समकालीन अन्य महापुरुषों ने अपने ग्रन्थों में स्थान दिया है। आधुनिक हिन्दी भाषा के विकास में भी सिद्ध साहित्य का महत्त्वपूर्ण योगदान है।

नाथपंथ के प्रमुख तीर्थ-स्थल

भारतीय संस्कृति और धर्म दर्शन के इतिहास में नाथपंथ का विशेष महत्त्व रहा है। सनातन वैदिक हिन्दू समाज का अभिन्न अंग होने के कारण नाथ-सम्प्रदाय के योगी को भारतवर्ष के विभिन्न भागों और अंचलों में अत्यन्त प्रतिष्ठा प्राप्त है। नाथपंथ के तीर्थ और मठ-मन्दिर न केवल भारतवर्ष के कोने-कोने में प्रतिष्ठित हैं बल्कि भारत के बाहर नेपाल, तिब्बत, अफगानिस्तान, म्यांमार सहित एशिया के अन्य देशों तक विस्तारित हैं।

नाथपंथ के आध्यात्मिक स्थलों में अधिकतर स्थानों पर गुरु श्रीगोरक्षनाथ के मन्दिर स्थापित हैं। कुछ स्थानों पर श्रीनाथजी की चरणपादुकाएँ प्रतिष्ठित हैं, नाथ योगियों द्वारा विशेष रूप से शिव-मन्दिर, काली मन्दिर और भैरवजी के मन्दिर स्थापित कराए गए हैं। नाथ सम्प्रदाय के विश्वभर में स्थापित केन्द्रों में से प्रमुख स्थानों का उल्लेख महत्त्वपूर्ण है।

सिक्किम के नाथ तीर्थ

उत्तर भारत के सुदूर पर्वतश्रेणियों के मध्य में सिक्किम प्रदेश में चांगचिलिंग नामक स्थान पर गुरु श्रीगोरक्षनाथ जी का एक मन्दिर बना हुआ है। भूटान और सिक्किम एवं उसके निकटवर्ती क्षेत्रों से श्रद्धालु भारी संख्या में श्रीनाथजी का दर्शन करने के लिए इस मान्य पीठ में आते रहते हैं। मान्यता है कि गुरु श्रीगोरक्षनाथ ने अपने चरण-रज से इस क्षेत्र को पवित्र किया था।

कुमायूँ और गढ़वाल के नाथ तीर्थ

हरिद्वार और बदरीनाथ के मध्य पीपलकोटि से पहले श्रीनगर नाम का नगर स्थित है। यह स्थान गढ़वाल के राजाओं की राजधानी रहा है। नाथ तीर्थ को यहाँ योगपीठ के नाम से जाना जाता है। यहाँ पर चुनिया और मुनिया नाम के दो भैरव हैं, जो विशेष पूज्य माने जाते हैं। श्रीनगर के नीचे

एक गुफा में गुरु श्रीगोरक्षनाथ का मन्दिर बना हुआ है। इस मन्दिर में शिवलिंग स्थापित है। नाथ सम्प्रदाय की ही देखरेख में नैनीताल में नन्दादेवी का प्रसिद्ध मन्दिर भक्तों के आकर्षण का केन्द्र है। यहीं पर भैरवजी का भी एक मन्दिर बना है, जो नाथपंथ के योगियों, ऋषियों का बड़ा केन्द्र है। अल्मोड़ा में नाथपंथ के एक योगी श्री रामनाथ का भैरव मन्दिर है, जो तीन हजार वर्ष पुराना माना जाता है। इसमें बालनाथ जी की मूर्ति स्थापित है। मोरपंख से यहाँ श्रीनाथजी सम्मानित किए जाते हैं।

अल्मोड़ा में ही नाथपंथ का एक अन्य मन्दिर है, जिसमें भैरव जी और पार्वती की मूर्ति स्थापित है। यहाँ पर गुरु श्रीगोरक्षनाथ जी की मूर्ति प्रतिष्ठित है। नाथपंथ के योगियों का यह भी एक बड़ा केन्द्र है। यहीं पर कामा द्वारहाट के निकट कामा नाम का एक ग्राम है जहाँ पर श्रीनागनाथ जी महाराज का एक विशाल मन्दिर है, जिसकी नाथ योगियों में विशेष प्रतिष्ठा है।

देवलगढ़ के नाथ तीर्थ

श्रीनगर के पास गढ़वाल राजाओं की पुरानी राजधानी देवलगढ़ नाथपंथ के योगियों का प्रमुख केन्द्र रहा है। यहाँ गढ़वाल राजाओं की कुलदेवी एवं गिरिजा राजराजेश्वरी की मातृ मन्दिर में अन्य देवी-देवताओं के साथ-साथ श्रीनाथ जी की पादुकाएँ स्थापित हैं। इसमें से एक पादुका श्री गोरक्षनाथ जी की है। यहाँ अखण्ड उज्ज्वल ज्योति विद्यमान है। इसी मन्दिर के पास वीर पाद नामक नाथजी की सुन्दर कन्दरा है। परम्परानुसार छोटे बालक यहाँ पर सवा सेर अन्न भेंट करके श्रीनाथ जी की प्रार्थना करते हैं। यहीं पर स्थित नागनाथ जी के मन्दिर के पास देवदार का वृक्ष है, जिसकी सत्ययुग से ही पूजा होती चली आ रही है। नवरात्र में योगी यहाँ खड्ग धारण करते हैं।

हरिद्वार तथा ऋषिकेश के नाथ तीर्थ

यह स्थान प्राचीन काल से ही साधु-सन्तों, महात्माओं, ऋषियों एवं योगियों की साधना स्थली रही है। महामना मदन मोहन मालवीय मार्ग पर गुरु श्रीगोरक्षनाथ जी का एक अत्यन्त ही रमणीक और दिव्य मन्दिर प्रतिष्ठित है। यह मन्दिर इस दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि यहाँ पर अखिल भारत अवधूत भेष बारह पंथ योगी महासभा का प्रधान कार्यालय है। यहीं पर नाथ योगियों का उत्तर भारत का सबसे बड़ा पंचायती केन्द्र है। नाथ योगी इसे दलीचा भेष बारह पंथ भी कहते हैं। इसी मन्दिर में श्री भर्तृहरिनाथ जी की प्रसिद्ध गुफा स्थित है जिसमें प्राचीन काल में श्रीभर्तृहरि ने दीर्घकाल तक तपस्या और योग साधना की थी। जनश्रुति के अनुसार यह गुफा अन्दर ही अन्दर एक ओर नेपाल तक तथा दूसरी ओर श्री बदरीनाथ धाम तक गयी है। यहीं पर आई पंथियों और दरियानाथ पंथ के योगियों के और भी कई आश्रम बने हैं, जो योग प्रचार के प्रमुख केन्द्र के रूप में संचालित हैं।

ऋषिकेश में जंगल के पास नाथ सम्प्रदाय के कई प्रसिद्ध स्थान हैं, जहाँ पर योगीगण साधना

करते हैं। लक्ष्मण झूले के पास श्री महन्त घड़ीनाथ जी का एक आश्रम अवस्थित है। ऋषिकेश में जहाँ पर नाथ योगियों के आश्रम बने हैं वहीं त्रेतायुग में भगवान् राम ने रावण को मारने के कारण लगे ब्रह्म-हत्या के प्रायश्चित हेतु तपस्या की थी। यहीं पर श्रीगोरक्षनाथ जी ने प्रकट होकर श्री रामचन्द्र जी को उपदेश दिया और उनको पाप से मुक्त किया। यहाँ दरगाह, कोहाट, भीम-गोडाबाडा तथा शीतलनाथ जी की समाधि आदि स्थान भी नाथ योगियों का विशेष केन्द्र है।

जम्मू-कश्मीर में नाथ तीर्थ स्थल

श्रीनाथ योगियों ने अपने चरण रज से भारत के स्वाभिमान के प्रतीक जम्मू और कश्मीर प्रदेश को पवित्र किया है। कश्मीर के प्रसिद्ध अमरनाथ मन्दिर में एक गुफा जिसमें शिवलिंग का अवतार होता है वह नाथ योगियों के लिए विशेष महत्त्व रखता है। जम्मू में पीरखोह नाम का एक प्रसिद्ध स्थान है जहाँ नाथपंथ के श्री महन्त सन्ध्यानाथ जी महाराज की विशेष प्रतिष्ठा है। उधमपुर में सिद्ध बालकनाथ जी की समाधि और सिद्ध गौरिया मठ (जम्मू) नाथ सम्प्रदाय का विशेष केन्द्र है।

हिमाचल प्रदेश में नाथ तीर्थ स्थल

नाथपंथ के 51 सिद्ध पीठों में से एक ज्वालादेवी (कांगड़ा) मन्दिर योगी समुदाय का महत्त्वपूर्ण तीर्थ है। गुरु श्रीगोरक्षनाथ जी की चरण पादुका की पूजा यहाँ पर होती है। इस मन्दिर के भूगर्भ में अग्नि ज्वाला निरन्तर प्रज्वलित होती रहती है। यही पर गुरु श्रीगोरक्षनाथ की डिब्बिका (गोरख डिब्बी) भी स्थापित है। यहाँ का जल स्वभावत: गरम रहता है। त्रेतायुग में शिवावतार भगवान् श्रीगोरक्षनाथ स्वयं ज्वालादेवी से मिलने आए थे। यहाँ एक कथा प्रचलित है कि उस समय महादेवी जी ने श्रीनाथ जी का स्वागत किया और उनसे कुछ समय ठहरने का आग्रह किया। गुरु श्री गोरक्षनाथ जी ने उन्हें डिब्बी देते हुए कहा कि तुम चूल्हे पर अदहन चढ़ाओ मैं भिक्षाटन द्वारा खिचड़ी माँग कर लाता हूँ, तब भोजन ग्रहण करूँगा। वह अदहन आज भी उबल रहा है। गोरखनाथ जी वापस नहीं आए। ज्वालादेवी मन्दिर से कुछ दूरी पर योगीवाट नाम का स्थान है, जो भेष बारह पंथ के प्रवन्ध के अन्तर्गत है। वहीं मे कुछ दूरी पर मनकरण और मनोमाहेश्वर में नवनाथों की एक डिब्बिका है। वहाँ चौरासी सिद्धों की भी डिब्बिका है।

जम्मू के पूर्व में देविका नदी के तट पर गोरखपन्थी योगियों का एक सुप्रसिद्ध स्थान है, जिसे पुरमण्डल कहते हैं। देविका तट के पास मन्दिर में भैरव मूर्ति है जैसे गोरखनाथजी के मन्दिरों में प्राय: हुआ करती है। महाराजा रणवीर सिंह द्वारा बनवाए गए बहुत सारे शिवमन्दिरों के समूह को पुरमण्डल कहा जाता है।

पंजाब और हरियाणा के नाथ तीर्थ

पंजाब और हरियाणा प्रारम्भ से ही नाथ योगियों का मुख्य स्थान रहा है। हिमांचल प्रदेश की

सीमा से लगे गौरिया पीठ (जखवा) में भ्रमरनाथ नामक एक सिद्ध हुए। यहीं पर नाथ पादुकाओं की सेवा होती है। यहाँ से आठ किलोमीटर दूर धुआरायी नामक स्थान में एक महादेव जी का प्रसिद्ध मन्दिर है जिसे आगे चलकर जयनाथ योगीश्वर ने पुनर्स्थापित किया।

अमृतसर के पास मुण्डाल नामक स्थान पर सिद्ध ऊषानाथ जी की गुफा है। यहीं पर बलखबुखारे के राजा हाण्डीभड़ंग को गुरु श्रीगोरक्षनाथ जी ने दीक्षा देकर उन्हें योगी बना दिया। अमृतसर में सरगोधा नामक एक स्थान है जहाँ सिद्ध कायानाथ जी की समाधि बनी हुई है। यहीं पर श्रीभर्तृहरि नाथ जी ने विचारनाथ के नाम से तपस्या की थी। यहीं समीप में सिद्धकिरण नाम का स्थान है, जहाँ पर सिद्ध विचारनाथ जी झेलम के टीले को आधा काटकर चौदह भुवनों में भ्रमण करते रहे। बाद में गुरु श्रीगोरक्षनाथ जी के शांत करने पर उस टीले की स्थापना सरगोधा में की। अम्बाला जिले में काली स्थान, मौलिनाहन में नाथ योगियों का एक प्रसिद्ध स्थान है। अम्बाला शहर में दरगाह टिल्ला गुरु श्रीगोरक्षनाथ के नाम पर एक अन्य प्रमुख स्थान है। इसी शहर में किराना नामक एक स्थान जो नाथ योगियों के लिए महत्त्वपूर्ण माना जाता है। अमृतसर में दुर्ग्याना के पास भैरव मन्दिर योगियों का एक प्रसिद्ध स्थान है, जहाँ अखण्ड दीप जलता है और शिव मन्दिर भी स्थापित है। यहाँ पर भेष बारह पंथ योगियों की सभा होती है। फूलोंवाला चौक (अमृतसर) में नाथपंथ का भैरव मन्दिर है, जो दुर्ग्याना मन्दिर के ही प्रबन्ध में है। बुडाल में भी नाथ सिद्ध स्थान प्रतिष्ठित है। लाडवा नामक स्थान पर दो मठ हैं। इनमें से एक गुरु श्रीगोरक्षनाथ और दूसरा गूंगा मन्दिर है। गूंगा गुरु श्रीगोरक्षनाथ जी के शिष्य थे।

पंजाब में जखपर नाम का एक प्रसिद्ध तीर्थ स्थान है। यहाँ के योगी हिन्दू राजाओं और मुसलमान बादशाहों के श्रद्धास्पद और पूज्य रहे हैं। यहीं पर औरंगजेब जैसे कट्टर मुसलमान बादशाह ने भी नाथ योगियों से दीक्षा ली। इसके प्रमाण जखपर के मठ में सुरक्षित हैं। सिद्धबालक नाथ की गुफा गुरुदासपुर के टटाचल में, गुड़गाँव के दीनानगर में, रोहतक के बलम्बा में कर्नाल के सांगल में, हिसार के खौत इत्यादि में नाथ संप्रदाय के महत्त्वपूर्ण केन्द्र स्थापित हैं। सुल्तानपुर में गूंगा का प्रसिद्ध मन्दिर जिसमें गूंगा और उसके वजीर घोड़े पर चढ़े हुए हैं। गोगरी एक घोड़ी पर सवार है। यहीं नरसिंह सेला वीर और गुरु श्रीगोरक्षनाथ की मूर्ति स्थापित है। बतरा में गूंगा और गुरु श्रीगोरक्षनाथ का मन्दिर बना है। इस मन्दिर की स्थापना एक वृद्धपुरुष ने श्रीनाथ जी के आशीर्वाद से पुत्र प्राप्ति के उपरान्त बनवाया था। पालमपुर के पास गोगा-गूंगा, गोगरी और गुरु श्रीगोरक्षनाथ की मूर्तियाँ विशेष रूप से प्रतिष्ठित हैं। कपूरथला में सिद्ध योधानाथजी की धूनी प्रसिद्ध है।

स्यालकोट के नाथ तीर्थ स्थल

स्यालकोट सिद्धयोगी चौरंगीनाथ का जन्मस्थान है। राजा शालिवाहन की ज्येष्ठ रानी के पुत्र थे, चौरंगीनाथ जी। एक कथानुसार इनकी विमाता ने इन पर झूठे आरोप लगाकर राजा द्वारा इनके

हाथ-पैर कटवा कर कुएँ में डलवा दिया। गुरु श्री गोरक्षनाथ जी की कृपा ने उन्हें कुएँ से निकाला अपनी कृपा एवं आशीर्वाद से पूर्णावयवी बना दिया और पुनः हाथ पैर निकल आए। यह कुआँ आज भी घाव भरने की अद्भुत क्षमता रखता है। कुरुक्षेत्र के पास दीनानाथ जी की समाधि विद्यमान हैं।

अटक के नाथ तीर्थ स्थल

अटक नगर में विशाल किले के पास श्रीनाथ जी का मन्दिर एवं चरणपादुकाएँ स्थापित हैं। यह मन्दिर श्री रतननाथ जी द्वारा स्थापित किया गया। यहाँ से चौदह कोस उत्तर में गोरखपर्वत एवं गन्धगढ़ नामक तीर्थ है। यहाँ पर गुरु श्रीगोरक्षनाथ की चरण पादुकाएँ हैं। तीन कोस उत्तर में आकाश भैरव जी स्थापित हैं। यहाँ से पच्चीस कोस की दूरी पर छोड़ी चक्षु कटाक्षु नामक सुन्दर धाम है। वहाँ गुरु श्रीगोरक्षनाथ और उनकी सभा विराजमान है। अटक के पास मरवड़ड नामक स्थान पर महासिद्ध बुद्धनाथ हुए।

गोरक्षटिल्ला झेलम

सम्पूर्ण भारत में झेलम का गोरक्षटिल्ला नाथ-सम्प्रदाय का महत्त्वपूर्ण तीर्थ स्थान माना जाता है। मलिक मुहम्मद जायसी ने पद्मावत में इसका वर्णन किया है। लक्ष्मणावतार बालनाथ जी यहाँ के मुख्य आराध्य देवता हैं। यह स्थान नटेश्वरी योगियों का प्रधान केन्द्र है। गुरु श्रीगोरक्षनाथ ने त्रेतायुग में कुछ समय तक यहाँ रहकर साधना की थी। वे अपने शिष्य बालनाथ जी को यहाँ की व्यवस्था सौंप कर चले गए। इसीलिए इसको बालनाथ का टिल्ला भी कहा जाता है। यहाँ पर भर्तृहरि की एक गुफा है। यह निर्विवाद सत्य है कि यह गोरक्षटिल्ला नाथ योगियों का विशिष्ट केन्द्र है। मान्यता है कि यहाँ बने कुण्ड में स्नान करने से कुष्ठ रोग ठीक हो जाता है।

बोहर मठ

रोहतक में स्थल बोहर मठ नाथपंथ का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण तीर्थस्थल है। इस मठ के आदि संस्थापक महासिद्ध योगी चौरंगीनाथ थे। इस मठ के योगियों ने सुदूर अफगानिस्तान, तिब्बत तथा चीन इत्यादि देशों में नाथसम्प्रदाय का विस्तार किया। तिब्बत के तंजूर मठ तथा चीन के बौद्ध विहारों में नाथ योगियों की कीर्ति गाथाएँ आज भी सुरक्षित हैं। कालांतर में बोहर मन्दिर ध्वस्त हो गया जिसे आगे चलकर बाबा मस्तनाथ जी ने जिन्हें समृचा नाथ सम्प्रदाय (भेष) महासिद्ध गुरु श्रीगोरक्षनाथ जी का अवतार मानता है, पुनर्स्थापित किया। यहीं पर उनकी प्रतापी शिष्य-परम्परा आगे चलकर प्रतिस्थापित हुई।

दिल्ली के नाथ तीर्थ स्थल

राजधानी दिल्ली में भी नाथपंथ योगियों के कई प्रमुख केन्द्र स्थापित हैं जिनमें प्रमुख रूप

से सुभाषनगर में श्री वीर प्रेमनाथ जी का स्थान, कीर्तिनगर में श्रीमहन्त वर्षानाथ जी का स्थान, रमेशनगर में श्रीशिवनाथ योगाश्रम तथा गोरक्षनाथ मठ, तीस हजारी भैरवनाथ, रतननाथ मठ, झण्डेवाला मन्दिर नाथपंथ में प्रतिष्ठित तीर्थ स्थान हैं।

बिहार के प्रमुख नाथ तीर्थ स्थल

पटना के उत्तर गण्डक नदी के संगम पर गंगा के उस पार हरिहर क्षेत्र नाम का तीर्थ स्थान है। यहाँ गुरु श्री गोरखनाथ जी की दिव्य सभा विद्यमान है। यहाँ के काशी क्षेत्र में टिल्लक नाथ का तीर्थ सन्ध्यानाथ जी से सम्बन्धित स्थापित है। यहाँ काल भैरव, दण्डपाणि भैरवनाथ का प्रसिद्ध मन्दिर निर्मित है। फल्गू नदी के तट पर गया नगर में श्री नाथ जी का एक स्थान है। वहीं वैद्यनाथ धाम में योगवाटी में श्रीनाथ आसन और शिवलिंग स्थापित है। बक्सर में भी श्री शिव मन्दिर नाथ योगियों का प्रमुख स्थान माना जाता है।

राजस्थान के नाथ तीर्थ स्थल

राजस्थान के विभिन्न स्थानों में नाथ सम्प्रदाय से सम्बन्धित मठ और आश्रम बड़ी संख्या में हैं। उदयपुर से उत्तर पहाड़ी पर श्रीएकलिंग महादेव का मन्दिर स्थापित है। इस मन्दिर से गुरु श्रीगोरखनाथ जी का घनिष्ठ सम्बन्ध माना जाता है। शिव जी की मूर्ति चतुर्भुजी काले संगमरमर की बनी है जबकि मन्दिर श्वेत संगमरमर का है। पहले इस मन्दिर के पुजारी नाथ साधु थे, बाद में गोसाई इसके पुजारी बनने लगे। मेवाड़ के महाराणाओं का विश्वास रहा है कि जबतक उनके पास गुरु श्री गोरक्षनाथ द्वारा प्रदत्त खड्ग विद्यमान है, तबतक उनका यश और कीर्ति अक्षुण्ण है। जोधपुर में भी नाथ सम्प्रदाय के कई प्रसिद्ध तीर्थ स्थान हैं। जोधपुर में ही राताडुडाथबडा, योगी हरनाथ जी थावड़ा, रीहाँ (खास), पादव (खास), गोवर्धननाथ, इडुवा मेड़ता, डिडवाना मोरवांव, सैव, बडरवा, आसननाथ, श्रीनाथ जी का आसन, कडाडी पो. खारची, सेवानाथ जी का आसन खारची, सिद्ध, योधवनाथ जी का आसन खराची, भँपारी खारची निजाम स्थान, महन्त शम्भुनाथ जी रावल, नवलनाथ मठ इत्यादि महत्त्वपूर्ण स्थान नाम सम्प्रदाय के पवित्र तीर्थ स्थल हैं।

बाड़मेर जिले के शिव तहसील में शिव मन्दिर एवं श्री गोरखनाथ जी का मठ अत्यन्त प्रतिष्ठित है। चित्तौड़ जिले के प्रतापगढ़ से पन्द्रह किमी. दूर अरुणोद के समीप श्रीगौतमनाथ जी का मठ तथा नाथ सिद्धों की समाधिस्थल स्थापित है। रत्ना सागर के किनारे कालभैरव मठ धार नगर में नाथपंथ योगियों की तपस्थली है। माउण्ट आबू स्थित अनेक श्रीनाथ सिद्ध मन्दिर और मठ भी अत्यन्त प्रतिष्ठित हैं। चुरु जनपद स्थित सीधमुख स्थान नाथपंथ का पुण्यक्षेत्र माना जाता है। यहाँ पर महायोगी गुरु गोरखनाथ ने अपने चौदह सौ शिष्यों के साथ तपस्या की थी।

श्री गोरक्षनाथ मन्दिर के आधुनिक शिल्पी
योगिराज बाबा गम्भीरनाथ जी महाराज

योगिराज बाबा गम्भीरनाथजी सिद्ध पुरुष थे। उन्होंने हठयोग, लययोग, मंत्रयोग और राजयोग के क्षेत्र में सिद्धि प्राप्त की थी। उन्होंने शिवगोरक्ष महायोगी गोरखनाथजी की वाणी से आध्यात्मिक जीवन और साधना की प्रेरणा प्राप्त की कि अहंकार तोड़ना चाहिए, नष्ट कर देना चाहिए। सद्गुरु की खोज करनी चाहिए। योगमार्ग की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। बार-बार मनुष्य का जन्म नहीं मिलता, इसलिए सिद्ध पुरुष का सत्संग करना चाहिए-

आप भाँजिबा सतगुर षोजिबा। जोगपंथ न करिबा हेला।
फिरि फिरि मनिषा जनम न पाइबा। करिलै सिध पुरिस सूं मेला।

(गोरखबानी सबदी 203)

नाथयोगपरम्परा में इधर सात-आठ सौ वर्षों में उनके ऐसे योगी का दर्शन प्राय: नहीं हुआ था। निस्सन्देह योगिराज महात्मा गम्भीरनाथ पतंजलि और गोरखनाथजी के समन्वयात्मक संस्करण थे। ऋषियों और सिद्धियों ने उनके चरणचिन्तन को अपना सौभाग्य-सिन्दूर समझा। वे शान्ति और गम्भीरता के उज्ज्वलतम रूप थे। बड़े-बड़े संतों, महात्माओं और योगियों ने उनके चरणों में अपनी श्रद्धा समर्पित कर मोक्ष और आत्मकल्याण का विधान प्राप्त किया था। हिमालय से कन्या अन्तरीप तक के भूमिभाग में बीसवीं शताब्दी में इतने बड़े योगी का दर्शन दुर्लभ था। उन्होंने मानवता को योगशक्ति से सम्पन्न किया। उन्होंने योगब्रह्म शिव का साक्षात्कार लाभ किया। भारत के प्राय: समस्त तीर्थों में असंख्य लोगों को अपनी चरणधूलि प्रदान कर योगिराज गम्भीरनाथ ने उनकी (तीर्थों की) महिमा में विशेष अभिवृद्धि की। माना, योगिराज का प्राकट्य उस समय हुआ था, जब भारत विदेशी शक्ति की अधीनता में था, पर योगिराज गम्भीरनाथ के लिए भौतिक जगत् की पराधीनता का कोई महत्त्व ही नहीं था। वे तो जागतिक प्रपंच से अतीत थे। वे रहस्यपूर्ण ढंग से आध्यात्मिक क्रान्ति का सृजन कर रहे थे। विदेशी शासन को निकाल कर बाहर करने के लिये बंगाल तथा अन्य प्रान्तों में सशस्त्र राजक्रान्ति की योजना कार्यरूप में परिणत हो रही थी। महात्मा गम्भीरनाथजी ने राजनीतिक क्रान्तिकारियों की आध्यात्मिक पिपासा तृप्त की। अगणित बंगीय युवकों ने उनके पथ-प्रदर्शन में गम्भीर, अखण्ड और शाश्वत स्वतन्त्रा-ज्योति-आत्मशक्ति का दर्शन किया।

योगिराज बाबा गम्भीरनाथ ने सिद्धयोगपीठ-गोरखनाथजी की तपोभूमि गोरखपुर को अपनी तपस्या से अक्षय समृद्धि प्रदान की। वे निरंतर योगस्थ थे। गीता के योगसिद्धान्त में बड़ा विश्वास

रखते थे। वे अन्तरात्मा में स्वस्थ थे। वे अपने समय के सर्वश्रेष्ठ योगी थे। उनके समकालीन महात्मा विजयकृष्ण गोस्वामी की मान्यता थी कि हिमालय के देश में-भारत देश में उनके ऐसा योगी कोई दूसरा नहीं है। महात्मा विजयकृष्णजी उनकी परम योगविभूति से प्रभावित थे। महात्मा गम्भीरनाथ की योग-साधना शैव दर्शन के सिद्धान्त की प्रतीक थी। उन्होंने द्वैताद्वैत-विवर्जित परमेश्वर अलख निरंजन शिव की उपासना की। शैव योगी होते हुए भी शुद्धसच्चिदानन्द तत्त्व के निरपेक्ष द्रष्टा थे। उनका योग गोरखनाथजी की योगपद्धति का अनुगामी था। महात्मा गम्भीरनाथ ने गोरखनाथजी की नाथयोग-साधना-पद्धति का बीसवीं शताब्दी में पूर्ण प्रतिनिधित्व किया और आजीवन अपने साम्प्रदायिक-नाथयोग-परम्परागत सिद्धान्त पर अडिग रहकर आत्मसाक्षात्कार प्राप्त किया। उन्होंने योग और ज्ञान का समन्वय किया।

योगिराज गम्भीरनाथ जी के पूर्वाश्रम के सम्बन्ध में कुछ भी निश्चित रूप से कहना या लिखना आसान नहीं है। उनका जन्म विक्रमीय उन्नीसवीं शताब्दी के चौथे चरण में कश्मीर राज्य (प्रदेश) के एक गाँव में समृद्ध परिवार में हुआ था। उनकी शिक्षा-दीक्षा साधारण ढंग की थी। बचपन से ही उनके जीवन में योगाभ्यास के साम्राज्य में प्रवेश करने के पहले विषय-सुख की सुविधा उपलब्ध थी, पर उनका ध्यान उसकी ओर तनिक भी नहीं था। पूर्वाश्रम के सम्बन्ध में वे पूछने पर कह दिया करते थे कि प्रपंच से क्या होगा। उनकी सांसारिक पदार्थों में तनिक भी आस्था नहीं थी। धन, परिवार आदि से वे स्वाभाविक रूप से विरक्त थे। जब गम्भीरनाथजी युवावस्था में प्रवेश कर रहे थे, उन्हें सूचना मिली कि गाँव में एक योगी का आगमन हुआ है। योगी ने श्मशान में अपना निवास चुना था। वे योगी से श्मशान में मिलने गये। उन्होंने बड़ी श्रद्धा से कहा कि महाराज! घर पर मेरा मन नहीं लगता है। संसार के विषय-भोग मुझे काट खाते हैं। मैं योगाभ्यास करना चाहता हूँ। योगी नाथ-सम्प्रदाय के थे। उन्होंने गम्भीरनाथ से कहा कि 'तुम गोरखपुर जाकर गोरखनाथ मठ के महन्त योगी बाबा गोपालनाथजी महाराज से योगदीक्षा लो। मैं तुम्हारी महत्त्वाकांक्षा से बहुत प्रसन्न हूँ। तुम उच्चकोटि के योगी होगे।'

गम्भीरनाथजी योगी के आदेश से गोरखपुर के लिए चल पड़े। वे गोरखपुर मठ में आये। लोग उन्हें देखकर आश्चर्यचकित हो गये। उनके पास पर्याप्त रुपये थे, उन्होंने अच्छे से अच्छा रेशमी कपड़ा पहन रखा था। वे देखने में बड़े सभ्य, सौम्य और सुन्दर थे, महन्त गोपालनाथजी से मिलने पर उनके चरणों में उन्होंने आत्मसमर्पण कर दिया। गोपालनाथजी महाराज ने नाथसम्प्रदाय के योग-मार्ग में उन्हें दीक्षित कर लिया। राजकीय वेष का परित्याग कर गम्भीरनाथजी ने कौपीन धारण कर योगसाधना के निष्कंटक राज्य में प्रवेश किया। गोपालनाथजी महाराज ने उनकी शान्त मुद्रा से प्रसन्न होकर 'गम्भीरनाथ' नाम प्रदान किया। निस्संदेह वे गम्भीरता के परम दिव्य सजीव समुद्र ही थे। बाबा गोपालनाथ जी की महती पुण्यमयी कृपा-दृष्टि प्राप्त कर, मठ में निवास कर वे योगाभ्यास करने लगे। उनकी गुरुनिष्ठा उच्चकोटि की थी। वे गुरु की प्रत्येक आज्ञा का पालन करते थे। उन्होंने

बड़ी तत्परता और तपस्या से अपने आध्यात्मिक उत्तरदायित्व का निर्वाह किया। वे मौन रहा करते थे। सत्य के चिन्तन और मठ के आवश्यक कार्यों के समीचीन सम्पादन में लगे रहते थे। बाबा गोपालनाथ ने धीरे-धीरे उनको मठ के उपास्य की पूजा-अर्चा में नियुक्त करना आरम्भ किया। बाबा गम्भीरनाथ की उपस्थिति से मठ में शान्ति साकार हो उठी। उन्हें गुरु ने प्रसन्न होकर पुजारी का कार्यभार सौंपा। इस प्रकार योगी गम्भीरनाथ के तपोमय साधना-जीवन में कर्मयोग और भक्तियोग के उदय ने ज्ञानयोग-परक अन्तरस्थ ज्योति के दर्शन का पथ प्रशस्त कर दिया। बाबा गोपालनाथजी की प्रसन्नता और कृपा से अभिभूत गम्भीरनाथ की प्रारम्भिक योग-माधना पर देवीपाटन के योगी शिवनाथ का भी अमित प्रभाव था।

गम्भीरनाथजी ने योग-साधना के लिए काशी की पैदल यात्रा की। वे वन मार्ग से बिना भूख-प्यास की चिन्ता किये चले जा रहे थे। उनका प्रभु की कृपा पर दृढ़ विश्वास था। तीसरे दिन वे भूख से नितान्त परिश्रान्त हो गये पर शेष शारीरिक शक्ति पर निर्भर होकर वे पुनीत महातीर्थ की ओर बढ़ते जा रहे थे। रास्ते में एक परिचित ब्राह्मण से उनकी भेंट हुई। वह उन्हें देखते ही सारी स्थिति समझ गया। निकटस्थ गाँव से दूध-चूरा लाकर भोजन करने का आग्रह किया। वह जानता था कि योगी गम्भीरनाथजी ने भोजन के सम्बन्ध में रास्ते में किसी से कुछ बातचीत न की होगी। गम्भीरनाथजी ने भगवत्कृपा समझकर भोजन कर लिया। काशी पहुँचने पर उन्होंने कुछ दिनों तक गंगाजी के एक निर्जन तटीय रमणीय स्थान में रहकर योगाभ्यास आरम्भ किया। वे नित्य गंगाजी में स्नान कर भगवान् विश्वनाथ का दर्शन करने जाया करते थे। भीड़ से बहुत दूर रहते थे, इसलिए भिक्षा माँगने नहीं जाते थे। उनकी त्यागमयी वृत्ति ने साधकों और जिज्ञासुओं को अपनी ओर खींच लिया। योगी गम्भीरनाथजी ने जनसम्पर्क को साधना का बहुत बड़ा विघ्न समझा। उन्होंने काशी को छोड़ दिया। वे प्रयाग आ गये। प्रयाग में गंगा-यमुना के पुनीत संगम की दिव्यता से सम्प्लावित झूसी तट की एक गुफा में रहकर वे तप करने लगे। दैवयोग से मुकुटनाथ नाम के एक नाथ-योगी ने उनके भोजन तथा सेवा आदि की व्यवस्था की। बाबा गम्भीरनाथजी अनवरत रात-दिन उस गुफा में योगाभ्यास करने लगे। इस प्रकार वे प्रयाग में तीन साल तक रह गये। उनका आध्यात्मिक स्तर उच्च तल पर पहुँच गया। उन्होंने महती योगशक्ति प्राप्त की। महायोगी गोरखनाथ के सिद्धान्त में उन्हें आत्मप्रकाश मिला-

ग्यान सरीखा गुरु न मिलिया चित्त सरीखा चेला।
मन सरीखा मेलू न मिलिया तीथैं गोरख फिरै अकेला।।

(गोरखबानी सबदी 189)

'ज्ञान के समान गुरु नहीं मिला, न चित्त के समान चेला मिला। इसलिए गोरख अकेला फिरते हैं।'-गम्भीरनाथजी की स्मृति में यह कथन ज्योतित हो उठा। उन्होंने परिव्राजक-जीवन में प्रवेश

किया। उन्होंने पूरे छः साल तक परिव्राजक जीवन का रसास्वादन किया। वे प्रायः पैदल भ्रमण करते थे। उन्होंने कैलाश, मानसरोवर, अमरनाथ, द्वारिका, गंगासागर तथा रामेश्वरम् आदि तीर्थों की परिक्रमा चार साल में पूरी की और अमरकण्टक पर अधिक समय तक रह गये। नर्मदा-परिक्रमा के समय उनके जीवन में एक विलक्षण घटना घटी थी। यह उनकी अपार योगशक्ति और तपस्या की परिचायिका है। गम्भीरनाथजी नर्मदा की परिक्रमा कर रहे थे। एक तटीय रम्य स्थान में उनका मन लग गया। वहाँ एक कुटी थी। गम्भीरनाथजी ने उस कुटी में निवास किया। पहले दिन उन्हें एक बहुत बड़ा साँप दीख पड़ा। वह उनका दर्शन कर अदृश्य हो गया। दूसरे और तीसरे दिन भी प्रभातकाल में गम्भीरनाथजी ने उसको देखा। उन्होंने इस ओर कुछ ध्यान नहीं दिया। वे अपने गम्भीर चिन्तन में तल्लीन थे। तीसरे दिन कुटी में रहने वाला एक ब्रह्मचारी, जो कुछ दिनों के लिए बाहर था, आ गया। वह उसी कुटी में बारह साल से निवास कर रहा था। वह गम्भीरनाथ जी के आगमन से बहुत प्रसन्न हुआ, उसने आपबीती सुनायी कि मैं इस कुटी में बारह साल से निवास करता हूँ। इसी के निकट एक बहुत बड़े महात्मा सर्पवेष में रहते हैं, उन्हीं के दर्शन के लिए मैं ठहरा हूँ। योगिराज गम्भीरनाथजी ने सर्प-दर्शन की बात उससे कही। वह ब्रह्मचारी आश्चर्य-चकित हो गया। उसने उनसे कहा कि महाराज! आपका तपोबल स्तुत्य है। जिस कार्य को मैं बारह साल में भी न कर सका, वह बिना किसी प्रयास के आपने कर दिखाया। आप धन्य हैं कि सर्प-वेष में रहने वाले महात्मा ने तीन दिनों तक आप पर कृपा-दृष्टि की। गम्भीरनाथजी ने नर्मदा-परिक्रमा समाप्त की।

संवत् 1937 वि. में योगी गोपालनाथजी ने शिवधाम प्राप्त किया। गम्भीरनाथजी ने परिभ्रमण-काल में इस घटना को सुना। वे गुरु के प्रति आदर प्रकट करने के लिए गोरखपुर आये। तत्कालीन महन्त बलभद्रनाथजी के विशेष आग्रह पर वे कुछ दिनों तक मठ में रह गये। उसके बाद वे बिहार प्रान्त के गया जनपद के कपिलधारा स्थान में आकर तप करने लगे। गया नगर से थोड़ी दूर पर अत्यन्त शान्त, रमणीय, निर्जन कपिलधारा स्थान में गम्भीरनाथजी ने तब तक तप करने का निश्चय किया, जब तक अवधूत-अवस्था की प्राप्ति न हो जाती। अक्कू नाम के एक व्यक्ति ने उनके चरणों में श्रद्धा अर्पित की और उनके भोजन आदि की व्यवस्था तथा सेवा का सहज अधिकार प्राप्त कर लिया। योगिराज गम्भीरनाथजी के पास कौपीन, एक कम्बल और खर्पर के सिवाय कुछ भी नहीं था। कुछ दिनों के बाद नृपतिनाथ नाम के एक श्रद्धालु योगसाधक ने अक्कू का कार्य हल्का कर दिया। नृपतिनाथजी ने योगी गम्भीरनाथ की सेवा में बड़ी तत्परता दिखायी। योगिराज गम्भीरनाथ की प्रसिद्धि बड़ी तेजी से बढ़ने लगी। वे सदा शान्त चित्त से ध्यानस्थ रहा करते थे। मौन उनकी वाणी का अलंकार था। संकेत उनके भावों का प्रहरी था। निर्जनतामयी योगसाधना ही उनकी जीवन-संगिनी थी। प्रकृति की कमनीय कान्ति से सम्पन्न कपिलधारा पहाड़ी की दिव्यता उनकी योगलीला की रंगभूमि थी। रात में दूसरी पहाड़ियों पर तप करने वाले सिद्ध महापुरुष और योगीजन उनका दर्शन करने तथा सत्संग प्राप्त करने आया करते थे। गया के एक धनी पण्डा माधवलाल ने उनके आशीर्वाद

से एक गुफा का निर्माण कराया। योगी गम्भीरनाथजी उसी गुफा में प्रवेश कर तप करने लगे। दर्शकों और मिलने वालों की भीड़ अपने आप कम होने लगी। गुफा में कोई दूसरा व्यक्ति नहीं प्रवेश कर सकता था। वे केवल ढाई सौ ग्राम दूध नित्य लेते रहते थे। प्रत्येक मंगलवार को थोड़ी देर के लिए गुफा के बाहर आकर दर्शकों और भक्तों को अपने दर्शन से तृप्त करते थे। तीन वर्षों तक उन्होंने यही क्रम रखा। उसके बाद वे प्रत्येक पूर्णिमा और अमावस्या को गुफा के बाहर आते थे। बारह साल के कठिन योगाभ्यास के बाद उन्होंने इस नियम को भंग कर दिया। उसके बाद वे तीन मास तक गुफा से बाहर नहीं आये। श्रद्धालुओं की विकलता बढ़ने पर उन्होंने दर्शन दिया। इस प्रकार कपिलधारा में उन्होंने अवधूत-अवस्था की प्राप्ति कर ली। उनकी पवित्र उपस्थिति से उस तपोभूमि में सत्य, शान्ति, अहिंसा और दिव्यता का साम्राज्य स्थापित हो गया।

कपिलधारा आश्रम में एक बार रात को कुछ चोर आये। उन्होंने आश्रम पर पत्थरों के टुकड़े बरसाये। योगिराज एक कम्बल ओढ़ कर कुटी के बाहर लेटे हुए थे। पत्थर के एक टुकड़े से उन्हें थोड़ी सी चोट आ गयी। योगी नृपतिनाथ तथा दूसरे भक्तों ने चोरों का पीछा करना चाहा। गम्भीरनाथजी ने चोरों से कहा कि साधुओं को तंग नहीं करना चाहिए। उन्होंने बड़े प्रेम और मधुरता से कहा कि कुटी का दरवाजा खुला हुआ है, तुम भीतर जाकर जो कुछ भी आवश्यक समझो, ले लो। चोर आश्चर्यचकित हो गये। वे बाबा के चरण में नतमस्तक हो गये। चोरों ने कहा कि 'महाराज! हम गरीब हैं, हमारे परिवार वाले कई दिनों से भूखे मर रहे हैं।' बाबा ने कहा कि 'वत्स! मैं तुम्हारी विवशता समझता हूँ। तुम जब चाहो, कुटी से आकर भोजन ले जा सकते हो। तुम्हें कोई न रोकेगा।' चोरों ने अपनी आवश्यकता के अनुसार थोड़ा-बहुत सामान ले लिया। बाबा की चरणधूलि मस्तक पर चढ़ाकर चल पड़े। दूसरी बार आश्रम में आने पर उनके जीवन में बड़ा परिवर्तन देखा गया। वे चोर नहीं, सत्यवादी हो गये। बाबा गम्भीरनाथजी के आशीर्वाद के रूप में उन्होंने चावल, कम्बल आदि सामग्री प्राप्त कर ली। गम्भीरनाथजी की करुणा ने उनकी कृतज्ञता को श्रद्धा और भक्ति में रूपान्तरित कर दिया। बाबा प्रेम, माधुर्य, अहिंसा और शान्ति के साकार-सजीव विग्रह थे।

बाबा गम्भीरनाथजी सिद्ध पुरुष थे, पर वे सिद्धि और चमत्कारों के प्रयोग से बहुत दूर रहते थे। शान्ति को ही वे बहुत बड़े चमत्कार की वस्तु स्वीकार करते थे। निःस्पृहता और निष्कामता में उनकी चित्तवृत्ति सदा रमण करती रहती थी। परिव्राजककाल में महाराणा उदयपुर तथा महाराजा कश्मीर, अनेक राजाओं ने बड़ी चेष्टा की कि योगिराज की चरणधूलि राजप्रासाद में पड़ जाय पर ऐसा कभी सम्भव नहीं हो सका। एक बार तीर्थों का भ्रमण करते हुए वे उदयपुर गये। एक निर्जन एकान्त स्थान में मैदान में धूनी प्रज्वलित कर उन्होंने थोड़े समय के लिए निवास किया। उनके साथ में आठ-दस साधु पुरुष भी थे। एक दिन उस क्षेत्र में बड़े जोर की जलवृष्टि हुई। जिस स्थान में बाबा विराजमान थे, वहाँ वृष्टि नहीं हुई, बाबा खुले आसमान के नीचे निर्द्वन्द्व भगवान् के भजन में अपने शिष्यों के साथ तल्लीन थे। उनके दर्शन के लिए जनसमूह उमड़ पड़ा। यह समाचार जब

उदयपुर के महाराणा को विदित हुआ तो उन्होंने बाबा को राजमहल में पधार कर दर्शन देने की प्रार्थना उनके चरणों में निवेदित करायी। सारी चेष्टाएँ निष्फल हो गयीं। योगिराज ने राणा के महल में जाना अस्वीकार कर दिया। महाराणा दर्शन के लिए बड़े उत्सुक थे, वे स्वयं सेवोपयोगी श्रद्धामय उपहार लेकर योगिराज से मिलने चल पड़े। निष्किंचन संन्यासी के लिए राजदर्शन विहित नहीं है। महाराणा का आगमन सुनकर योगिराज गम्भीरनाथ ने अपना आसन समेट लिया और शिष्यों के साथ दूसरे स्थान के लिए प्रस्थान कर दिया।

बाबा के प्रसिद्ध सेवक माधवलाल पण्डा ने बड़ा प्रयत्न किया कि एक क्षण के लिए भी योगिराज मेरे घर पर पधारें, पर गम्भीरनाथजी अपने नियम पर अडिग रहे। एक बार उनका निजी सेवक, जो गया जनपद में तप करते समय महाराज की सेवा में समर्पित था, बीमार पड़ गया। उसका भाई मुन्नी दौड़ता हुआ बाबा के पास आया। उसने आँखों में आँसू भरकर कहा कि महाराज! अक्कू का अन्तिम समय है, उसे जीवन प्रदान कीजिए अथवा चलते समय उसे अपनी चरण-धूलि से आशीर्वाद दीजिए। वह आप की चरणधूलि के लिए विकल है। करुणा-समुद्र, परम शान्तिमय बाबा गम्भीरनाथ जी आसन से उठ बैठे। वे अक्कू के घर आये, उसका शरीर ठंडा हो रहा था। उसके प्राण निकलने वाले ही थे कि बाबा का दर्शन करते ही अक्कू की चेतना लौट आयी। बाबा ने उसे जीवन प्राण दिया। स्वस्थ होने पर वह बाबा की सेवा में संलग्न हो गया।

जिस समय योगिराज बाबा गम्भीरनाथजी गया जनपद की कपिलधारा पहाड़ी पर तप कर रहे थे, उसी समय महात्मा विजयकृष्ण गोस्वामी आकाश गंगा पहाड़ी पर अपने कुछ भक्तों के साथ साधना में तल्लीन थे। वे बाबा गम्भीरनाथजी की योगशक्ति से बहुत प्रभावित थे। उनके चरणों में गोस्वामी महोदय की अडिग श्रद्धा थी। वे कभी-कभी योगिराज का दर्शन करने कपिलधारा आया करते थे और प्रायः आधीरात के समय पधार कर दो एक घंटे उनके सम्पर्क में रहकर सत्संग और भजन की सात्विकता और मधुरता का आस्वादन करते थे। योगिराज गम्भीरनाथ आधीरात में सितार बजाकर भजन गाया करते थे। उनकी संगीत-माधुरी और सितारवादनकला से जीव-जन्तु दिव्य प्रेमोन्माद में पूर्ण अहिंसक बनकर उनकी चरण-धूलि से अपने-आप को परम तृप्त मानते थे। कभी-कभी कपिलधारा पहाड़ी की चोटी पर गम्भीरनाथजी के सितार और भजन से आकृष्ट होकर आधीरात में प्रेमोन्माद में विह्वल होकर महात्मा विजयकृष्ण गोस्वामी उनका दर्शन करने आया करते थे। एक दिन रात की निर्जनता में बाबा गम्भीरनाथजी पहाड़ी पर सितार बजाते हुए घूम रहे थे। भगवान् के चरण में हृदय का मधुर संगीत समर्पित कर रहे थे। चारों ओर ज्योत्स्ना फैली थी। महात्मा विजयकृष्ण गोस्वामी ने शिष्यों से कहा, 'अहा! कितना मधुर संगीत बाबा गम्भीरनाथ अपने आराध्य देव के चरणों में अर्पित कर रहे हैं। बाबा साक्षात् प्रेम-रूप हैं। ऐसे योगी का दर्शन भारतवर्ष में इस समय दुर्लभ है। बाबा में सृष्टि, स्थिति और प्रलय की शक्ति है। वे क्षणमात्र में संसार का सृजन और संहार कर सकते हैं। उन्होंने प्रेम का माधुर्य इस तपोभूमि में भर दिया है।' विजयकृष्ण गोस्वामी के

शिष्य मनोरंजन ठाकुर ने लिखा है- 'जन्तु-पूर्ण गया के पर्वत पर कपिलधारा के शिखर पर बैठकर बाबा गम्भीरनाथजी रात में सितार बजाकर भजन करते थे और आकाश-गंगा की पहाड़ी से महात्मा विजयकृष्ण गोस्वामी अपने साथियों को छोड़कर वन, काँटा, कंकड़ की परवाह न करते हुए उन्मत्त होकर दौड़ते हुए वहाँ चले जाते थे। यह किसका प्रेम था, किसका आकर्षण था? ये लोग किस प्रेम में बँध गये थे? इस बन्धन का सूत्र कहाँ था? किस माली ने बीच में आकर दो हृदयों को इस प्रकार बाँध दिया था? इस पुण्य-कहानी के सुनने से भी धर्म की प्राप्ति होती है। क्षणभर के लिए हृदय विस्मित और स्तम्भित हो जाता है। पैसा नहीं, कौड़ी नहीं, मान-मर्यादा या रक्तमांस का कोई सम्पर्क नहीं। किस वस्तु का सम्पर्क मनुष्य को इतना उन्मत्त कर देता है, जो भगवान् से प्रेम करता है, उसके लिए भक्त प्राणों का भी प्राण होगा ही, जो भक्त से प्रेम नहीं करता, भगवान् के प्रति उसका प्रेम होना कभी भी सम्भव नहीं। दो भक्तों का यह जो आलिंगन है, इसी के भीतर भगवान् का साक्षात् प्रकाश है।'

जिस समय बाबा गम्भीरनाथ कपिलधारा पहाड़ी पर तप कर रहे थे, उस समय एक बाघ उनके पास कभी-कभी आता। वह कुछ देर उनके सम्मुख बैठता और उसके बाद उनकी प्रदक्षिणा कर चला जाता। साधारण तौर पर वह ऐसे समय आता था, जब योगिराज के पास कोई दूसरा व्यक्ति या दर्शनार्थी न रहता। एक दिन दैवयोग से बाबाजी के पास कई सज्जन बैठे थे। कई संत पुरुष उपस्थित थे। उसी समय बाघ आया, उसको देखकर सभी लोग स्वभावतः घबड़ा उठे और भयभीत तथा हतबुद्धि होकर भागने को उद्यत हो गये। बाबा गम्भीरनाथ ने शान्त भाव से हाथ उठाकर आश्वासन के मृदु-गम्भीर स्वर में कहा, 'ये एक सिद्ध संत हैं। बाघ के वेष में आये हैं, किसी का अनिष्ट नहीं करेंगे, भय की बात नहीं है, आप लोग निश्चिन्त बैठे रहें।' सभी लोग आश्चर्यचकित थे। बाघ बाबा जी के निकट बैठ गया कुछ देर तक प्रशान्त भाव से योगिराज गम्भीरनाथजी को स्थिर नेत्रों से देखता रहा और दर्शन से तृप्त होकर धीरे-धीरे चला गया।

योगिराज गम्भीरनाथ सम्वत् 1950 वि. में कपिलधारा आश्रम से प्रयाग के कुम्भ मेला में पधारे हुए थे। उनकी गम्भीर मुद्रा और शान्ति तथा तप-माधुरी से दर्शकों का मन सहज में ही मुग्ध हो गया। प्रत्येक समय उनके निवास-स्थान पर दर्शकों की भीड़ लगी रहती थी। अपने शिष्यों के साथ महात्मा विजयकृष्ण गोस्वामी उनका दर्शन करने आये थे। महात्मा विजयकृष्ण गोस्वामी के शिष्य मनोरंजन ठाकुर ने कुम्भ की एक घटना का वर्णन किया है। इससे बाबा गम्भीरनाथ की तपस्या और शान्तिमयी त्यागवृत्ति का पता चलता है। एक धनी व्यक्ति ने योगिराज के हाथ से सौ कम्बलों का वितरण कराना चाहा। बाबा उस समय गम्भीर चिन्तन में रत थे। थोड़ी ही देर के बाद उन्होंने आँखें खोलीं, अपने सामने कम्बलों का ढेर देखा। उन्होंने हाथ से वितरण का संकेत किया। क्षणमात्र में दीन-दुखियों और असहायों में ये कम्बल वितरित कर दिये गये। कुम्भ मेले से वे लोगों के विशेष आग्रह पर गोरखनाथ-मठ के अध्यक्ष का उत्तरदायित्व स्वीकार कर गोरखपुर आये और जीवन के

अन्तिम क्षण तक उन्होंने अपना कार्य बड़ी सात्विकता और पवित्रता से सम्पादित किया। नाथ-सम्प्रदाय के तत्कालीन सर्वश्रेष्ठ योगी के रूप में उनकी ख्याति चारों ओर फैल गयी। वे जीवन्मुक्त अवस्था में पहुँच गये थे। साधुमण्डली में वे सिद्ध पुरुष के रूप में विख्यात थे। गोरखनाथमठ में आगमन के बाद लोग उन्हें 'बूढ़ा महाराज' के विशेषण से समलंकृत कर विशेष श्रद्धा प्रकट करते थे। उनके आगमन से ऐसा लगता था मानो गोरखनाथ की तपोभूमि में हठ, लय और राजयोग ने ही त्रिमूर्ति शिव के रूप में प्रवेश किया हो।

गोरखपुर में गोरखनाथ के मठ में निवास-काल में एक बार उन्होंने अद्भुत चमत्कार दिखाया था। एक धनी परिवार की विधवा का इकलौता पुत्र लन्दन में बारिस्टर का प्रमाण-पत्र प्राप्त करने गया था। चार माह तक उसके सम्बन्ध में माता को कोई समाचार नहीं मिला था। वह योगिराज गम्भीरनाथ के पास आयी। उस समय उनके पास स्थानीय राजकीय विद्यालय के प्रधानाध्यापक राय साहब अघोरनाथ अपने सहकर्मी अटल बिहारी गुप्त के साथ बैठे हुए थे। विधवा ने निवेदन किया कि महाराज मेरा पुत्र लन्दन में है। उसके मित्र का तार आया है कि वह वहाँ नहीं है। वह हम लोगों की आँख का तारा है। आप विदेश में उसकी रक्षा कीजिए। महाराज ने कहा कि मैं तो एक साधारण-सा मनुष्य हूँ। इस सम्बन्ध में क्या कर सकता हूँ। महिला उनके चरणों पर सिर रखकर फूट-फूट कर रोने लगी। उसकी ममता ने योगिराज के हृदय को द्रवित कर दिया। वे तो असम्भव को सम्भव और सम्भव को असम्भव करने वाले थे। बड़ी शान्ति के साथ वे कोठरी में चले गये। उन्होंने दरवाजा बन्द कर लिया। बुधवार था। आधे घण्टे बाद वे बाहर आ गये। लोगों ने देखा कि वे किसी गहरे चिन्तन में थे। उन्होंने विधवा से कहा कि तुम्हारा लड़का स्वस्थ और सुरक्षित है। वह सोमवार को पहुँच जायेगा।................अगले बुधवार को एक नौजवान राय साहब अघोरनाथ की कोठी पर उनको प्रणाम करने गया। दैवयोग से अटलबिहारी गुप्त उपस्थित थे। राय साहब ने कहा कि ये महाशय विधवा महोदया के पुत्र हैं, जो पिछले बुधवार को योगिराज के पास गयी थी। विधवा का पुत्र यह नहीं समझ सका कि किस विषय में बात हो रही है। दैवयोग से राय साहब नौजवान को साथ लेकर बाबा का दर्शन करने गये। उस समय अटल बिहारी गुप्त भी साथ थे। नौजवान ने बाबा के चरण पर सिर रखकर प्रणाम किया। वह उनका दर्शन करते ही आश्चर्यचकित हो गया।

'आप कब आये?' उसने बाबा को देखते ही तत्काल प्रश्न किया। 'तो क्या तुम बाबा को जानते हो?' राय साहब अघोरनाथ ने बारिस्टर से पूछा। वह उनका विद्यार्थी रह चुका था। नौजवान ने बाबा से कहा कि मैं बम्बई में उतरते ही इम्पीरियल मेल से सवार हुआ, पर गाड़ी में आपको नहीं देखा। उसने राय साहब से कहा कि हमारे जहाज को बम्बई पहुँचने में एक दिन शेष रह गया था। मेरे कैबिन के सामने बाबाजी खड़े थे। भारतीय साधु को देखकर बातचीत करने की उत्सुकता हुई। मैंने अपने कैबिन के बाहर आकर बाबा से पाँच मिनट तक बात की। उसके बाद बाबा चले गये। न तो मैंने फिर इनको स्टीमर पर देखा और न ये रेलगाड़ी में ही दीख पड़े। अटलबिहारी गुप्त के

पूछने पर कहा कि पिछले बुधवार की शाम की बात है। समय ठीक वही था, जब बाबा ने आधे घंटे के लिए कोठरी का दरवाजा बन्द कर लिया था। योगिराज बड़ी शान्ति से उसकी बातें सुन रहे थे। नौजवान को अपनी माता के बाबा से मिलकर समाचार पूछने का तनिक भी पता नहीं था, न तो वह यही जानता था कि अटलबिहारी और रायसाहब के सामने कितनी महत्त्वपूर्ण घटना घट चुकी थी। इस घटना का विवरण अटलबिहारी गुप्त महोदय ने अपनी बंगला पुस्तक 'मृत्यु और पुनर्जन्म के बाद' में विस्तार से दिया है। बाबा गम्भीरनाथ की साधना, न जाने, कितने यौगिक चमत्कारों से भरी पड़ी है।

सम्वत् 1973 वि. की बात है। गोरखनाथ मठ में वे एक दिन बैठकर शिष्यों और भक्तों से बात कर रहे थे। उस समय प्रथम योरपीय महायुद्ध चल रहा था। एक भक्त ने बाबा मे पूछा कि महाराज! यह युद्ध कब समाप्त होगा? बाबा ने बड़ी गम्भीरता से उत्तर दिया कि यह युद्ध एक-दो साल में समाप्त हो जायेगा, पर थोड़े समय के बाद एक विश्वव्यापी महायुद्ध का आरम्भ होगा, जिसमें विश्व के सारे राष्ट्र किसी-न-किसी रूप में भाग लेंगे। इस युद्ध का जगत् की गतिविधि पर बहुत प्रभाव पड़ेगा। एक भक्त ने साहसपूर्वक पूछा कि भारत का क्या होगा? बाबा गम्भीरनाथजी ने कहा कि हिन्दुस्तान का भला होगा, अच्छा ही होगा। योगिराज की दोनों बातें सत्य हुईं। वे वाक्‌सिद्ध महायोगी थे।

एक बार वे गम्भीर चिन्तन की मुद्रा में गोरखनाथ मन्दिर के ठीक सामने एक चबूतरे पर बैठे हुए थे। उनके पास एक बंगाली शिक्षित शिष्य भी थे। थोड़ी देर में एक रूपमती महिला गाड़ी से उतर कर मन्दिर में आयी। वह कीमती कपड़ों में सज्जित थी। भीतर जाकर उसने देवता के पादपद्म में श्रद्धा समर्पित की, प्रणाम किया। उसके बाद वह बाबा के पास आयी। उसने उनकी चरण-धूलि मस्तक पर चढ़ायी और गाड़ी में बैठकर चली गयी। देखने में वह बड़ी शिक्षित और सभ्य थी। योगिराज के एक शिष्य को ऐसा लगा कि वह वेश्या है। वह यह देखकर आश्चर्य में पड़ गया कि मन्दिर में एक वेश्या ने किस तरह प्रवेश किया। महाराज गम्भीरनाथजी ने शिष्य के मन की बात समझ ली। बड़ी करुणा और मधुरता से पूर्ण वाणी में महाराज ने कहा कि वह हिन्दू है, हिन्दू होने के नाते उसे भी मन्दिर में जाकर श्रद्धा समर्पित करने का पूरा-पूरा अधिकार है। निस्सन्देह संत की दृष्टि में पापी-पुण्यात्मा का भेद नहीं रह जाता है। वे तो केवल कृपा करना और आशीर्वाद देना ही जानते हैं।

एक बार गोरखनाथ-मन्दिर में कुछ ब्राह्मणों को भोजन पर आमन्त्रित किया गया था। यथावश्यक भोज्य सामग्री तैयार कर ली गयी, पर जितने ब्राह्मण निमन्त्रित थे, उनसे दुगुने लोग अनिमन्त्रित आ पहुँचे। भोजन के प्रबन्धक तथा अन्य शिष्य और सेवक इस संख्या-वृद्धि से चिन्तित हो उठे, भोजन कराने का समय भी निश्चित ही था, इसलिए उस थोड़े समय में दुबारा भोज्य-सामग्री

सिद्ध करने में बहुत विलम्ब होता। प्रबन्धक ने योगिराज गम्भीरनाथजी के चरण में इस सम्बन्ध में चिन्ता निवेदित की। बाबा ने नयी चादर से सारी सामग्री ढकवा दी और एक किनारे से उसे परोसने का आदेश दिया। सभी ब्राह्मणों ने अच्छी तरह भोजन किया और तृप्त हो गये। आश्चर्य की बात तो यह थी कि उनके भोजन कर लेने पर भी पर्याप्त सामग्री बची रह गयी। योगिराज गम्भीरनाथ सिद्धियों के स्वामी थे, यद्यपि वे चमत्कार और प्रदर्शन से बहुत दूर रहते थे।

एक बार आम के मौसम में अनके अभ्यागतों को आम खाने के लिए गोरखनाथ-मन्दिर में आमन्त्रित किया गया। निमन्त्रित लोगों के अतिरिक्त बहुत से लोग बिना बुलाये ही आ गये थे। आम सीमित संख्या में ही थे और लोगों के आने पर बाजार से आम मँगाने में विलम्ब होना स्वाभाविक था। बात महाराज गम्भीरनाथजी तक पहुँच गयी। उन्होंने सारे आम नयी चादर मे ढकवा दिये और आदेश दिया कि एक किनारे से निकाल-निकाल कर लोगों को खाने के लिए आम दिये जायँ। सभी लोग आम खाकर तृप्त हो गये और अप्रत्याशित रूप से पर्याप्त संख्या में आम बच गये।

सिद्ध पुरुष बाबा सुन्दरनाथजी योगिराज गम्भीरनाथ के प्रति बड़ी श्रद्धा रखते थे और उनकी सिद्धियों के प्रति उनके हृदय में विशेष आदरभाव था। नाथयोगी बाबा सुन्दरनाथ अपार योगसिद्धियों और साधन-सम्पत्ति के स्वामी थे। पहले वे कर्नाटक प्रदेश के मैंगलोर के कदरीमठ के महन्त थे, जहाँ मत्स्येन्द्रनाथ आसन और नाथ-पादुका की पूजा होती है। एक दिन वे अचानक अदृश्य हो गये। लोगों को उनका दर्शन बदरीनाथ धाम में भगवती अलकनन्दा के तट पर तप में तत्पर रहते हुआ था। बदरीनाथ-मन्दिर के कपाट शीतकाल में बन्द हो जाने पर भी वे सिद्ध अवधूत दिगम्बर योगी अलकनन्दा के तट पर विकट हिमपात के वातावरण में योगसाधना और तपस्या में प्रवृत्त रहते थे। ग्रीष्मकाल में बदरीनाथ-मन्दिर का पट खुलने के समय दर्शनार्थियों और श्रद्धालुओं को उनका यहीं तपस्वी वेष में दर्शन होता था। वे कभी-कभी आबू पहाड़ पर भी आते थे। वे सदा समाधि में मग्न रहते थे। एक बार कुम्भ मेले में नागा लोगों ने उनका सिर फोड़ दिया था, रक्तपात होते रहने पर भी वे इस तरह समाधिमग्न थे कि इसका उन्हें पता ही नहीं चला। वे 1896 ई. के श्रावण में गोदावरी के कुम्भ मेले में गये थे। नासिक से जबलपुर होते हुए वे काशी पधारे थे और काशी से गोरखपुर आये थे। वे बाबा गम्भीरनाथ का दर्शन कर परमानन्द का अनुभव करते थे। दोनों एक-दूसरे से कुछ न बोलते थे, न कहते थे। उनमें अन्तर्वार्तालाप चलता रहता था। वे बाबा का दर्शन करने, कहा जाता है, गोरखनाथ-मन्दिर, गोरखपुर में दो बार आये थे। कभी-कभी उनका दर्शन हरिद्वार के उस पार चण्डी पहाड़ी की तलहटी और गढ़वाल के समीपस्थ जंगलों में किसी-किसी भाग्यशाली को होता रहता है।

योगिराज गम्भीरनाथजी ने अनेक बंगालियों की, विशेष रूप से पूर्व बंगाल के ढाका, मैमनसिंह आदि जनपदों के श्रद्धानिष्ठ लोगों को मंत्रदीक्षा और संन्यास-दीक्षा दी थी। मैमनसिंह जनपद

के आनन्दमोहन कॉलेज के दर्शनशास्त्र के प्रख्यात विद्वान अक्षयकुमार बनर्जी महोदय ने योगिराज गम्भीरनाथ से मंत्रदीक्षा ली थी। वे उच्चकोटि के विद्वान और शास्त्रज्ञ थे। अंग्रेजी, संस्कृत और बंगला भाषा और साहित्य का उन्हें यथेष्ट ज्ञान था। अपने जीवन का अन्तिम समय उन्होंने वृद्धावस्था में गोरखपुर में ही बिताया। युगपुरुष महन्त दिग्विजयनाथ का उन पर बड़ा स्नेह था। वे महाराणा प्रताप कॉलेज के कई वर्षों तक प्राचार्य-पद को सुशोभित करते रहे। गीताप्रेस से प्रकाशित होने वाले 'कल्याण' और 'कल्याण कल्पतरु' मासिक पत्रों के वे जाने-माने सिद्धहस्त लेखक थे, उनके लेख उन पत्रिकाओं में समय-समय पर प्रकाशित होते रहते थे। उन्होंने गोरखनाथजी और नाथयोग से सम्बन्धित अनेक पुस्तकें लिखी थीं, जो गोरखनाथ-मन्दिर, गोरखपुर के प्रकाशन-विभाग द्वारा प्रकाशित हैं। उन पुस्तकों में अंग्रेजी में 'दि फिलॉसफी ऑफ गोरखनाथ', 'दि नाथयोग' तथा 'योगिराज गम्भीरनाथ' आदि बड़े महत्त्व के प्रकाशन हैं, इनका हिन्दी अनुवाद भी प्रकाशित है। अक्षयकुमार बनर्जी महोदय नाथयोग के असाधारण मर्मज्ञ थे। योगिराज गम्भीरनाथ के उपदेशों पर उन्होंने 'योगरहस्य' ग्रंथ के रूप में बड़ी मार्मिक व्याख्या लिखी है, यह ग्रंथ भी गोरखनाथ-मन्दिर, गोरखपुर से ही प्रकाशित है। अक्षयकुमार बनर्जी के गुरुभाई थे मैमनसिंह के निवृत्तिनाथ और ढाका के शान्तिनाथजी। शान्तिनाथ और निवृत्तिनाथ, दोनों ने योगिराज से मंत्रदीक्षा और बाद में संन्यास-दीक्षा लेकर साथ-ही-साथ प्रायः निवास कर अपना जीवन कृतार्थ किया। शान्तिनाथजी विकट तपस्वी और कठोर सत्यव्रती योगी थे। उनके ग्रंथ-'एक्सपीरियेन्सेस ऑफ ए ट्रूथसीकर' (सत्यान्वेषी के अनुभव) के अध्ययन से पता चलता है कि उन्होंने सत्य की प्राप्ति के लिए उत्कट योग-साधना की। वे ढाका के एक समृद्ध कायस्थ परिवार में पैदा हुए थे। शिक्षा-दीक्षा समाप्त कर उन्होंने गम्भीरनाथजी के चरण-देश में सन्निष्ठ होकर योगसाधना की। गुरु की आज्ञा से ऋषिकेश, हरिद्वार, जूनागढ़ और आबू तथा अहमदाबाद, उत्तरकाशी, श्रीनगर, बदरिकाश्रम के कल्पेश्वर आदि स्थानों में घोर तप किया। उन्होंने योगिराज गम्भीरनाथजी की आज्ञा से मानसरोवर और कैलाश की भी यात्रा सम्पन्न की थी, निवृत्तिनाथ (अक्कू) के सहयोग से उन्हें साधना, तपस्या और सत्यानुभूति में बड़ी सहायता मिली। 28 अक्टूबर 1949 ई. को उनका शरीरान्त हुआ था। गम्भीरनाथजी ने उनके पूछने पर कि गुरु कौन है, उन्हें सत्प्रेरणा प्रदान की थी कि जो शिष्य को सांसारिक बन्धन, अविद्या और दुःख के बन्धन से छुड़ा दे, वही सद्गुरु है। इस मार्गदर्शन के अनुरूप गुरु में सन्निष्ठ होकर शान्तिनाथजी ने सत्यस्वरूप अलख निरंजन परम शिव की खोज कर अपना जीवन सार्थक किया था।

पूर्व बंगाल के नोआखाली जनपद के एक गाँव में एक बालक को बाबा गम्भीरनाथजी का स्वप्न में दर्शन हुआ। उसे ज्ञान नहीं था कि स्वप्न में उसने किन महापुरुष को देखा है। बहुत दिनों के बाद वह फेनी नगर में गया। उसने एक मित्र को स्वप्न की बात कही। फेनी में योगिराज के अनेक शिष्य थे। वहाँ बाबा का एक चित्र देखा। पहचान लिया। वह गोरखपुर आया। तीन बजे रात को रेलगाड़ी से उतर कर गोरखनाथ-मन्दिर पहुँचा, उसने बाबा का दर्शन किया। कमरे में एक दीपक जल

रहा था। लगता था, बाबा गम्भीरनाथजी उसके ही आने की प्रतीक्षा कर रहे थे। बाबा के तिरोधन के बाद वह गंगोत्री में योगाश्रम की प्रतिष्ठा कर तप करने लगा। उसका नाम था प्रज्ञानाथ।

योगिराज गम्भीरनाथ अपने दीक्षित शिष्य की रक्षा में सदा तत्पर रहते थे। एक बार जब वे कलकत्ता में नेत्र-चिकित्सा के सम्बन्ध में प्रवास कर रहे थे, एक श्रद्धालु भक्त को उन्होंने दीक्षा दी। उस समय एक परकाय-प्रवेश करने वाले योगी अपनी योगशक्ति का प्रदर्शन कर रहे थे। उनकी यह घोषणा थी कि जो व्यक्ति, शान्तचित्त से अपने घर पर मेरा आवाहन करेगा, मैं उसके समक्ष समुपस्थित हो जाऊँगा। श्रद्धालु व्यक्ति ने अपने घर पर ध्यान में उनका आवाहन किया। योगी उसके सामने थे। उन्होंने उसे दीक्षा देनी चाही। वह व्यक्ति भयभीत हो गया और उनके आवाहन के लिए पश्चाताप करने लगा। योगी ने कहा कि पहले के दीक्षामंत्र की शक्ति नष्ट कर मैं तुम्हें दीक्षित करूँगा। श्रद्धालु भक्त ने तत्काल देखा कि पीछे की ओर से सिद्ध पुरुष बाबा गम्भीरनाथजी की ज्योतिपूर्ण मूर्ति परकाय-प्रवेशी योगी की ओर सुतीक्ष्ण दृष्टि से देख रही है और योगी का शरीर बाबा के नेत्र के अग्निस्फुलिंग से अभिभूत है। योगी बाबा गम्भीरनाथजी के ज्योतिविग्रह को प्रणाम कर चले गये और बाबा की ज्योतिर्मयी मूर्ति अन्तर्हित हो गयी। इस तरह बाबा गम्भीरनाथ ने अपने दीक्षित शिष्य की बहुत बड़ी विपत्ति से रक्षा की। शिष्य ने बाबा के पास जाकर अपने अपराध के लिए क्षमा माँगी, बाबा ने सान्त्वना प्रदान की, घटना के सम्बन्ध में मौन थे।

योगिराज गम्भीरनाथ योगपुरुष थे। उन्होंने अनुभव किया कि शिव, शक्ति और जीव, सब के सब परमात्म धरातल पर- शिवैक्य के स्तर पर एकाकार हैं। माया के संयोग से ही मन ब्रह्म के रूप में अभिव्यक्त होता है। मन से ही पंचभूतात्मक शरीर की सृष्टि होती है। मन को उन्मन अवस्था से ब्रह्मपद में लीन करने से साधक सर्वज्ञ हो जाता है। बाबा गम्भीरनाथजी योगरहस्य के सर्वमान्य मर्मज्ञ थे। उन्होंने आदिनाथ शिव द्वारा प्रवर्तित और गोरखनाथजी द्वारा प्रतिपादित योग की साधना की। वे माया के बन्धन से पूर्ण मुक्त सिद्ध पुरुष थे। ये योगेश्वर गोरखनाथजी की वाणी में पूर्ण विश्वास करते थे कि परब्रह्म आत्मतत्त्व न बाहर है, न भीतर है, न निकट है, न दूर है। ब्रह्मा और सूर्य उसे खोजते रह गये पर उसका रहस्य न पा सके। श्वेत स्फटिक मणि को हीरे ने बेध लिया। ब्रह्म-साक्षात्कार हो गया, इसी परमार्थ के लिये गोरखनाथजी ने साधना सिद्ध की-

बाहरि न भीतरि, नेड़ा न दूर, खोजत रहे ब्रह्मा अरु सूर।
सेत फटिक मन हीरै बीधा। इहि परमारथ गोरख सीधा।।

(गोरखबानी सबदी 174)

गोरखनाथ जी की योगपरम्परा पर चलने वाले गम्भीरनाथजी ने इसी परमार्थ-योगतत्त्व के लिए योगसिद्धि के राज्य में आधिपत्य प्राप्त किया। उन्होंने नाथयोग के सिद्धान्त के अनुसार शिव और शक्ति की एकात्मकता-कुण्डलिनी के पूर्ण जागरण का योगमाध्यम से अनुभव किया। वे अपने आप

को सदा गोरखनाथजी का अनुयायी बताया करते थे-उनका दृढ़ विश्वास था कि महायोगी गोरखनाथ भगवान् शिव के अवतार थे, अभिव्यक्त रूप थे। उनका योगाभ्यास गोरखनाथजी की योगप्रक्रिया के आधारभूत था। योगिराज गम्भीरनाथ ने सदा कान में कुण्डल और वक्ष पर नाद धारण किया। उन्होंने योग के स्तर पर स्थित होकर परमात्मसत्य का साक्षात्कार किया। वैराग्य उनकी योगसाधना का प्राण था। नामजप में उनकी बड़ी निष्ठा थी। महात्मा विजय कृष्ण गोस्वामी की उक्ति है कि मुझे भगवन्नाम-निष्ठा बाबा गम्भीरनाथ की कृपा से प्राप्त हुई। ज्ञानशक्ति और ऐश्वर्य पर योगिराज गम्भीरनाथ का पूर्ण अधिकार था। वे कहा करते थे कि विश्वास रखना चाहिए, विचार करना चाहिए, सब ओर अच्छा ही होगा। विश्वास की शक्ति से असम्भव भी सम्भव हो जाता है।

योगिराज गम्भीरनाथजी की भगवद्गीता में अप्रतिम श्रद्धा थी। निस्सन्देह वे मायातीत, त्रिगुणातीत और युक्त योगी थे। उनकी बड़ी मार्मिक वाणी है कि 'सदा सत्य बोलना चाहिए। छल-प्रपंच से दूर रहना चाहिए। अहम् में नहीं चिपकना चाहिए। दूसरों को कभी भला-बुरा नहीं कहना चाहिए। समस्त धर्मों और मतमतान्तर का आदर करना चाहिए। भिखारियों, दीन-दुखियों और असहायों को बड़े प्रेम से भिक्षा देनी चाहिए। विचार करना चाहिए कि इस प्रकार हम ईश्वर की पूजा कर रहे हैं।'

बाबा गम्भीरनाथ की योगसाधना की दृष्टि की प्राणशक्ति उदारता थी, निष्पक्षता थी। वे रामलीला, कीर्तन और भजन आदि के लिए अपने शिष्यों और भक्तों को ही नहीं, सभी लोगों को प्रोत्साहित किया करते थे। उन्होंने कहा कि देवस्वरूप में भेद-दृष्टि नहीं रखनी चाहिए। रूप और नाम से वे भिन्न हैं, पर उनमें एक ही तत्त्व का अधिवास है। विभिन्न धर्म-सम्प्रदायों द्वारा विभिन्न प्रकार से एक ही परमतत्त्व की उपासना और विचार को कार्यान्वित किया जाता है।

श्रीमद्भगवद्गीता के सम्बन्ध में उनकी उक्ति थी कि यह सभी युगों के लिए सत्य ग्रंथ है। सत्य के अन्वेषकों के लिए गीता ही बहुत है। यह सार्वजनिक तथा सनातन भागवत शास्त्र है। भगवच्चिन्तन के सम्बन्ध में उनकी दृष्टि बड़ी व्यापक थी। वे कहा करते थे कि 'अहंता' और 'ममता' का परित्याग कर ईश्वर के चरणों पर समर्पित हो जाना चाहिए। वे योगक्षेम का वहन करते ही हैं। उनसे केवल सत्य और प्रेम की माँग करनी चाहिए। भूत के चिन्तन और भविष्य की चिन्ता से दूर रहना चाहिए। अपने वर्तमान कर्तव्य का सत्यता से पालन करना ही श्रेयष्कर है। विश्वास, धैर्य और आशा के प्रकाश में आगे बढ़ते रहना चाहिए। स्मरण रहे कि ईश्वर अच्छी तरह जानते हैं कि तुम्हारा मंगल किस बात में है और उसका विधान करते हैं।

योगिराज गम्भीरनाथजी भगवन्नाम की साधना पर बड़ा जोर देते थे। उनकी घोषणा है कि 'भगवान् के नाम से सब कुछ हो जायेगा।' वे कहा करते थे कि मुक्ति की प्राप्ति के लिए साधना और योग्यता-अधिकार की बड़ी आवश्यकता होती है। शिष्य के सत्प्रयास से ही यह सम्भव है। गुरु

साधना और सिद्धि घोटकर पिला थोड़े ही देंगे। सद्गुरु वह है, जो अपने आप में आत्मानुभूति प्राप्त कर लेता है और दूसरों को आत्मनिष्ठा से सम्पन्न करता है। गम्भीरनाथजी ने नाथ-सम्प्रदाय के योगसिद्धान्त को पुनर्जीवन प्रदान किया। उन्होंने योग के प्रकाश में सत्य और भगवन्नाम का साक्षात्कार किया। समस्त जगत् के कार्यों को वे ईश्वर की लीला समझते थे। उनकी विज्ञप्ति है कि विचार ही तपस्या है। वे बार-बार अहंकार के नाश की ही शिक्षा दिया करते थे, अपने भक्तों और शिष्यों को सावधान करते थे कि 'मैं नहीं रखना चाहिए।' वे समाधि-योगी थे। समाधि-योगी का आशय है योगसिद्ध महात्मा।

जीवन के अन्तिम दिनों में नेत्र-ज्योति की क्षीणता से बाबा गम्भीरनाथजी को मोतियाबिन्द का रोग हो गया था। वे उसे ठीक कराने के लिए कलकत्ता गये हुए थे। डॉक्टर मानरड ने उस रोग को ठीक कर दिया। बाबा को देखकर डॉक्टर ने कहा था- 'अरे! ये तो साक्षात् ईसा की ही तरह दीख पड़ते हैं।'

योगिराज गम्भीरनाथजी ने सम्वत् 1974 वि. की चैत कृष्ण त्र्योदशी को सवा नौ बजे प्रातःकाल (तद्नुसार 21 मार्च, 1917 ई.) परमधाम की यात्रा की थी। गोरखनाथ-मन्दिर, गोरखपुर के परमपवित्र प्रांगण में ही उनका समाधि-मन्दिर है, जो शाश्वत सत्य और शान्ति का दिव्य प्रतीक है, उसमें उनकी संगमरमर की प्रतिमा प्रतिष्ठित है। नित्य नियमपूर्वक प्रतिमा की पूजा आरती होती है। शिष्यों को वे कभी-कभी स्वप्न में दर्शन देकर उनका पथ-प्रदर्शन करते रहते हैं। योगिराज योगपुरुष महात्मा गम्भीरनाथ योग, ज्ञान, तपस्या और भक्ति के चिन्मय मूर्तिमान प्रतीक-स्वरूप थे।

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के संस्थापक

युगपुरुष महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज

श्री गोरक्षपीठ के पीठाधीश्वर महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज का विराट व्यक्तित्व नाथपंथ के महानयोगी योगिराज बाबा गम्भीरनाथ जी महाराज की छत्रछाया में निर्मित एवं विकसित हुआ था। महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज का बचपन का नाम नान्हू था। 6 वर्ष की अवस्था में उन्हें उनके परिवार द्वारा श्री गोरखनाथ मन्दिर को सुपुर्द कर दिया गया। मेवाड़ राजपरिवार में जन्मे नान्हू से युगपुरुष महन्त दिग्विजयनाथ बनाने में नाथपंथ के सिद्धयोगी बाबा गम्भीरनाथ जी की महत्त्वपूर्ण भूमिका थी। ऐसा लगता है कि योगिराज बाबा गम्भीरनाथ श्री गोरक्षपीठ में महायोगी गोरक्षनाथ जी की कृपा से ही आए थे। वे कौन थे? कहाँ से आए थे? इसकी जानकारी नहीं मिलती। ऐसा अनुमान लगाया जाता है कि वे कश्मीर के किसी राजपरिवार से योगसाधाना का पथ स्वीकार कर श्री गोरक्षनाथ मन्दिर में पहुँचे थे। वे नाथपंथ के ऐसे सिद्ध योगी थे जिन्हें अनेक मानवेतर शक्तियाँ प्राप्त थी। अनेक घटनाएँ प्रमाणित करती हैं कि महायोगी गोरखनाथ जी की सिद्ध योगियों की परम्परा में वे ऐसे सिद्ध योगी थे जिन्होंने बीसवीं शताब्दी की चौखट पर अपनी प्रभावपूर्ण आध्यात्मिक उपस्थिति से भारतीय अध्यात्म के दिव्याकाश को जाज्वल्यमान नक्षत्र की भाँति प्रकाशित किया। भारत की सनातन संस्कृति के अपौरुषेय स्वरूप को पुन: प्रमाणित एवं प्रतिष्ठित किया। उन्होंने मुक्तिपथ के पथिकों को अनजाने, अनचाहे, चुपचाप अपने कर्म के आदर्शों द्वारा इस प्रकार प्रेरित किया; उद्‌बुद्ध किया, जैसा उस युग में कदाचित ही और कोई कर सका हो। बीसवीं शताब्दी के प्रथम दो दशको में श्री गोरक्षपीठ की व्यवस्था के वे ही योजक थे। वस्तुत: श्री गोरक्षपीठ एवं श्री गोरखनाथ मन्दिर की भावी भूमिका युगानुकुल नाथपंथ के इस महानयोगी ने तय कर दी थी और उसी के अनुरूप वे भावी महन्त (महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज) को गढ़ रहे थे। योगिराज बाबा गम्भीरनाथ जी के आशीर्वाद एवं कृपा से ही नान्हू दिग्विजयनाथ बने और उन्हीं की प्रेरणा से उन्होनें श्री गोरक्षपीठ की धार्मिक-आध्यात्मिक- सामाजिक-राष्ट्रीय भूमिका का विस्तार किया।

मेवाड़ राजपरिवार के बालक नान्हू का पालन- पोषण एक राजकुमार की तरह योगिराज बाबा गम्भीरनाथ जी ने किया। उन्होने योग-साधना के साथ-साथ राष्ट्र-समाज के निर्माण और विकास में श्री गोरक्षपीठ को सचेष्ठ और सक्रिय भूमिका के साथ अग्रसर किया। उनके समय में भी श्री गोरक्षपीठ स्वतन्त्रता संग्राम के क्रान्तिकारियों की शरणस्थली बनी रही। योगिराज बाबा गम्भीरनाथ युवा क्रान्तिकारियों को योग-अध्यात्म की पारमार्थिक शक्ति का प्रसाद देते थे। इस सिद्ध योगपीठ में पल

रहे नान्हू परिवेश के साक्षी भी थे और अध्येता भी। आध्यात्मिक योग साधना के साथ-साथ उन्हें आधुनिक शिक्षा ग्रहण करने की प्रेरणा योगिराज बाबा गम्भीरनाथ ने ही दी। उनका राजकीय जुबली कॉलेज में प्रवेश कराया और पठन-पाठन की यथासम्भव समस्त सुअवसर एवं सुविधाएं उपलब्ध करायी। इस प्रकार मेवाड़ राजकुमार का व्यक्तित्त्व आधुनिक ज्ञान-विज्ञान की शिक्षा एवं राष्ट्रधर्म के साथ-साथ योग-साधना के दार्शनिक एवं क्रियात्मक पक्षों के समवेत स्वर से निर्मित हुआ। शीघ्र ही यह राजकुमार नान्हू से दिग्विजयनाथ बनने की ओर बढ़ चला। बालगंगाधर तिलक, लालालाजपत राय, स्वामी विवेकानन्द, श्री अरविन्द, महामना मदनमोहन मालवीय, चन्द्रशेखर आजाद, पं. रामप्रसाद विस्मिल, सरदार भगत सिंह जैसे स्वतन्त्रा संग्राम सेनानियों एवं क्रान्तिकारियों से प्रेरणा तथा योगीराज बाबा गम्भीरनाथ के निर्देशन एवं आशीर्वाद से श्री गोरक्षपीठ का यह तेजस्वी युवा ऋषि भारत के स्वतन्त्रा संग्राम का सिपाही बन गया तथा महात्मा गांधी के गोरखपुर आगमन पर उनकी सभा का आयोजन कराने, उनके आह्वान पर पढ़ाई छोड़ने एवं चौरी-चौरा काण्ड का नेतृत्व करने तक कांग्रेस के स्वतन्त्रता आन्दोलन का एक सशक्त हस्ताक्षर बना। चौरी-चौरा काण्ड में आरोपित एवं फाँसी के फन्दे से बचाए गये इस युवा सन्यासी को अब कांग्रेस की ढुलमुल एवं मुस्लिम तुष्टीकरण नीति पसन्द न थी। अनेक राष्ट्रभक्तों के साथ इस युवा सन्त ने भी अपनी अलग राह पकड़ी। हिन्दू महासभा राष्ट्रसाधना का अगला पड़ाव बना।

धरावतरण एवं प्रारम्भिक जीवन

युगपुरुष महन्त दिग्विजयनाथ जी बचपन में राणा नान्हू सिंह के नाम से विख्यात थे। उनका आविर्भाव बाप्पा रावल के उस इतिहास प्रसिद्ध वंश में हुआ था, जिसमें उत्पन्न होकर राणा सांगा और महाराणा प्रताप जैसे स्वदेशाभिमानी वीरों ने देश और धर्म की रक्षा के लिए आजीवन संघर्ष किया। महाराणा प्रताप की तलवार ने जिस वंश के इतिहास को त्याग, वीरता और आत्म-सम्मान का इतिहास बना दिया, जिस धरती को शत्रुओं के रुधिर से सींच-सींच कर पवित्र और पूज्य बनाया, उसी मेवाड़ की धरती पर सिसोदिया वंश में जन्म लेकर राणा नान्हूसिंह ने भी अपने जीवन को त्याग और बलिदान का निदर्शन बना दिया।

राणा नान्हूसिंह का जन्म उदयपुर के राणावंशी परिवार में सन् 1894 ई. में वैशाखी पूर्णिमा को हुआ था। बचपन में ही माता-पिता के स्वर्गवासी हो जाने के कारण उनके पालन-पोषण का दायित्व उनके चाचा पर आ पड़ा। उस समय उदयपुर के निकट एक नाथपंथी योगी महात्मा फूलनाथ, साधनारत थे। वे गोरखपुर स्थित श्री गोरक्षनाथ मन्दिर के तत्कालीन महन्त श्री बलभद्रनाथ जी के शिष्य और महन्त सुन्दरनाथ जी के गुरुभाई थे। बाल्यावस्था में ही राणा नान्हू सिंह के माता-पिता हैजे की बीमारी में मर चुके थे। उनके चाचा सम्पत्ति के लोभ में उनसे छुटकारा चाहते थे। उन्होंने महात्मा फूलनाथजी से निवेदन किया कि सन्तान-प्राप्ति हेतु हमने यह मनौती मानी थी कि अपनी

प्रथम सन्तान श्री गुरु गोरक्षनाथजी को समर्पित करेंगे। उनकी कृपा से मेरे कई सन्तानें हो गयीं हैं। अस्तु, मैं अपनी प्रथम सन्तान श्री गुरु गोरक्षनाथजी के चरणों में समर्पित करना चाहता हूँ, किन्तु घर के लोगों का इस बालक के प्रति विशेष स्नेह एवं ममत्व है। इस कारण वे उसको अपने से अलग नहीं करना चाहते हैं, जिससे मुझे बराबर हार्दिक कष्ट रहता है। अत: आप मेरी इस मनौती को पूर्ण करने में सहायता करें। मैं गणगौरी के मेले के दिन जैसे ही बालक आप को समर्पित करूँ, आप उसे लेकर गोरखपुर चले जायें। अन्यथा घर के लोग उसे पुन: घर ले जायेंगे, जिसका मुझे जीवन भर खेद रहेगा। श्री बाबा फूलनाथजी को चाचा के षड्‌यंत्र का पता नहीं था। उन्होंने सहज ही में उनकी प्रार्थना स्वीकार कर ली और योजनानुसार चाचा ने जैसे ही बच्चे को समर्पित किया, वे तुरन्त उसे लेकर गोरखपुर आ गये। गोरखपुर पहुँचने पर उन्होंने तत्कालीन योगिराज श्री बाबा गम्भीरनाथ जी एवं अन्य लोगों से बालक राणा नान्हू सिंह के श्री गोरक्षनाथ जी को समर्पित करने की कहानी से अवगत कराया और बताया कि उदयपुर के राणा ने अपने पुत्र को श्री गोरक्षनाथ जी के चरणों में समर्पित किया है। उधर उदयपुर में षड्‌यंत्री चाचा द्वारा यह प्रचार किया जा रहा था कि बालक मेले में गायब हो गया और उसे खोजने के लिए बनावटी व्यग्रता दिखाई। बाद में जो बातें प्रकाश में आईं, उनसे पता चला कि उस समय सारे राजस्थान में बालक राणा नान्हू सिंह की तलाश दिखावे के लिए चाचा ने कराई। तालाब में डूबने की आशंका समाप्त करने के लिए तालाब में जाल भी डाला गया, किन्तु बालक का कहाँ पता चलता! वह तो एक साजिश के साथ गोरखपुर पहुँचा दिया गया। श्री गोरक्षनाथ मन्दिर पर बालक नान्हू सिंह को साधु-संतों एवं संन्यासियों के सम्पर्क में रहना पड़ा। राजवंश में उत्पन्न इस बालक को मन्दिर में निवास करने वाला साधु-समाज आश्चर्य और आशंका मिश्रित कौतूहल से देखता था। उन्हें यह विश्वास था कि मन्दिर के वातावरण में यह बालक अधिक दिनों तक टिक नहीं पायेगा। किन्तु बालक नान्हू सिंह को उसी समय योगिराज गम्भीरनाथ जी की अहैतुकी कृपा प्राप्त हो गई। योगिराज गम्भीरनाथ जी उस समय के सर्वाधिक प्रतिष्ठित और ख्यातिलब्ध योगी थे। उनकी स्नेहच्छाया में बालक नान्हू सिंह को व्यवधानविहीन जीवन व्यतीत करने का अवसर मिला। नन्हें बालक की प्रतिभा को देखकर ही उस महान साधक ने उन्हें आशीर्वाद दिया था कि भविष्य में वह महान यश की उपलब्धि करेगा।

शिक्षा

मन्दिर की ओर से ही बालक नान्हू सिंह की प्रारम्भिक शिक्षा की व्यवस्था की गई। स्थानीय जुबली हाई स्कूल में उन्होंने सातवीं कक्षा तक शिक्षा प्राप्त की। प्रारम्भ से ही वे बड़े स्वाभिमानी थे। जुबली हाई स्कूल के तत्कालीन प्रधानाचार्य राय साहब अघोरनाथ चट्टोपाध्याय से उनकी अनबन हो गई। फलत: उन्होंने सातवीं कक्षा के बाद स्कूल का परित्याग कर दिया। फिर उन्होंने स्थानीय हाई स्कूल में प्रवेश लिया, जो आजकल महात्मा गाँधी इण्टर कॉलेज के नाम से विख्यात है। सेन्टएण्ड्रयूज कॉलेज में उन्होंने इण्टरमीडिएट में प्रवेश लिया। सन् 1920 ई. में राष्ट्रीय आन्दोलन से प्रभावित होकर

उन्होंने विद्यालय का परित्याग कर दिया और वे सक्रिय रूप से देश के स्वतंत्रता आंदोलन में सम्मिलित हो गये।

बालक नान्हू सिंह सदा एक औसत छात्र रहे। किन्तु विद्यालय के पाठ्यक्रमेतर कार्यक्रमों में वे सर्वदा सर्वाधिक उत्साह से भाग लेते थे। सभा-सोसाइटी तथा व्याख्यान आदि का आयोजन करने और उनमें सोत्साह भाग लेने, छात्रों को संगठित करने तथा विभिन्न प्रकार की क्रीड़ाओं की व्यवस्था करने में वे अत्यन्त कुशल थे। नेतृत्व, निर्भीकता, स्वाभिमान, अनुशासनप्रियता, प्रत्युत्पन्नमतित्व और कार्यकुशलता उनके जीवन के प्रधान गुण थे। छात्र-जीवन में बीज-रूप में अंकुरित ये गुण उनके भावी जीवन में पूर्णतया पल्लवित और पुष्पित हुए। इन्हीं गुणों के बल पर बालक नान्हू सिंह ने आगे चलकर दिग्विजयनाथ के अभिधान को सार्थक करते हुए जीवन के समस्त धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक क्षेत्रों को अपनी स्वत:सम्भूत प्रखर बौद्धिकता से भली-भाँति आलोकित किया।

क्रीड़ा के क्षेत्र में

छात्र-जीवन में वे हाकी के श्रेष्ठ खिलाड़ी थे। मैदान में उतरने के पश्चात् वे अपने व्यक्तित्व, व्यवहार और कौशल के कारण समूचे जनसमूह पर छा जाते थे। दर्शकों की दृष्टि निरन्तर उनका ही अनुगमन करती रहती थी। वे सेन्टर फारवर्ड और राइट आउट दोनों स्थानों से समान कुशलता के साथ खेल लेते थे। खेल के प्रति उन्हें इतना मोह था कि बाद के जीवन में भी वे जब कभी संध्या के समय महाराणा प्रताप कॉलेज की ओर निकल आते और बच्चों को हाकी खेलते देख लेते तो वे खेलने का लोभ संवरण नहीं कर पाते थे। छात्र-जीवन समाप्त करने के बाद भी वे सेन्टएन्ड्र्यूज कॉलेज में बराबर हाकी खेलने जाया करते थे। इसके अतिरिक्त बैडमिण्टन और टेनिस में भी उनकी अधिक रुचि थी। इन दोनों खेलों की व्यवस्था उन्होंने मन्दिर पर भी कर रखी थी। उनके साथ टेनिस खेलने वाले लोग आज भी मुक्त कण्ठ से उनकी प्रंशसा करते हैं। घुड़सवारी तो उनके नित्य जीवन का एक अंग था ही।

हिन्दू धर्म और संस्कृति से प्रेम

विद्यार्थी जीवन में ही राणा नान्हू सिंह के हृदय में हिन्दू जाति, हिन्दू धर्म और हिन्दू संस्कृति के प्रति पूरी आस्था थी। योगिराज गम्भीरनाथ जी के चरणों में बैठकर उन्होंने सर्वप्रथम हिन्दू संस्कृति के मूल तत्त्वों को पहचानने का प्रयास किया। विद्यार्थी जीवन की धर्म-प्रेम सम्बन्धी कुछ घटनाएँ अविस्मरणीय हैं।

राणा नान्हू सिंह (महन्त दिग्विजयनाथजी) आठवीं कक्षा के छात्र थे। उस समय वर्तमान राजकीय टेक्निकल स्कूल के निकट बने एक छोटे शिव मन्दिर को लेकर एक विवाद खड़ा हो गया। टेक्निकल स्कूल के पास की भूमि रेलवे कर्मचारियों के आवास के लिए अधिगृहीत की जा रही थी। उसी भू-भाग में एक लुहार द्वारा निर्मित शिव मन्दिर सार्वजनिक उपासना का केन्द्र बन चुका था।

जब उसे गिरवाने का प्रयास किया जाने लगा तो राणा नान्हू सिंह के नेतृत्व में विद्यार्थियों के एक विशाल समूह ने रेलवे के तत्कालीन चीफ इंजीनियर ममी साहब का बंगला घेर लिया। उस समय छात्रों के साथ नृसिंह प्रसाद एडवोकेट भी थे। छात्रों के विशाल परेड का नेतृत्व करने के कारण राणा नान्हू सिंह और स्थानीय रईस बाबू पुरुषोत्तमदास जी को पकड़कर हवालात में डाल दिया गया। बाद में समझौता हुआ और मन्दिर गिरने से बच गया।

सन् 1918 में जब वे कक्षा 9 के छात्र थे, उस समय गोरखनाथ मन्दिर के अहाते में ईसाई मत-प्रचारक कैम्प लगाकर अपने मत का प्रचार कर रहे थे। कई वर्षों से वे यह कार्य करते आ रहे थे। एक हिन्दू मन्दिर के प्रांगण मे हिन्दू धर्म के ही विरुद्ध प्रचार किया जाए, इसे राणा नान्हू सिंह सहन न कर सके। विद्यार्थियों का एक विशाल समूह लेकर उन्होंने ईसाई मत प्रचारक कैम्पों पर आक्रमण कर दिया। कैम्प उजाड़ डाले गये। ईसाई धर्म की पुस्तकों को पोखरे में जल-समाधि दे दी गई। इसके बाद कभी किसी ईसाई प्रचारक का मन्दिर के पावन प्रांगण में जाने का साहस न हुआ।

इस घटना से समस्त प्रशासकीय अधिकारी अप्रसन्न हो गये। उस समय स्थानीय कमिश्नर, कलेक्टर और एस.पी. सब के सब ईसाई धर्मावलंबी थे। उन्होंने मुकदमा चलाना चाहा, किन्तु नगर के कुछ प्रतिष्ठित सज्जनों के हस्तक्षेप के कारण यह कार्यवाही रुक गई।

राजनीतिक गतिविधियों से सम्पर्क

राणा नान्हू सिंह का विद्यार्थी जीवन भारतीय पराधीनता का कठोरतम समय था। अंग्रेजी शासन की कठोरता और दमन की दुर्दमनीयता के कारण साधारण जनता में नौकरशाही के विरुद्ध आवाज उठाने का साहस न था। तथापि उस अवस्था में भी राष्ट्र से प्रेम रखने वाले लोगों की कमी न थी। विदेशी शासन सत्ता को उन्मूलित करके राष्ट्र को स्वाधीन बनाने का प्रयाम करने वाले इन राष्ट्रभक्तों के दो वर्ग थे। एक वर्ग ऐसे लोगों का था, जो प्रत्यक्ष रूप से जनता के मध्य जागरण का संदेश देता रहता था। सरकारी अधिकारियों से मिलकर जनता के कष्टों को दूर करने का प्रयास करता था और आवश्यकता पड़ने पर सत्याग्रह आदि का भी सहारा लेता था। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस आदि से सम्बन्धित लोग इसी वर्ग के थे।

दूसरे वर्ग में वे लोग थे, जो सरकारी कार्यों में व्यवधान उत्पन्न करते थे। सरकारी खजानों को लूटते, नौकरशाही के विभिन्न शिकंजों को तोड़कर आतंक का वातावरण उत्पन्न करके विदेशी शासन सत्ता को दहला देने का प्रयास करते थे। ऐसे लोग गुप्त संगठनों के माध्यम से कार्य करते हुए स्वाधीनता प्राप्ति के लिए एक युगान्तरकारी क्रांति का बीजारोपण कर रहे थे।

राणा नान्हू सिंह ने विद्यार्थी जीवन में दोनो वर्गों से सम्बन्ध स्थापित किया। उनके हृदय में हिन्दू धर्म, हिन्दू जाति, हिन्दू संस्कृति और हिन्दू राष्ट्र के प्रति संस्कारतः अंकुरित उत्कट प्रेम और

बलिदान की भावना उन्हें एक सही दिशा प्रदान करने के लिए जागरूक थी। उस काल में ही उन्होंने अनेक क्रांतिकारियों से भी संपर्क स्थापित किया था, जो यथाअवसर मन्दिर पर भी आया करते थे।

बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भिक दशकों में भारतीय जनता की भावनाओं का नेतृत्व भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के हाथों में आ गया था। कांग्रेस में भी दो प्रकार के लोग थे। एक उग्रवादी, जो प्रत्यक्ष ध्वन्सात्मक कार्यवाही में विश्वास करते थे। दूसरे समझौतावादी, जो अपने नम्र विचारों के कारण 'नरम दल' के नाम से सम्बोधित किये जाते थे। उस समय कांग्रेस का नेतृत्व महात्मा गाँधी जैसे नरम दलीय नेता के हाथों में आ रहा था।

सन् 1920 में महात्मा गाँधी का गोरखपुर में भव्य स्वागत हुआ। बाले के मैदान में महात्मा गाँधी ने एक विशाल जनसमूह को सम्बोधित किया। राणा नान्हू सिंह ने गाँधी जी के कार्यक्रम की निर्विघ्न समाप्ति के लिए 'वालेण्टियर कोर' का संगठन किया था और गाँधी जी के कार्यों को पूरा करने में तन-मन-धन से सहयोग किया। किन्तु थोड़े दिनों के पश्चात् चौरीचौरा की प्रसिद्ध ऐतिहासिक घटना ने यह सिद्ध कर दिया कि राणा नान्हू सिंह (पूज्य महन्त दिग्विजयनाथजी) महात्मा गाँधी के ममझौतावादी सिद्धान्तों के पोषक न थे। सन् 1921 में महात्मा गाँधी का राष्ट्रव्यापी असहयोग आन्दोलन प्रारम्भ हुआ। राष्ट्रप्रेमी युवकों ने अपने अध्ययन-अध्यापन, नौकरी तथा व्यवसाय आदि का परित्याग कर असहयोग आन्दोलन में भाग लिया। इस समय पूर्वी उत्तर प्रदेश में विशेष रूप से गोरखपुर, देवरिया जनपद में कांग्रेस का संगठन अत्यंत शक्तिहीन था। राणा नान्हू सिंह ने इन आंदोलनों से प्रभावित होकर सन् 1920 ई. में ही कॉलेज का परित्याग कर दिया था। उन्होंने असहयोग आंदोलन को सफल बनाने का पूरा प्रयास किया।

गोरखपुर जिले में स्थित चौरीचौरा स्थान पर आंदालेन के खिलाफत की जो प्रतिक्रिया उत्पन्न हुई, उससे नौकरशाही तो आतंकित हुई ही, महात्मा गाँधी के अहिंसात्मक आंदोलन का रूप ही बदल गया। उन्हें बहुत शीघ्र ही अपना आंदोलन वापस लेना पड़ा। इस चौरीचौरा काण्ड के अभियुक्तों को फाँसी की सजा देने का निर्णय किया गया था। उनमें राणा नान्हू सिंह भी थे। किन्तु शिनाख्त न हो पाने के कारण वे मुक्त कर दिये गये।

बाल जीवन की कुछ प्रमुख घटनाएँ

गोरखनाथ मन्दिर पर आने के पश्चात् उनको योगिराज गम्भीरनाथजी की कृपा प्राप्त हो गई थी। संभवत: बालक की विलक्षण प्रतिभा को पहचान कर ही उन्होंने उसे संरक्षण देना प्रारम्भ कर दिया था। योगिराज गम्भीरनाथजी महान विभूतिसम्पन्न सिद्ध योगी थे। वे आधिभौतिक सम्बन्धों का परित्याग कर चुके थे। उनके स्वाभाविक गाम्भीर्य एवं तपोपूत नि:स्पृह व्यक्तित्व से प्रभावित बालक नान्हू सिंह के मन में एक आध्यात्मिक जिज्ञासा बलवती होने लगी। योगिराज गम्भीरनाथ जी ने उन्हें

अपने शिष्य महात्मा ब्रह्मनाथ जी के संरक्षण में देकर उनके पालन-पोषण तथा शिक्षा आदि की पूरी व्यवस्था कर दी थी। योगिराज सिद्ध महात्मा थे। बालक के प्रति उनके मन में अपार स्नेह था।

योगिराज अपने योगबल से अलौकिक कार्य करने में समर्थ थे। उन्होंने बालक नान्हू सिंह के जीवन को प्रभावित करने वाले अनेक चमत्कारिक कार्य किये थे, जिनका उल्लेख ब्रह्मलीन महन्त जी प्रायः किया करते थे। ८-९ वर्ष की अवस्था में बालक नान्हू सिंह गम्भीर रूप से बीमार पड़े। उनका शरीर ज्वर-ताप से दग्ध होने लगा। जब साधुओं ने योगिराज को बालक की बीमारी का समाचार सुनाया तो उन्होंने एक कूड़ी के जल पर हाथ फेर कर उन्हें पिला दिया। ज्वर का ताप तत्काल समाप्त हो गया।

इसी तरह 13-14 वर्ष की अवस्था में एक घटना और घटित हुई। एक दिन एक वृद्ध एक पुरानी अचकन और पाजामा लिए हुए आया। पूज्य योगिराज के आदेश से नान्हू सिंह ने इच्छा न रहते हुए भी उसे धारण कर लिया। उसकी जेब में हाथ डाला तो उसमें से केशों का एक लट निकला। रात्रि में उन्हें जोर का बुखार चढ़ा और दो-एक दिनों के पश्चात् चेचक निकल आई। चेचक का इतना भयंकर प्रकोप हुआ कि उससे बचना असम्भव ज्ञात होने लगा। जब योगिराज गम्भीरनाथ जी को बालक के संज्ञाशून्य होने का समाचार दिया गया तो उन्होंने उनके निश्चेष्ट शरीर को मँगवाकर अपनी चारपाई के नीचे रखवा लिया। सवेरे लोगों ने उन्हें जीवित पाया।

अन्य घटनाएँ

स्थानीय हाई स्कूल में उनके एक अध्यापक यदुनाथ चक्रवर्ती थे। वे बड़े ही सरल स्वभाव वाले थे। राणा नान्हू सिंह के हृदय में उनके प्रति सात्विक श्रद्धा थी। उक्त अध्यापक को अवकाश प्राप्ति की आयु के पूर्व ही विद्यालय की सेवाओं से मुक्त कर दिया गया। उस समय राणा नान्हू सिंह गोरक्षनाथ मन्दिर के महन्त हो चुके थे। उन्होंने अपने अन्य सहयोगियों से परामर्श कर तत्काल एक नये विद्यालय की स्थापना कर दी। यह विद्यालय 'गुडलक विद्यालय' के नाम से बक्शीपुर मुहल्ले में एक किराये के मकान में प्रारम्भ हुआ और श्री यदुनाथ चक्रवर्ती को ही विद्यालय को संचालित करने का कार्य सौंपा गया। उन्हें उसका प्रधानाचार्य बना दिया गया। कालान्तर में इसी विद्यालय ने विकसित होकर महाराणा प्रताप इण्टर कॉलेज का रूप धारण कर लिया।

विद्यार्थी जीवन में अपने शिक्षा-गुरु के प्रति उनके मन में जो श्रद्धा और आदर का भाव था, उसी के निर्वाह के लिए उन्होंने इतने बडे विद्यालय की स्थापना कर डाली। यह वस्तुतः उनके स्वाभिमान और गुरुभक्ति का सच्चा उदाहरण है।

दीक्षा एवं महन्त पद पर अभिषेक

15 अगस्त सन् 1933 में महन्त ब्रह्मनाथजी ने दिग्विजयनाथजी को विधिवत योगधर्म एवं

नाथ सम्प्रदाय की दीक्षा दी। इस समय तक वे अपने पुराने नाम से ही पुकारे जाते थे।

सन् 1935 में महन्त ब्रह्मनाथजी का गोलोकवास हो गया। उनके ब्रह्मलीन होने के पश्चात् श्रावण पूर्णिमा के दिन 15 अगस्त सन् 1935 को पूज्य दिग्विजयनाथजी गोरक्षनाथ मन्दिर के पीठाधीश्वर पद पर अभिषिक्त हुए। जिस समय पूज्य महन्तजी ने गोरक्षनाथ पीठाधीश्वर का उत्तरदायित्वपूर्ण पद ग्रहण किया उस समय मन्दिर की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थी। पूज्य महन्त दिग्विजयनाथ जी ने मन्दिर के विकास की योजनाएँ बनायीं और तत्काल योजनाबद्ध रूप से इन कार्यों के सम्पादन में लग गये। मन्दिर के पुनर्निर्माण और क्षेत्र-विस्तार के साथ उन्होंने सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक और राजनीतिक कार्यों का भी सफलतापूर्वक संचालन किया। उनकी कारयित्री प्रतिभा एवं समय की गतिविधियों को पहचान कर कार्य करने की अद्भुत क्षमता ने दो-तीन दशकों में ही मन्दिर को पूर्वांचल का ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण भारत का एक प्रसिद्ध तीर्थ और पर्यटन केन्द्र बना दिया। आज गोरक्षनाथ मन्दिर हिन्दू संस्कृति का प्रमुख केन्द्र बन गया है।

गोरक्षनाथ मन्दिर

नाथ सम्प्रदाय के आदि प्रवर्तक आदिनाथ और उसे शक्ति प्रदान करने वाले महान साधक श्री मत्स्येन्द्रनाथ तथा गुरु गोरक्षनाथ के गौरव का पुण्य प्रतीक यह मन्दिर उसी स्थान पर निर्मित है, जहाँ महायोगी गुरु गोरक्षनाथ ने योग की साधना की थी। उन्होंने इस पुण्य-स्थली पर तपस्या के द्वारा उस ज्ञान-ज्योति की प्राप्ति की थी, जिसके प्रकाश में केवल उत्तरी भारत और हिमाचल के क्षेत्र ही नहीं, समूचे भारतवर्ष और पड़ोसी देशों ने भी योग की शाश्वत सत्ता को हृदयंगम किया था। योगिराज गोरक्षनाथ की अखण्ड साधना, अलौकिक सिद्धि एवं शाश्वत आध्यात्मिक जीवन-दृष्टि के कारण ही उनके अनुयायी उन्हें अजर-अमर मानते हैं और उनका अस्तित्व सतयुग, त्रेता, द्वापर, और कलियुग सभी कालों में एक समान स्वीकार करते हैं।

महान गुरु गोरक्षनाथ की यह तपस्या भूमि प्रारम्भ में एक तपोवन के रूप में ही रही होगी। इस जन-शून्य शान्त तपोवन में योगियों के निवास के लिए कुछ छोटे-छोटे मठ रहे होंगे। मन्दिर का निर्माण बाद में हुआ होगा। आज हम जिस विशाल और भव्य मन्दिर का दर्शन करके हर्ष और विस्मय का एक साथ अनुभव करते हैं, वह पूज्य श्री दिग्विजयनाथ जी महाराज की ही देन है। पुराना मन्दिर इस नव-निर्माण की विशालता और व्यापकता में समाहित हो गया है। यह कहना अधिक समीचीन ज्ञात होता है कि पुराने मन्दिर ने अपनी विशाल साधना का चतुर्दिक प्रसार करके आज के अर्थवादी स्थूल संसार को अपनी शाश्वत महानता का अनुभव करने का अवसर दिया है।

पुराने मन्दिर का निर्माण कब और किसके द्वारा हुआ, यह ज्ञात नहीं है। मुस्लिम शासन काल में अनेक बार इस मन्दिर को नष्ट किया गया किन्तु महान योगी गोरक्षनाथ की तपस्या-स्थली पर निर्मित इस मन्दिर ने अपनी विशेषताओं को निरंतर अक्षुण्ण रखा। अलाउद्दीन के शासनकाल में मन्दिर

को पूर्णतया ध्वस्त कर दिया गया था। यहाँ पर निवास करने वाले योगियों और साधकों को निष्कासित कर दिया गया था। किन्तु थोड़े दिन के पश्चात् मन्दिर का पुनर्निर्माण हो गया था और साधक योगी भी यथास्थान समासीन हो गए थे। औरंगजेब की हिन्दू धर्मविरोधी नीति का भी इसे शिकार होना पड़ा था। मन्दिर पुनः नष्ट कर दिया गया, किन्तु अवसर मिलते ही उसका पुनर्निर्माण हो गया। बार-बार निर्मित होने पर भी इसके मूल स्थान में कुछ भी परिवर्तन नहीं किया गया।

मन्दिर का प्रांगण

श्री महन्त के रूप में गोरक्षनाथ पीठ पर आसीन होते ही महन्त जी ने मन्दिर के विस्तार का संकल्प तो किया ही उन्होंने मन्दिर के प्रांगण को अत्यंत विस्तृत, हरा-भरा और अन्तर्राष्ट्रीय केन्द्र के अनुकूल उपकरणों से युक्त करने का भी निश्चय किया। आज मन्दिर की विराट भव्यता तो पर्यटकों और श्रद्धालुओं को आकर्षित करती ही है, उसका प्रांगण भी दर्शकों के लिए आकर्षण का केन्द्र बन गया है। प्रतिदिन सहस्रों स्त्री-पुरुष मन्दिर में दर्शन करने आते हैं। पर्वों के अवसर पर उनकी संख्या अगणित हो जाती है। मन्दिर के विस्तार कार्य के साथ ही महन्तजी ने पुराने मठ के स्थान पर विशाल मठ का निर्माण प्रारम्भ करा दिया। सन् 1953 में यह विशाल प्रासाद पूर्ण हुआ।

1956-57 में उन्होंने प्रांगण में स्थित सरोवर का निर्माण कराया। इसी वर्ष उन्होंने साधु-संन्यासियों के आवास के लिए एक भवन का निर्माण कराया जिसे 'सन्त निवास' के नाम से अभिहित किया जाता है। श्री गोरक्षनाथ संस्कृत विद्यापीठ भवन का निर्माण 1957-58 में हुआ। योगिराज गम्भीरनाथ तथा अपने गुरु बाबा ब्रह्मनाथ की समाधियों का निर्माण भी उन्होंने कराया। मन्दिर से सम्बन्धित सारी भूमि के चारों ओर सुदृढ़ प्राचीर का निर्माण कराया। वाटिका, लॉन और फूलों की क्यारियों से उन्होंने समूचे प्रांगण को हरा-भरा कर दिया। आज गोरक्षनाथ मन्दिर के प्रांगण के भवन, उनका शिल्प तथा उन पर उत्कीर्ण कला के नमूने पूज्य महन्तजी की सुरुचिसम्पन्नता, सूक्ष्मदर्शिता की स्पष्ट अभिव्यक्ति कर रहे हैं।

गोरक्षनाथ मन्दिर-हिन्दू धर्म और संस्कृति का केन्द्र

महन्त दिग्विजयनाथ जी ने मन्दिर को नवीन रूप से व्यवस्थित किया। अब तक यह मन्दिर केवल नाथपंथी साधुओं का साधना केन्द्र और पर्यटक साधुओं और श्रद्धालुओं के लिए पूजा का मन्दिर मात्र था। महन्तजी ने इसे नाथ-योग के प्रचार और प्रसार का प्रमुख केन्द्र बनाया साथ ही हिन्दू धर्म और संस्कृति के समस्त अंगों को प्रोत्साहित करने के लिए उन्होंने इसे महान सांस्कृतिक केन्द्र बना दिया। शिवावतार महायोगी गोरक्षनाथ की पूजा तो यहाँ नित्य होती ही थी। राम और कृष्ण के नामोच्चारणों से भी मन्दिर का प्रांगण गुंजित होने लगा। ब्रिटिश शासन काल में इस मन्दिर ने हिन्दू धर्म और संस्कृति की रक्षा के लिए निरन्तर संघर्ष किया। अनेक विप्लवों के समय महन्त दिग्विजयनाथ ने परिस्थितियों का डटकर सामना किया अन्यथा इस क्षेत्र में आज हिन्दू जाति का रूप

कुछ दूसरा ही होता।

बहुमुखी प्रतिभा का विकास

सन् 1935 में गोरक्षनाथ मन्दिर के पीठाधीश्वर के पद पर अभिषिक्त होने के पश्चात् महन्त दिग्विजयनाथ के व्यक्तित्व को बहुमुखी प्रसार का अवसर मिला। सन् 1969 में महासमाधि लेने के समय तक वे विभिन्न क्षेत्रों में अनवरत गति से कार्य करते रहे। उन्होंने समसामयिक समाज को सुधारने का प्रयास किया। विभिन्न शिक्षा संस्थाओं तथा सांस्कृतिक केन्द्रों की स्थापना करके नवयुवक वर्ग को नयी दिशा प्रदान की, साधु समाज की परम्परागत ऐकान्तिकता और निष्क्रियता को दूर कर, उन्हें सच्चे समाज-धर्म से अवगत कराया और सक्रिय राजनीति में भाग लेकर राजनयिकों की अनवधानता दूर करने का प्रयास किया। राष्ट्र की बदलती हुई परिस्थितियों ने उन्हें हिन्दू धर्म और संस्कृति का सजग प्रहरी बना दिया। उन्होंने अपने व्यक्तित्व में विभिन्न विरोधाभासों को समन्वित कर लिया था। वे साधु होते हुए भी समाज से दूर न थे। विभिन्न संस्थाओं के संस्थापक होते हुए भी उनमें सर्वथा आसक्त न थे। राजनीति में रहते हुए भी कथनी-करनी में अन्तर उपस्थित करने वाले आज के राजनीतिक छल-छद्म से उनका लगाव न था। समाज सुधारक के रूप में निरन्तर कार्य करते हुए भी अपनी वैयक्तिक प्रभुता का उन्हें मोह न था। वे योगी होते हुए भी पूरे सामाजिक थे। उनके संग्रह में सेवा और त्याग का महान योग अन्तर्निहित था। वस्तुतः इस संग्रह और त्याग के सामरस्य ने ही उनको महान से महानतम बना दिया था।

हिन्दू धर्म और संस्कृति के सजग प्रहरी

हिन्दू जाति और धर्म के प्रति महन्त जी का संस्कारगत प्रेम था। उनके शरीर में सिसोदिया वंश का रक्त प्रवाहित हो रहा था। राणा सांगा और महाराणा प्रताप की आन और मान रक्षा की भावना उन्हें वंशानुगत रूप में प्राप्त हुई थी। भगवान् गोरक्षनाथ के मन्दिर की पवित्रता और आध्यात्मिक गरिमा ने मान, रक्षा तथा हिन्दुत्व प्रेम के साथ ही हिन्दू संस्कृति की रक्षा की भावना को और भी दृढ़ कर दिया। देश की राजनीतिक और सामाजिक स्थितियों ने भी उनके सांस्कृतिक भावों को सुदृढ़ किया। राष्ट्र और संस्कृति की रक्षा के लिए ही सन् 1934 ई. तक भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सिद्धांतों को स्वीकार कर उन्होंने कार्य किया। किन्तु कांग्रेस की मुस्लिम-तुष्टीकरण की नीति से असंतुष्ट होकर उन्होंने उसे छोड़ दिया।

हिन्दू महासभा की सदस्यता

सन् 1939 ई. में अमरवीर वी. डी. सावरकर काले पानी की सजा भुगत कर अण्डमान से कलकत्ता आए। वहाँ अपने स्वागत में आयोजित एक विशाल सभा को उन्होंने सम्बोधित किया। उस अवसर पर भाई परमानंद और अमरवीर सावरकर के भाषणों को सुनकर महन्तजी अत्यधिक प्रभावित हुए। उन्होंने उसी समय हिन्दू महासभा की सदस्यता स्वीकार कर ली।

गोरखपुर की साम्प्रदायिक स्थिति

सन् 1938-39 में गोरखपुर का वातावरण भी साम्प्रदायिक भावनाओं के कारण विषाक्त हो गया था। इस अवसर पर हिन्दू जाति और हिन्दू धर्म की रक्षा का संकल्प लेकर महन्तजी हिन्दू जाति के अग्रदूत के रूप में सामने आए।

गोरखपुर में साम्प्रदायिक प्रतिद्वन्द्विता की भावना का जन्म सर्वप्रथम 1916 में हुआ था। इस वर्ष हिन्दुओं का दशहरा और मुसलमानों का मुहर्रम संयोगवश एक साथ ही पड़ गया। काजी फिरासत हुसेन मुसलमानों के नेता थे। खजांची चौगहे पर नवें दिन की ताजिया बैठाई जाती थी। उस दिन वहाँ बड़ी चहल-पहल थी। अलीनगर की रामलीला का जुलूस भी उसी रास्ते निकलता था। बड़े-बड़े रस्सों में बंधे रथ को खींचते हुए हिन्दू लोग जब मानसरोवर से खजांची चौराहे पर पहुँचे तो काजी फिरासत हुसेन ने जुलूस को रुकवाना चाहा। अधिकारियों के हस्तक्षेप से जुलूस शान्तिपूर्वक निकल गया किन्तु हिन्दू मुसलमानों के हृदय में पारस्परिक विभेद की गाँठ दृढ़ हो गयी। सन् 1916 के पश्चात् नगर में हिन्दू-मुस्लिम विद्वेष की आग निरन्तर सुलगती गई।

गोरक्षनाथ मन्दिर की पूर्व दिशा में एक प्रतिष्ठित मुस्लिम रईस जाहिद बाबू ने जाहिदाबाद के नाम से एक मुहल्ला ही बसा दिया। वहाँ नित्य गौकशी हुआ करती थी। मुस्लिम लीग कार्यालय से मुसलमानों का एक जुलूस निकलता था। जुलूस में प्रश्न होता था कि कहाँ जाना है? उत्तर मिलता जाहिदाबाद। क्या करने? गौकशी करने। इस प्रकार के जुलूसों ने हिन्दू-मुस्लिम विद्वेष की आग में आहुति का काम किया। सन् 1935 तक गोरखपुर में हिन्दू-मुस्लिम विद्वेष की भावना बहुत बढ़ गई थी। सन् 1937 में स्थिति ऐसी हो गई थी कि महन्त जी को सत्याग्रह करना पड़ा। इन दो वर्षों का समय गोरखपुर के लिए घोर साम्प्रदायिक आतंक का समय था। महन्तजी ने बड़े साहस, धैर्य और बुद्धिमता से हिन्दू जाति की रक्षा की।

हिन्दू महासभा के मंच से

हिन्दू महासभा की सदस्यता ग्रहण करते ही महन्तजी सभा के प्रमुख नेताओं के वर्ग में समादृत होने लगे। कांग्रेस में रहते हुए भी वे हिन्दू हितों की रक्षा के लिए तत्पर रहते थे। सन् 1934 के पूर्व उन्होंने कांग्रेस की उन नीतियों का विरोध किया था, जिनसे हिन्दू जाति और धर्म के ऊपर किसी प्रकार के आघात की आशंका थी। सन् 1931 में कांग्रेस ने भारतीय जनगणना का विरोध किया था। महन्तजी ने कांग्रेस की उस अदूरदर्शिता की निंदा की और देश में हिन्दुओं की संख्या को कम दिखाये जाने से रोका। सन् 1935 में कांग्रेस ने साइमन कमीशन का विरोध किया। सन् 1945 में क्रिप्समिशन का भी बहिष्कार किया। महन्तजी ने दोनों अवसरों पर कांग्रेस की नीतियों का खुलकर विरोध किया। देश के विभाजन के अवसर पर महन्त जी की बातें अधिक दूरदर्शितापूर्ण सिद्ध हुई।

हिन्दू महासभा के मंच से महन्तजी को मुक्त रूप से कार्य करने का अवसर मिला। एक वर्ष

पश्चात् ही उन्होंने अखिल भारत हिन्दू महासभा के वार्षिक अधिवेशन में भाग लिया। उस अवसर पर उनके भाषणों की सबने सराहना की। उन्होंने एक साथ ही धार्मिक और राजनीतिक कार्यों को अपने हाथ में लिया और कुशलतापूर्वक उनका निर्वाह किया।

वे आगरा प्रान्तीय हिन्दू महासभा के महामंत्री रहे। संयुक्त प्रांतीय हिन्दू महासभा के मंत्री और फिर अध्यक्ष चुने गये। सन् 1939 में डॉ. मुन्जे की अध्यक्षता में उन्होंने कमिश्नरी हिन्दू महासभा के अधिवेशन का आयोजन किया। इसी वर्ष उन्होंने 'अखिल भारतवर्षीय अवधूत वेष बारह पंथ योगी महासभा' की स्थापना की। अनेक वर्षों तक वे उसके अध्यक्ष रहे। साधु सम्प्रदाय को उन्होंने नवीन दिशा प्रदान की। निष्क्रियता और ऐकान्तिकता के स्थान पर उन्होंने समाज सापेक्ष्य कार्यों की ओर प्रेरित किया। उन्होंने समस्त हिन्दू मन्दिरों और मठों को धीरे-धीरे संगठित किया और उनमे एकसूत्रता लाने का सफल प्रयास किया।

सन् 1939 में दिल्ली शिव मन्दिर सत्याग्रह में उन्होंने अपने गुरु भाई बाबा नौमीनाथ के नेतृत्व में सत्याग्रहियों का जत्था भेजा था। मुल्तान की जेल में पर्याप्त समय तक सजा भुगतने के बाद यह जत्था मुक्त हुआ। इस वर्ष फौज में मुसलमानों की भर्ती पर अधिक जोर दिया जा रहा था। मुहम्मद अली जिन्ना यह चाहते थे कि फौज में मुसलमानों की संख्या अधिक हो जाये। महन्त जी ने इस नीति का सख्त विरोध किया। फलतः हिन्दुओं की भी भर्ती होती रही।

सन् 1942 में

ब्रिटिश शासन की दृष्टि पहले से ही महन्तजी पर लगी हुई थी। सन् 1942 में महात्मा गाँधी ने भारत छोड़ो आंदोलन का नेतृत्व किया। समूचा राष्ट्र विदेशी शासन सत्ता और विदेशी सामग्रियों के बहिष्कार के लिए उतावला हो रहा था। महन्तजी को उस अवसर पर मुक्त न रहने देने के लिए नौकरशाही की ओर से उन पर अनेक आरोप लगाये गये। कहा गया कि नेपाल में राणा विरोधी आन्दोलन के वही सूत्रधार हैं। यह भी कहा गया कि वे जर्मनी और जापान को अंग्रेजों के विरुद्ध मदद देते हैं। महन्तजी के विरुद्ध वारण्ट निकाला गया। उस समय मि. यंग डी.आई.जी. के पद पर कार्य कर रहे थे। गोरखपुर में मि. वाडेल पुलिस अधीक्षक थे। यंग साहब हाकी के मैदान में महन्तजी के साथ खेल चुके थे और उनके विचारों से पूर्णतया अवगत थे। उन्होंने अपने उत्तरदायित्व के आधार पर महन्तजी के विरुद्ध भेजे गये वारण्ट को वापस करा दिया था।

सन् 1944 में महन्तजी ने प्रान्तीय हिन्दू महासभा के वार्षिक अधिवेशन का आयोजन गोरखपुर में किया। डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने इस अधिवेशन को सम्बोधित किया था। सन् 1947 में भारत के विभाजन का प्रश्न भारतीय नेताओं के सम्मुख था। राजगोपालाचार्य ने विभाजन के सम्बन्ध में अपना सुझाव प्रस्तुत किया जो सी आर फारमूला के नाम से प्रसिद्ध है। महन्तजी ने इस फारमूले का डटकर विरोध किया। उन्होंने गोरखपुर में इसी वर्ष अखिल भारतवर्षीय हिन्दू महासभा

का अधिवेशन बुलाया। उस समय महन्तजी आगरा प्रान्तीय हिन्दू महासभा के अध्यक्ष थे। धर्मवीर भोपटकर की अध्यक्षता में होने वाला यह अधिवेशन राजनीतिक और धार्मिक दोनों दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण था। उस समय भारत के विभाजन का कुचक्र तेजी से चल रहा था। नोवाखाली, त्रिपुरा, कोमिला आदि स्थानों पर हिन्दुओं के ऊपर संगठित ढंग से आघात किये गये थे। महन्तजी के प्रयास से इस अधिवेशन में अखण्ड भारत आंदोलन का शक्तिपूर्वक समर्थन किया गया था। दूसरी ओर परिस्थितियों को देखते हुए समस्त हिन्दू जाति को अपनी कट्टरता और रूढ़िवादिता को त्यागकर उदार होने की अपील की गई। इस अधिवेशन का तत्काल प्रभाव पड़ा। पाकिस्तान निर्माण का कार्य 1946 में ही हो जाने वाला था। वह कम से कम एक वर्ष के लिए तो रुक ही गया।

ब्रिटिश नौकरशाही ने मुस्लिम लीग के नेताओं को पहले से ही प्रोत्साहन दे रखा था। उन्होंने मुसलमानों को महत्त्वपूर्ण प्रशासनिक पदों पर नियुक्त कर रखा था। ये मुसलमान अधिकारी विभाजन के अवसर पर बहुत घातक सिद्ध होंगे, यह सोचकर महन्तजी ने इसका खुलकर विरोध किया। उत्तर प्रदेश में उस समय 70 प्रतिशत प्रशासनिक पदों पर मुसलमान ही थे। पुलिस और गुप्तचर विभाग उन्हीं से भरा था। इन तत्त्वों के भीतर छिपी हुई कुटिल राजनीति को परख कर महन्तजी ने 9 अगस्त 1947 को लखनऊ में हिन्दुओं की 10 सूत्रीय मांगों को लेकर सीधी कार्यवाही का आंदोलन छेड़ दिया। वे गिरफ्तार कर लिए गये। उनके साथियों को भी जेल में डाल दिया गया। इसके पश्चात् ही भारत विभाजन की घोषणा की जा सकी।

1946 के अखिल भारतीय हिन्दू महासभा अधिवेशन के पश्चात् महन्तजी और श्री लक्ष्मी शंकर वर्मा हिन्दू महासभा की कार्यकारिणी समिति के सदस्य चुन लिए गये। महन्तजी ने समस्त भारत का पर्यटन किया। उस समय और इसके पश्चात् भी यथावसर कलकत्ता, बम्बई, दिल्ली आदि स्थानों पर जाकर उन्होंने विभिन्न सभाओं में भाषण किया। इन सभी स्थानों पर वे सर्वाधिक पूज्य और सम्मानित हुए। 1946 में उन्होंने लोकसभा की सदस्यता के लिये श्री श्रीप्रकाश के विरुद्ध परचा दाखिल किया था। किन्तु दुर्भाग्यवश परचा ही खारिज हो गया।

गाँधी हत्या काण्ड के छींटे (1948 ई.)

भारत विभाजन के पश्चात् पाकिस्तान को अधिक से अधिक सुविधाएँ देने के लिए गाँधीजी ने सात सूत्रीय माँगों को लेकर अनशन प्रारम्भ कर दिया था। उन्होंने पाकिस्तान को 55 करोड़ रुपये देने का आग्रह किया। भारतीय नवयुवकों का वर्ग इसे सहन न कर सका। नाथूराम गोडसे ने उतावली में गाँधीजी की हत्या कर दी। गोडसे ने हत्या का समूचा उत्तरदायित्व स्वयं ले लिया था, किन्तु तत्कालीन सरकार ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और हिन्दू महासभा के प्रभावशाली नेताओं की धरपकड़ प्रारम्भ कर दी। महन्तजी पर आरोप लगाया गया कि उन्हीं की पिस्तौल से गोडसे ने गाँधीजी की हत्या की थी। उन्हें नजरबन्द कर दिया गया था और 19 महीने तक वे बंदी जीवन व्यतीत करते रहे। इस

अवसर पर मठ की समस्त चल और अचल सम्पत्ति भी जब्त कर ली गई थी किन्तु महन्तजी न्यायालय के द्वारा निर्दोष सिद्ध हुए।

नवजीवन को क्षमादान

गाँधी हत्याकाण्ड के तुरन्त बाद राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया था। समूचे देश में हिन्दू महासभा विरोधी प्रचार कार्य चल रहा था। इसी समय कलकत्ते में हिन्दू महासभा का अधिवेशन आयोजित किया गया था। अनेक लोगों ने इस अवसर पर बहाने बनाकर अधिवेशन में भाग नहीं लिया किन्तु डॉक्टर नारायण भास्कर खरे, वीर सावरकर, प्रो. देशपाण्डेय तथा महन्तजी ने उसमें भाग लिया। महन्तजी ने उसी अवसर पर हिन्दू युवक सभा का उद्घाटन किया।

गाँधी हत्याकाण्ड के सम्बन्ध में लखनऊ से प्रकाशित होने वाले समाचार पत्र 'नवजीवन' ने महन्त जी के ऊपर खूब कीचड़ उछाला। आरोप सिद्ध न होने पर महन्त जी कारावास से मुक्त हुए। उन्होंने 'नवजीवन' के ऊपर एक लाख रुपये की मान-हानि का दावा कर दिया। सिविल जज के न्यायालय से नवजीवन के विरुद्ध व्यय सहित एक लाख रुपये की डिग्री हो गई। किन्तु 'नवजीवन' के सम्पादकों और व्यवस्थापकों ने महन्त जी से व्यक्तिगत रूप से मिलकर तथा समाचार पत्रों के माध्यम से जब क्षमा माँगी तो उदार हृदय महन्त जी ने उसे क्षमा कर दिया। 'नवजीवन' को नया जीवन मिल गया। अन्यथा उसके दिवाले की स्थिति आ जाती।

सन् 1948 के पश्चात् महन्तजी ने अपना जीवन राष्ट्र-हित के कार्यों में लगा दिया। नेहरू-लियाकत पैक्ट के द्वारा हिन्दू हितों पर आघात होते देखकर उन्होंने उसका विरोध किया। शेख अब्दुल्ला द्वारा कश्मीर के अलग राज्य की माँग को उन्होंने राष्ट्रद्रोही कार्य कहा। गोवा, दमन, दीव की स्वाधीनता का उन्होंने पूर्ण समर्थन किया और स्वाधीनता संग्राम को उग्र बनाने के लिए उन्होंने स्वयंसेवकों का जत्था भेजा। गोरक्षा आन्दोलन का देशव्यापी प्रचार किया। अयोध्या में राम जन्मभूमि के उद्धार कार्य में उन्होंने हार्दिक सहयोग प्रदान किया। सन् 1955-56 में मास्टर तारासिंह ने पृथक पंजाबी सूबे की माँग की। इस माँग को लेकर उन्होंने आमरण अनशन भी प्रारम्भ कर दिया। महन्त दिग्विजयनाथ राष्ट्रीय एकता को किसी भी मूल्य पर खण्डित होते नहीं देखना चाहते थे। उन्होंने मास्टर तारा सिंह से भेंट की। परिस्थिति की गम्भीरता और उसके भावी परिणाम से परिचित कराया। अन्ततः मास्टर तारा सिंह ने अनशन त्याग दिया। इससे ब्रह्मलीन महन्तजी की निष्ठा, दूरदर्शिता, सूझबूझ एवं राजनीतिक प्रभाव का परिचय प्राप्त होता है।

11 मई सन् 1957 में दिल्ली में प्रथम स्वाधीनता संग्राम का शताब्दी समारोह मनाया गया। इस समारोह की अध्यक्षता स्वातंत्र्य सेनानी वीर सावरकर जी ने की थी। भारत की स्वतंत्रता के लिए आजीवन संघर्षशील महन्तजी ने इस समारोह में अपना पूरा सहयोग प्रदान किया था। समारोह की सफलता का श्रेय चाहे जो ले किन्तु समारोह की सच्ची भावना के प्रतीक दो ही नेता थे, वीर

सावरकर और महन्त दिग्विजयनाथजी।

सन् 1959 में काशी विश्वनाथ मन्दिर उद्धार आन्दोलन में उन्होंने भाग लिया। दफा 144 को भंग करने के आरोप में उनके अनेक सहकर्मी गिरफ्तार हो गये। महन्तजी ने राज्यपाल को पत्र लिखकर मन्दिर के उद्धार के औचित्य पर बल दिया। भारत गणराज्य की स्वदेशी सरकार हिन्दू कोड बिल, हिन्दू विवाह और तलाक तथा हिन्दू सम्पत्ति उत्तराधिकार अधिनियम जैसे कानूनों का निर्माण कर हिन्दू सत्वों पर कुठाराघात कर रही थी। महन्तजी ने इन बिलों का विरोध किया। सन् 1960 में हरिद्वार में अखिल भारतीय षट्दर्शन साधु सम्मेलन के अध्यक्ष पद से उन्होंने इन बिलों का विरोध किया और अपने ओजस्वी भाषणों से उनके विरुद्ध जनमत जागृत किया।

राष्ट्रीय संकट का वर्ष 1962

बाह्य और आन्तरिक दोनों दृष्टियों से सन् 1962 का वर्ष देश के लिए घोर संकट का समय था। उस समय तक पंचशील के सिद्धांतों पर आधारित हिन्दी-चीनी मैत्री का सम्बन्ध टूट चुका था। चीन ने लगभग 12 सहस्र वर्गमील भारतीय भूमि पर अधिकार कर लिया था। युद्ध की आशंका बलवती होती जा रही थी। इधर देश में बढ़ती हुई मुस्लिम साम्प्रदायिकता की भावना नयी दिशा की ओर संकेत कर रही थी। केरल में मुस्लिम लीग की स्थापना हो चुकी थी। पाकिस्तान के संकेतों पर देश में ही पंचमार्गियों का एक बहुत बड़ा वर्ग प्रस्तुत हो रहा था। सन् 1961 में अखिल भारतीय स्तर पर मुसलमानों को संगठित करने का प्रयास हुआ था। दिल्ली में उनकी एक विशाल सभा हुई। भारत की किसी भी राजनीतिक संस्था ने इस साम्प्रदायिक सम्मेलन के विरुद्ध एक शब्द भी नहीं कहा। महन्तजी ने उसी समय यह आशंका व्यक्त की कि यह मुस्लिम सम्मेलन मुस्लिम लीग के संगठन और देश के पुनर्विभाजन की नींव को मजबूत करने वाला है। उन्होंने उसका खुलकर विरोध किया।

अक्टूबर 1961 में महन्तजी ने मुस्लिम साम्प्रदायिकता का विरोध करने के लिए अखिल भारतीय हिन्दू सम्मेलन का आयोजन दिल्ली में किया। सम्मेलन की अध्यक्षता कलकत्ता उच्च न्यायालय के भूतपूर्व न्यायाधीश तथा कलकत्ता विश्वविद्यालय के भूतपूर्व उपकुलपति और बंगाल विधान परिषद के सदस्य डॉ. चिंतामणि देशमुख ने भी भाग लिया था। जनरल करियप्पा ने भी इस सम्मेलन में उपस्थित होकर अपने राष्ट्र-प्रेम का परिचय दिया था। महन्तजी ने उस सम्मेलन को मुस्लिम साम्प्रदायिकता के बढ़ते हुए रोग के लिए एक मात्र औषधि कहा था।

हिन्दू महासभा के अध्यक्ष

हिन्दू महासभा ने सन् 1960 में महन्तजी को महासभा का अध्यक्ष निर्वाचित किया था। वे हिन्दू जाति के राष्ट्रपति कहे गये। देश की बिगड़ती हुई स्थिति को देखते हुये महन्तजी ने हिन्दू

राष्ट्रपति के अनुरूप आचरण करके हिन्दू जाति और धर्म की रक्षा का अथक प्रयास किया। अखिल भारतवर्षीय हिन्दू महासभा के अधिवेशन में उन्होंने अपने समस्त आलोचकों और विरोधियों को जो उत्तर दिया था, वह ऐतिहासिक दृष्टि से बड़ा ही महत्त्वपूर्ण था।

विश्व हिन्दू धर्म सम्मेलन

सन् 1965 में महन्तजी ने अखिल विश्व हिन्दू धर्म सम्मेलन का आयोजन दिल्ली में किया। इस सम्मेलन में विभिन देशों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। तीन जगद्‌गुरु शंकराचार्यों की उपस्थिति बड़ी महत्त्वपूर्ण थी। डॉ. राधाकृष्णन ने भी सम्मेलन को सम्बोधित किया था।

लोकसभा के मंच से

सन् 1967 में महन्तजी ने गोरखपुर संसदीय निर्वाचन क्षेत्र से हिन्दू महासभा के प्रत्याशी के रूप में कांग्रेस के प्रत्याशी को पराजित कर लोकसभा का चुनाव जीता। लोकसभा में वे हिन्दू महासभा के एकमात्र सदस्य थे। अकेले होते हुए भी लोकसभा के प्रत्येक विवाद में अपनी वाग्मिता, चातुर्य एवं प्रत्युत्पन्नमतित्व के कारण उन्होंने सदैव सबका ध्यान आकर्षित किया। यों तो उनकी हिन्दू राष्ट्रवादी विचारधारा के कारण मुसलमानों और साम्यवादी सदस्यों में उत्तेजना का वातावरण उत्पन्न हो जाता था तथापि वे अपने विचारों को निर्भीकता के साथ अभिव्यक्त करने से चूकते न थे। नक्सलियों की समस्या पर उन्होंने सदैव कम्युनिस्टों को ललकारा। परिवार नियोजन के प्रश्न पर हिन्दू हितों की हमेशा वकालत की। गोरक्षा अभियान का अखिल भारतवर्षीय स्तर पर नेतृत्व किया। पूर्वोत्तर रेलवे की छोटी लाइन को बड़ी लाइन के रूप में परिवर्तित करने की स्वीकृति उन्हीं के प्रयास से मिली।

नाथपंथ का प्रचार और प्रसार

गोरखनाथ मन्दिर के महन्त के रूप में महन्त दिग्विजयनाथ जी ने नाथपंथी मन्दिरों और मठों को संगठित करने का प्रयास किया। इन मठों में रहने वाले योगियों को उन्होंने उनके सामाजिक दायित्व से परिचित कराया। नाथपंथ सम्बन्धी साहित्य के उद्धार का भी उन्होंने सम्यक प्रयास किया। उन्होंने प्रामाणिक विद्वानों से अनेक ग्रन्थों का प्रणयन कराया। महन्त दिग्विजयनाथ ट्रस्ट और गोरखनाथ मन्दिर की ओर से अनेक ग्रन्थ प्रकाशित हुए। 'फिलॉसफी ऑफ गोरखनाथ' पुस्तक की सराहना महामहोपाध्याय पं. गोपीनाथ कविराज एवं पं. हजारी प्रसाद द्विवेदी प्रभृति विद्वानों ने की है। इस बहुप्रशंसित पुस्तक का हिन्दी अनुवाद भी गोरखदर्शन के नाम से प्रकाशित हो चुका है। ट्रस्ट तथा मन्दिर ने उनके सान्निध्य में निम्नांकित प्रकाशन भी कराया :-

1. हिन्दू धर्म और संस्कृति (हिन्दी)
2. आदर्श योगी योगिराज गम्भीरनाथ (हिन्दी)
3. नाथयोग एक परिचय (हिन्दी)
4. योगिराज गम्भीरनाथ (अंग्रेजी)

5. नाथयोग (अंग्रेजी)
6. योग रहस्य (हिन्दी)
7. आदर्श योगी (हिन्दी)
8. एक सत्यान्वेषी के अनुभव (अंग्रेजी)
9. गोरख दर्शन (हिन्दी)

इन पुस्तकों के प्रकाशन के अतिरिक्त महन्तजी ने एक विशाल पुस्तकालय की भी स्थापना की है, जिसमें नाथयोग तथा हिन्दू धर्म और संस्कृति से सम्बन्धित सहस्रों पुस्तकें संगृहीत हैं। इस पुस्तकालय का निरन्तर विकास किया जा रहा है। भारतीय धर्म और साहित्य पर शोध करने वाले छात्रों के लिए इस पुस्तकालय को व्यवस्थित करने का प्रयास चल रहा है।

शिक्षा के क्षेत्र में

गोरखपुर जैसे पिछड़े जनपद की जनता को केवल धार्मिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक कार्यों के द्वारा प्रगति के पथ पर लाना सम्भव न था। उन्हें शिक्षित तथा प्रबुद्ध करना नितान्त आवश्यक था। इसीलिए गद्दी पर बैठते ही महन्त दिग्विजयनाथजी ने शिक्षा के प्रसार पर विशेष ध्यान दिया। उन्होंने सर्वप्रथम 'गुडलक स्कूल' के नाम से एक अंग्रेजी स्कूल की स्थापना की जो बक्शीपुर में एक किराये के भवन में चलने लगा तथा श्री यदुनाथ चक्रवर्ती उसके प्रथम प्रधानाचार्य थे। कालान्तर में इसी विद्यालय से दो विद्यालयों की स्थापना हुई। आर्यसमाज मन्दिर के संरक्षण में डी. ए.वी. कॉलेज खुला और महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के संरक्षण में महाराणा प्रताप इण्टर कॉलेज की स्थापना हुई। महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् की स्थापना कर महन्तजी ने गोरखपुर के शैक्षणिक जगत् में एक क्रांति सी पैदा कर दी। इस परिषद के तत्वावधान में प्रारम्भिक शिक्षा से लेकर उच्चतर शिक्षा प्रदान करने तक की व्यवस्था हुई। प्रारम्भिक शिक्षा के लिए महाराणा प्रताप शिशु शिक्षा विहार, रामदत्तपुर में और दूसरा सिविल लाइन्स में खोला गया। हाई स्कूल और इण्टरमीडिएट की शिक्षा के लिए महाराणा प्रताप इण्टर कॉलेज की स्थापना हुई, जो इस जनपद की प्रमुख शैक्षणिक संस्था है। इसी विद्यालय के प्रांगण में महाराणा प्रताप डिग्री कॉलेज की स्थापना हुई। महिलाओं के लिए अलग से महाराणा प्रताप महिला डिग्री कॉलेज खुला। गोरखपुर में विश्वविद्यालय की स्थापना होने पर उसकी प्रगति और उन्नति में सहयोग देने के विचार से महन्तजी ने इन दोनों डिग्री कॉलेजों को विद्यालय भवन और उसके समस्त उपकरणों के साथ विश्वविद्यालय को दान कर दिया। गोरखपुर की किसी अन्य संस्था ने कभी भी इस प्रकार का दान नहीं किया होगा। वस्तुतः महन्तजी संस्थाओं के स्वामित्व के लोभी न थे। उनका उद्देश्य महान था। वे किसी भी मूल्य पर गोरखपुर में विश्वविद्यालयी शिक्षा की व्यवस्था करना चाहते थे। इसीलिए इतनी बड़ी सम्पत्ति का दान करते हुए उन्हें तनिक भी हिचक न हुई। विश्वविद्यालय स्थापना समिति के वे वरिष्ठ उपाध्यक्ष थे। उसकी स्थापना में उन्होंने तन, मन और धन से सहयोग दिया।

ओवरी चौक में इन्हीं के नाम से दिग्विजयनाथ हाई स्कूल की स्थापना हुई। भारतीय धर्म और

संस्कृति का प्राचीन पद्धति से अध्ययन करने के लिए उन्होंने मन्दिर परिसर में ही श्री गोरक्षनाथ संस्कृत विद्यापीठ की स्थापना की। दिवंगत होने के कुछ दिनों पूर्व उन्होंने दिग्विजयनाथ डिग्री कॉलेज की स्थापना की। उन्होंने एक कृषि महाविद्यालय की स्थापना का प्रयास भी किया था। किन्तु आकस्मिक रूप से इहलीला समाप्त हो जाने के कारण यह संकल्प पूर्ण न हो सका।

प्रौद्योगिक शिक्षा

पौरस्त्य एवं पाश्चात्य ढंग की महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालयी शिक्षा के साथ महन्तजी प्रौद्योगिक शिक्षा की भी व्यवस्था करना चाहते थे। उन्होंने महाराणा प्रताप पॉलिटेक्निक इन्स्टीट्यूट की स्थापना की। पूर्ण विकसित एवं पल्लवित करके उन्होंने इसे सरकारी संरक्षण में दे दिया। उन्होंने एक इंजीनियरिंग कॉलेज खोलने की योजना भी बनाई थी। विश्वविद्यालय की स्थापना के साथ उसी के तत्वावधान में उन्होंने इंजीनियरिंग कॉलेज को विकसित करने में सहयोग दिया। महन्तजी ने गोरखपुर में मेडिकल कॉलेज खोलने का भी प्रयास किया था। उसी प्रयास के फलस्वरूप यहाँ मेडिकल कॉलेज खोलने की घोषणा हुई। महन्तजी ने शिक्षा के विकास का बहुविध प्रयास किया। इस क्षेत्र में उनकी उपलब्धियाँ सदैव स्मरणीय रहेंगी।

विश्वविद्यालय के शिल्पी महन्त दिग्विजयनाथ

दिग्विजयनाथ जी महाराज का मानना था कि सशक्त भारत राष्ट्र की आधारशिला भारतीय संस्कृति के उपासक युवा ही रख सकेंगे और वे ही भारत का प्राचीन गौरव पुनर्प्रतिष्ठित कर सकेंगे। ऐसे में भारत केन्द्रित शिक्षा व्यवस्था ही ऐसे राष्ट्रभक्त भारतीय संस्कृति के उपासक युवा तैयार कर सकेगी। 1932 ई. में इस युवा साधु ने सिद्धयोग पीठ की छत्रछाया में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् की नींव रखी। 1932 ई. में स्थापित महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् का बोधावाक्य था-'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी' तथा 'जो हठि राखे धर्म को तिहि राखें करतार'। इस प्रकार महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज के नेतृत्त्व में योग-साधना की इस सिद्ध योगपीठ ने भारत माता एवं भारतीय धर्म संस्कृति की रक्षा, तथा उसकी पुनर्प्रतिष्ठा को भी अपनी साधना का हिस्सा बना लिया।

1947 में भारत जब आजाद हुआ, गोरखपुर में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् इण्टर तक की भारत केन्द्रित शिक्षा प्रणाली का तन्त्र विकसित कर चुका था। शिक्षा को समर्थ एवं समृद्ध राष्ट्र के विकास का आधार मानने वाले गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज गोरखपुर को उच्चशिक्षा का केन्द्र बनाने की दिशा में बढ़ चले और महाराणा प्रताप महाविद्यालय की स्थापना की। प्राथमिक से लेकर उच्च शिक्षा के इन महाविद्यालयों की स्थापना के साथ-साथ इस मनीषी के मन में गोरखपुर में विश्वविद्यालय की स्थापना का स्वप्न स्वाभाविक था। योग-अध्यात्म के साधक, गोरक्षपीठ के इस तपस्वी संन्यासी के तप-बल से किसी भी स्वप्न का साकार होना सहज था, सो यह स्वप्न भी शीघ्र आकार लेने लगा, कड़ियाँ जुड़ने लगीं, समाज-शासन के स्वर मिलने लगे और

गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज द्वारा 1948 ई. में स्थापित महाराणा प्रताप महाविद्यालय में मैं गणित का प्रवक्ता नियुक्त हुआ। गोरखपुर विश्वविद्यालय की स्थापना हेतु महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज ने अपने दोनों महाविद्यालय - महाराणा प्रताप महाविद्यालय एवं महाराणा प्रताप महिला महाविद्यालय - दान में दे दिया। सम्पूर्ण भूमि, भवन, सम्पत्ति, विद्यार्थी, शिक्षक विश्वविद्यालय में समाहित कर दिए गये। मैं भी विश्वविद्यालय के गणित विभाग का प्रवक्ता हो गया। महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज द्वारा दान स्वरूप दिए गये दोनों महाविद्यालयों के बगैर विश्वविद्यालय की स्थापना असम्भव थी। आज उस परिसर में विश्वविद्यालय का पुराना वाणिज्य विभाग एवं प्रबन्धन विभाग, शिक्षा संकाय, प्रौढ़ शिक्षा विभाग तथा एक महिला छात्रवास अवस्थित है।

प्रो. यू.पी. सिंह, पूर्व कुलपति
वीरबहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर

गोरखपुर विश्वविद्यालय में मेरी सेवा का पूरा श्रेय महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज को है। महाराणा प्रताप महाविद्यालय में वाणिज्य पढ़ाने हेतु शिक्षक के रूप में मेरी खोज महन्त जी ने की थी। मेरी नियुक्ति के समय उन्होंने कहा था कि अभी पढ़ाओ जल्दी तुम्हें विश्वविद्यालय जैसे प्रतिष्ठित संस्था में सेवा का अवसर मिलेगा। मुझे तभी लग गया था कि गोरखपुर में विश्वविद्यालय की स्थापना का सपना देखा जा चुका है। यह स्वप्न इतना जल्दी महन्त जी साकार कर देंगे, यह विश्वास नहीं था। गोरखपुर विश्वविद्यालय की स्थापना महन्त जी की दृढ़ इच्छा शक्ति एवं अपने सपनों को सच करने की उनकी जिद का परिणाम था।

डॉ. भोलेन्द्र सिंह
पूर्व कुलपति
वीरबहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर

विश्वविद्यालय की स्थापना का मार्ग प्रशस्त होने लगा। महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज के इस महायज्ञ को महात्मा गाँधी की हत्या के छीटें भी रोक नहीं पाए।

1945 तक माध्यमिक शिक्षा की नींव मजबूत कर महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज ने उच्च शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षण संस्थाओं की स्थापना के प्रयत्न प्रारम्भ कर दिये और महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् द्वारा महाराणा प्रताप डिग्री कालेज की स्थापना सिविल लाइन्स में कर दी गयी। गोरखपुर के तत्कालीन लगभग सभी प्रतिष्ठित एवं सामाजिक लोग महन्त दिग्विजयनाथ जी के महाराज के लोक संग्रही अभियान के हिस्सा बन चुके थे और इनमें से प्रमुख महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के पदाधिकारी एवं सदस्य थे। यही टीम गोरखपुर विश्वविद्यालय की स्थापना में सक्रिय हुयी। महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के लगभग सभी पदाधिकारी एवं सदस्य विश्वविद्यालय स्थापना समिति के पदाधिकारी एवं सदस्य बने। गोरखपुर विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए तत्कालीन मुख्यमंत्री गोविन्दवल्लभ पंत से मिलकर महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज ने गोरखपुर में विश्वविद्यालय की स्थापना का आग्रह किया। उनके इस कार्य में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के अध्यक्ष सर सुरेन्द्र सिंह मजीठिया एवं कल्याण के सम्पादक तथा गीताप्रेस के आधार-स्तम्भ एवं महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के सदस्य भाईजी हनुमान प्रसाद सहायक बनें। उस समय गोरखपुर के महाविद्यालय आगरा विश्वविद्यालय से सम्बद्ध थे। अपने दोनों महाविद्यालयों की स्थापना के साथ-साथ गोरखपुर विश्वविद्यालय की स्थापना हेतु महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज ने इस दिशा में पहल प्रारम्भ की। इसी बीच श्री बब्बन मिश्र और सेन्ट एण्ड्रयूज कॉलेज के तत्कालीन प्राचार्य डॉ. सी.जे. चाको ने गोरक्षपीठाधीश्वर से मिलकर विश्वविद्यालय की स्थापना

में सहयोग करने की प्रतिबद्धता जतायी। तय हुआ कि महाराणा प्रताप महाविद्यालय एवं सेण्ट एण्ड्रयूज कालेज दोनों मिलाकर विश्वविद्यालय स्थापना हेतु प्राथित धनराशि 50 लाख रुपये का मानक पूरा हो जाएगा। महन्त जी ने भाईजी हनुमानप्रसाद पोद्दार एवं डॉ. सर सुरेन्द्र सिंह मजीठिया (डॉ. सर सुरेन्द्र सिंह मजीठिया महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के अध्यक्ष एवं भाईजी सदस्य थे) के साथ उत्तर प्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री पं. गोविन्द बल्लभ पन्त से मिलकर गोरखपुर में विश्वविद्यालय खोलने का प्रस्ताव रखा। पं. गोविन्द बल्लभपन्त जी द्वारा प्रस्ताव की स्वीकृति का आश्वासन प्राप्त होने के पश्चात इस दिशा में सक्रिय प्रयत्न प्रारम्भ हुए। उत्तर प्रदेश के तत्कालीन शिक्षामंत्री डॉ. सम्पूर्णानन्द जी गोरखपुर आए और श्री गोरखनाथ मन्दिर में महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज के साथ बैठक कर गोरखपुर विश्वविद्यालय की स्थापना की घोषणा की। किन्तु भारतीय संविधान में अल्प-संख्यक संस्था को विशेष दर्जा प्राप्त होने के कारण सेन्ट एण्ड्रयूज कालेज के प्रबन्धतन्त्र ने विश्वविद्यालय की स्थापना हेतु कालेज देने से मना कर दिया। एक बार फिर लगा कि गोरखपुर में विश्वविद्यालय की स्थापना मात्र स्वप्न रह जाएगा। परन्तु महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज ने हार नहीं मानी और एक नया महाराणा प्रताप महिला महाविद्यालय की स्थापना कर दी। इस प्रकार महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज द्वारा अपने दोनों महाविद्यालय (महाराणा प्रताप डिग्री कालेज एवं महाराणा प्रताप महिला महाविद्यालय) को विश्वविद्यालय स्थापना हेतु प्राभूत धनराशि के रूप में समर्पित कर दिया गया। दोनों महाविद्यालयों की राशि 50 लाख रुपये आंकी गयी। 50 लाख रुपए की धनराशि का दो महाविद्यालय प्रदेश सरकार को सौंपकर विश्वविद्यालय की स्थापना समिति का गठन हुआ। तत्कालीन जिलाधि

श्री गोरक्षपीठ के पीठाधीश्वर, युगपुरुष महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज ने 1932 ई. में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की स्थापना की। भारत के आजाद होते-होते उन्होंने प्राथमिक से उच्च शिक्षा तक के विद्यालय- महाविद्यालय स्थापित किए। उनके द्वारा स्थापित महाराणा प्रताप महाविद्यालय में मुझे अंग्रेजी का प्राध्यापक होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। महाराज जी का सपना था विश्वविद्यालय की स्थापना का। उन्होंने अपने पुरुषार्थ से आजाद भारत के उत्तर प्रदेश में पहला विश्वविद्यालय गोरखपुर में स्थापित कराया। महाराणा प्रताप महाविद्यालय के साथ मैं भी विश्वविद्यालय का हिस्सा हो गया।

प्रो. प्रताप सिंह
पूर्व अध्यक्ष,
उच्चतर शिक्षा सेवा आयोग, उत्तर प्रदेश

श्री गोरक्षपीठ के लोक-कल्याण एवं सेवा अभियान का जीता-जागता उदाहरण है उसके द्वारा संचालित शिक्षण-प्रशिक्षण, तकनीकी एवं चिकित्सा संस्थान। गोरखपुर में शिक्षा व्यवस्था के वास्तविक सूत्रधार गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज थे। गोरखपुर विश्वविद्यालय की स्थापना में नींव के पत्थर की तरह हमेशा उनका स्मरण किया जाता रहेगा।

प्रो. प्रतिमा अस्थाना
पूर्व कुलपति,
दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय, 10 दिसम्बर 1989 ई.

गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज गोरखपुर के मालवीय हैं। महामना मदनमोहन मालवीय जी ने काशी में बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना की तो महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज ने महाराणा प्रताप

शिक्षा परिषद् तथा गोरखपुर विश्वविद्यालय की स्थापना कर इस क्षेत्र में शैक्षिक क्रान्ति का सूत्रपात किया।

प्रो. रेवतीरमण पाण्डेय, पूर्व कुलपति, दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय, 04 दिसम्बर 2002 ई.

गोरखपुर का यह सौभाग्य है कि आजादी के समय ही गोरखपुर में विश्वविद्यालय की स्थापना का स्वप्न एक संन्यासी ने देखा। श्री गोरक्षपीठ के इस संन्यासी ने अपने मोक्ष की चिन्ता करने की बजाय समाज में शिक्षा का दीप जलाया। प्राथमिक से महाविद्यालय तक की शिक्षण-प्रशिक्षण संस्थाओं के संस्थापक गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज ने एक कर्म संन्यासी की तरह अपने द्वारा स्थापित दो महाविद्यालयों का अस्तित्त्व विलीन कर गोरखपुर में विश्वविद्यालय की स्थापना करायी। तत्कालीन समाज के सभी प्रतिष्ठित, प्रबुद्ध, धनाढ्य तथा शासन-प्रशासन के लोगों को सहयोग हेतु एक साथ एक मंच पर लाने का कार्य एक संन्यासी के अलावा और कोई कर भी नहीं सकता था।

प्रो. अरूण कुमार, पूर्व कुलपति, दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय, 04 दिसम्बर 2004 ई.

आजाद भारत के उत्तर प्रदेश में पहले विश्वविद्यालय की स्थापना गोरखपुर में हुई। इसका पूरा श्रेय तत्कालीन गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज को है। शासन-प्रशासन से अपने प्रभाव का प्रयोग कर हठपूर्वक लोक-कल्याण के कार्य करा लेने के लिए प्रसिद्ध महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज ने गोरखपुर में विश्वविद्यालय की स्थापना अपनी इसी शैली के द्वारा करा ली। गोरखपुर विश्वविद्यालय की प्रथमत: परिकल्पना महन्त जी महाराज ने ही प्रस्तुत की। न केवल परिकल्पना प्रस्तुत की अपितु हर प्रकार की कीमत देकर गोरखपुर में विश्वविद्यालय की स्थापना सुनिश्चित की।

प्रो. एन.एस गजभिए, पूर्व कुलपति, दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय, 10 दिसम्बर 2008 ई.

कारी पं. सुरति नारायण मणि त्रिपाठी (सितम्बर 1948 से जून 1950 ई.) को इस समिति का अध्यक्ष तथा रायबहादुर मधुसूदन दास (महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के सदस्य) को महामंत्री बनाया गया। महन्त दिग्विजयनाथ जी व मजीठिया साहब उपाध्यक्ष, डॉ. सी.जे. चाको तथा पं. हरिहर प्रसाद दुबे मंत्री बने। भाईजी हनुमानप्रसाद पोद्दार, डॉ. केदारनाथ लाहिड़ी, श्री बब्बन मिश्र, राय राजेश्वरी प्रसाद, श्री महादेव प्रसाद, श्री परमेश्वरी दयाल, खान बहादुर मो. जकी, राम नारायण लाल, पं. प्रसिद्ध नारायण मिश्र, श्री सिंहासन सिंह, श्री कैलाशचन्द्र वाजपेयी, डॉ. हरिप्रसाद शाही, श्री केशव प्रसाद श्रीवास्तव, श्री जगदम्बा प्रसाद, श्री लक्ष्मी शंकर वर्मा, श्री वशिष्ठ नारायण, श्री कमलाकान्त नायक, श्री पुरुषोत्तम दास रईस, श्री सुखदेव प्रसाद, जिलाधिकारी देवरिया एवं जिलाधिकारी बस्ती इस समिति के सदस्य बने। इनमें से अधिकांश महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के पदाधिकारी एवं सदस्य थे। स्थानीय प्रशासन की पहल पर रेसकोर्स की 169 एकड़ भूमि विश्वविद्यालय की स्थापना हेतु अधिगृहीत हुई। 1 मई 1950 को तत्कालीन मुख्यमंत्री पं. गोविन्द बल्लभ पंत ने स्वयं विश्वविद्यालय के पहले भवन 'पन्त ब्लाक' का शिलान्यास किया।

विश्वविद्यालय की स्थापना हेतु महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज ने दोनों महाविद्यालय के रूप में न केवल भूमि-भवन दिया बल्कि महाविद्यालय के वे शिक्षक भी दिए जिन्हें ढूढ़-ढूढ़ कर वे अपने प्रभाव और प्रयत्न से लाए थे। गणित विभाग में प्रो. यू.पी. सिंह, हिन्दी विभाग में प्रो. रामचन्द्र तिवारी, प्रो. सत्यनारायण त्रिपाठी, प्रो. शान्ता सिंह, अंग्रेजी में प्रो. नरसिंह श्रीवास्तव, प्रो. प्रताप सिंह, प्रो. मार्कण्डेय सिंह, प्रो. गोरखनाथ सिंह, डॉ. उमा मिश्र, डॉ. बी.एम. सिंह, इतिहास विभाग में डॉ. टी.पी. चन्द, प्रो. शिवाजी सिंह, डॉ. कल्याणी

जोरदार, राजनीति शास्त्र विभाग में डॉ. कृष्णानन्द, डॉ. के.एन. सिन्हा, डॉ. पुष्पा नागपाल, डॉ. सुरेन्द्र पन्नू, मनोविज्ञान में डॉ. बी.के. मुखर्जी, भूगोल विभाग में डॉ. महातम सिंह, डॉ. सी.बी. तिवारी, संस्कृत में आचार्य लक्ष्मी नारायण सिंह, वाणिज्य विभाग में डॉ. मिथिलेश सिंह, डॉ. भोलेन्द्र सिंह, डॉ. रामनरेश मणि त्रिपाठी, डॉ. सत्यदेव प्रसाद, डॉ. फतेह बहादुर सिंह, डॉ. हरिहर सिंह, डॉ. बी.बी. सिंह विसेन, दर्शनशास्त्र में डॉ. महादेव प्रसाद, जैसे प्रतिभावान एवं विद्वान महाराणा प्रताप महाविद्यालय एवं महाराणा प्रताप महिला महाविद्यालय के प्राध्यापक विश्वविद्यालय को महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज के प्रयत्नों से ही प्राप्त हुए। ये सभी अपने-अपने विषयों में विश्वविद्यालय में ख्यातिलब्ध आचार्य के रूप में प्रतिष्ठित हुए। आगे चलकर इनमें प्रो. यू.पी. सिंह, डॉ. भोलेन्द्र सिंह, डॉ. सी.बी. तिवारी एवं डॉ. बी.बी. सिंह विसेन कुलपति हुए तथा प्रो. प्रताप सिंह उत्तर प्रदेश उच्च शिक्षा सेवा आयोग के अध्यक्ष बने। तत्कालीन गोरक्षपीठाधीश्वर महंत अवेद्यनाथ जी महाराज के बुलावे पर विश्वविद्यालय से पुनः नवसृजित दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय के संस्थापक प्राचार्य डॉ. बी.एम. सिंह हुए। विश्वविद्यालय की स्थापना में महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज का योगदान इस बात से भी समझा जा सकता है कि गोरखपुर विश्वविद्यालय कार्यपरिषद् में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् का एक स्थायी सदस्य होना परिनियम का हिस्सा बना। आज भी विश्वविद्यालय का पश्चिमी परिसर 'महाराणा प्रताप परिसर' के नाम से प्रतिष्ठित है। उपर्युक्त तथ्यों से स्पष्ट है कि युगपुरुष गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज गोरखपुर विश्वविद्यालय के वास्तविक शिल्पी थे। परिकल्पना से लेकर विश्वविद्यालय के आकार देने तक उनकी भूमिका अद्वितीय है।

गोरखपुर विश्वविद्यालय की स्थापना में गोरक्षपीठाधाश्वर महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण भूमिका जग-जाहिर है। विश्वविद्यालय की कार्यपरिषद् में नामित सदस्य के माध्यम से महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् का अनवरत सहयोग एवं योगदान विश्वविद्यालय को प्राप्त होता रहता है। वस्तुतः गोरखपुर विश्वविद्यालय महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के परिवार के सदस्य जैसा ही है। गोरखपुर विश्वविद्यालय अपने संस्थापक का सदैव ऋणी रहेगा।

प्रो. एस.एल. मलिक
पूर्व कुलपति
दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय, 04 दिसम्बर 2009 ई.

युगपुरुष गोरक्षपीठाधीश्वर ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज ने गोरखपुर में विश्वविद्यालय का स्वप्न साकार किया। उन्होंने शासन-प्रशासन एवं समाज को एक साथ जोड़कर सबके सहयोग से गोरखपुर में विश्वविद्यालय की स्थापना की। वही विश्वविद्यालय आज पं. दीनदयाल जी उपाध्याय की स्मृतियों का जीवन्त उदाहरण बना हुआ है। गोरखपुर परिक्षेत्र, पश्चिमी विहार एवं नेपाल के युवाओं के उच्च शिक्षा का एक मात्र आधार है। देखा जाय जो महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद ही गोरखपुर विश्वविद्यालय की मातृ संस्था है।

प्रो. वी.के. सिंह
कुलपति
दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय, 23 सितम्बर 2018 ई.

महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज ने यदि अपने दो महाविद्यालयों सहित पूरी सम्पत्ति गोरखपुर विश्वविद्यालय की स्थापना हेतु दान न की होती तो गोरखपुर में विश्वविद्यालय की स्थापना का सपना अधूरा रहता। महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के सभी पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने महन्त दिग्विजयनाथ जी के निर्देशन पर

विश्वविद्यालय की स्थापना में अपना पूरा योगदान दिया। महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् तब से अब तक गोरखपुर विश्वविद्यालय को अपनी संस्थाओं की तरह ही संरक्षित एवं संवर्धित करती रही है और कर रही है।

डॉ. श्रीकान्त दीक्षित
प्रति कुलपति
दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय
28 सितम्बर 2018 ई.

गोरखपुर विश्वविद्यालय की स्थापना का पूरा श्रेय महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज को है। महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज की पहल और उनके अहर्निष प्रयत्न से ही गोरखपुर विश्वविद्यालय की स्थापना हो सकी।

प्रो. सुरेन्द्र दुबे
कुलपति
सिद्धार्थ विश्वविद्यालय
कपिलवस्तु
28 सितम्बर 2018

गोरखपुर विश्वविद्यालय संस्थापना समिति के सदस्य स्व. बब्बन मिश्र जी मेरे बाबा थे। वे महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के सदस्य भी थे। गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त दिग्विजय नाथ जी महाराज के वे घनिष्ठ मित्र थे। वे बताते थे कि गोरखपुर में विश्वविद्यालय की स्थापना की परिकल्पना महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज की थी। उनके कहने पर सेन्ट एण्ड्रयूज कालेज के तत्कालीन प्राचार्य डॉ. सी.जे. चाको को लेकर महन्त जी के पास गए थे और महन्त जी ने विश्वविद्यालय की स्थापना हेतु सेन्ट एण्ड्रयूज कालेज को देने का प्रस्ताव किया। डॉ. सी.जे.

गिरता स्वास्थ्य

महन्तजी सन् 1963 से ही अस्वस्थ रहने लगे थे। इस समय उनकी अवस्था 70 वर्ष की थी। गोरखपुर के उच्चकोटि के डॉक्टरों ने उनका इलाज किया। 1966 में आल इण्डिया इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंस, नई दिल्ली में दवा कराई गयी। लोकसभा का सदस्य हो जाने पर दिल्ली में निरन्तर डॉक्टरों से सम्पर्क स्थापित किया। ऐसी अवस्था में भी विवादात्मक प्रश्नों पर विशेष रूप से हिन्दू हितों से सबंधित प्रश्नों पर अपने स्वास्थ्य का ध्यान न रखते हुए अपने आदर्शों को चरितार्थ करने के लिए वे निरन्तर सक्रिय रहे।

चिर समाधि

सितम्बर 1969 के अन्तिम सप्ताह में महन्तजी पुनः अस्वस्थ हो गये। डॉक्टरों ने पूर्ण निष्ठा के साथ उनकी दवा की। 26 से 28 सितम्बर तक वे दवा के बल पर मृत्यु से जूझते रहे। अनेक बार दिल के दौरे पड़े, किन्तु उनका मस्तिष्क उस समय भी रबात सम्मेलन और मुस्लिम साम्प्रदायिकता का समाधान ढूँढने में ही लगा रहा था। 28 सितम्बर को अपराह्न में उनकी स्थिति बिगड़ने लगी और उसी दिन 5 बजकर 30 मिनट पर उन्होंने चिर समाधि ले ली।

अन्तिम दर्शन

महन्तजी की मृत्यु का समाचार विद्युत गति से चहुँ ओर में फैल गया। अंतिम दर्शन की आकांक्षा से बड़ी संख्या में लोग गोरक्षनाथ मन्दिर के प्रांगण में एकत्र होने लगे। श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए स्वर्गीय महन्तजी के पार्थिव शरीर को 24 घण्टे के लिए गोरक्षनाथ मन्दिर के प्रांगण में दर्शनार्थ रखा गया। दूसरे दिन लगभग 15 लाख व्यक्तियों ने उस महामानव के दर्शन किये और उनके प्रति अपने श्रद्धा-सुमन अर्पित किये।

देश के कोने-कोने से लोग दर्शनार्थ दूसरे दिन तक गोरखपुर में उपस्थित हो गये। संवेदना के तारों और पत्रों की तो कोई गिनती ही नहीं थी। भारत के लगभग समस्त समाचार पत्रों

ने उनकी मृत्यु के समाचारों को प्रथम पृष्ठ पर स्थान दिया और अपने अग्रलेखों के द्वारा उन्हें श्रद्धांजलियाँ अर्पित कीं। वस्तुत: महन्तजी की मृत्यु इस देश के लिए एक राष्ट्रीय घटना थी। श्री महन्तजी हिन्दुओं के लिए आधुनिक युग के महाराणा प्रताप थे। उनमें ब्रह्मबल और क्षात्रबल का अद्‌भुत समन्वय था। उनकी स्मृतियाँ यावत् चन्द्रदिवाकरौ सदृश जन-मानस पर छाईं रहेंगी।

देश के प्रमुख धर्माचार्यों, राजनीतिज्ञों तथा समाजसेवियों ने श्री महन्तजी को इन शब्दों में अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की-

जगद्‌गुरु शंकराचार्य श्री निरंजनदेव तीर्थ, शंकराचार्य मठ पुरी

श्री गोरक्षनाथ मन्दिर, गोरखपुर, उत्तर प्रदेश के ब्रह्मलीन महन्त, अखिल भारत हिन्दू महासभा के भूतपूर्व अध्यक्ष, विश्व-हिन्दू धर्म सम्मेलन के संस्थापक एवं संसद सदस्य श्री दिग्विजयनाथ के महान् व्यक्तित्व से सम्पूर्ण भारत भलीभाँति परिचित है। उन्होंने देश और समाज की जो सेवाएँ की हैं, उनसे समाज का भारी उपकार हुआ है। राजनीति, धर्म, संस्कृति, शिक्षा एवं समाज-सेवा आदि विविध क्षेत्रों में उनके द्वारा किये गए कार्य चिरकाल तक उनकी स्मृति को संजोये रखेंगे। श्री गोरक्षनाथ के भव्य मन्दिर का पुनर्निर्माण, महाराणा प्रताप इण्टर कॉलेज, महाराणा प्रताप पॉलिटेक्निक, श्री गोरक्षनाथ संस्कृत विद्यापीठ, महाराणा प्रताप शिशु शिक्षा विहार आदि संस्थाओं की स्थापना उनके पुण्य कार्य हैं, जो उन्हें यावत् चन्द्रदिवाकरौ अजर-अमर रखेंगे। गोरखपुर विश्वविद्यालय की स्थापना में भी वे अग्रणी रहे हैं। पूर्वी जिलों की जनता की भावनाओं को उन्होंने स्वर प्रदान किया है। हिन्दी, हिन्दू एवं हिन्दुस्तान के वे मूर्तिमान स्वरूप थे। जीवन का कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं है, जो उनसे अछूता रहा हो। ऐसे महान पुरुष की स्मृति को बारम्बार स्मरण करते हुये अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

अभिनव सच्चिदानंद पुरी जगद्‌गुरु शंकाराचार्य श्री शारदा पीठ, द्वारका

महन्त श्री दिग्विजयनाथ जी ने एक बार इसी आबू पर्वत पर सन् 1951 ई. में आकर मुझसे हिन्दू संगठन की महत्त्वपूर्ण बात की थी। वे निर्भीक नेता थे। उनका सारा जीवन भारत राष्ट्र एवं हिन्दू संस्कृति की रक्षा के लिए समर्पित था। उनके स्मरण से हिन्दुओं में यदि थोड़ी भी पुनर्जागृति आयेगी तो यह महान कार्य होगा। हिन्दू जाति धीरे-धीरे जागती है। हिन्दू समाज में सब कुछ है, परन्तु जागृति एवं संगठन की कमी है।

शांतानन्द सरस्वती जगद्‌गुरु श्री शंकराचार्य ज्योतिर्मठ बद्रिकाश्रम

ब्रह्मलीन श्रीमान् महन्त दिग्विजयनाथ जी को भारत का कौन ऐसा आस्तिक व्यक्ति है, जो नहीं जानता है। उनके द्वारा भारतीय जनता में भारतीय संस्कृति का प्रचार एवं हिन्दू जनता का महान उपकार हुआ है। वे हर प्रकार के जन समाज के लिए व्यावहारिक एवं पारमार्थिक जीवन के महान उपकारी थे। ऐसे महापुरुषों का दर्शन भी वर्तमान समय में दुर्लभ है। अब तो उनके पवित्र चरित्रों के

रूप में ही दर्शन हो सकते हैं। बहुधा हमें उनसे मिलने का शुभ अवसर उपस्थित हुआ था - उनके आध्यात्मिक एवं व्यावहारिक जीवन में बहुत ही उदारता का परिचय प्राप्त हुआ है।

श्री गोपाल स्वरूप पाठक, उपराष्ट्रपति भारत

श्री महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज ने देश, राष्ट्र एवं धर्म की बहुत बड़ी सेवा की है। उनका व्यक्तित्व महान था और जो कोई भी उनसे मिलता था प्रभावित हुए बिना न रहता था। उनके निधन से राष्ट्र की अपूरणीय क्षति हुई है।

श्री गुरुदयाल सिंह ढिल्लन, अध्यक्ष लोकसभा

मैं सदन को बड़े दुख के साथ अपने 5 सदस्यों के निधन की सूचना दे रहा हूँ। इनमें श्री महन्त दिग्विजयनाथजी उत्तर प्रदेश के गोरखपुर क्षेत्र से लोकसभा के सदस्य थे। 1969 में सदन की सदस्यता के लिए निर्वाचित होने के उपरान्त वे सदन की कार्यवाही और सभी सम्बन्धित समितियों की बैठकों में बड़े उत्साह के साथ भाग लेते थे। सदन में वे काफी लोकप्रिय थे। वे दृढ़ विचारों के व्यक्ति थे और अपने विचार बड़ी निर्भीकता से प्रकट करते थे। वे अपने समय के एक बहुत बड़े क्रांतिकारी थे। अचानक गोरखपुर में 28 सितम्बर 1969 ई. को 74 वर्ष की आयु में उनका देहावसान हो गया। मैं उनके निधन पर गहरा शोक प्रकट करता हूँ और सदन की भावनाओं के साथ उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए धर्म परिवार के साथ संवेदना प्रगट करता हूँ।

श्रीमती इन्दिरा गाँधी, प्रधानमंत्री, भारत सरकार

श्रीमान् अध्यक्ष महोदय, दिवंगत आत्माओं को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए मैं सदन की भावनाओं के साथ अपने को सम्बद्ध करती हूँ। श्री महन्त दिग्विजयनाथ जी का शिक्षा एवं धर्म के क्षेत्र में बहुत ही ऊँचा स्थान है। उनका नाम असहयोग आन्दोलन के साथ भी जुड़ा हुआ है। साइमन कमीशन और हैदराबाद के सत्याग्रह से भी वे सम्बन्धित रहे हैं। वे प्रसिद्ध गोरखनाथ मन्दिर के महन्त थे और उन्होंने गोरखपुर विश्वविद्यालय की स्थापना का भी महान कार्य किया था। अध्यक्ष महोदय, मेरा निवेदन है कि आप मेरी हार्दिक संवेदना उनके धर्म-परिवार तक पहुँचा दें।

जगदाचार्य स्वामी नारदानन्द सरस्वती, नैमिषारण्य, सीतापुर

श्रीमहन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज एक महान व्यक्ति थे। 1946 ई. में उनके द्वारा गोरखपुर में आयोजित अखिल भारत हिन्दू महासभा के विशाल ऐतिहासिक अधिवेशन में सम्मिलित होने का मुझे भी अवसर मिला था। उस समय मैंने उनके व्यक्तित्व की एक झलक देखी थी। समस्त साधु समाज को उन पर गर्व था।

श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार, गीताप्रेस

गोरखनाथ पीठ, गोरखपुर के महन्त श्री दिग्विजयनाथ जी महाराज यों तो सारे विश्व के

हितैषी थे, पर हिन्दू धर्म एवं हिन्दू राष्ट्र के वे स्तम्भ ही थे। वे अपने सिद्धान्त के पक्के, दृढ़विश्वासी, स्पष्टभाषी और निर्भीक राष्ट्रप्रेमी होने के साथ ही बड़े विचारशील और मिलनसार थे। सभी क्षेत्रों में उनका प्रभाव था और उनके प्रति सभी का प्रेम था। उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में बहुत बड़े-बड़े कार्य किये। गोरखनाथ मन्दिर क्षेत्र का तो उन्होंने बड़ा सुन्दर पुनर्निर्माण ही करा दिया। गीताप्रेस के प्रति और व्यक्तिगत रूप से मेरे प्रति उनका जो स्नेह और आत्मीयता थी, उसका कोई मूल्य नहीं है। वह विपत्ति में पड़े हुए प्रत्येक व्यक्ति के अवलम्बन थे। हम लोगों के लिए तो उनका बड़ा सहारा था। देशवासियों का यह कर्तव्य है कि वे उनका पदानुसरण करके सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार के द्वारा उन्हें वास्तविक श्रद्धांजलि अर्पण करें।

महन्त श्रेयोनाथ, भूतपूर्व स्वास्थ्य मंत्री, हरियाणा, गद्दी स्थल बोहर, जिला-रोहतक

श्रद्धेय महन्तजी ने योगी महासभा, योगी सम्प्रदाय, हिन्दू समाज तथा समूचे देश की जो सेवाएँ की हैं, वे बेजोड़ हैं। वे एक निस्पृह, उदार तथा साथ ही बहुत ही वीर नेता थे। भारत के इतिहास में उनकी देन अद्‌भुत तथा बेमिसाल है। उन सरीखे निर्भीक तथा सत्यनिष्ठ व्यक्ति देश में बहुत ही दुर्लभ हैं।

महन्त घनश्याम गिरि, एम.एल.ए. हरिद्वार

साधु-समाज, हिन्दुत्व रक्षक महन्त दिग्विजयनाथ जी के निधन से हार्दिक दुःख हुआ। श्रद्धांजलि अर्पित है।

श्री कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी, भूतपूर्व राज्यपाल, उ.प्र.

श्री महन्त दिग्विजयनाथ जी हमारे मित्रों में से एक थे। उन्होंने गोरखपुर में उच्चस्तरीय शिक्षण के प्रोत्साहन कार्य में बड़ी सफलता प्राप्त की है।

श्री माधव सदाशिव राव गोलवलकर (सर संघचालक, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, जयपुर)

श्री दिग्विजयनाथ जी के स्वर्गवास से अधिक दुःख हुआ।

श्री भक्तदर्शन, भूतपूर्व राज्यमंत्री, केन्द्रीय सरकार

महन्त दिग्विजयनाथ जी बड़े कर्मठ समाजसेवी और राष्ट्रप्रेमी व्यक्ति थे। मुझे उनके आशीर्वाद मिलते रहते थे।

चौधरी चरणसिंह, भूतपूर्व मुख्यमंत्री, उ.प्र.

महन्त जी के निधन पर हार्दिक शोक।

श्री यादवेन्द्रदत्त दुबे, राजा जौनपुर

श्री महन्त जी के असामयिक निधन पर हार्दिक शोक।

रज्जू भैया, प्रान्त संचालक, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, उ.प्र.

असीम दु:ख, श्रेष्ठ राष्ट्रभक्त उठ गया। भगवान् धैर्य दें।

श्री विक्रम नारायण सावरकर, प्रधानमंत्री, अखिल भारत हिन्दू महासभा, नागपुर

पूजनीय महन्त श्री दिग्विजयनाथ जी के दु:खद देहान्त से हिन्दू राष्ट्र, हिन्दू समाज तथा हिन्दू महासभा की अपरिमित क्षति हुई है। हिन्दू महासभा की विनम्र श्रद्धांजलि।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी, अध्यक्ष जनसंघ

हिन्दू समाज और धर्म के लिए महन्त जी ने जो कार्य किया, उसको स्थायी बनाने का प्रयत्न होना चाहिए।

महाराज श्री 1008 स्वामी कपिलदेवाचार्य

परमादरणीय, सम्मानयोग्य श्री महन्त जी की असामयिक मृत्यु की सूचना प्राप्त हुई। सुनकर हृदय को बड़ा धक्का लगा कि भारतमाता का एक सपूत माता की गोदी को छोड़कर ब्रह्मलीन हो गये। निकट भविष्य में इस रिक्त स्थान की पूर्ति कठिन है। परलोक में महन्तजी की आत्मा को शान्ति प्राप्त हो। हार्दिक संवेदना एवं सहानुभूति स्वीकार करें।

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के उत्थानकर्त्ता

परम पूज्य महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज

भारतीय संस्कृति की सर्वाधिक प्रमुख विशेषता है आत्मशुद्धि अर्थात् स्वयं शुद्धीकरण की। इसी विशेषता के परिणामस्वरूप वैदिक धर्म में जब कुछ विकार आया तो महात्मा बुद्ध पैदा हुए। जब बौद्ध धर्म में विकार उत्पन्न हुआ तो गुरु श्री गोरक्षनाथ तथा शंकराचार्य का आविर्भाव हुआ। इस्लामी शासन में जब विकृतियों की सम्भावनाएँ बढ़ीं तो भक्ति आन्दोलन का सूत्रपात हुआ। इसी शृंखला को बनाये रखने वाले महापुरुषों की जो परम्परा स्वामी दयानन्द सरस्वती, स्वामी विवेकानन्द, बालगंगाधर तिलक, वीर विनायक दामोदर सावरकर, महामना मदन मोहन मालवीय, डॉ. केशवबलिराम हेडगेवार, सरदार वल्लभ भाई पटेल, माधव सदाशिव गोलवलकर गुरुजी, महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज तक अनवरत दिखाई देती है, गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज उसी परम्परा के वर्तमान में जाज्वल्य नक्षत्र हैं। गोरक्षपीठ के पीठाधीश्वर के रूप में अवेद्यनाथ जी महाराज ने जिस गुरु का उत्तराधिकार प्राप्त किया वे दिग्विजयनाथ जी महाराज हिन्दुत्व और राष्ट्रीयता की वैचारिक विरासत की एक यशस्वी परम्परा सौंपकर ब्रह्मलीन हुए थे। महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज को अपने गुरुदेव से जो विरासत मिली उसका अन्दाजा इन तथ्यों से लगाया जा सकता है कि - महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज गुलाम भारत में देश की आजादी के लिए कांग्रेस में रहते हुए भी हिन्दू हितों की रक्षा के लिए तत्पर रहते थे और उन्होंने सदैव कांग्रेस की उन नीतियों का विरोध किया, जिनसे हिन्दू जाति और धर्म के ऊपर किसी प्रकार के आघात की आशंका थी। महात्मा गाँधी के नेतृत्व में कांग्रेस जब मुस्लिम तुष्टीकरण के भस्मासुरी मार्ग पर चल पड़ी तो महन्त दिग्विजयनाथ जी ने कांग्रेस छोड़ दी और हिन्दू महासभा के संगठनकर्ताओं की अग्रिम पंक्ति के सिपाही बन गये। 1939 ई. में उन्होंने अखिल भारतवर्षीय अवधूत वेष बारह पंथ योगी महासभा की स्थापना की तथा साधु सम्प्रदाय को एक नवीन दिशा प्रदान की एवं निष्क्रियता और ऐकान्तिकता के स्थान पर समाज-सापेक्ष कार्यों की ओर प्रेरित किया। भारत की संसद में महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज ने गरजते हुए कहा था- ''जब तक धर्मप्राण भारत की पवित्र भूमि पर गोमाता के रक्त की एक बूँद भी गिरती रहेगी; तब तक देश अशान्ति की भट्ठी में जलता रहेगा। मैं तो हिन्दू धर्म का वकील हूँ, संन्यासी होते हुए राजनीति में केवल इसलिए उतरा हूँ, क्योंकि हिन्दू संस्कृति और सभ्यता पर आज चारों ओर से प्रहार हो रहे हैं।'' वे कहते थे राष्ट्र एक सांस्कृतिक इकाई है। किसी भूखण्ड में निवास करने वाले उस समूह को ही राष्ट्र कहा जाता है, जो भू-खण्ड की संस्कृति, सभ्यता, परम्परा, इतिहास आदि को मानता हुआ परस्पर एकता की अनुभूति रखता हो। अतः भारत हिन्दू राष्ट्र

है, ऐसा हिन्दू राष्ट्र जहाँ किसी पर अत्याचार नहीं होगा। इस हिन्दू राष्ट्र में रहनेवाले प्रत्येक निवासी के साथ न्याय होगा। प्रत्येक नागरिक को अपनी उपासना पद्धति अपनाने की पूर्ण स्वतन्त्रता होगी, परन्तु राष्ट्र के प्रत्येक निवासी को यहाँ की संस्कृति, सभ्यता, परम्परा, इतिहास, साहित्य और राष्ट्रीय महापुरुषों को सम्मान की दृष्टि से देखना होगा। वस्तुतः हिन्दुत्व ही वह शक्ति है जो विस्तृत भारतीय भूभाग वाले विभिन्न भाषा-भाषी करोड़ों जनता को एक सूत्र में बाँध सकती है। इस वैचारिक अधि ष्ठान पर निर्मित विराट् व्यक्तित्व के धनी गुरु की भौतिक-आध्यात्मिक विरासत को महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने न केवल सँभाला, अपितु गोरक्षपीठ को कई नये आयामों से भी जोड़ा। गोरक्षपीठ के पीठाधीश्वर महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज के बहुआयामी विराट् व्यक्तित्व को शब्दों की सीमा में बाँध पाना असम्भव है तथापि विविध स्रोतों से ज्ञात किंचित तथ्यों के आधार पर उनके व्यक्तित्व को रेखांकित करने का प्रयास किया गया है।

गोरक्षपीठ के पीठाधीश्वर महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज का बचपन का नाम कृपाल सिंह विष्ट था। पिता श्री रायसिंह विष्ट हिमालय की गोद में बसे देवभूमि के पौड़ी गढ़वाल के काण्डी ग्राम के निवासी थे। 18 मई, 1919 को काण्डी ग्राम में जन्मे बालक को कौन जानता था कि एक दिन वह बालक देश-विदेश के हिन्दू धर्माचार्यों का नेतृत्व करेगा और सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के प्रति पूर्णतः समर्पित होकर राष्ट्रीय एकता-अखण्डता के उस यज्ञ का आचार्य बनेगा जिसकी प्रज्वलित अग्निशिखाओं से हिन्दू समाज में व्याप्त कुरीतियों, विशेषकर छुआछूत को भस्म करने की प्रेरणा एवं सन्देश प्राप्त होगा। किन्तु ईश्वर ने उन्हें भारत भूमि पर इसी महान कार्य हेतु भेजा था सो उसी अनुरूप परिस्थितियाँ करवट लेने लगीं।

महन्त जी से जब उनके बचपन की स्मृतियों पर चर्चा की गयी तो अपने चिर-परिचित दिव्य मुस्कान के साथ वे बोल पड़े कि संन्यासी का बचपन नहीं होता। दीक्षा के साथ ही पिछले जीवन से उसका नाता टूट जाता है और वह नया जीवन प्राप्त करता है। किन्तु अनेक बार के आग्रह पर एक क्षण मौन के पश्चात् महन्त जी अपने बचपन की स्मृतियों में लौटते हुए बताते हैं, "मुझे अपनी माँ का नाम याद नहीं है क्योंकि जब मैं बहुत छोटा था मेरे माता-पिता की अकाल मृत्यु हो गयी। मैं दादी की गोद में पल रहा था। उच्चतर माध्यमिक स्तर तक की शिक्षा पूर्ण होते ही दादी का भी स्वर्गवास हो गया। परिणामतः मेरा मन इस संसार के प्रति उदासीन होता गया तथा वैराग्य का भाव मन में घर करता गया।" इसी वैराग्य एवं विरक्ति की भावनानुभूति में गृहत्याग के साथ ऋषिकेश में संन्यासियों का साथ मिला। सत्संग से भारतीय धर्म-दर्शन में अध्ययन की रुचि विकसित हुई। उस समय वाराणसी भारतीय धर्म दर्शन के अध्ययन का प्रमुख केन्द्र था। मैंने काशी में संस्कृत भाषा के अध्ययन के साथ भारतीय धर्म-दर्शन एवं योग-दर्शन का अध्ययन एवं अनुशीलन किया।

महन्त जी से जब यह जानना चाहा कि गृह त्याग के बाद वे कितनी बार अपने पैतृक गाँव

गये, महन्त जी का जवाब विस्मयकारी था। उनके इस प्रश्न के उत्तर में ही बाल्यावस्था से ही महन्त जी की निवृत्तिमार्गी प्रवृत्ति का पता चल जाता है। संन्यासी होने के बाद वे एक बार अपने पितृगृह गये। वह भी अपने नैतिक एवं धार्मिक कर्तव्यों की पूर्ति हेतु। महन्त जी बताते हैं–''मेरे पिताजी तीन भाई थे। मैं अपने पिताजी का इकलौता पुत्र था। गृहत्याग एवं संन्यास के दौरान एक बार मेरे एक चाचा ऋषिकेश आये थे। दूसरे चाचा के मन में यह भ्रम उत्पन्न हो गया कि मैं अपनी पूरी सम्पत्ति एक ही चाचा को न लिख दूँ। मुझे अपने हिस्से की पूरी पैतृक सम्पत्ति दोनों चाचा को बराबर देनी थी, अत: मैं इसी कार्य हेतु गया। न्यायालय में मजिस्ट्रेट के सामने उपस्थित होकर मैंने अपनी पैतृक सम्पति दोनों चाचा के नाम बराबर-बराबर कर देने की अपनी संस्तुति दी तो मजिस्ट्रेट ने कहा कि आप अभी किशोर हैं, संन्यासी जीवन बड़ा कष्टमय होता है, कल पुन: गृहस्थ जीवन में लौटने की आपकी इच्छा हो सकती है, अत: अपनी सम्पत्ति देने से पूर्व एक बार और सोच लीजिए।'' महन्त जी ने उसी समय मजिस्ट्रेट को जो उत्तर दिया वह इस बात का स्पष्ट साक्ष्य है कि वे पूर्णत: संन्यासी स्वभाव प्राप्त कर चुके थे। उन्होंने कहा– ''मैं अतिशीघ्र इस सम्पत्ति से छुटकारा पाना चाहता हूँ ताकि संन्यास जीवन से विमुख होने की सम्भावना ही शेष न रहे।'' महन्त जी के दृढ़ निश्चय एवं तेजस्वी मुखमण्डल की चमत्कृत आभा से निरुत्तर मजिस्ट्रेट ने इनकी सम्पत्ति दोनों चाचा के नाम स्थानान्तरित कर दी। इस प्रकार संन्यासी जीवन से पूर्व के अपने जीवन से पूर्णत: नाता तोड़कर धार्मिक-आध्यात्मिक दुनिया की ओर बढ़े उनके कदम फिर वापस नहीं मुड़े।

किशोरावस्था में ही महन्त जी ने कैलाश मानसरोवर की यात्रा की। यह यात्रा उनके संन्यासी जीवन का एक महत्त्वपूर्ण पड़ाव सिद्ध हुई। महन्त जी बताते हैं- ''उत्तराखण्ड के बदरीनाथ, केदारनाथ, गंगोतरी, यमुनोतरी आदि तीर्थस्थलों की यात्रा और अनेक सन्त-महात्माओं से मिलकर अपनी धार्मिक-आध्यात्मिक एवं योग विषयक जिज्ञासाओं की पूर्ति हेतु बात-चीत तथा सत्संग हम संन्यासियों की जीवनचर्या थी। बदरीनाथ यात्रा के दौरान ही कैलाश-मानसरोवर जाने की इच्छा जागृत हुई। उस समय कैलाश-मानसरोवर का मार्ग और भी दुर्गम था। पैदल यात्रा में लगभग बीस दिन लगते थे। तीन अन्य संन्यासियों के साथ स्थान-नीति को पार कर हम मानसरोवर की यात्रा पर चल पड़े। हम लोगों को यह सूचना थी कि मीठा सत्तू कैलाश मानसरोवर के आसपास के निवासी पसन्द करते हैं और छीन लेते हैं; अत: हम लोग नमकीन सत्तू अपने पास रखे हुए थे। कैलाश-मानसरोवर की यात्रा से एक अलग तरह की आध्यात्मिक अनुभूति हुई और मन में ईश्वर के साथ-साथ भारत माता की इस विस्तारित भूमि के साथ रागात्मक एकता की अद्भुत अनुभूति हुई। कैलाश मानसरोवर की यात्रा से वापस आते समय अल्मोड़ा से कुछ आगे बढ़े ही थे कि मुझे 'हैजा' हो गया। अत्यधिक उल्टी-दस्त के कारण मैं अचेत हो गया, मेरे साथ के संन्यासियों ने मान लिया कि अब मेरा जीवित बचना कठिन है, अत: वे मुझे उसी दशा में छोड़कर आगे चल दिये। दैवी कृपा से शाम को मुझे होश आया और शरीर में चेतना का संचार हुआ तो अपने आपको अकेला पाकर इस नश्वर संसार

का मर्म समझा। मेरा मन विरक्ति और वेदना से भर गया। मैं अकेले धीरे-धीरे चलते हुए हरिद्वार पहुँचा। अब मुझे लगता है कि इस घटना के पीछे ईश्वर की इच्छा छिपी थी। शायद ईश्वर मुझे 'सच' का साक्षात्कार कराना चाहते थे। कैलाश-मानसरोवर की इस यात्रा से मेरा मन बहुत विचलित हो चुका था। मैं संसार की नश्वरता के साथ आत्मा की अमरता के ज्ञान की खोज में बेचैन था कि मेरी भेंट योगी निवृत्तिनाथ जी से हो गयी। योगी निवृत्तिनाथ जी के योग, आध्यात्मिक दर्शन तथा नाथपंथ के विचारों से मैं प्रभावित होता चला गया। योगी निवृत्तिनाथ जी का सान्निध्य मुझे अच्छा लगने लगा, उनके साथ रहकर योग-साधना में मुझे शान्ति मिलने लगी। नाथपंथ के सामाजिक समन्वयवादी दृष्टिकोण एवं हठयोग-साधना की ओर मैं खिंचता चला गया। यद्यपि कि उस समय तक मैं नाथपंथ में दीक्षित नहीं हुआ था, मात्र ब्रह्मचारी संत था। निवृत्तिनाथ जी के साथ अभी योग-साधना में कुछ माह बीते ही थे कि प्रकृति ने वर्षा ऋतु का स्वागत किया। चूँकि ऋषिकेश में बरसात के मौसम में मच्छर बहुत लगते थे और अक्सर लोगों को मलेरिया हो जाया करता था; अत: संत-महात्मा वर्षा ऋतु में ऋषिकेश से अन्यत्र चले जाते थे। योगी निवृत्तिनाथ जी के साथ मैं भी बंगाल के मेमन सिंह जाने हेतु वर्षावास के लिए चल पड़ा। योगी निवृत्तिनाथ जी द्वारा मैं तत्कालीन गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज के सामाजिक परिवर्तन, हिन्दुत्व पुनर्जागरण एवं राष्ट्रीयता के प्रति समर्पण एवं जनान्दोलनों के नेतृत्व की चर्चा सुना करता था। इस प्रकार महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज के प्रति मेरे मन में श्रद्धा का बीज पहले से ही अंकुरित हो चुका था। मेमन सिंह जाते समय निवृत्तिनाथ जी गोरक्षनाथ मंदिर में एक रात विश्राम हेतु रुके। उन्होंने निवृत्तिनाथ जी का गोरक्षनाथ मंदिर में बड़े ही भावपूर्ण ढंग से आवभगत की। यह घटना 1940 की है। गोरक्षपीठ के पीठाधीश्वर महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज से मेरी यह पहली भेंट थी। दूसरे दिन जब हम बंगाल जाने हेतु तैयार हुए तो महन्त जी ने मुझसे अपना शिष्य एवं उत्तराधिकारी बनने की इच्छा व्यक्त की। किन्तु अभी मैं न तो नाथपंथ को ठीक से समझ पाया था और न ही किसी मठ का महन्त बनने के बारे में कुछ सोचा था। संन्यासी जीवन जीते हुए धर्म-दर्शन और योग-साधना के बारे में अभी मैं बहुत कुछ जानने की इच्छा का शमन नहीं कर सकता था, सो बड़ी विनम्रतापूर्वक अपनी अनिच्छा बताकर मैं निवृत्तिनाथ जी के साथ बंगाल के मेमन सिंह के लिए निकल पड़ा। मेमन सिंह में मेरी भेंट उद्भट विद्वान् एवं दार्शनिक अक्षय कुमार बनर्जी से हुई। उनके साथ भारतीय-दर्शन और नाथपंथ के बारे में विस्तार से बातचीत होती रही और मैं वहाँ इनके दर्शन साहित्य का अध्ययन करता रहा। गोरक्षनाथ जी के बारे में एवं गोरक्षदर्शन का अध्ययन करने का भी अवसर मुझे सर्वप्रथम यहीं प्राप्त हुआ।

वर्षाऋतु के पश्चात् हम वापस ऋषिकेश आ गये। ऋषिकेश में रहकर मैंने योगी शान्तिनाथ द्वारा लिखित 'प्राच्यदर्शन समीक्षा' का अध्ययन करने लगा और शान्तिनाथ जी के बारे में मेरी उत्सुकता बढ़ती गयी। योगी निवृत्तिनाथ जी ने बताया कि शान्तिनाथ जी भी योगी गम्भीरनाथ जी के ही शिष्य हैं और वे कराची से करीब 10 मील दूर एक सेठ के बागीचे में आश्रम बनाकर रहते हैं।

योगी निवृत्तिनाथ जी से ही ज्ञात हुआ कि योगी शान्तिनाथ जी दर्शन के प्रकाण्ड विद्वान और नाथपंथ के ज्ञाता होने के साथ-साथ स्वतंत्रता सेनानी भी हैं। अंग्रेजों द्वारा उन्हें ढाका षड्यन्त्र में बन्दी बनाया गया था। शान्तिनाथ जी से मिलने की मेरी उत्सुकता को देखते हुए योगी निवृत्तिनाथ जी ने योगी शान्तिनाथ जी के यहाँ जाने हेतु योजना बनायी और मुझे लेकर कराची के लिए निकल पड़े।

हम योगी शान्तिनाथ के यहाँ पहुँचे और उनके आश्रम में रहने लगे। उनके साथ भारतीय दर्शन के विविध विषयों पर गंभीर चर्चा में मेरा मन रमता गया। उसी दौरान गम्भीरनाथ जी महाराज एवं दिग्विजयनाथ जी महाराज के बारे में वे कुछ न कुछ बताया करते थे। नाथपंथ के सामाजिक क्रान्ति के विविध पक्षों ने मुझे बहुत हद तक प्रभावित किया। योग के प्रति मैं शुरू से आकर्षित था। गुरु श्री गोरक्षनाथ द्वारा प्रतिपादित 'योग दर्शन' और 'गोरखवाणी' के अध्ययन का अवसर भी मुझे शान्तिनाथ के सान्निध्य में मिला। दो योग्य संन्यासियों के सत्संग में मैं रम चुका ही था। तभी दैवी कृपा से एक घटना ने सब कुछ बदल दिया। हम जिस सेठ के बागीचे में आश्रम बनाकर रहते थे, हमारे भोजन आदि की व्यवस्था उसी सेठ के द्वारा की जाती थी। हमारे भण्डारे में तीन दिन से घी समाप्त हो गया था। सूचना पाने के बाद भी सेठ ने भण्डारे में घी नहीं भिजवाया तो हमें यह महसूस हुआ कि हम सेठ पर बोझ बन रहे हैं और सेठ हमारी भोजनादि की व्यवस्था प्रसन्न मन से नहीं कर रहा है। शान्तिनाथ जी इस घटना से बहुत दुःखी हुए और उस स्थान को छोड़ने का निर्णय ले लिया। इसी घटना से दु:खी शान्तिनाथ जी ने कहा कि गोरक्षपीठ के पीठाधीश्वर महन्त दिग्विजयनाथ जी ने अपने योग्य उत्तराधिकारी के लिए मुझसे कहा था। मैं पत्र लिख देता हूँ तुम वहीं चले जाओ। उसी समय निवृत्तिनाथ जी ने 1940 में गोरखपुर प्रवास के दौरान महन्त दिग्विजयनाथ जी द्वारा मुझे उत्तराधिकारी बनाने के प्रस्ताव के विषय में भी शान्तिनाथ जी से बताया। योगी शान्तिनाथ जी ने जोर देकर मुझे गोरखपुर जाने का निर्देश दिया। तब मैंने उनसे सविनय आग्रह किया कि महन्त दिग्विजयनाथ जी द्वारा दो वर्ष पूर्व यह प्रस्ताव किया गया था, अब तक वे हमारी प्रतीक्षा में बैठे नहीं होंगे। किसी न किसी को वे अपना उत्तराधिकारी बना चुके होंगे। मेरी बात पर योगी शान्तिनाथ जी गम्भीर हुए और उन्होंने महन्त दिग्विजयनाथ जी के पास मुझे उत्तराधिकारी बनाने का पत्र डाक द्वारा भेज दिया। पत्र पाने के बाद, जैसे कि महन्त दिग्विजयनाथ जी मेरी प्रतीक्षा में ही बैठे हों, उन्होंने मुझे गोरखपुर आने की स्वीकृति के साथ-साथ यात्रा व्यय भी भेज दिया। मुझे ऐसा महसूस हुआ कि भविष्य में घटने वाले घटनाक्रमों पर उस अन्तर्यामी योगी शान्तिनाथ की दृष्टि पड़ चुकी थी। मैं इसे दैवी आदेश मानकर निवृत्तिनाथ जी के साथ गोरखपुर आया। गोरक्षनाथ मंदिर में जब मैं महन्त दिग्विजयनाथ जी के सम्मुख प्रस्तुत हुआ तो उनके मुख-मण्डल पर दिव्य आभामयी मुस्कान ने मुझे सदा-सदा के लिए उनका अपना बना दिया। मैंने मन-ही-मन उनको अपने गुरु के रूप में वरण किया और उनके साथ रहने लगा। उनकी मनसा-वाचा-कर्मणा में अद्भुत एकरूपता थी। अत: हिन्दुत्व और सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के प्रति पूर्ण समर्पण से युक्त विराट् व्यक्तित्व के धनी महन्त

दिग्विजयनाथ जी महाराज के समक्ष मैं समर्पित होता चला गया।''

नाथपंथ में दीक्षा

महन्त अवेद्यनाथ जी की कृपाल सिंह विष्ट से संन्यासी बनकर 'अवेद्य' बनने की वास्तविक यात्रा नाथपंथ में दीक्षा के साथ प्रारम्भ हुई। 8 फरवरी सन् 1942 ई. को गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त दिग्विजयनाथ जी द्वारा इन्हें विधिवत दीक्षा देकर अपना शिष्य एवं उत्तराधिकारी घोषित कर दिया गया। वस्तुतः यह वर्ष भारत के स्वतंत्रता संग्राम का महत्त्वपूर्ण वर्ष था। महन्त दिविग्जयनाथ जी हिन्दू महासभा के माध्यम से आजादी की लड़ाई के एक संन्यासी योद्धा थे। महात्मा गाँधी के नेतृत्व में भारत छोड़ो आन्दोलन की घोषणा से देशभर के आजादी के योद्धा हरकत में आ चुके थे। महन्त दिग्विजयनाथ जी भी नेपाल सहित इस सम्पूर्ण क्षेत्र में ब्रिटिश शासन के विरुद्ध जन-जागरण अभियान में व्यस्त रहते थे तथा जर्मनी एवं जापान की मदद से सक्रिय आजाद हिन्द फौज की सहायता कर रहे थे। परिणामतः अवेद्यनाथ जी को गोरक्षनाथ मन्दिर की व्यवस्था की पूर्ण जिम्मेवारी उठानी पड़ी। महन्त दिग्विजयनाथ जी के निर्देशन में वे गोरक्षनाथ मन्दिर से जुड़े विभिन्न धर्मस्थानों एवं संस्थानों की देख-रेख में निष्णात होते गये। महन्त दिग्विजयनाथ जी को स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय रहने का पूरा अवसर प्राप्त हुआ। परिणामतः 1944 में गोरखपुर में हिन्दू महासभा का ऐतिहासिक अधिवेशन सम्पन्न हुआ जिसमें श्यामा प्रसाद मुखर्जी भी सम्मिलित हुए।

इसी कालखण्ड में भारत विभाजन की माँग जोर पकड़ती जा रही थी। मुस्लिम लीग के नेतृत्व में देशभर में साम्प्रदायिक दंगों की आग सुलग रही थी। जगह-जगह हिन्दुओं पर संगठित साम्प्रदायिक आक्रमण आरम्भ हो चुके थे। ऐसे में महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज के नेतृत्व में हिन्दू महासभा उत्तर भारत में भारत विभाजन के तीव्र विरोध के साथ-साथ हिन्दू समाज को संगठित करने के भगीरथ प्रयास में लगी हुई थी। अवेद्यनाथ जी महाराज द्वारा गोरक्षनाथ मन्दिर की व्यवस्था संभाल लेने से महन्त दिग्विजयनाथ जी को सामाजिक-राष्ट्रीय आन्दोलन हेतु पर्याप्त अवसर उपलब्ध हुए।

खण्डित भारत की स्वतंत्रता, इस्लामी आतंक, साम्प्रदायिक दंगे और भीषणतम नरसंहारों के साये में प्राप्त हुई। अभी इसकी आग बुझी नहीं कि 1948 में महात्मा गाँधी की हत्या हो गयी। महन्त दिग्विजयनाथ जी की सामाजिक-राजनीतिक सक्रियता से घबड़ाई सरकार को बहाना मिल गया और षड्यन्त्रपूर्वक महन्त जी को महात्मा गाँधी की हत्या के तथाकथित षड्यन्त्र में गिरफ्तार कर उन्नीस महीने जेल में बन्द कर दिया गया तथा गोरक्षनाथ मंदिर की समस्त चल-अचल सम्पत्ति जब्त कर ली गयी। उस दौरान अवेद्यनाथ जी महाराज ने नेपाल में रहकर गोपनीय ढंग से गोरक्षनाथ मन्दिर की व्यवस्था एवं महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज को निर्दोष सिद्ध करने हेतु सफल प्रयास किया। गाँधी हत्या के समय की एक घटना का जिक्र करते हुए महन्त अवेद्यनाथ कहते हैं, ''नेपाल में रहकर मैं गोरक्षनाथ मन्दिर एवं महन्त जी के मुकदमे की पैरवी कर रहा था कि लखनऊ से प्रकाशित समाचार

पत्र 'नवजीवन' ने यह दुष्प्रचारित कर दिया कि महात्मा गाँधी की हत्या महन्त जी की रिवाल्वर से की गयी। यह तथ्य भी मुकदमे में जुड़ गया। तब मैंने गोरखपुर के जिलाधिकारी से सम्पर्क कर यह स्पष्ट किया कि महन्त जी के रिवाल्वर की जाँच कर सकते हैं। जिलाधिकारी ने आकर स्वयं जाँच की।'' और फिर महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज हँसते हुए बताते हैं कि जेल से छूटने के बाद महन्त जी ने 'नवजीवन' अखबार के मालिकानों को क्षमा कर दिया।

स्वातन्त्र्योत्तर भारत में हिन्दू समाज की एकता का प्रश्न अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हो चुका था। जन्मना जाति व्यवस्था के श्रेष्ठतावाद एवं अस्पृश्यता जैसी विकृतियों से हिन्दू समाज के खण्डित तथा कमजोर होने की संभावनाएँ प्रबल होती जा रही थीं। भारतीय शासन विकृत धर्म निरपेक्षता तथा वोट बैंक की राजनीति के अन्तर्गत अंग्रेजों की 'बाँटो और राजकरो' की नीति का ही अनुगामी बना हुआ था। महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज ने सामाजिक-शैक्षिक पुनर्जागरण के साथ-साथ राजनीतिक मंच पर हिन्दू समाज की सिंह गर्जना का अभियान आरम्भ किया और उनके उत्तराधिकारी महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज उनके सक्रिय सहयोगी एवं अनुगामी बने।

राजनीति में महन्त अवेद्यनाथ

धर्म की रक्षा के लिए राजनीति महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज को अपने गुरुदेव से विरासत में प्राप्त हुई। महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज के साथ-साथ ही शिष्य रूप में ही महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज राजनीतिक मंच पर भी सक्रिय हो चुके थे। 1962 में उत्तर प्रदेश विधान सभा चुनाव में मानीराम विधानसभा से विजयी होकर महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज पहली बार विधानसभा के सदस्य बने और लगातार 1977 ई. तक के विधानसभा चुनाव तक मानीराम विधानसभा से चुनाव में विजयी होते रहे। 1980 ई. में मीनाक्षीपुरम् में हुए 'धर्म परिवर्तन' की घटना से विचलित महन्त जी राजनीति से संन्यास लेकर हिन्दू समाज की सामाजिक विषमता के विरुद्ध जन-जागरण के अभियान पर चल पड़े।

लोकसभा चुनाव में पहली बार महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज के ब्रह्मलीन होने पर 1969 ई. के उपचुनाव में महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज को गोरखपुर की जनता ने ससम्मान संसद में भेज दिया। पुनः 1989 ई. में श्रीराम जन्मभूमि आन्दोलन जब अपने उत्कर्ष पर था, तथाकथित सेकुलर राजनीतिक दल यह चुनौती देने लगे कि इस आन्दोलन को जनता का समर्थन प्राप्त नहीं है। इन परिस्थितियों में अयोध्या में हुए धर्म संसद में महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज से लोकसभा चुनाव जीतकर सेकुलर दलों को जवाब देने का प्रस्ताव पास हुआ और महन्त जी हिन्दू महासभा से 1989 ई. के लोकसभा चुनाव में श्रीराम जन्मभूमि पर भव्य मन्दिर निर्माण के मुद्दे पर सम्पूर्ण हिन्दू सन्त-महात्माओं के समर्थन से चुनावी जंग में कूदे और विजयी हुए। इस चुनाव में भारतीय जनता पार्टी और श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह के नेतृत्व वाले जनता दल के गठबन्धन का प्रत्याशी भी चुनाव

मैदान में था। तत्पश्चात् लोकसभा के 1991 के मध्यावधि चुनाव तथा 1996 के लोकसभा चुनाव में महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज विजयी होते रहे।

लोकसभा में सम्मानित सदस्य होते हुए महन्त जी 1971, 1990 एवं 1991 में भारत सरकार के गृहमंत्रालय की परामर्शदात्री समिति के सदस्य रहे। राजनीति में भी महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज की अपराजेयता सभी ने स्वीकारी। 1996 के चुनाव के समय दैनिक समाचार पत्र 'राष्ट्रीय सहारा' ने अपनी टिप्पणी में लिखा- मौजूदा सांसद अवेद्यनाथ सुप्रसिद्ध गोरखनाथ मन्दिर के पीठाधीश्वर हैं। वह जितने बड़े सन्त हैं उतने ही बड़े राजनेता भी हैं। इस मण्डल में वह इकलौते शख्स हैं जिन्होंने पाँच बार विधानसभा और तीन बार लोकसभा का चुनाव जीता है। वह 1962 में पहली बार विधायक बने। हिन्दू महासभा मे 1967, 1969, 1974 और 1977 में विधायक चुने गये। स्पष्ट है कि किसी का राज, किसी का प्रभाव, किसी की लहर उनकी जीत को न रोक सकी। यहाँ तक कि जनता लहर में भी वह अपराजेय रहे। 1998 ई. के लोकसभा चुनाव में उन्होंने अपने शिष्य एवं उत्तराधिकारी योगी आदित्यनाथ जी महाराज को चुनाव लड़ने का निर्देश दिया। 1998 से 2017 तक उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री होने तक गोरखपुर की संसदीय सीट पर गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज की कृपा एवं आशीर्वाद से पूज्य योगी आदित्यनाथ जी महाराज अपराजेय धर्मयोद्धा के रुप में प्रतिष्ठित हैं।

महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने सदैव राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद एवं भारतीय संस्कृति की पुनर्प्रतिष्ठा तथा हिन्दू समाज की रक्षा में अपनी राजनीतिक भूमिका निर्धारित की।

10 नवम्बर, 1989 को महाराणा प्रताप इण्टर कॉलेज के मैदान में आयोजित जनसभा में महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने कहा कि मैं राजनीति से संन्यास ले चुका था किन्तु सरकार हिन्दू समाज के साथ अन्याय कर रही है। सरकार अपने को धर्मनिरपेक्ष कहती है किन्तु एक समान कानून नहीं बनाती। हिन्दू पर अलग कानून और मुस्लिम पर अलग कानून लागू होते हैं।

13 नवम्बर, 1989 के लोकसभा चुनाव के दौरान महन्त जी ने कहा- ''40 वर्षों से जातिवाद, क्षेत्रवाद, भाषावाद तथा तुष्टीकरण की राजनीति के कारण देश पुनः टूटने के कगार पर पहुँच गया है। पंजाब जल रहा है, कश्मीर और पूर्वांचल अलगाव की ओर बढ़ रहे हैं। देश और अपनी संस्कृति के प्रति निष्ठावान हिन्दू समाज को तोड़ने और अल्पसंख्यक बनाने के षड्यन्त्र के तहत तरह-तरह के कानून बनाये जा रहे हैं।'' महन्त जी ने आगे कहा कि जब राजनीति विपथगामिनी हो जाय तो उसे नियन्त्रित करने के लिए धार्मिक नेतृत्व का हस्तक्षेप आवश्यक हो जाता है। वर्तमान परिस्थिति में यदि मैं मूक दर्शक बना रहूँ तो यह देश और समाज के साथ गद्दारी होगी। 6 अप्रैल, 1991 को महन्त जी ने पुनः कहा कि -आज भारत एक ऐसी सरकार की आवश्यकता महसूस कर रहा है जो सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की पक्षधर हो तथा जिसके लिए हिन्दू समाज अछूत न हो। परसों

वोट क्लब पर हिन्दू समाज के ऐतिहासिक प्रदर्शन ने यह साबित कर दिया है, कि अब देश तुष्टीकरण नीति की पोषक सरकारों को सहन नहीं करेगा। महन्त जी के ये विचार प्रतिनिधि उदाहरण हैं राजनीति में उनकी भूमिका के सन्दर्भ में।

संस्कृत भाषा के प्रबल पक्षधर

1986 की नयी शिक्षा नीति में जब 'त्रिभाषा' के अन्तर्गत समाहित संस्कृत विषय को बाहर किया गया तो भारतीय संस्कृति के अमर सपूत महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज सरकार पर विफर पड़े थे। उन्होंने दो टूक शब्दों में कहा- 'संस्कृत को नई शिक्षा नीति में हटाकर राजनीतिज्ञों ने आत्मघाती कृत्य किया है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद भी भारतीय राजनेता गुलाम मानसिकता के शिकार हैं। भारतीय संस्कृति और धर्म भारत का प्राण है। हमारी सम्पूर्ण सांस्कृतिक एवं धार्मिक विरासत संस्कृत भाषा के ग्रन्थों में ही संरक्षित है। संस्कृत से अनजान भावी पीढ़ी अपनी सांस्कृतिक विरासत से अनभिज्ञ होगी। 3 मार्च, 1987 को सनातन धर्म संस्कृत महाविद्यालय लखीमपुर खीरी (उत्तर प्रदेश) में 'विश्व संस्कृत प्रतिष्ठानम्' द्वारा आयोजित त्रिदिवसीय सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए महन्त जी ने कहा था- इतिहास साक्षी है कि कभी इस देश में पनिहारिन भी संस्कृत में वार्तालाप करती थी। दु:ख है कि आज उसी देववाणी संस्कृत को 'त्रिभाषा' से निकाल दिया गया है। संस्कृति और संस्कृत की रक्षा के लिए सम्पूर्ण भेदभाव छोड़कर हिन्दू समाज एकजुट हो। महन्त जी ने समाज का आह्वान करते हुए कहा कि- संस्कृत कर्मकाण्डों और पण्डितों की भाषा मात्र न रहे, यह जनभाषा बने, इसका प्रयास होना चाहिए।

हिन्दुत्व और राष्ट्रीयता के साधक

गोरक्षपीठ गुरु श्री गोरक्षनाथ द्वारा प्रवर्तित 'नाथपंथ' का प्रधान केन्द्र है। किन्तु पांथिक संकीर्णताओं से ऊपर उठकर सदैव इस पीठ ने हिन्दुत्व और राष्ट्रीयता को महत्त्व दिया तथा सम्पूर्ण धार्मिक-सामाजिक क्रियाकलाप इसी वैचारिक अधिष्ठान के परिप्रेक्ष्य में संचालित किये जाते हैं। गुरु श्री गोरक्षनाथ मन्दिर का विकसित भव्य स्वरूप 'हिन्दुत्व' के वैचारिक अधिष्ठान का साक्षात् स्वरूप प्रस्तुत करता है। मन्दिर प्रांगण में गुरु श्री गोरक्षनाथ के साथ-साथ हिन्दू धर्म के सभी प्रमुख देवी-देवताओं के मन्दिर, उनकी मूर्तियाँ प्रतिष्ठित हैं जिनकी प्रतिदिन पूजा-अर्चना होती है। इस सन्दर्भ में जब महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज से पूछा कि नाथपंथ निर्गुण साधना में विश्वास रखता है। गोरखनाथ मन्दिर में विभिन्न अवतारों की मूर्तियों की स्थापना की कल्पना कैसे और कब की गयी? महन्त जी का उत्तर था- 'नाथपंथ की स्थापना का मूल उद्देश्य ही सामाजिक संकीर्णता का विरोध करना एवं समन्वयवादी समतामूलक समाज की स्थापना करना था। सगुण-निर्गुण की संकीर्ण सोच में नाथपंथ का दर्शन विश्वास ही नहीं करता। नाथपंथ के आदिगुरु भगवान् शिव हैं जो शक्ति के बिना अधूरे हैं। शक्ति के बिना शिव मात्र शव है। शक्ति का ही रूप देवी दुर्गा और काली भी

हैं। ब्रह्म का स्वरूप तो साकार या निराकार हो सकता है, परन्तु 'गुरु' जिसकी महिमा एवं महत्ता का महायोगी गुरु श्री गोरक्षनाथ जी ने अतिशय गुणगान किया है और जो जीव के शिव या ब्रह्म से मिलन का माध्यम होता है, वह तो साकार और सगुण ही होता है। हमने इसी दर्शन को आत्मसात किया। भारतीय धर्म एवं संस्कृति में पंथों का अभ्युदय संघर्ष का नहीं समन्वय और निरन्तर शुद्धीकरण एवं विकास का सूचक है। भारतीय संस्कृति की विशेषता ही 'विविधता में एकता' का है। 'हिन्दुत्व' में सभी पंथ, भारत के सभी दर्शन एवं समस्त भारतीय विचारधाराएँ समाहित हैं। हिन्दुत्व के उसी स्वरूप को स्वीकार कर मैंने गोरक्षनाथ मन्दिर में 'हिन्दुत्व' का समग्र दर्शन प्रस्तुत करने का प्रयास किया। अपने गुरुदेव की स्मृति में 'महन्त दिग्विजयनाथ स्मृति भवन' के सभागार में भारत के सम्पूर्ण पंथों-विचारधाराओं के प्रतिनिधि देवी-देवताओं एवं महापुरुषों की प्रतिष्ठा की गयी।' महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज जब यह कहते हैं, इसका यह तात्पर्य नहीं कि उनकी आज की वैचारिक प्रौढ़ता से ये विचार उपजे हैं वरन् लगातार वे 'हिन्दुत्व' को ही राष्ट्रीयता का पर्याय मानते रहे हैं। महन्त जी कहते हैं कि विश्व का नियम है कि राष्ट्र का निर्माता उस राष्ट्र का बहुसंख्यक समाज ही होगा। राष्ट्रीयता भी उसी बहुसंख्यक समाज के अनुसार तय होती है। जब द्विराष्ट्रवाद के सिद्धान्त पर भारत बँट गया तभी भारत हिन्दू राष्ट्र हो गया।

23 सितम्बर 1989 को गोरखपुर में महन्त जी ने हिन्दू समाज को चेताते हुए कहा कि ईसाई मिशनरियाँ हिन्दुस्तान में ही हिन्दू समाज के धर्मान्तरण के बहाने राष्ट्रान्तरण कर अल्पसंख्यक बनाकर भारत को पुनः गुलाम बनाने का षड्यन्त्र कर रही हैं। भारत सरकार भी इस षड्यन्त्र में जाने-अनजाने शामिल है। भारत सरकार द्वारा स्वामी रामकृष्ण मिशन के स्वामी रंगनाथ को इसलिए राष्ट्रीय एकता का पुरस्कार दिया गया, क्योंकि उन्होंने कहा था कि हम हिन्दू नहीं हैं। 6 मार्च 1990 को वृन्दावन के सोहम आश्रम में आयोजित अखिल भारतीय सन्त सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए महन्त जी ने कहा था- हिन्दू साम्प्रदायिक नहीं है। हिन्दुओं में बहुत से ऐसे घर मिलेंगे जहाँ एक बेटा सिख, एक बेटा सनातनी है, तो एक बेटा आर्य समाजी। संसार में प्रताड़ित तथा अपमानित यहूदी समाज को हिन्दू भारत ने ही संरक्षण दिया। इस्लामीकरण के अभियान से आतंकित पारसियों को भारत के हिन्दू राजाओं ने ही शरण दिया। ऐसा इसलिए हुआ कि हिन्दू दूसरों की पांथिक भावनाओं, पूजा पद्धतियों से द्वेष नहीं रखता, बल्कि उनका भी सम्मान करता है। जिस हिन्दू को आज साम्प्रदायिक कहा जा रहा है, इतिहास गवाह है कि वही हिन्दू राष्ट्रीय तथा वास्तव में धर्मनिरपेक्ष है। सनातनी, आर्यसमाजी, सिख, बौद्ध, जैन आदि विविध पंथ अथवा सम्प्रदाय हिन्दू धर्म की व्यापक परिधि में ही आते हैं। हिन्दू समाज ने कभी भी किसी अन्य मजहब अथवा पंथ की उपासना भूमि अथवा प्रतीक को ध्वंस अथवा अपवित्र नहीं किया। हिन्दू न तो कभी साम्प्रदायिक था और न कभी होगा, क्योंकि हिन्दू धर्म एवं सस्कृति के वैचारिक अधिष्ठान में साम्प्रदायिकता का कहीं कोई स्थान नहीं है। भारत में साम्प्रदायिकता की समस्या राजनीतिक स्वार्थों से पैदा हुई है। भारत के राजनीतिज्ञ इस सच से आँख

मूँदे रहे हैं कि हिन्दू जहाँ भी अल्पमत हुआ, वह हिस्सा हिन्दुस्थान से अलग हुआ अथवा अलगाववादी आन्दोलन का शिकार हुआ। भारत में लोकतंत्र तभी तक फल-फूल रहा है जब तक हिन्दू बहुमत में है। वस्तुतः हिन्दू ही राष्ट्र है, हिन्दुत्व ही भारत की राष्ट्रीयता है। हिन्दू धर्म ही नहीं एक संस्कृति भी है। हिन्दुत्व दुनिया की सर्वश्रेष्ठ जीवन पद्धति है। हिन्दू राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता का प्रतीक है। हिन्दुत्व में ही पंथ निरपेक्षता निहित है। हिन्दुत्व एवं राष्ट्रीयता की वास्तविक अवधारणा को राजनीतिज्ञों ने भ्रमपूर्ण दुष्प्रचार से आच्छादित कर दिया है। पूजा पद्धति बदल लेने से किसी व्यक्ति या समाज के पूर्वज नहीं बदल जाते। भारत के धर्मान्तरित मुसलमानों के पूर्वजों और उनकी राष्ट्रीयता नहीं बदलती। इण्डोनेशिया और मलेशिया से भारतीय मुस्लिम समाज को प्रेरणा लेनी चाहिए। भारत के राजनीतिज्ञ भी यदि राष्ट्रीय एकता और अखण्डता के प्रति वास्तव में समर्पित होते तो इण्डोनेशिया और मलेशिया के मुस्लिम समाज से सीख लेते हुए भारतीय मुसलमानों को मात्र वोट बैंक न मानकर उन्हें राष्ट्र की मूलधारा में समाहित करने का ईमानदारीपूर्वक प्रयास करते। वे इस तथ्य को स्वीकार करते कि उपर्युक्त दोनों देशों का मुस्लिम समाज अपने को श्रीराम का वंशज मानता है। इण्डोनेशिया की राजकन्या का नाम सरस्वती, शासकों के नाम सुहर्तो, सुकर्णो हैं। इन देशों में श्रीराम और उनका जीवन आदर्श माने गये हैं। यह भारत की विडम्बना है कि जो हिन्दुत्व को केन्द्र बनाकर सर्वपंथ समभाव के साथ राष्ट्रीय एकता-अखण्डता, समान नागरिक संहिता, जातीय एकता का प्रयास करते हैं उन्हें साम्प्रदायिक कहा जाता है और जो मजहबी उन्माद को प्रोत्साहित करते, तुष्टीकरण एवं वोट बैंक की राजनीति करते, जातीय संघर्ष का विष घोलकर राष्ट्र और समाज को तोड़ने में लगे हैं, उन्हें पंथ-निरपेक्ष (धर्मनिरपेक्ष) एवं सामाजिक न्याय का मसीहा कहा जाता है। सच का साक्षात्कार करनेवाले सभी जानते हैं कि भारत की राष्ट्रीय एकता का मार्ग किसी भी दशा में हिन्दुत्व से होकर ही जाता है। और एक समान नागरिक संहिता लागू किये बगैर बहुसंख्यक-अल्पसंख्यक का झगड़ा समाप्त नहीं हो सकता। तथाकथित सेकुलरवादियों की तुष्टीकरण के कारण भारत की राष्ट्रीयता कमजोर होती है और राष्ट्रीय स्वाभिमान आहत होता है। संसद में मात्र 33 मुस्लिम सांसदों की आपत्ति के कारण राष्ट्रगीत 'वन्देमातरम्' का गान रोक दिया गया। महन्त जी ने राष्ट्रीय एकता के सन्दर्भ में बोलते हुए दो टूक शब्दों में कहा था- 'देश में एक समान नागरिक संहिता लागू करना अनिवार्य है। मुस्लिम तुष्टीकरण के दोहरे मापदण्ड जैसी भारत सरकार की नीतियाँ सर्वथा अनुचित और राष्ट्रीय एकता के लिए घातक हैं। हम यह नहीं कहते कि भारत में रह रहे मुसलमानों को पाकिस्तान जाना चाहिए किन्तु भारत में रहकर उन्हें भारत राष्ट्र की मुख्य धारा का हिस्सा तो बनना ही पड़ेगा।' महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज विनायक दामोदर सावरकर एवं अपने गुरुदेव महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज के इस विचार के प्रबल समर्थक हैं कि हिन्दुत्व ही राष्ट्रीयता है। उनके सुदीर्घ जीवन के वैचारिक अभियानों पर विहंगम दृष्टि डालने पर यह बात स्वत: प्रमाणित हो जाती है। वे धर्मान्तरण को राष्ट्रान्तरण मानते हैं। उन्होंने एक दैनिक समाचार पत्र के वरिष्ठ पत्रकार से

बातचीत करते हुए कहा कि भारत में लोकतन्त्र तभी तक कायम है जब तक हिन्दू बहुमत में है। धर्मान्तरण का मुद्दा राष्ट्रीय अस्तित्व से जुड़ा हुआ है। धर्मान्तरण का मतलब मात्र पूजा पद्धति में परिवर्तन नहीं अपितु इसका अर्थ है–राष्ट्रान्तरण।

सामाजिक समरसता के अग्रदूत

गोरक्षपीठ हिन्दू समाज की विकृतियों के खिलाफ जन-जागरूकता एवं हिन्दू समाज को सामाजिक-राजनीतिक-आध्यात्मिक नेतृत्व देने के लिए ही सदा से प्रतिष्ठित रहा है। नाथपंथ का अभ्युदय ही हिन्दू तंत्र-साधना में पंचमकार के शमन के साथ दिखाई देता है। तथापि बीसवीं शताब्दी के तीसरे दशक से गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज के नेतृत्व में गोरक्षपीठ ने सामाजिक परिवर्तन की जो मशाल प्रज्वलित की वह महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज द्वारा देश भर में चलाये गये छुआछूत विरोधी अभियानों से पूर्णत: देदीप्यमान हो गयी। हम लोग पूज्य महन्त जी को 1987 ई. से लगातार सुनते आ रहे हैं। कोई मंच हो, कोई विषय हो; किन्तु महाराज जी के उद्बोधन में हिन्दू समाज की एकता और छुआछूत समाप्त करने की अपील किमी न किसी रूप में आ ही जाती है। यद्यपि कि महन्त जी द्वारा छुआछूत विरोधी एवं हिन्दू समाज में सामाजिक समरसता का प्रयास तो गोरक्षपीठ से प्राप्त वैचारिक उत्तराधिकार के रूप में प्रारम्भ से ही चलता रहा, किन्तु 1980 ई. में मीनाक्षीपुरम् और उसके आस-पास के क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर कराये गये धर्म परिवर्तन ने महाराज जी को अन्दर से हिला दिया। वे व्यथित हुए और मात्र दु:खी होकर पीड़ा सहकर चुप बैठने के बजाय राजनीति से संन्यास लेकर हिन्दू समाज की एकता और सामाजिक समरसता के यज्ञाभियान पर निकल पड़े।

महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज को जिस राष्ट्र विरोधी एवं गैर संवैधानिक सामूहिक धर्मान्तरण ने विचलित कर दिया वह 19 फरवरी, 1980 को घटित मीनाक्षीपुरम् की घटना है। मीनाक्षीपुरम् का नाम बदलकर 'रहमत नगर' कर दिया गया। बड़े धूम-धाम से आयोजित इस धर्मान्तरण समारोह में आसपास के तेनाक्षी, कडयनल्लुर, वदकरी व वनगरम् आदि गाँवों के मुसलमान अपने-अपने परिवारों के साथ सम्मिलित हुए। कडयनल्लुर के विधायक श्री सहुल हमीद ने भी सक्रिय भागीदारी निभायी। इस समारोह में एक सौ अस्सी हिन्दू परिवारों (हरिजन) को धर्मान्तरित कर उस दिन एक बजे, साढ़े चार बजे, साढ़े छ: बजे जुहर, अझर एवं मकुआरिब हुआ और साथ ही सारा समुदाय कलमा पढ़ता रहा।

मीनाक्षीपुरम् के धर्मान्तण समारोह से प्रारम्भ यह धर्मान्तरण अभियान आसपास के क्षेत्रों में लगभग एक वर्ष तक चलता रहा, किन्तु मीनाक्षीपुरम् धर्मान्तरण का पूरे देश में विरोध शुरू हो गया। पूज्य महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने धर्मान्तरण के विरोध में अत्यन्त कठोर शब्दों में अपनी आपत्ति दर्ज कराते हुए दुहराया कि यह धर्मान्तरण नहीं राष्ट्रान्तरण के अभियान की शुरुआत है। किन्तु महन्त जी मात्र अपनी आपत्ति दर्ज कराकर चुप नहीं हुए। वे कहते हैं कि –'मुझे यह लगा कि उस मूल

कारण पर चोट होनी चाहिए कि जिससे हमारे ही बन्धु-बान्धव हजारों वर्षों की अपनी परम्परा, धर्म और उपासना पद्धति बदलने के लिए तैयार हो जा रहे हैं और मैंने महसूस किया कि जब तक हिन्दू समाज में अस्पृश्यता का कोढ़ बना रहेगा, अपने ही समाज में उपेक्षित और तिरस्कृत बन्धुओं को कोई भी गुमराह कर धर्मान्तरण हेतु प्रोत्साहित और प्रेरित कर सकता है। अतः मैं गाँव-गाँव जाकर छुआछूत के विरुद्ध अभियान छेड़ने का निश्चय लेकर निकल पड़ा। इसी समय मेरे मन में यह बात आयी कि मेरे इस सामाजिक समरसता अभियान पर लोग यह न सोचें कि यह साधु वोट के लिए ऐसा कर रहा है, मैंने राजनीति को तिलांजलि दे दी और चुनाव न लड़ने का निर्णय घोषित कर दिया।'

1980 से गाँवों में लगातार महन्त जी के जनसम्पर्क एवं तथाकथित अछूतों के साथ बैठकर सहभोज ने क्रान्ति पैदा कर दी और सामाजिक परिवर्तन की आँधी में जिस तेजी से समाज बदला वह सभी ने देखा। इस दृष्टि से काशी में डोमराजा के घर पर महन्त जी की अगुवाई में धर्माचार्यों द्वारा किये गये भोजन का देश भर में स्वागत हुआ। दैनिक समाचार पत्र 'आज' ने लिखा- सदियों से बिखरी पड़ी हिन्दू एकता की सभी कड़ियों को परस्पर मजबूती से जोड़कर सशक्त हिन्दू समाज का पुनर्निर्माण करने के उद्देश्य से छुआछूत मिटाने के प्रयासों को ठोस आधार प्रदान करते हुए गोरक्षपीठाधीश्वर तथा सांसद महन्त अवेद्यनाथ ने अनेक प्रमुख सन्त महात्माओं के साथ गुरुवार (18 मार्च, 1994) को प्रातःकाल काशी के डोमराजा सुजीत चौधरी के घर उनकी माँ के हाथों भोजन कर अस्पृश्यता की धारणा पर जोरदार चोट की। मान मन्दिर स्थित डोमराजा के आवास पर उनके वंशज श्री संजीत चौधरी की देखरेख में सूर्योदय के पूर्व से संतों के स्वागत तथा उन्हें भोजन कराने की तैयारियाँ शुरू हो गयी थीं। आसपास के लोगों ने जब यह सुना कि कुछ ही देर बाद अनेक संत-महात्मा डोमराजा के यहाँ भोजन करने आ रहे हैं तो किसी को विश्वास नहीं हो रहा था। लेकिन नौ बजे के लगभग जब दशाश्वमेध घाट से डोमराजा के आवास की ओर जाने वाली गली में गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज के नेतृत्व में धर्माचार्यों के काफिले ने प्रवेश किया तो सभी नागरिक अभिभूत हो उठे। सदियों तक चाण्डाल कहकर पुकारे गये, समाज की मुख्य धारा से अलग अस्पृश्य माने गये इस परिवार के यहाँ देश के वरिष्ठ सन्तों के भोजन का यह दृश्य देखने जनता उमड़ पड़ी। अस्पृश्यता की जड़ अवधारणा पर निर्णायक प्रहार का ऐसा मार्मिक दृश्य देखकर लोगों के नेत्र आनन्दातिरेक से छलछला उठे। संजीत चौधरी की माँ श्रीमती सारंग देवी भोजन कराते-कराते इस कदर भाव-विह्वल हो गयी थीं कि उनकी आँखों से झर-झर अश्रुपात होने लगा। एक पत्रकार ने उनसे पूछा कि आप क्यों रो रही हैं? उनका उत्तर था- 'आज संजीत क बाऊ होतन तऽ केतना खुश होतन।' भोजन के बाद परम्परानुसार संजीत चौधरी की माँ ने संतों को दक्षिणा देने का प्रयास किया तो महन्त अवेद्यनाथ ने उन्हें रोका और फिर सन्तों से उन्होंने कहा कि कोई दक्षिणा नहीं लेगा अन्यथा कल ही अखबार वाले छाप देंगे ये सन्त-महात्मा दक्षिणा के लिए ही भोजन करने आये थे। भोजनोपरान्त महन्त अवेद्यनाथ ने डोमराजा के घर में बने रामजानकी मन्दिर के समक्ष सिर

नवाया। अन्य सन्तों ने भी उनका अनुकरण किया। बाद में जब एक पत्रकार ने महन्त अवेद्यनाथ जी से पूछा कि डोमराजा के घर भोजन कर आपको कैसा लगा? उनका उत्तर था– 'गंगा के तट पर डोमराजा के घर भोजन कर मैं धन्य हुआ हूँ। क्योंकि सदियों से भारतीय समाज में कोढ़ की तरह जड़ हो चुके छुआछूत को मेरे साथ देश के धर्माचार्यों ने एक बार फिर शास्त्र विरुद्ध घोषित कर हिन्दू समाज की एकता का मार्ग प्रशस्त किया है।' महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज द्वारा चलाये गये सामाजिक समरसता के अभियान का यह चरमोत्कर्ष था।

महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने इससे पूर्व श्रीराम जन्मभूमि पर बनने वाले भव्यतम मन्दिर का शिलान्यास हिन्दू समाज में घोषित किसी अछूत से कराने का प्रस्ताव कर दुनिया को यह संदेश दे दिया कि हिन्दू धर्माचार्य और हिन्दू समाज अपनी सामाजिक विकृतियों को समाप्त करने हेतु संकल्पबद्ध हो रहा है। परिणामतः दुनिया ने देखा कि मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम की जन्मभूमि पर बनने वाले पवित्र एवं विशाल मन्दिर की पहली ईंट एक दलित ने रखी। महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज के प्रयास से श्रीराम जन्मभूमि मन्दिर का शिलान्यास लाखों श्रीराम भक्त हिन्दू जनता तथा परम्परा और रूढ़ियों को तोड़ने हेतु कृत-संकल्पित भारत के विभिन्न हिस्सों से आये विविध पंथों के संत-महात्माओं की उपस्थिति में एक तथाकथित अस्पृश्य द्वारा किया जाना भारत के सामाजिक-धार्मिक इतिहास में सामाजिक परिवर्तन की क्रान्ति का सूत्रपात था। श्रीराम जन्मभूमि पर मन्दिर निर्माण का प्रश्न हिन्दू समाज और भारतीयता की प्रतिष्ठा का प्रश्न था ही, इस मुद्दे ने भारत की राजनीतिक सत्ता के उथल-पुथल का जो दृश्य प्रस्तुत किया उस पर सारी दुनिया की निगाहें टिकी थीं। ऐसे महत्त्वपूर्ण आयोजन पर हिन्दू समाज में व्याप्त अस्पृश्यता जैसे कोढ़ के खिलाफ यह प्रतीकात्मक पहल दुनिया को संदेश देने के साथ-साथ हिन्दू समाज को यह संदेश देने का माध्यम बना कि छुआछूत न तो शास्त्र-सम्मत है, न ही धर्म सम्मत। यह एक विकृति है, रूढ़ि है जिसे धर्माचार्यों, सन्त-महात्माओं एवं हिन्दू समाज ने पूर्णतः खारिज कर दिया है।

महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज द्वारा सामाजिक समरसता हेतु किये गये भगीरथ प्रयासों का संकलन और उनका उल्लेख तो सम्भव नहीं है किन्तु पटना के महावीर मन्दिर में दलित (हरिजन) पुजारी की प्रतिष्ठा के प्रयास का इतिहास में हमेशा उल्लेख किया जाता रहेगा। बिहार जब जातिवादी-साम्प्रदायिक राजनीति के सर्वोच्च शिखर पर था; श्री लालू प्रसाद यादव के नेतृत्व में सत्ता पर काबिज रहने के लिए जातिवाद के विषवेलि को पूर्णतः खाद-पानी प्राप्त हो रहा था; बिहार एक प्रकार से जल रहा था, महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने इस जातिवादी राजनीति के सीने पर चढ़कर बिहार की राजधानी पटना में स्थित महावीर मन्दिर में सूर्यवंशी लाल उर्फ फलाहारी बाबा (हरिजन) को पुजारी नियुक्त कर एक बार फिर भारत की सामाजिक विखण्डनकारी राजनीति को आईना दिखा दिया। समारोह के साथ पुजारी नियुक्त किया गया। महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज के इस युग-परिवर्तनकारी प्रयास को दुनिया भर में सराहा गया।

महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने पटना से लौटकर गोरखपुर में पत्रकारों से बातचीत करते हुए कहा था- किसी मन्दिर का पुजारी होने के लिए किसी 'जाति' का होना आवश्यक नहीं है। किसी भी जाति का सच्चरित्र, गुणवान, ज्ञानी, ईश्वर-भक्त व्यक्ति मन्दिर का पुजारी बन सकता है। सन्त रविदास तो हरिजन ही थे जिन्हें मीराबाई ने अपना गुरु बनाया था। सामाजिक नियम देश, काल और युगानुसार बदलते रहते हैं। जिस समाज में युगानुकूल सामाजिक-धार्मिक नियम परिवर्तित नहीं किये जायेंगे वह समाज जड़ हो जायेगा। फलाहारी बाबा की पुजारी के रूप में नियुक्ति कोई नया कार्य नहीं, ऐसा हिन्दू समाज में होता रहा है। आज के तथाकथित अस्पृश्यों की जाति में जन्मे ऋषियों, सन्तों, महापुरुषों की एक लम्बी श्रृंखला हिन्दू समाज में देखी जा सकती है।

उपर्युक्त तीन उदाहरण महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज द्वारा छुआछूत विरोधी जन-जागरण और उनके प्रयासों की सफलता के प्रतीक हैं। अस्सी के दशक में जब महन्त जी ने अस्पृश्यता विरोधी अभियान छेड़ा, तब भारतीय समाज में जातिव्यवस्था, ऊँच-नीच और छुआछूत की भावना समाज में अटल चट्टान की भाँति जड़ हो चुकी थीं। कोई धर्मात्मा किसी तथाकथित अछूत के हाथ का छुआ पानी पियेगा यह कल्पना नहीं की जा सकती थी। महन्त जी समाज की परवाह किये बगैर राजनीति और गोरक्षपीठ की सुख-सुविधाओं को ठोकर मारकर गाँव के दलितों-अछूतों को गले लगाने चल पड़े थे। समाज में व्याप्त छुआछूत की कुरीति को उखाड़ फेंकने का संकल्प लेकर निकले इस महात्मा के साथ कदम से कदम जुड़ते गये और फिर क्या था, कारवाँ चल पड़ा, देशभर के धर्माचार्यों के बीच जाकर महन्त जी ने उन्हें हिन्दू समाज की कुरीतियों के खिलाफ आगे आने की अपील की, जिसका धीरे-धीरे चमत्कारी असर हुआ। देश भर के धर्माचार्य इस अभियान में महन्त जी के साथ हो लिये। महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज 1984 तक आते-आते ही हिन्दू धर्म के सभी पंथ-सम्प्रदाय के सन्त महात्माओं के सर्वमान्य हो चुके थे। कुछ सभाओं, सम्मेलनों में महन्त जी के उद्घोष, सामाजिक समरसता अभियान के प्रति उनके सम्पूर्ण समर्पण के ही प्रमाण हैं।

उन्होंने कहा- आज राष्ट्र की एकता, अखण्डता और प्रभुसत्ता खतरे में है। इसलिये गुफाओं की साधना और मठ-मन्दिरों की आराधना छोड़कर धर्माचार्य देश को दिशा देने के लिए प्रस्थान कर चुके हैं। राष्ट्र की एकता-अखण्डता की गारन्टी हिन्दू समाज की एकता-अखण्डता में ही सन्निहित है। अतः हिन्दू समाज को जगना होगा। छुआछूत हिन्दू समाज का कोढ़ है, महामारी है, जीवित भूत है। हिन्दू समाज का दलित हमारा भाई है, उन्हें प्यार देना होगा, सम्मान देना होगा, उन्हें बेरोक-टोक मन्दिरों में पूजा-पाठ करने की खुली छूट देनी होगी। देश की तमाम पिछड़ी जातियों के उत्थान हेतु हमें मिलकर ईमानदारी से प्रयास करना होगा। हिन्दू समाज को देश की खातिर जात-पाँत से ऊपर उठना होगा। हरिजन, वनवासी, पिछड़े सभी हिन्दू समाज के अभिन्न अंग हैं। इनके बीच भेदभाव नाजायज है। सन्त समाज के किसी भी आचार्य ने जन्म के आधार पर कभी भी छुआछूत को मान्यता नहीं दी। हिन्दू समाज के मार्गदर्शक सन्तों ने कबीर-रैदास जैसे जाने कितने को न केवल अपना शिष्य

बनाया बल्कि कितनों ने उन्हें अपना गुरु मान लिया। महन्त जी ने यहाँ तक कहा कि हिन्दू समाज की एकता के लिए यदि अपने ही बन्धु-बान्धव हरिजनों के सामने झुकना भी पड़े तो हमे हिचक नहीं। हिन्दू समाज में ऊँच-नीच, छुआछूत की भावना जब तक समाप्त नहीं होगी, हिन्दू समाज पर अन्यों का अत्याचार बन्द नहीं होगा। यहाँ तक कि हिन्दुत्व जिन्दा नहीं रहेगा यदि हम हिन्दू समाज में व्याप्त रूढ़िगत परम्पराओं एवं कुरीतियों को त्याग नहीं देते। जात-पाँत के भेदभाव और छुआछूत जैसी विकृतियाँ हिन्दू समाज को तोड़ देंगी।

महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने 26 अप्रैल, 1992 को गोरखपुर महानगर के मानसरोवर स्थित रामलीला मैदान में बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर की मूर्ति का अनावरण किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि बाबा साहेब किसी दल, सम्प्रदाय या जाति के नहीं राष्ट्र की थाती हैं। वे सच्चे अर्थो में राष्ट्र पुरुष हैं। बाबा साहेब के समय में हिन्दू समाज जाति व्यवस्था की बेड़ियों में बुरी तरह जकड़ा हुआ था। छुआछूत एवं भेदभाव की भावना इस कदर हावी थी कि तथाकथित शूद्रों का समाज में चलना तक दूभर था। इन सारी स्थितियों को बाबा साहेब ने स्वयं झेला, हिन्दू समाज के लोगों द्वारा ही तमाम तरह के अपमान सहे, फिर भी तमाम प्रलोभनों के बावजूद इस्लाम और ईसाई पंथ स्वीकार नहीं किया तथा हिन्दू समाज के ही महत्त्वपूर्ण पंथ बौद्ध मत के अनुयायी बने। वस्तुत: बाबा साहेब एक आदर्श प्रतिमान हैं हिन्दू समाज के लिए।

महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने हिन्दू समाज को चेतावनी देते हुए हाटा (देवरिया) की जनसभा में कहा था कि यदि हम अपनी कुरीतियों से मुक्त नहीं हुए तथा जात-पाँत में बँटे रहे, छुआछूत के कोढ़ से मुक्त नहीं हुए तो हिन्दुत्व और हिन्दू समाज की रक्षा कोई नहीं कर सकता। होटलों में खाते-पीते समय तो हम नहीं पूछते कि हमारे बगल में खा-पी रहा व्यक्ति किस जाति का है किन्तु घर पर अपने द्वारा घोषित अछूत के साथ चाय पी लेने से धर्म क्यों चला जाता है? जिनका धर्म इतना कमजोर है कि अपने ही बन्धु-बान्धवों के साथ उठने-बैठने, खाने-पीने से समाप्त हो जाय, वे हिन्दुत्व की रक्षा क्या करेंगे? ऐसे आत्मघोषित श्रेष्ठता के पक्षधरों ने यदि अपना आचरण नहीं बदला तो न हिन्दू बचेगा, न उनकी जाति बचेगी और न फिर भारत बचेगा। 1 मई, 1994 को सोलन (पंजाब) में हिमगिरि कल्याण आश्रम के नवें वार्षिक समारोह को सम्बोधित करते हुए अवेद्यनाथ जी महाराज ने फिर दोहराया कि यदि भारत में भी हिन्दू अल्पमत हो गया तो दुनिया में कोई ऐसा राष्ट्र नहीं बचा है जहाँ वे अपनी सभ्यता और संस्कृति को लेकर जा सकेंगे तथा उनकी रक्षा हो सकेगी। यदि हिन्दू समाज अपना खोया सम्मान पाना चाहता है तो वह संकीर्ण मानसिकता का त्याग करे, काल-परिस्थितिवश आयी अपने राष्ट्र एवं समाज में व्याप्त कुरीतियों का शमन करे तथा हिन्दुत्व की व्यापकता को आचरण में भी स्वीकार करे। यदि हम अपने ही समाज के एक वर्ग को बराबरी की जगह नहीं देते, उस समूह के साथ भाई जैसा व्यवहार नहीं करते तो स्वाभाविक प्रश्न है कि वे ऐसे समाज में क्यों रहेंगे। 25 सितम्बर, 1994 को दीनदयाल उपाध्याय जी की जयन्ती पर

आयोजित समारोह के मुख्य अतिथि के रूप में महन्त जी ने कहा कि अस्पृश्यता के खिलाफ सम्पूर्ण हिन्दू समाज की बगावत ही हिन्दुत्व की रक्षा की गारंटी है।

महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज सामाजिक समरसता के प्रश्न पर सदैव स्पष्टवादी रहे। उन्होंने इस प्रश्न पर धर्माचार्यों, संत-महात्माओं, राजनीतिज्ञों, किसी को भी क्षमा नहीं किया, यदि वे हिन्दू समाज की एकता के विरुद्ध या अस्पृश्यता के पक्ष में खड़े हुए अथवा हिन्दू समाज की अनदेखी की। हिन्दू समाज को चेतावनी देते हुए कानपुर में उन्होंने कहा था कि हमने 'रामनाम' को तो महत्त्व दिया परन्तु श्रीराम के आदर्शों को समाज ने अपने जीवन में नहीं उतारा। यदि हिन्दू समाज के जीवन में श्रीराम के आदर्श दिखते तो हिन्दू समाज का अभिन्न हिस्सा दलित वर्ग हिन्दू समाज से दूर नहीं हुआ होता। उन्होंने आगे कहा कि छुआछूत की वकालत करने वाले धर्माचार्य हिन्दुत्व के सबसे बड़े शत्रु हैं। भला मानव के स्पर्श से वह भगवान् अपवित्र हो सकते हैं, जो घर-घर में व्याप्त हैं, सभी जीव-जन्तुओं अर्थात् पशु-पक्षियों तक में जिनके दर्शन किये जा सकते हैं। हमारे ऐसे भगवान् को अपने ही समाज के अपने भक्त बन्धुओं द्वारा छूने से अपवित्र मानने वाले ढोंगी हैं, अज्ञानी हैं और आत्महन्ता हैं। धर्म तभी जीवित और शाश्वत रहता है जब उसमें समय-समय पर व्याप्त रूढ़ियों का शमन किया जाता रहे। उत्तर प्रदेश में सत्ता की बागडोर जब बसपा प्रमुख सुश्री मायावती ने संभाली तो गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त जी ने उन्हें अपनी शुभकामना देते हुए कहा था कि उत्तर प्रदेश की पहली महिला दलित मुख्यमंत्री के रूप में सुश्री मायावती को सदन में विश्वास मत प्राप्त होना सामाजिक न्याय एवं समरसता की जीत है। महन्त जी ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए चेतावनी के साथ आगे कहा कि बहुजन से सर्वजन हिताय की घोषणा के बाद सुश्री मायावती मुख्यमंत्री तभी बन पायीं जब उन्होंने अलगाववादी भाषा छोड़ राष्ट्रीय एकता-अखण्डता और समरसता की भाषा बोलना शुरू कर दिया। हमारी शुभकामना है कि उनका राजनीतिक जीवन सामाजिक न्याय और सामाजिक समरसता की स्थापना की दृष्टि से एक मिसाल बने। 3 नवम्बर, 1999 को 'दैनिक जागरण' के साथ एक विशेष बातचीत में महन्त जी ने कहा कि-हिन्दू समाज के सबसे बड़े दुश्मन जाति का जहर फैलाने वाले जातिवादी नेता हैं। हिन्दू समाज भी अपने पतन के लिए कम दोषी नहीं है। हम अपने ही बन्धु-बान्धवों को अछूत घोषित कर उनकी उपेक्षा करते हैं; ऐसा समाज कमजोर होगा ही विदेशी षड्यन्त्रों का शिकार भी होगा।

गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज एकबार अपने प्रिय एवं पुरी के जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी निश्चलानन्द जी सरस्वती के खिलाफ भी तब तनकर खड़े हो गये जब उन्होंने कलकत्ता विश्वविद्यालय परिसर में आयोजित समारोह में एक विदुषी महिला को वेदपाठ करने पर रोक दिया। महन्त जी ने इस पर तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि यह कृत्य कहीं से भी न तो न्यायसंगत है और न ही धर्मानुसार उचित है। यह कृत्य महिला समाज का अपमान करता ही है इससे हिन्दुत्व भी लांछित होता है। कोई भी समझदार व्यक्ति ऐसे कृत्य का समर्थन नहीं कर

सकता। आज जबकि जातिवाद, ऊँच-नीच, छूत-अछूत आदि विकृतियों को शह देकर हिन्दू समाज को बाँटने एवं कमजोर करने का षड्यन्त्र चल रहा है, जगद्गुरु शंकराचार्य द्वारा महिलाओं के वेदपाठ पर आपत्ति न तो धर्मानुकूल है और न ही युगानुकूल। महन्त जी से जब इस घटना का जिक्र किया तो उनके चेहरे पर दुःख के उभरे सहज भाव को कोई भी पढ़ सकता था। वे आहत मन से बोल पड़े- 'हिन्दू जीवन पद्धति दुनिया की श्रेष्ठतम जीवन पद्धति है। हमारे ऋषियों-महर्षियों ने अनेक पीढ़ियों की तपस्या से मानवता को सुख और शान्ति प्रदान करने वाली संस्कृति का विकास किया; मनुष्य की कौन कहे इस सृष्टि के चर-अचर सभी में ईश्वर का दर्शन किया और इसका उपदेश किया। ऐसे श्रेष्ठतम संस्कृति के वाहक जब छूत-अछूत, उँच-नीच की बात करें, पुरुष-महिला विभेद की बात करें तो यह हास्यास्पद लगता है। महिलाओं के वेदपाठ पर आपत्ति कैसे की जा सकती है, जबकि अनेक वैदिक ऋचाओं की रचना विदुषी महिलाओं ने ही की है। भारत में नारियाँ पुरुषों के समकक्ष ज्ञान-विज्ञान के सभी क्षेत्रों में अग्रणी थीं और उन्हें समाज में आदर की दृष्टि से देखा जाता था। भारतीय धर्मशास्त्र में नारी सर्व-शक्ति-सम्पन्न मानी गयी तथा विद्या, शील, ममता, यश और सम्पत्ति की प्रतीक समझी गयी। जिस समाज में अर्द्धनारीश्वर के रूप में भगवान् की उपासना होती हो, जहाँ भगवान् राम के पहले भगवती सीता का नाम जुड़ा हो, जहाँ महेश्वर श्री उमापति कहे जायँ, जहाँ कृष्ण राधा के बिना अधूरे हों, ऐसे स्त्री-पुरुष के एकात्म समाज में नारियों के वेद-पाठ पर आपत्ति हास्यास्पद कृत्य नहीं तो और क्या है। ऐसे समाज में स्त्रियों को पुरुष से हीन समझना किस दृष्टि से धर्मसम्मत कहा जायेगा? रोमशा, अपाला, उर्वशी, विश्ववारा, सिकता, निबावरी, घोषा, लोपामुद्रा जैसी विदुषी भारतीय नारियाँ किस पुरुष विद्वान से कमतर थीं? श्रीराम के युवराज पद पर अभिषेक के समय कौसल्या ने यज्ञ किया था। ऋषि कुशध्वज की कन्या वेदवती, दर्शन, तर्क, मीमांसा की पंडित थी। काशकृत्स्नी ने मीमांसा जैसे क्लिष्ट और गूढ़ विषय पर पुस्तक का प्रणयन किया था जो पुस्तक बाद में उसी के नाम पर प्रसिद्ध हुई और उसके अध्येता 'काशकृत्स्नी' ही कहे गये। याज्ञवल्क्य की पत्नी मैत्रेयी को कौन नहीं जानता कि वह एक प्रतिष्ठित दार्शनिक थीं। याज्ञवल्क्य जैसे महर्षि को स्तब्ध कर देने वाली जगत्-प्रसिद्ध विदुषी गार्गी को भारतीय समाज में ही वह प्रतिष्ठा प्राप्त थी। वाल्मीकि और अगस्त्य जैसे महर्षियों ने मैत्रेयी को वेदान्त की शिक्षा दी थी। भगवती सीता नित्य वैदिक प्रार्थनाएँ किया करती थीं। भारत में नारियाँ ज्ञान-विज्ञान तथा शासन-प्रशासन में सहभागी थीं तो सहधर्मचरी भी थीं। ऐसे हिन्दू समाज में नारी-पुरुष की विषमता को यदि जगह मिली है तो वह काल और परिस्थिति के अनुसार ग्राह्य रूढ़ि है और अब वह विकृति है जिसका मूलोच्छेदन करना धर्माचार्यों का भी प्रमुख धर्म है।

गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने अपने जीवन का उत्तरार्द्ध पूर्णतः सामाजिक समरसता, हिन्दू समाज के पुनर्जागरण और श्रीराम जन्मभूमि मुक्ति अभियान को समर्पित कर दिया। उन्होंने 1980 के बाद से ही हिन्दू समाज से अस्पृश्यता उन्मूलन एवं श्रीराम जन्मभूमि पर भव्य मन्दिर

निर्माण को अपने जीवन का मिशन बना लिया और अब तक सोते-जागते, उठते-बैठते महाराज जी के बातचीत के केन्द्र बिन्दु यही दो मुद्दे होते हैं।

श्रीराम जन्मभूमि आन्दोलन के नायक

आधुनिक भारत में क्षेत्र और जनसहभागिता के आधार पर 1857 और आपातकाल के विरुद्ध हुए जनान्दोलनों से भी बड़ा या यह कहें कि अब तक के सबसे बड़े उस जनान्दोलन का, जिसने भारत की दिशा बदल दी, नेतृत्व गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने ही किया। पांथिक विविधता और मतभिन्नता से युक्त हिन्दू समाज के धर्माचार्यों में जिस एक नाम पर सहमति थी वह गोरक्षपीठाधीश्वर का ही नाम था। शैव, वैष्णव, शाक्त, बौद्ध, जैन, सिख, विविध अखाड़ों सहित बड़ी संख्या के मतावलम्बी धर्माचार्य महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज के प्रति सम्मान श्रद्धा एवं निष्ठा रखते थे। हिन्दू समाज में अस्पृश्यता एवं ऊँच-नीच जैसी कुप्रथाओं के खिलाफ़ देश भर में जन-जागरण अभियान पर निकलकर गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने सर्वप्रथम धर्माचार्यों के बीच अपने-अपने मत-श्रेष्ठतावाद का खण्डन किया और भारत के लगभग सभी शैव-वैष्णव इत्यादि धर्माचार्यों को एक मंच पर खड़ा किया था। परिणामतः जब श्रीराम जन्मभूमि मुक्ति यज्ञ-समिति का गठन हुआ तो 21 जुलाई, 1984 को अयोध्या के वाल्मीकि भवन में सर्वसम्मति से महन्त जी को अध्यक्ष चुना गया। तब से लेकर ब्रह्मलीन होने तक श्रीराम जन्मभूमि मुक्ति यज्ञ समिति के महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज अध्यक्ष रहे और उनके नेतृत्व में भारत में ऐसे जनान्दोलन का उदय हुआ जिसने भारत में सामाजिक-राजनीतिक क्रान्ति का सूत्रपात किया। विकृत धर्मनिरपेक्षता एवं मुस्लिम तुष्टीकरण की राजनीति का काला चेहरा उजागर हुआ। हिन्दुत्व पर नये सिरे से दुनियाभर में बहस शुरू हुई। सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की आन्तरिक ताकत का एहसास हुआ। भारत सहित दुनिया के इतिहास में श्रीराम जन्मभूमि आन्दोलन और उसके प्रभाव एवं परिणाम का अध्याय महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज का उल्लेख हुए बिना अधूरा रहेगा।

श्रीराम जन्मभूमि की मुक्ति और उस स्थान पर भव्य मन्दिर निर्माण के लिए महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज के नेतृत्व में अत्यन्त योजनापूर्वक जनान्दोलन की रूपरेखा बनी और 1984 से प्रारम्भ किये गये इस चरण का आन्दोलन एक हद तक परिणाम पर पहुँचा और उस स्थान पर स्थित विदेशी आक्रान्ता द्वारा निर्मित हिन्दू समाज को चिढ़ाने और अपमानित करने वाला 'ढाँचा' ध्वस्त कर दिया गया तथा श्रीराम जन्मभूमि पर कारसेवकों ने भगवान् श्रीराम का 'मन्दिर' अपने हाथों से बना दिया। अब उस मन्दिर को 'भव्यतम' बनाने का कार्य ही मात्र शेष है। लगभग पाँच शताब्दियों से चल रहे संघर्ष को अन्ततः पूज्य महन्त जी के नेतृत्व में एक बड़ी सफलता प्राप्त हुई। महन्त जी ने 1984 के बाद से श्रीराम जन्मभूमि मुक्ति यज्ञ समिति द्वारा चलाये गये जन-संघर्ष का सफलतम नेतृत्व किया।

7 अक्टूबर 1984 को भगवान् श्रीराम की जन्मभूमि अयोध्या में सरयू के तट पर श्रीराम

जन्मभूमि को मुक्त कराने के पवित्र संकल्प के साथ प्रारम्भ 'धर्मयात्रा' 14 अक्टूबर को लखनऊ पहुँची जहाँ बेगम हजरत महल पार्क में तब तक का ऐतिहासिक सम्मेलन सम्पन्न हुआ, जिसमें लगभग दस लाख की संख्या में हिन्दू जनता ने हिस्सा लिया। महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज की अध्यक्षता में सम्पन्न इस सम्मेलन से सरकार हिल गयी। तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री नारायणदत्त तिवारी से महन्त जी की अध्यक्षता में एक प्रतिनिधि-मण्डल ने भेंट की और उन्हें अपना माँग-पत्र सौंपा। जनसंघर्ष को निरन्तर दिशा देते और कुशल नेतृत्व देते हुए तीन-चार वर्षों में ही इसे राष्ट्रव्यापी बनाने में सफल हुए धर्माचार्यों के आह्वान पर 22 सितम्बर, 1989 को नयी दिल्ली में वोट-क्लब पर विराट् हिन्दू सम्मेलन का आयोजन हुआ जिसकी अध्यक्षता महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने की। इस विराट् हिन्दू सम्मेलन में तीन प्रस्ताव पारित किये गये- 1. श्रीराम जन्मभूमि हिन्दुओं का था, है, और रहेगा। 2. श्रीराम जन्मभूमि पर भव्य मन्दिर निर्माण हेतु 9 नवम्बर 1989 को समारोहपूर्वक शिलान्यास कार्यक्रम सम्पन्न होगा। 3. लोकसभा चुनाव में श्रीराम जन्मभूमि पर मन्दिर निर्माण के समर्थक, चरित्रवान तथा योग्य प्रत्याशी को ही हिन्दू जनता मतदान करेगी। इस सम्मेलन में मुस्लिम समाज से अपील की गयी कि वे हिन्दुओं के तीन प्रमुख तीर्थस्थल-अयोध्या, काशी, मथुरा-हिन्दू समाज को सौंप दें।

वोट क्लब की रैली से पूर्व ही 20 सितम्बर को भारत सरकार के तत्कालीन गृहमंत्री श्री बूटा सिंह ने महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज से बातचीत का आग्रह किया, किन्तु महन्त जी ने रैली के बाद ही बातचीत का निमन्त्रण स्वीकार करने का प्रस्ताव दिया। 25 सितम्बर को प्रातः 9 बजे मुलाकात की तिथि निर्धारित हुई। उक्त निर्धारित तिथि पर गृहमंत्री के साथ महन्त जी की घंटे भर वार्ता हुई। गृहमंत्री चाहते थे कि 9 नवम्बर 1989 को सम्पन्न होने वाला श्रीराम जन्मभूमि पर विशाल मन्दिर के निर्माण का शिलान्यास कार्यक्रम स्थगित किया जाय। महन्त जी ने दृढ़तापूर्वक अपना पक्ष रखते हुए कहा कि यह फैसला करोड़ों हिन्दू समाज का है। महन्त जी द्वारा अपने निर्णय पर अडिग रहने के कारण पुनः लखनऊ में तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री नारायणदत्त तिवारी के साथ गृहमंत्री बूटा सिंह एवं महन्त जी की वार्ता तय हुई। मुख्यमंत्री आवास पर हुई इस बैठक में महन्त जी के साथ महन्त नृत्यगोपालदास, श्री दाउदयाल खन्ना एवं विहिप के अन्तर्राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अशोक सिंहल भी शामिल हुए। इस बैठक में भी महन्त जी ने स्पष्ट किया कि यह मामला अदालत के अधिकार क्षेत्र के बाहर का है, यह राष्ट्रीय सम्मान एवं हिन्दू समाज की आस्था का प्रश्न है।

सरकार के समक्ष अपना स्पष्ट और दो टूक पक्ष रखने के पश्चात् देश भर में शिलान्यास समारोह हेतु श्रीरामशिला पूजन अभियान प्रारम्भ हो गया। महन्त जी की अगुवाई में देश भर के गाँव-गाँव से श्रीरामशिला पूजन कर अयोध्या के लिए चल पड़ी। 29 सितम्बर को उत्तर प्रदेश में कुशीनगर जनपद के खड्डा में श्रीरामशिला पूजन समारोह के अवसर पर आयोजित विशाल हिन्दू सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने कहा- आज राष्ट्र की एकता-अखण्डता

एवं प्रभुसत्ता खतरे में है। इसलिये गुफाओं की साधना और मठ-मन्दिरों की आराधना से बाहर निकलकर धर्माचार्य देश को दिशा देने के लिए प्रस्थान कर चुके हैं। हिन्दू समाज को जागना होगा। श्रीराम जन्मभूमि पर विदेशी आक्रान्ता द्वारा स्थापित गुलामी के प्रतीक एवं हमारी राष्ट्रीय सम्प्रभुता को चुनौती देने वाले ढाँचे के स्थान पर भव्य मन्दिर के निर्माण के शिलान्यास समारोह को सम्पन्न कराने एवं उसका विरोध करने वाली सरकार तथा राजनीतिक दलों को सबक सिखाने हेतु राष्ट्रभक्त जनता भी घरों से बाहर निकले। महन्त जी ने श्रीरामशिला पूजन अभियान हेतु देशभर की दर्जनों जनसभाओं को सम्बोधित किया तथा उत्तर प्रदेश में जन-जागरण की अलख जगाने की बागडोर सीधे अपने हाथ में ले ली। इसी अभियान के दौरान लखनऊ में एक पत्रकार को दिये विशेष साक्षात्कार में महन्त जी ने कहा कि हिन्दुस्तान की एकता का पहला सूत्र हिन्दू समाज की एकता है। देश का बहुसंख्यक वर्ग यदि संगठित रहा तो साम्प्रदायिक और विघटनकारी तत्त्व राष्ट्रीय एकता और अखण्डता को खतरा नहीं पैदा कर सकेंगे। हमारी निष्ठा राष्ट्र और भारत की संस्कृति में है।

इसी बीच लोकसभा चुनाव घोषित होने तथा देश भर के धर्माचार्यों के आग्रह पर महन्त जी ने गोरखपुर सदर लोकसभा से चुनाव लड़ने की घोषणा कर दी। 9 नवम्बर को शिलान्यास समारोह की तैयारी और जनजागरूकता से घबड़ाई सरकार के प्रतिनिधि रूप में जिलाधिकारी गोरखपुर ने तत्कालीन मुख्यमंत्री नारायण दत्त तिवारी का महन्त जी को लखनऊ आने का आमंत्रण दिया। महन्त जी की स्वीकृति पर राज्य सरकार के विशेष विमान द्वारा 8 नवम्बर को प्रातः महन्त जी लखनऊ पहुँचे तथा मुख्यमंत्री से भेंट की। इस विशेष वार्ता के पश्चात् महन्त जी को विशेष विमान द्वारा अयोध्या पहुँचा दिया गया। शंखनाद के साथ वैदिक रीति से मंत्रोच्चार एवं श्रीरामभक्तों के गगनभेदी जयघोष के बीच प्रस्तावित श्रीराम जन्मभूमि मन्दिर का शिलान्यास समारोह प्रारम्भ हो गया। शुभ घड़ी के अनुसार 10 नवम्बर को एक बजकर पैंतीस मिनट पर वर्तमान गर्भगृह से 192 फीट दूर पूर्व निर्धारित स्थान पर हवन और भूमि पूजन के पश्चात् गोरक्षपीठाधीश्वर ने सांकेतिक रूप से नींव खोदने के पश्चात् शिलान्यास हेतु पहली शिला हिन्दू समाज में तथाकथित अछूत दक्षिणी बिहार के श्री कामेश्वर प्रसाद चौपाल (हरिजन) से रखवाकर एक और नये भविष्य की शुरुआत कर दी। महन्त जी का यह प्रयास भारत के सामाजिक परिवर्तन के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में दर्ज हो गया। शिलान्यास समारोह सम्पन्न होने के पश्चात् दुनिया भर की जुटी मीडिया को सम्बोधित करते हुए महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने कहा- यह श्रीराम मन्दिर का ही नहीं हिन्दू राष्ट्र के सिंहद्वार का शिलान्यास हुआ है, हिन्दू समाज की एकता का शिलान्यास हुआ है, सामाजिक समरसता की प्रतिष्ठा का शिलान्यास हुआ है।

श्रीराम जन्मभूमि के शिलान्यास समारोह के पश्चात् महन्त अवेद्यनाथ महाराज गोरखपुर वापस आये और दस नवम्बर को ही रात्रि नौ बजे वे महाराणा प्रताप इन्टर कॉलेज के मैदान में आयोजित अपनी विशाल चुनावी सभा में उपस्थित हुए। यह वही समय था, जब 1989 का लोकसभा

चुनाव चल रहा था। महन्त जी की चुनावी सभा में राजमाता विजयाराजे सिन्धिया भी थीं। महन्त जी 1989 का लोकसभा चुनाव श्रीराम जन्मभूमि के मुद्दे पर ही सन्तों-महात्माओं के प्रतिनिधि रूप में 'हिन्दू महासभा' से लड़ रहे थे। चुनावी सभा में रात्रि के सन्नाटे को महन्त जी की गर्जना तोड़ रही थी। वे कह रहे थे- मैं राजनीति से अलग हट चुका था। किन्तु आज जब हिन्दू समाज के साथ अन्याय हो रहा है; राजनीतिज्ञ हिन्दू समाज को अपमानित कर रहे हैं, धर्मनिरपेक्षता का ढोंग करने वाली सरकारों के एक समान कानून बनाने के मुद्दे पर हाथ-पाँव फूलने लगते हैं। हमारी राष्ट्रीयता के प्रतीक मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम, श्रीकृष्ण एवं भगवान् शंकर के जन्म स्थानों पर विदेशी आक्रान्ताओं के ध्वंसावशेष हमें मुँह चिढ़ा रहे हैं; हमें अपमानित कर रहे हैं, उनका भी जीर्णोद्धार हम नहीं कर सकते। हिन्दू, हिन्दुस्थान में ही सम्मान से नहीं जी सकता और 'वोट बैंक की राजनीति' तथा चुनावी जीत-हार की गणित में सच बोलने का साहस राजनीतिज्ञ नहीं कर पा रहे, तो चुनावी समर में उतरना हमारी मजबूरी है। हिन्दू समाज अपमान का घूँट अब और नहीं पी सकता।

14 नवम्बर, 1989 को महन्त जी ने एक विशेष साक्षात्कार में कहा कि कौरव सभा में जब द्रोपदी का चीर हरण हो रहा था, तब वहाँ एक से एक बड़े योद्धा और धर्मवेत्ता मौन थे। ठीक ऐसी ही दशा संसद की तब होती है जब संसद में श्रीराम जन्मभूमि का मुद्दा बहस हेतु उठ जाता है। उत्तर प्रदेश विधान सभा की ऐसी ही स्थिति तब हुई जब उर्दू को द्वितीय राजभाषा बनाये जाने का विधेयक प्रस्तुत किया गया। जब भी संसद या विधानसभा में हिन्दू समाज से सम्बन्धित कोई सकारात्मक मुद्दा उठता है तो हमारे जनप्रतिनिधियों की स्थिति कौरव सभा में द्रोपदी चीर हरण के समय उपस्थित महारथियों एवं धर्मवेत्ताओं जैसी हो जाती है। भारतीय संस्कृति के प्रतीक मर्यादापुरुषोत्तम श्रीराम की जन्मभूमि पर मन्दिर निर्माण हेतु बोलने वाला भारतीय संसद में एक भी सांसद नहीं था। सभी राजनीतिक दलों के अल्पसंख्यक प्रतिनिधि तथाकथित बाबरी मस्जिद के दावे पेश कर रहे थे वहीं हिन्दू समाज के प्रतिनिधि खामोश थे। भारतीय संसद में इसी एकतरफा कार्रवाई तथा भारतीय संस्कृति तथा राष्ट्रीय मानबिन्दुओं के चीर-हरण पर बहुसंख्यक जनप्रतिनिधियों के मौन ने मुझे एक बार फिर मठ से बाहर राजनीति की धरती पर पैर रखने को बाध्य कर दिया। मैं साधु रूप में हिन्दू समाज का प्रहरी हूँ। ऐसे में हिन्दू समाज पर आने वाले संकट को ललकारने के अलावा मेरे पास और कोई विकल्प नहीं था। यदि भारत की संसद में हिन्दू समाज के साथ न्याय के पक्ष में हक अदा करते हुए सांसद दिखाई देते तो मुझे राजनीति में उतरने की क्या जरूरत थी?

श्रीराम जन्मभूमि आन्दोलन को आगे बढ़ाते हुए महन्त जी के नेतृत्व में 26 जनवरी, 1990 को प्रयाग में सन्त सम्मेलन तय किया गया। महन्त जी ने 12 दिसम्बर, 1989 को दिल्ली में कहा कि सरकार सन्त सम्मेलन से पूर्व श्रीराम जन्मभूमि स्थान हमें सौंपे। सरकार की ओर से कोई पहल न होने पर 26 जनवरी को प्रयाग में महन्त जी की अध्यक्षता में आयोजित सन्त सम्मेलन में 14 जनवरी से श्रीराम जन्मभूमि पर मन्दिर निर्माण कार्य प्रारम्भ करने का संकल्प लिया गया।

9 फरवरी को दिल्ली में श्रीराम जन्मभूमि मुक्ति यज्ञ समिति एवं विश्व हिन्दू परिषद् की ग्यारह सदस्यीय उच्चाधिकार प्राप्त समिति की बैठक महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। बैठक के पश्चात् महन्त जी ने संवाददाता सम्मेलन में कहा कि- प्रधानमंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह ने कल अपील की थी कि चार माह के अन्दर श्रीराम जन्मभूमि विवाद का स्थायी समाधान कर दिया जायेगा। उन्होंने चार माह तक मन्दिर निर्माण की तिथि टाल दिये जाने का भी अनुरोध किया है। हमने उनकी इस अपील को स्वीकार करते हुए मन्दिर निर्माण का कार्य चार माह के लिए स्थगित कर दिया है। महन्त जी की अध्यक्षता में सम्पन्न बैठक में लिये गये उपर्युक्त निर्णय पर अपनी प्रतिक्रिया देते हुए पूर्व सांसद एवं माइनॉरिटीज वेलफेयर सोसायटी के अध्यक्ष श्री अशफाक हुसेन ने कहा कि श्रीराम जन्मभूमि मुक्ति यज्ञ समिति के अध्यक्ष एवं सांसद महन्त अवेद्यनाथ जी ने श्रीराममन्दिर के निर्माण कार्य को चार महीने तक स्थगित कर अपनी दूरदृष्टि एवं देशभक्ति का प्रमाण दे दिया है।

किन्तु भारत सरकार अपने द्वारा मांगे गये चार माह में श्रीराम जन्मभूमि मंदिर निर्माण हेतु समाधान निकालने की दिशा में एक कदम भी नहीं चल पायी और 9 जून को महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज के नेतृत्व में सन्त-महात्माओं का एक प्रतिनिधिमण्डल प्रधानमंत्री श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह से मिला। डेढ़ घंटे की वार्ता के पश्चात् जब महन्त जी बाहर आये तो संवाददाताओं के प्रश्नों का उत्तर देते हुए उन्होंने कहा- प्रधानमंत्री जी की अपील पर हमने चार माह का समय सरकार को इसीलिए दिया था कि लोग हमें दुराग्रही न समझें।... पर इस चार महीने में कुछ भी नहीं हुआ। यहाँ तक कि प्रधानमंत्री श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री मुलायम सिंह यादव के बीच अब तक बात नहीं हो पायी। अत: अब दो बातों पर कोई समझौता नहीं हो सकता, एक- 23-24 जून को हरिद्वार के सन्त सम्मेलन में मन्दिर निर्माण की जो तिथि तय होगी, वह किसी भी दशा में नहीं टलेगी। दो- श्रीराम मन्दिर वहीं बनेगा जहाँ श्रीरामलला की पूजा होती है। सरकार के उपेक्षात्मक रवैये से दु:खी महन्त जी ने यहीं घोषणा कर दी कि अब अयोध्या में श्रीरामशिलाएँ ही नहीं श्रीरामभक्त भी आयेंगे। महन्त जी ने कहा कि जिन पाँच लाख गाँवों से श्रीरामशिलाएँ आयी हैं, उन्हीं गाँवों से अब पाँच लाख श्रीरामभक्त अयोध्या आयेंगे। महन्त जी की इस घोषणा के पश्चात् हरिद्वार के सन्त सम्मेलन में श्रीराम जन्मभूमि पर मन्दिर निर्माण की तिथि 30 अक्टूबर घोषित कर दी गयी। महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने 24 जून को पत्रकार वार्ता में कहा कि ऐतिहासिक प्रमाणों के बावजूद, हमारे द्वारा बार-बार समय दिये जाने पर केन्द्र तथा प्रदेश सरकार राजनीतिक स्वार्थ के लिए वास्तविकता को नजरअन्दाज कर रही हैं; किन्तु देश की करोड़ों हिन्दू जनता की भावनाओं का आदर करते हुए हम श्रीराम जन्मभूमि पर मन्दिर निर्माण हेतु कृत संकल्प हैं। संवाददाताओं द्वारा यह पूछे जाने पर कि क्या विद्यमान मस्जिद को गिरा दिया जायेगा? महन्त जी ने दो टूक शब्दों में कहा कि- उस भवन का स्वरूप मस्जिद का नहीं है, वहाँ कोई नमाज अदा नहीं करता। बल्कि वहाँ वर्षों

से श्रीरामजी की पूजा-अर्चना हो रही है। अतः हम कोई नया मन्दिर नहीं बनाने जा रहे, अपितु श्रीराम जन्मभूमि पर निर्मित मन्दिर का जीर्णोद्धार करने जा रहे हैं। हम सरकार द्वारा उत्पन्न की गयी अड़चनों के विरुद्ध शान्तिपूर्ण संघर्ष करेंगे। हिन्दू समाज के मान-सम्मान के लिए जेल जाने को तैयार हैं, गोली खाने को तैयार हैं। इसी बीच उत्तर प्रदेश सरकार में श्री मुलायम सिंह यादव के मंत्रिमण्डल के श्रम मंत्री आजम खाँ ने मेरठ के चन्दौली मेले में घोषणा कर दी कि बाबरी मस्जिद की ओर उठने वाली आँख को बाहर निकाल लिया जायेगा।

श्री आजम खाँ के इस बयान के बाद टकराव की स्थिति बढ़ने लगी। श्री मुलायम सिंह एवं उनकी सरकार आक्रामक हो गयी और उनके द्वारा सन्त-महात्माओं के खिलाफ अनर्गल प्रलाप प्रारम्भ हो गये। 14 जुलाई, 1990 को मुख्यमंत्री श्री मुलायम सिंह यादव ने स्वयं कहा कि- हिन्दू धर्म के ठेकेदार सात जन्म में भारत को हिन्दू राष्ट्र घोषित नहीं करा सकते। मुख्यमंत्री के बयान के पश्चात् गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज दहाड़ उठे, उन्होंने चुनौती देते हुए कहा कि भारत हिन्दू राष्ट्र था, हिन्दू राष्ट्र है, और हिन्दू राष्ट्र रहेगा। भारत के इतिहास में जयचन्द एवं मानसिंह सरीखे गद्दारों का हमेशा अस्तित्व रहा है, जो देश, धर्म एवं संस्कृति का विरोध करने में ही स्वयं को गौरवान्वित समझते हैं। ऐसे ही राजनीतिज्ञों के कारण भारत यह दुर्दिन देख रहा है। श्री मुलायम सिंह यादव को मालूम होना चाहिए कि भारतवर्ष उसी दिन वैधानिक हिन्दू राष्ट्र भी बन गया जब मजहब के नाम पर देश का विभाजन कर दिया गया। श्री मुलायम सिंह यादव सात जन्मों की बात छोड़ें, उनके जीवन काल में ही भारत की प्रतिष्ठा हिन्दू राष्ट्र के रूप में होगी और वह भी हिन्दू राष्ट्र का नागरिक होने में गौरवान्वित होंगे।

महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज के नेतृत्व में श्रीराम जन्मभूमि आन्दोलन तेज होता गया। उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा हिन्दू समाज को चिढ़ाने तथा अपमानित करने वाले निरन्तर दिये जा रहे बयानों ने आग में घी का काम किया। सन्त-महात्मा अपनी जान की परवाह किये बगैर इस आन्दोलन को जीवन-मरण का प्रश्न बनाते गये। 26 जुलाई को महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज लखनऊ पहुँचकर उत्तर प्रदेश सरकार को चेतावनी देते हुए बोले- श्रीराम जन्मभूमि मन्दिर विरोधी सरकार ज्यादा दिन तक नहीं चल सकती। हिन्दुओं के धैर्य की सीमा समाप्त हो रही है। 30 अक्टूबर को हर हाल में मन्दिर निर्माण का कार्य शुरू होगा। युवकों का बलिदानी जत्था अयोध्या जायेगा। कारसेवा में सरकारी तन्त्र ने बाधा डाली तो अहिंसक गिरफ्तारी दी जायेगी और शासन यदि गोली चलाता है तो हम हर तरह की कुर्बानी देंगे।

श्रीराम जन्मभूमि मुक्ति यज्ञ समिति ने व्यापक जन-जागरण अभियान आरम्भ कर दिया। श्रीराम जन्मभूमि मुक्ति यज्ञ समिति के अध्यक्ष महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने जन-जागरण अभियान घोषित करते हुए कहा कि देशभर में दीपावली के दीप श्रीरामज्योति से जलेंगे। अयोध्या में

अरणीमन्थन से प्रज्वलित दीप से भगवान् श्रीराम की आरती कर श्रीरामज्योति विजयादशमी तक भारत के सभी अंचलों तक पहुँचा दिया जायेगा। चारोंधाम, सप्तपुरियों, द्वादश ज्योतिर्लिंग, बावन शक्ति पीठों, समस्त वैष्णव पीठ, गणपति पीठ, सिख, जैन, बौद्ध आदि के लगभग ढाई सौ तीर्थ स्थलों से श्रीरामज्योति यात्रा निकलेगी। 12 अक्टूबर से 18 अक्टूबर के मध्य प्रत्येक गाँव के मन्दिरों से घर-घर श्रीरामज्योति पहुँचेगी। विजयादशमी के दिन दस बजकर सैंतालिस मिनट से दस बजकर इक्यावन मिनट के शुभमुहूर्त में श्रीराम भक्त हर मोहल्ले, हर गाँव के मन्दिर से श्रीराम संकीर्तन करते हुए गाँव के जलाशयों तक विजय-यात्रा निकालें। महन्त जी ने घोषणा की कि स्वतंत्रता दिवस को रात्रि में नौ बजे शंख, घण्टे-घड़ियाल की ध्वनि के साथ चेतावनी दिवस के रूप में मनाएँ। वस्तुतः श्रीराम जन्मभूमि पर भव्य मन्दिर निर्माण के लिए यह उद्घोष उत्तर प्रदेश सरकार की नींद हराम करने वाला था। श्री मुलायम सिंह यादव के नेतृत्व में उत्तर प्रदेश सरकार तथा श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह के नेतृत्व वाली केन्द्र सरकार 'मुस्लिम वोट बैंक' का सौदा करते हुए बहुसंख्यक हिन्दू समाज में पनप रहे आक्रोश को आँक न सकी। उत्तर प्रदेश सरकार जहाँ हिन्दू समाज के प्रति हमलावर होती गयी वहीं केन्द्र सरकार ने हिन्दू समाज को अगड़ों-पिछड़ों में बाँटने का 'मण्डल-आयोग' का ब्रह्मास्त्र चला दिया। उत्तर प्रदेश के मुखिया श्री मुलायम सिंह यादव ने 'गोरक्षपीठ' के नगर गोरखपुर में 20 सितम्बर को साम्प्रदायिकता विरोधी रैली, यह कहते हुए घोषित कर दी कि- 'गोरखपुर में महन्त जी रहते हैं, अतः गोरखपुर में ही यह रैली कर अपनी शक्ति दिखा दूँगा।'

मुख्यमंत्री श्री मुलायम सिंह यादव को महन्त जी ने भी अपना जवाब दे दिया। महन्त जी ने कहा कि उत्तर प्रदेश सरकार साम्प्रदायिकता विरोधी सम्मेलनों के नाम पर बहुसंख्यक हिन्दू समाज के विरुद्ध विषवमन कर रही है। वोटों के लिए सरकार स्वयं साम्प्रदायिकता को पाल-पोसकर बढ़ावा दे रही है। प्रदेश सरकार के इस कृत्य से प्रदेश में साम्प्रदायिक सद्भाव टूट रहा है तथा साम्प्रदायिक टकराव की भयावह स्थिति पैदा होने जा रही है। प्रदेश सरकार प्रदेश में साम्प्रदायिक दंगे कराने की पृष्ठभूमि तैयार कर रही है। महन्त जी ने कहा कि श्री मुलायम सिंह अपनी सरकारी रैली कर लें, फिर गोरखपुर में ही नहीं देश-प्रदेश भर में जहाँ-जहाँ उनकी सरकार हिन्दू विरोधी रैली करेगी हम उसका जवाब रैली से ही देंगे। महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज के नेतृत्व में देश भर में जनान्दोलन तेज होता गया। प्रदेश सरकार को समय-समय पर महन्त जी आगाह करते रहे, चेताते रहे। किन्तु सत्तामद में चूर श्री मुलायम सिंह यादव की सरकार आने वाली जनक्रान्ति की हुँकार न सुन सकी। महन्त जी ने जयपुर (राजस्थान) की एक सभा में कहा कि संसार की कोई ताकत श्रीराम जन्मभूमि पर मन्दिर निर्माण नहीं रोक सकती। उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पंचकोसी परिक्रमा पर रोक लगा दिया गया। महन्त जी ने सरकार को चेताया- श्रीराम जन्मभूमि मन्दिर निर्माण तथा पंचकोसी परिक्रमा सरकार की अनुमति की मोहताज नहीं।

इसी बीच पूर्व सांसद अशफाक हुसैन ने महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज के पास एक पत्र

भेजा। उस पत्र का महाराज जी ने जो जवाब दिया, वह पूरा पत्र श्रीराम जन्मभूमि पर मन्दिर निर्माण के सन्दर्भ में महन्त जी का दृष्टिकोण स्पष्ट कर देता है। पूरा पत्र समाचार-पत्रों ने प्रकाशित किया। महन्त जी ने पत्र में लिखा कि- 'अयोध्या स्थित श्रीराम जन्मभूमि को हिन्दुओं को सौंपे बिना इस समस्या के समाधान का दूसरा कोई विकल्प नहीं है। मैं आपके इस विचार से सहमत हूँ कि श्रीराम जन्मभूमि विवाद का स्थाई हल निकाला जाना चाहिए। आपको ज्ञात है कि मैं सभी पंथों के पूजास्थलों का सम्मान करता हूँ। यह बात आपने अपने पत्र में लिखा ही है। यदि मस्जिद के प्रति मेरा कोई दुराग्रह होता तो कदाचित पुराने गोरखपुर की मस्जिद के सम्बन्ध में कोई समझौता नहीं किया होता। जहाँ तक श्रीराम जन्मभूमि का प्रश्न है उस स्थान से भगवान् श्रीराम की जन्मभूमि के रूप में करोड़ों हिन्दुओं की भावनाएँ जुड़ी हुई हैं तथा उनके आराध्य देव भगवान् श्रीराम का वह जन्म स्थान है। वह स्थान श्रीराम का जन्म स्थान है, यह तथ्य प्रामाणिक और असंदिग्ध है; अनेक मुस्लिम इतिहासकारों ने भी निर्विवाद रूप से इसे स्वीकार किया है। श्री अलीमियां नदवी के पिताजी ने जो ग्रन्थ लिखा है, उसमें उन्होंने स्पष्ट कहा कि देश में जिन अनेक मन्दिरों को तोड़कर मस्जिदें बनी हैं उनमें अयोध्या के रामजन्मभूमि के मन्दिर को तोड़कर बाबरी मस्जिद बनायी गयी है। इसी प्रकार अन्य मुसलमानों ने भी इस सम्बन्ध में लेख प्रकाशित किये हैं। इस्लाम की दृष्टि से भी वह इमारत कभी मस्जिद नहीं हो सकती क्योंकि विवादित होने के साथ-साथ पचासी वर्षों में उस स्थान पर कभी भी मुसलमानों ने इबादत नहीं की है। इसलिए मुस्लिम समाज के लिए यह इमारत ईंट-गारे के ढेर के अलावा कुछ नहीं है। उस स्थान के निरीक्षण से भी स्पष्ट हो जाता है कि इस स्थान पर श्रीराम का मन्दिर रहा है- जिसको तोड़कर बाबर के सिपहसालार मीरबाकी ने मस्जिद बनायी और दीवारों पर अरबी में लिखवाया कि वह जन्नत से फरिश्तों के उतरने की जगह है। हिन्दू समाज की भावना एवं जन्म स्थान को वापस लेने के लिए संघर्ष को देखते हुए उस समय उन्होंने लिखा है कि उदार बादशाह अकबर ने उस मस्जिद के दरवाजे पर ही श्रीराम जन्मभूमि के नाम से हिन्दुओं के सन्तोष के लिए मन्दिर बनवाने की इजाजत दी थी। विवादित ढाँचे के दरवाजे पर ही रामचबूतरा होने से यह स्पष्ट सिद्ध हो जाता है कि उसी स्थान पर श्रीराम जन्मभूमि का मन्दिर था, जिस पर तथाकथित बाबरी मस्जिद बनी है। हम यह मानते हैं कि तथाकथित बाबरी मस्जिद के लिए आज का मुसलमान दोषी नहीं है, लेकिन देश में हिन्दू-मुस्लिम भाईचारा स्थापित करने के इच्छुक लोगों द्वारा अतीत में की गयी गलतियों को सुधारने की दिशा में पहल होनी चाहिए।

जिस प्रकार मोहम्मद साहब के जन्म स्थान के प्रति मुसलमानों की पवित्र भावनाएँ जुड़ी हैं उसी प्रकार श्रीराम जन्मभूमि से सम्पूर्ण हिन्दू समाज की पवित्र भावना भी जुड़ी हुई है। हिन्दू समाज इसे गुलामी का प्रतीक भी मानता है। मन्दिर-मस्जिद का स्थान बदला जा सकता है किन्तु जन्मभूमि नहीं बदली जा सकती। इसलिए इस महत्त्वपूर्ण समस्या का समाधान खोजते समय जन्मभूमि और मन्दिर-मस्जिद में अन्तर को ध्यान में रखा जाना होगा। जो मुसलमान मोहम्मद साहब और श्रीराम को

समान आदर की दृष्टि से देखता है वह निश्चित रूप से श्रीराम के जन्मस्थान को भी सम्मान देगा और इस सम्बन्ध में कट्टरपंथी मुस्लिम नेताओं को समझाने का प्रयास करेगा।

आपने श्री अलीमियां और मेरी वार्ता का सुझाव दिया है। उत्तर प्रदेश विधान सभा के पूर्व अध्यक्ष श्री नियाज हसन ने भी दो वर्ष पहले इसी तरह का प्रयास किया था। मैंने उस समय वार्ता का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया था, लेकिन श्री अलीमियां ही किसी दबाव में आकर प्रस्तावित वार्ता से हट गये थे। इसलिए मैं नहीं समझता हूँ कि वे वार्ता के लिए तैयार होंगे।'

उत्तर प्रदेश शासन द्वारा श्रीरामज्योति यात्रा को रोक दिया गया। प्रदेश सरकार के इस निर्णय के विरोध में महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज के आह्वान पर प्रदेश भर की दुर्गा प्रतिमाओं का विसर्जन हिन्दू जनता ने रोक दिया। महन्त जी ने प्रदेश सरकार को चेताते हुए कहा कि जब तक श्रीरामज्योति यात्रा को आगे बढ़ने की अनुमति नहीं मिलती तब तक दुर्गा प्रतिमाओं का विसर्जन नहीं होगा। अन्ततः मुख्यमंत्री श्री मुलायम सिंह यादव ने महन्त जी से फोन पर बात की, प्रदेश सरकार द्वारा श्रीरामज्योति यात्रा पर लगाई गयी रोक वापस ली गयी। प्रदेश भर में श्रीरामज्योति यात्राओं के चलने की पुष्टि के पश्चात् महन्त जी की अपील पर दुर्गा प्रतिमाओं का विसर्जन प्रारम्भ हुआ।

मुख्यमंत्री श्री मुलायम सिंह यादव द्वारा 20 सितम्बर को गोरखपुर में की गयी रैली के जवाब में महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज द्वारा 5 अक्टूबर को श्रीरामभक्तों की विशाल रैली का आह्वान किया गया। महाराणा प्रताप इन्टर कॉलेज के मैदान में श्रीरामभक्तों की ऐतिहासिक रैली में जनता अपने प्रतिष्ठान, दुकानें बन्द कर पहुँची। श्रीराम जन्मभूमि पर भव्य मन्दिर के निर्माण का संकल्प कराते हुए महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने कहा प्रदेश सरकार स्वयं जगह-जगह साम्प्रदायिक दंगे करा रही है। हिन्दू समाज एक होकर राष्ट्रीय स्वाभिमान की रक्षा एवं श्रीराम जन्मभूमि पर मन्दिर निर्माण हेतु आगे बढ़े। मुस्लिम तुष्टीकरण की पराकाष्ठा ही है कि श्रीरामनवमी पर अवकाश की माँग को अनसुना करने वाली सरकार बिन माँगे मोहम्मद साहब के जन्म दिन पर अवकाश घोषित कर रही है।

प्रदेश सरकार द्वारा जगह-जगह साधु-सन्तों की गिरफ्तारी पर नाराज महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने विश्व हिन्दू परिषद् के अन्तर्राष्ट्रीय महामंत्री श्री अशोक सिंहल के साथ नयी दिल्ली में कहा कि उत्तर प्रदेश में साधु-सन्तों की गिरफ्तारियाँ तथा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यकर्ताओं के पुलिस उत्पीड़न ने श्रीराममन्दिर निर्माण समस्या के समाधान हेतु बात-चीत का माहौल बिगाड़ दिया है। उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा श्रीरामभक्तों की गिरफ्तारी की जाती रही। मुख्यमंत्री और उनके मंत्रियों के भड़काऊ बयान आते रहे। मुख्यमंत्री श्री मुलायम सिंह का बहुचर्चित बयान आया कि 'अयोध्या में परिन्दा भी पर नहीं मार पायेगा।' इसी बीच 30 अक्टूबर को घोषित कारसेवा हेतु महन्त जी 26 अक्टूबर को दिल्ली से अयोध्या के लिए प्रस्थान किये। गुप्तचर संस्थाओं की सूचना पर मुख्यमंत्री ने महन्त जी की गिरफ्तारी का आदेश दे दिया। वायरलेस से कम भीड़-भाड़ वाले स्टेशन की सूचना

दी जाती रही किन्तु आस-पास की हिन्दू जनता के विरोध-प्रदर्शन के कारण महन्त जी की गिरफ्तारी न हो पाने से पशोपेश में पड़ी प्रदेश सरकार ने पनकी में ट्रेन रुकवाकर महन्त जी को गिरफ्तार कर लिया तथा वहीं 'सर्किट हाउस' में उन्हें कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के बीच रखा गया। अपनी गिरफ्तारी के पश्चात् महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने कहा कि श्रीराम जन्मभूमि का आन्दोलन हमारी गिरफ्तारी से ठंडा नहीं पड़ेगा। 30 अक्टूबर को अयोध्या की नाकेबन्दी हो सकती है, पर जो आग हर हिन्दू के सीने में धधक रही है उसे बुझा पाना सरकार की ताकत के परे है। सरकार द्वारा की जा रही गिरफ्तारियाँ हिन्दुओं में मन्दिर निर्माण की इच्छा को और दृढ़ कर रही हैं। महन्त जी ने कहा कि हमारी गिरफ्तारी भारत माता को डायन कहने वाले आजम खाँ सरीखे देशद्रोही मंत्रियों को तुष्ट करना है; किन्तु हिन्दू जनता शान्ति और धैर्य के साथ प्रदेश सरकार के सारे नाकेबन्दी को असफल करते हुए योजनाबद्ध ढंग से अयोध्या की ओर कूच करे। यदि सरकार गिरफ्तार करती है तो शान्तिपूर्ण गिरफ्तारी दें। एक समाचार पत्र ने महन्त की गिरफ्तारी पर गोरखपुर में हुए विरोध प्रदर्शन का उल्लेख करते हुए लिखा- 'महन्त जी की पनकी में गिरफ्तारी की खबर से गोरखपुर के शान्त माहौल में अचानक भूचाल आ गया। देखते ही देखते गोरखनाथ मन्दिर में हजारों भक्त इकट्ठा हो गये। पूर्वाह्न दस बजे साधु-सन्तों के नेतृत्व में उत्तेजित भक्तों की रैली गोरखनाथ मन्दिर से निकल पड़ी। पूरे महानगर की सड़कों पर हिन्दू जनता निकल चुकी थी। महानगर स्वतःस्फूर्त बन्द रहा। रामभक्त लगातार गिरफ्तार किये जा रहे थे। समाचार लिखने तक गिरफ्तारियाँ जारी थीं। महानगर में शाम होते-होते अघोषित कर्फ्यू जैसी स्थिति हो गयी। व्यापारियों ने कल (28 अक्टूबर) भी महानगर बन्द की घोषणा कर दी है।' वास्तव में गोरखपुर महानगर तीन दिनों तक लगातार बन्द रहा। 30 अक्टूबर को सरकार के तमाम दम्भपूर्ण दावों के बावजूद लाखों कारसेवक अयोध्या पहुँचे। प्रदेश सरकार की दमनात्मक कार्रवाई में कारसेवकों पर गोलियाँ बरसायी गयीं। कितने कारसेवक मारे गये यह न तो सरकार बता पायी न ही किसी अन्य साक्ष्यों से इसकी पुष्टि हो पायी। महन्त जी ने अत्यन्त दुःख भरे शब्दों में मारे गये कारसेवकों को श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि- 'रामभक्तों के खून का एक-एक कतरा हम पर कर्ज है। 'अयोध्या में 30 अक्टूबर को परिंदा भी पर नहीं मार सकेगा', की मुख्यमंत्री की दम्भपूर्ण घोषणा को उनकी जबर्दस्त नाकेबंदी को रौंदकर जिस प्रकार कार सेवकों ने घोषित कारसेवा का शुभारम्भ किया और श्रीराम जन्मभूमि पर भगवाध्वज फहराया वह हमारे लिए प्रेरणादायी है। सरकारी उत्तेजनात्मक कार्रवाइयों के बावजूद हिन्दू जनता का अहिंसक बने रहना राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता को अक्षुण्ण बनाये रखने के प्रति उसकी निष्ठा का प्रतीक है।'

महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने 15 नवम्बर को अयोध्या जाकर 30 अक्टूबर एवं 2 नवम्बर को अयोध्या में प्रदेश सरकार द्वारा निहत्थे एवं शान्तिपूर्वक भजन-कीर्तन कर रहे कारसेवकों पर गोली चलाये जाने तथा उसमें मारे गये कारसेवकों के बारे में जानकारी प्राप्त की तथा अयोध्या में हुए इस नरसंहार की न्यायिक जाँच की माँग की। महन्त जी ने कहा कि मुख्यमंत्री ने निहत्थे तथा शान्तिपूर्वक

अपनी उपस्थिति दर्ज कराने वाले कारसेवकों पर गोली बरसाकर नादिरशाह तथा जनरल डायर को भी पीछे छोड़ दिया है। अयोध्या में यथास्थिति बनाये रखने के वचन का सरकार ने ही पालन नहीं किया। शिलान्यास स्थल से छतरी तोड़वाकर एवं श्रीरामलला की मूर्ति हटवाकर सरकार ने कारसेवकों को उकसाया। सैकड़ों किलोमीटर पैदल चलते हुए, कई-कई दिनों तक बिना कुछ खाये-पीये, नदी-नालों को पारकर कारसेवक अयोध्या पहुँचे और मुस्लिम तुष्टीकरण में पागल हो चुकी सरकार द्वारा गोली चलाये जाने के आदेश के बावजूद अपने प्राणों की बाजी लगाकर कारसेवकों ने कारसेवा प्रारम्भ की, तथाकथित बाबरी ढाँचे पर भगवा फहराया; उससे सरकार को यह समझ लेना चाहिए कि उसकी दमनकारी नीति तथा गोली के भय से यह जनान्दोलन रुकने वाला नहीं है।

महन्त जी ने कहा कि प्रत्यक्षदर्शियों की मानें तो 30 अक्टूबर को पुलिस फोर्स ने अपने अधिकारियों की बात मानी होती तो उसी दिन भारी नरसंहार हुआ होता। अन्ततः 2 नवम्बर को योजनाबद्ध ढंग से मुख्यमंत्री एवं उनके कुछ मंत्रियों, सांसदों ने एक वर्ग विशेष के पुलिस दस्ते तथा पुलिस वेश में अपराधियों को तैनात कर उनके द्वारा शान्तिपूर्वक श्रीराम धुन में मग्न श्रीरामभक्त कारसेवकों पर गोली चलवायी गयी। महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने कहा कि इस नरसंहार में चार सौ से अधिक कारसेवक मारे गये।

21 नवम्बर, 1990 को महन्त जी ने हिन्दू समाज को 'याचना नहीं अब रण होगा' के हुँकार के साथ संघर्ष हेतु तैयार रहने का आह्वान करते हुए कहा कि सत्ता के लिए कांग्रेस ने श्री मुलायम सिंह जैसे नृशंस हत्यारे के खून से सने हाथ से हाथ मिलाकर स्वयं अपना दामन भी श्रीरामभक्तों के खून से रंग लिया है। कांग्रेस ने श्री मुलायम सिंह की सरकार को समर्थन देकर अपना असली चेहरा भी उजागर कर दिया है। प्रधानमंत्री की कुर्सी पाते ही श्री चन्द्रशेखर का भी राग बदल गया है। प्रधानमंत्री की कुर्सी से एक जयचन्द गया तो उस पर दूसरा मानसिंह बनकर विराजमान हो गया है। महन्त जी ने पुनः 6 दिसम्बर से कारसेवा की घोषणा कर दी। दिसम्बर में कारसेवा करने जा रहे कारसेवकों को गिरफ्तार किया जाता रहा। सात दिसम्बर को महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने जगद्गुरु रामानुजाचार्य सहित लगभग एक हजार कारसेवकों के साथ अयोध्या कारसेवा हेतु जाते हुए अपनी गिरफ्तारी दी। इस अवसर पर महन्त जी ने अपने सन्देश में कहा कि हिन्दू समाज ने अयोध्या में कारसेवा हेतु जाने से रोके जाने पर शान्तिपूर्वक गिरफ्तारी देकर यह दिखा दिया है कि अगर उसकी राह में रोड़ा न अटकाया जाय तथा उसे जान-बूझकर चिढ़ाया न जाय तो वह कभी भी उग्र नहीं होगा। अयोध्या में श्रीराम जन्मभूमि पर भव्य निर्माण के लिए जनजागरण अभियान चलाते हुए महन्त जी ने दर्जनों सभाएँ कीं। 26 दिसम्बर को बड़हलगंज, 31 दिसम्बर को पीपीगंज, 10 जनवरी 1991 को कैम्पियरगंज, 11 जनवरी को बखिरा में विशाल हिन्दू सम्मेलनों को महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने सम्बोधित किया। 22 जनवरी 1991 को गोरखपुर के महाराणा प्रताप इन्टर कॉलेज के मैदान में विशाल जनसभा महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज के नेतृत्व एवं अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। इस जनसभा

को साध्वी ऋतम्भरा ने भी सम्बोधित किया।

27 फरवरी, 1991 को गोरखपुर में महाराणा प्रताप इन्टर कॉलेज के मैदान में एक बार फिर महन्त जी के आह्वान पर हिन्दू समाज जुटा। इस जनसभा को विश्व हिन्दू परिषद् के अन्तर्राष्ट्रीय महामंत्री अशोक सिंहल ने भी सम्बोधित किया। अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने कहा कि- 'हिन्दू सर्वदा से सहनशील और शान्तिप्रिय रहा है; वह सामान्यतः आक्रामक नहीं होता। किन्तु वर्तमान युग में न्याय शान्तिपूर्ण ढंग से मांगने से नहीं अपितु शक्ति और संघर्ष से मिलने वाला है। श्रीराम जन्मभूमि भी यदि शान्ति के साथ न्याय से मिलने वाला होता तो हमें कभी का मिल गया होता। श्रीराम जन्मभूमि पर वर्तमान सत्ता के सौदागर न्याय नहीं होने देना चाहते। हमें अपने आराध्य मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम की जन्मभूमि शक्ति और संघर्ष से ही प्राप्त करनी होगी। अत: हर हिन्दू परिवार का एक व्यक्ति इस संघर्ष में अवश्य शामिल हो।' महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने आह्वान किया कि 11 से 15 मार्च तक देश के सभी प्रान्तों में जिला मुख्यालयों पर हिन्दू जनता प्रदर्शन करे। वर्ष प्रतिपदा (17 मार्च) को सभी हिन्दू अपने-अपने घरों पर भगवाध्वज फहराएँ। इसी बीच लोकसभा चुनाव की घोषणा हो जाने पर महन्त जी ने गोरखपुर संसदीय क्षेत्र से 23 अप्रैल, 1991 को अपना पर्चा 'श्रीराम और रोटी' के मुद्दे पर ही भरा। 22 अप्रैल, 1991 को मुख्य चुनाव आयुक्त टी.एन. शेषन की दिल्ली में हुई पत्रकार-वार्ता में यह कहे जाने पर कि महन्त अवेद्यनाथ के कथित साम्प्रदायिक भाषणों के बारे में शिकायत मिली है और चुनाव आयोग ने इसे आदर्श आचार संहिता का उल्लंघन माना है, प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए महन्त जी ने दो टूक शब्दों में कहा, 'श्रीराम जन्मभूमि पर हिन्दू समाज का हक माँगना और हिन्दू समाज पर हो रहे अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाना साम्प्रदायिकता नहीं है, किन्तु अगर मुख्य चुनाव आयुक्त इसे साम्प्रदायिक मानते हैं तो मुझे ऐसी साम्प्रदायिकता मंजूर है और इसके लिए कोई भी सजा भुगतने को हम तैयार हैं। मैं इस प्रकार की धमकी से डरने और घबड़ाने वाला नहीं हूँ। तुष्टीकरण की नीति के चलते हिन्दू समाज के साथ जो अन्याय हो रहा है, उसके लिए सदा लड़ता रहा हूँ, आगे लड़ाई जारी रहेगी। सड़क से संसद तक जनभावनाओं की गर्जना होती रहेगी उसे कोई दबा नहीं सकता।' अन्ततः लोकसभा चुनाव में महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज विजयी हुए और अपनी चुनावी विजय पर उन्होंने कहा कि -मेरी विजय तथा प्रदेश में भारतीय जनता पार्टी को प्राप्त जनाधार श्रीराम जन्मभूमि पर मन्दिर निर्माण का स्पष्ट जनादेश है। भारतीय जनता पार्टी भी इस जनादेश को स्वीकार करेगी और विश्वास है कि उसका सम्मान करेगी। किन्तु यदि भारतीय जनता पार्टी की प्रदेश सरकार श्रीराम जन्मभूमि पर मन्दिर निर्माण में आनाकानी करती है तो हम भारतीय जनता पार्टी की सरकार का भी विरोध करेंगे। 24 अगस्त को एक बार फिर महन्त जी ने कहा- प्रदेश सरकार रहे या चली जाय उसे अयोध्या में श्रीराम जन्मभूमि पर मन्दिर निर्माण कराना ही होगा। भाजपा को श्रीराम मन्दिर निर्माण का ही जनादेश मिला है। प्रदेश की जनता ने जिस प्रकार प्रदेश की बागडोर भाजपा को सौंपा है उसी प्रकार प्रधानमंत्री श्री विश्वनाथ

प्रताप सिंह, विपक्ष के नेता श्री राजीव गाँधी, मुस्लिम नेता श्री इमाम बुखारी, श्री शहाबुद्दीन तथा समाजवादी पार्टी के श्री मुलायम सिंह यादव की जिद तथा इनके द्वारा हिन्दू समाज को चिढ़ाने के कारण केन्द्रीय सत्ता की बागडोर भी जनता भारतीय जनता पार्टी को सौंप देगी। महन्त जी की उक्त भविष्यवाणी सत्य हुई और 1998 तक केन्द्रीय सत्ता की बागडोर भारतीय जनता पार्टी के हाथों देश की जनता ने सौंप दिया। 30 अक्टूबर, 1991 में अयोध्या में शौर्य दिवस का आयोजन हुआ। इस समारोह की अध्यक्षता महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने किया। महन्त जी ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि श्रीराम जन्मभूमि पर भव्य मन्दिर का निर्माण किसी की कृपा से नहीं, हिन्दू जनता के शौर्य से बनेगा। 12 जून, 1992 को महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने कहा कि अयोध्या में श्रीराम मन्दिर निर्माण का प्रथम चरण पूरा होने जा रहा है। 9 जुलाई से दूसरा चरण प्रारम्भ हो जायेगा। हम जो भी करेंगे संवैधानिक तरीके से करेंगे। हिन्दू समाज चाहता है कि श्रीराम जन्मभूमि पर भव्य मन्दिर का निर्माण उस गर्भगृह पर ही हो, जहाँ श्रीरामलला की प्रतिमा विद्यमान है। मन्दिर निर्माण के लिए धौलपुर से मँगाए गये संगमरमर को तरासने का कार्य चल रहा है।

23 जुलाई, 1992 को श्रीराम जन्मभूमि मन्दिर निर्माण हेतु महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज की अगुवाई में एक प्रतिनिधिमण्डल प्रधानमंत्री श्री पी.वी. नरसिम्हाराव से मिला। महन्त जी की प्रधानमंत्री श्री वी.पी. नरसिम्हाराव से यह तीसरी भेंट थी। प्रधानमंत्री द्वारा श्रीराम जन्मभूमि मुद्दे के समाधान हेतु तीन महीने का समय माँगे जाने पर शिलान्यास स्थल पर प्रस्तावित कारसेवा रोके जाने की घोषणा करते हुए महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने कहा कि विवादित स्थल के बाहर शेषावतार मन्दिर के निर्माण स्थल पर कारसेवा प्रारम्भ कर दी जायेगी। महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने 29 जुलाई, 1992 को लोकसभा में श्रीराम जन्मभूमि मुद्दे पर बोलते हुए कहा, 'पूर्वाग्रह से ग्रस्त राष्ट्रीय मोर्चा और वाममोर्चा को साथ लेकर अयोध्या विवाद का हल नहीं निकाला जा सकता। हम इस समस्या का हल बात-चीत से चाहते हैं और इसके लिए प्रधानमंत्री को चार महीने का समय भी दे सकते हैं। हमारी इसी मंशा से कारसेवा रुकी है, यदि हम नहीं चाहते तो कारसेवा स्थगित नहीं होती।' 31 जुलाई को महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने एक विशेष भेंटवार्ता में कहा कि यदि सरकार बातचीत के माध्यम से अयोध्या में श्रीराम जन्मभूमि पर मन्दिर निर्माण का हल नहीं निकाल पाती तो हमारे लिए मन्दिर निर्माण कार्य पुनः शुरू करने के अलावा, कोई अन्य विकल्प नहीं रहेगा। बातचीत के माध्यम से हल निकाल पाने में अपनी असमर्थता घोषित कर यदि सरकार पूरे मामले को न्यायालय को सुपुर्द करती है तो यह कार्रवाई केवल हिन्दू समाज को उलझाये रखने के लिए की जायेगी तथा हिन्दू समाज इस मामले को अब और लटकाये जाने का प्रबल विरोधी है। हम इस समस्या का अविलम्ब हल चाहते हैं। महन्त जी ने कहा कि प्रधानमंत्री का यह बयान दुर्भाग्यपूर्ण है कि बातचीत से समस्या न सुलझने की स्थिति में अयोध्या विवाद से सम्बन्धित सभी मामले विशेष न्यायालय के सुपुर्द किया जा सकता है। महन्त जी ने आगे कहा कि न्यायालय में सिर्फ एक मामले पर विचार

किया जाय कि श्रीराम जन्मभूमि स्थल पर, जिसे गर्भगृह कहा जाता है तथा जो विवादित ढाँचे के अन्दर है, वहाँ कभी मन्दिर था या नहीं, मन्दिर तोड़कर वहाँ मस्जिद बनायी गयी या नहीं। 21 अक्टूबर, 1992 को महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने देवरिया की जनसभा में कहा कि श्रीराम मन्दिर निर्माण के प्रश्न पर हमें देश की जनता का निर्णय शिरोधार्य होगा। श्रीराम जन्मभूमि के प्रश्न पर सरकार जनमत संग्रह करा ले अथवा आम चुनाव करा ले यदि हम हार गये तो अपना दावा छोड़ देंगे और यदि जनमत श्रीराम मन्दिर के पक्ष में आता है तो सरकार मन्दिर का निर्माण कराने दे। महन्त जी ने कहा कि प्रधानमंत्री महोदय में सच कहने, स्वीकार करने तथा निर्णय लेने की क्षमता नहीं है अत: चल रही वार्ताओं का कोई हल निकलने वाला नहीं है।

30 अक्टूबर, 1992 को दिल्ली में महारानी झांसी स्टेडियम में पाचवें धर्म संसद का आयोजन हुआ। प्रधानमंत्री महोदय को श्रीराम मन्दिर निर्माण पर वार्ता हेतु दिया गया तीन माह का समय 26 अक्टूबर को पूरा हो गया। धर्म संसद ने 6 दिसम्बर, 1992 से श्रीराम मन्दिर निर्माण हेतु कारसेवा प्रारम्भ करने का निर्णय लिया। महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने धर्मसंसद के निर्णय की जानकारी देते हुए कहा कि मन्दिर निर्माण की तिथि के कारण केन्द्र सरकार को एक माह का और समय हमने दे दिया है, किन्तु 6 दिसम्बर से कारसेवा का निर्णय अन्तिम है और निर्णायक है। अन्तत: केन्द्र सरकार इस दौरान मूकदर्शक बनी रही और धर्म संसद के निर्णय के अनुसार सन्त महात्माओं के आह्वान पर 6 दिसम्बर, 1992 को अयोध्या में एकत्रित कारसेवकों ने महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज सहित देश के प्रतिष्ठित सभी पंथों के प्रमुख धर्माचार्यों, सन्त-महात्माओं तथा भारतीय जनता पार्टी के प्रमुख नेताओं की उपस्थिति में निर्णायक कारसेवा प्रारम्भ की और देखते-देखते विदेशी आक्रमणकारी द्वारा मन्दिर तोड़कर बनाया गया विवादित ढाँचा मलबे में तब्दील हो गया तथा मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् श्रीराम की जन्मभूमि अपमानजनक ढाँचे के आगोश से मुक्त हो गयी तथा वहाँ श्रीरामभक्तों ने श्रीरामलला का अपनी श्रद्धा से एक छोटा सा मन्दिर बना दिया और श्रीरामलला की प्रतिष्ठा कर पूजन-अर्चन प्रारम्भ कर दिया। प्रधानमंत्री श्री पी.वी. नरसिम्हाराव के नेतृत्व की सरकार ने उत्तर प्रदेश में तत्कालीन श्रीरामभक्त मुख्यमंत्री श्री कल्याण सिंह का त्याग-पत्र स्वीकार करने की बजाय उत्तर प्रदेश सहित भारतीय जनता पार्टी के सभी राज्य सरकारों को बर्खास्त करने का तुगलकी फरमान जारी कर दिया। अयोध्या में श्रीरामलला के दर्शन एवं पूजा पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया। महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज की अध्यक्षता में साधु-सन्तों ने फिर हुँकार भरी। 23 दिसम्बर को अयोध्या में एकत्र हुए, साधु-सन्तों ने 26 दिसम्बर से श्रीरामलला के दर्शन हेतु पुन: संघर्ष की घोषणा कर दी। महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने कहा कि श्रीरामलला के दर्शन-पूजन पर यदि सरकार प्रतिबन्ध नहीं हटाती तो 26 दिसम्बर को हम निषेधाज्ञा तोड़कर जेलभरो आन्दोलन शुरू करेंगे। 23 दिसम्बर को ही महन्त नृत्य गोपालदास, डॉ. रामविलास वेदान्ती, परमहंस रामचन्द्रदास जी महाराज सहित सैकड़ों की संख्या में एकत्र साधु-सन्त श्रीरामलला के दर्शन हेतु इतने उद्वेलित थे कि वे तुरन्त

निषेधाज्ञा तोड़कर श्रीरामलला के दर्शन हेतु कूच करना चाहते थे, किन्तु महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने कहा कि आज हम जिलाधिकारी से मिलकर 25 दिसम्बर तक का समय दे चुके हैं, अत: तब तक हम धैर्य के साथ सरकार के निर्णय की प्रतीक्षा करें। 26 दिसम्बर को अयोध्या की हर गली एवं रास्तों से श्रीरामलला के दर्शन के लिए प्रस्थान किया जायेगा और तब यदि प्रशासन ने बाधा डाली तो जेल भरो आन्दोलन शुरू होगा। अन्तत: सरकार को झुकना पड़ा और कड़ी सुरक्षा के बीच श्रद्धालुओं को श्रीरामलला के दर्शन की अनुमति प्रदान कर दी गयी। इसी बीच इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने भी श्रीरामभक्तों को श्रीरामलला के दर्शन का निर्णय दे दिया।

कांग्रेस ने इसी बीच एक नयी चाल चली। उसने स्वरूपानन्द सरस्वती की अध्यक्षता में एक ट्रस्ट बनाकर मन्दिर निर्माण की शुरुआत करने का शिगूफा छोड़ा। महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने प्रधानमंत्री श्री पी.वी. नरसिम्हाराव को चेतावनी देते हुए कहा कि अयोध्या में श्रीराम जन्मभूमि पर किसी मजिस्ट्रेट द्वारा मन्दिर निर्माण कराये जाने को हिन्दू समाज स्वीकार नहीं करेगा। सरकार स्वयं साम्प्रदायिकता को बढ़ावा देने पर तुली है जबकि हम मुस्लिम समाज को राष्ट्र की मुख्यधारा में शामिल करने के पक्षधर हैं। हमारी लड़ाई सरकार के दोहरे मापदण्ड के खिलाफ है और यह उसके समाप्त होने तक जारी रहेगी। प्रधानमंत्री द्वारा अयोध्या में मन्दिर के साथ मस्जिद निर्माण की घोषणा पर महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज गरज पड़े। उन्होंने कहा जब तक एक भी सन्त जीवित रहेगा तब तक अयोध्या में मस्जिद निर्माण नहीं होने दिया जायेगा। अयोध्या में मस्जिद का निर्माण दिवास्वप्न है।

9 मई, 1993 को श्रीरामन्दिर निर्माण के समर्थन में 9 करोड़ 77 लाख 3 हजार 7 सौ 53 लोगों के हस्ताक्षरयुक्त ज्ञापन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज सहित साधु-सन्तों एवं भाजपा के शीर्षस्थ नेताओं के प्रतिनिधिमण्डल ने राष्ट्रपति श्री शंकरदयाल शर्मा को सौंपा। 30 जून, 1993 को एक समाचार पत्र के संवाददाता से विशेष भेंट वार्ता में उसके प्रश्नों का उत्तर देते हुए महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने कहा- 'विश्व हिन्दू परिषद् को श्रीराम मन्दिर निर्माण के लिए किसी भी ऐसे न्यास के बनाने पर कोई आपत्ति नहीं है, जिसमें सरकार के भी प्रतिनिधि संत शामिल हों। गत दिनों स्वामी जैनेन्द्र सरस्वती ने ऐसा एक प्रस्ताव रखा था कि श्रीराम मन्दिर निर्माण के लिए एक अलग मंच बनाया जाय। विश्व हिन्दू परिषद् ने उनका प्रस्ताव स्वीकार कर लिया था। हम तो आज भी अपने प्रस्ताव पर कायम हैं। हमारा उद्देश्य श्रीराम जन्मभूमि पर भव्य मन्दिर का निर्माण है, जो साधु-सन्तों की देख-रेख में पूरी धार्मिक आस्था के साथ बनाया जाय। यदि कांग्रेस को लगता है कि श्रीराम मन्दिर के निर्माण का लाभ भारतीय जनता पार्टी को मिलेगा, तो वह स्वयं आगे बढ़े। हम तो उन सभी राजनीतिक दलों का समर्थन करेंगे जो श्रीराम मन्दिर के निर्माण में सहायक होंगे। किन्तु ऐसा नैतिक साहस कांग्रेस सहित तथाकथित सेकुलरिस्टों में हो ही नहीं सकता, अन्य देश और उसकी संस्कृति की कीमत पर वे वोट की राजनीति करते ही नहीं। जब हमने यह आन्दोलन प्रारम्भ किया तो भारतीय जनता पार्टी भी समर्थन में नहीं थी। बाद में जब उसे लगा कि श्रीराम जन्मभूमि पर मन्दिर निर्माण

का यह आन्दोलन राष्ट्रवाद तथा राष्ट्रीय स्वाभिमान से जुड़ा आन्दोलन है और इसे समर्थन देना चाहिए, तब भाजपा समर्थन में कूदी। समर्थन के लिए हमने भाजपा को बुलाया नहीं था। यदि यह कार्य कांग्रेस ने किया होता तो जनसमर्थन उसके ही पक्ष में होता। किन्तु कांग्रेस का इतिहास साक्षी है कि वह हिन्दू समाज को जातियों के खाँचे में बाँटे रखने तथा मूर्ख बनाने में ही अपना राजनीतिक लाभ देखती रही। गोहत्या बन्द करने पर आजादी के बाद उभरे जनान्दोलन तथा सन्त प्रभुदत्त ब्रह्मचारी के आमरण अनशन पर बैठ जाने पर कांग्रेस ने आश्वासन देकर अनशन तो तुड़वा दिया और आन्दोलन रुक गया किन्तु वह कानून आज तक नहीं बन पाया। अपनी बार-बार की वादाखिलाफी से ही सन्त-महात्माओं तथा धर्माचार्यों का विश्वास कांग्रेस ने खो दिया है।' 18 अक्टूबर, 1994 को महन्त जी ने जोधपुर के गाँधी मैदान में आयोजित धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि सरकार संसद में घोषित करे कि जिस स्थान पर भगवान् श्रीराम का जन्म हुआ था, वहीं मन्दिर का निर्माण कराया जायेगा, तो श्रीराम मन्दिर निर्माण हेतु अनवरत जारी हम अपना आन्दोलन स्थगित कर देंगे।

1998 के लोकसभा चुनाव में अपने उत्तराधिकारी शिष्य योगी आदित्यनाथ जी महाराज को प्रत्याशी बनाकर महन्त जी ने घोषित कर दिया कि राजनीतिक मोर्चा अब उनके शिष्य योगी जी संभालेंगे तथा धर्म के मोर्चे पर वे स्वयं डटे रहेंगे। 2002 में श्रीराम जन्मभूमि पर मन्दिर निर्माण को लेकर हुँकार भरने वाले सन्त-महात्माओं का नेतृत्व करते हुए महन्त जी ने केन्द्र सरकार को चुनौती दी थी। भारतीय जनता पार्टी को चेतावनी देते हुए 14 फरवरी को उन्होंने कहा कि श्रीराम मन्दिर का मुद्दा छोड़ना भारतीय जनता पार्टी को भारी पड़ेगा। 4 मार्च, 2002 को श्री परमहंस रामचन्द्र दास तथा श्री अशोक सिंहल के साथ संयुक्त प्रेस-वार्ता में महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने कहा कि न तो यह यज्ञ रुकेगा और न मन्दिर निर्माण। अन्ततः प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी के विशेष प्रतिनिधि की उपस्थिति में शिलापूजन कार्य सम्पन्न हुआ।

महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज की यह चेतावनी भी सच साबित हुई और श्रीराम जन्मभूमि का मुद्दा छोड़ चुनाव लड़ने वाली भारतीय जनता पार्टी सत्ता से बेदखल कर दी गयी। महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज उम्र की बंदिशों से शारीरिक रूप से बेबस होते गये और 'चौथी दुनिया' के एक संवाददाता से कुछ दिन पहले ही बात करते-करते वे भावुक हो उठे तथा कह पड़े- 'मेरा स्वास्थ्य लगातार गिर रहा है। मैं केवल श्रीराम जन्मभूमि पर मन्दिर निर्माण का मार्ग प्रशस्त होते हुए देखने के लिए ही जी रहा हूँ। मेरी यही इच्छा है कि मैं जीते-जी श्रीराम जन्मभूमि पर भव्य मन्दिर निर्माण का निर्णायक शुभारम्भ देख लूँ।'

महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज सहित दर्जनों सन्त-महात्माओं एवं भाजपा के शीर्षस्थ नेतृत्व के खिलाफ श्रीराम जन्मभूमि पर स्थित विवादित ढाँचा ढहाये जाने का मुकदमा दर्ज है। केन्द्र सरकार द्वारा गठित लिब्रहान आयोग की तथ्यहीन, त्रुटिपूर्ण अनर्गल प्रलापों मे भरी रिपोर्ट की अर्थी उठ चुकी

है। महन्त जी को भी इस आयोग के समक्ष प्रस्तुत होना पड़ा। अपने संघर्ष एवं लम्बी न्यायिक प्रक्रिया से गुजरते हुए अन्ततः हिन्दू समाज को न्याय मिला। 9 नवम्बर 2019 ई. को भारत की सर्वोच्च अदालत ने अपना ऐतिहासिक फैसला सुनाते हुए श्रीराम जन्मभूमि पर भगवान श्रीराम के भव्य मन्दिर निर्माण का मार्ग प्रशस्त किया। महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज की अन्तिम इच्छा पूर्ण हुयी।

महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज के नेतृत्व में लगभग दो दशक तक अनवरत चले श्रीराम जन्मभूमि आन्दोलन ने न केवल श्रीराम जन्मभूमि पर हिन्दू समाज को अपमानित करते हुए चिढ़ाने वाला ढाँचा ध्वस्त हुआ अपितु आजाद भारत में हिन्दू विरोधी राजनीति का ढाँचा भी टूटा। भारत सहित दुनिया भर में 'हिन्दुत्व' बहस का मुद्दा बना और हिन्दुत्व पुनर्जागरण के एक नये युग का शुभारम्भ हुआ। हिन्दू समाज के विविध पंथों के धर्माचार्य एक साथ एक मंच पर आये। यह युग भारत में हिन्दू एकता के लिए तो जाना ही जायेगा साथ ही महात्मा गाँधी की इस उक्ति को झुठलाने के लिए भी प्रामाणिक होगा कि 'हिन्दू कायर होता है'। श्रीराम जन्मभूमि आन्दोलन की सफलता के तमाम महत्त्वपूर्ण कारणों में एक महत्त्वपूर्ण कारण गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज का नेतृत्व सभी पंथों के धर्माचार्यों द्वारा सर्वस्वीकार्य होना भी था। भारत के इतिहास में जब भी श्रीराम जन्मभूमि मुक्ति आन्दोलन पर चर्चा होगी, वह चर्चा महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज के बगैर अधूरी मानी जायेगी।

शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा के मसीहा

महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज के नेतृत्व में स्वाधीनता आन्दोलन के समय ही गोरक्षपीठ ने पूर्वी उत्तर प्रदेश में शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा का दीप जलाया। 1932 ईस्वी में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् की स्थापना इसी प्रज्वलित दीप के प्रकाश की एक किरण थी। स्वाधीनता आन्दोलन के समय भारतीय मनीषियों को यह महसूस हो चुका था कि आजादी प्राप्त होने के बाद आजाद भारत का नेतृत्व करने वाली पीढ़ी रूप-रंग के साथ-साथ आचार-व्यवहार से भी भारतीय होनी चाहिए। एक तरफ स्वामी विवेकानन्द अंग्रेजी शिक्षा पर प्रहार करते हुये कह रहे थे- ये शिक्षा हमें, हमारे महान पुरुषों के इतिहास से नहीं, अपितु, अंग्रेजों के महान पुरुषों के इतिहास से अवगत कराती है। ये शिक्षा हमें दुर्बल बनाती है, सबल नहीं। शिक्षा के माने कण्ठस्थ करना नहीं है अपितु शिक्षा आवश्यकता के अनुरूप ही दी जानी चाहिए। शिक्षा वही है जो राष्ट्रीय पद्धति से दी जाये। स्वामी जी आगे कहते हैं- जब तक लाखों लोग भूखे और अज्ञानी हैं, तब तक मैं उस प्रत्येक व्यक्ति को कृतघ्न समझता हूँ, जो उनके बल पर शिक्षित तो बना परन्तु आज उसकी ओर ध्यान तक नहीं देता। दूसरी तरफ लॉर्ड मैकाले की आवाज गूँज रही थी- हमारे अंग्रेजी विद्यालय प्रशंसनीय ढंग से असाधारण उन्नति कर रहे हैं।...... मेरी बनाई शिक्षा पद्धति से यहाँ (भारत में) यदि शिक्षा प्रणाली चलती रही तो आगामी तीस वर्षों में एक भी आस्थावान हिन्दू नहीं बचेगा। या तो वे ईसाई बन जायेंगे

या नाम मात्र के हिन्दू बने रहेंगे। धर्म या वेदशास्त्रों पर उनका विश्वास नहीं होगा।

मैकाले की शिक्षा पद्धति की अनुगूँज आनन्द कुमार स्वामी की पीड़ा में भी सुनाई देती है, जब वे कहते हैं- इसे अनुभव करना बहुत कठिन है कि कैसे भारतीय जीवन के सातत्य को पूर्णतया विच्छिन्न कर दिया गया है। अंग्रेजी शिक्षा की केवल एक पीढ़ी तथा यह अपने मूल से वंचित ऐसे अल्पज्ञ बौद्धिक अस्पृश्य का सृजन करती है जो पूर्व अथवा पश्चिम, भूत अथवा भविष्य कहीं का नहीं है। भारतीय परिप्रेक्ष्य में सर्वाधिक भयप्रद है उसकी आध्यात्मिक सातत्य नष्ट होने की सम्भावना। भारत की सभी समस्याओं में सर्वाधिक कठिन तथा परम अनर्थकारी है शिक्षा की समस्या।

युगद्रष्टा महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज ने भारतीय मनीषियों की इन्हीं चिन्ताओं के समाधान तथा लार्ड मैकाले द्वारा उत्पन्न की गयी चुनौती से निपटने के लिए भारतीय शिक्षा पद्धति के अनुरूप शिक्षा का तन्त्र खड़ा करने की नींव 1932 ईस्वी में रख दी।

महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने अपने वरेण्य गुरुदेव महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज के सपनों को साकार किया। उन्होंने अपनी निष्ठा, सुदीर्घकालीन तपस्या और अनुभव की पूँजी से उत्तरोत्तर समृद्ध और समुन्नत करते हुए महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् को वृहत्तर स्वरूप प्रदान किया। महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के अन्तर्गत **आज तीन दर्जन से अधिक** शिक्षण-प्रशिक्षण संस्थान, चिकित्सा संस्थान तथा सेवा संस्थान संचालित हो रहे हैं। प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक के परम्परागत शिक्षण संस्थानों के साथ-साथ तकनीकी एवं स्वास्थ्य शिक्षा के संस्थानों में हजारों छात्र-छात्राएँ रोजगारपरक पुस्तकीय पाठ्यक्रमों के साथ-साथ भारतीयता तथा सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का पाठ पढ़ रहे हैं। प्रतिवर्ष 4 दिसम्बर से 10 दिसम्बर तक चलने वाले महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के संस्थापक सप्ताह-समारोह तथा 4 दिसम्बर को निकलने वाली गोरखपुर महानगर की सड़कों पर शोभा-यात्रा में सम्मिलित समस्त शिक्षण संस्थाओं के हजारों अनुशासित तथा राष्ट्रभक्ति मे ओत-प्रोत युवा पीढ़ी को देखकर महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज के साकार स्वप्न का अनुभव किया जा सकता है। सम्भवतः यह देश का ऐसा एकमात्र शिक्षा संस्थान है जो प्रतिवर्ष लगभग साढ़े छः सौ छात्र-छात्राओं को छात्रवृत्ति देता है तथा विद्यार्थियों के समग्र विकास में भारतीयता को सर्वाधिक महत्त्व देता है।

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के अन्तर्गत 1949-50 में स्थापित महाराणा प्रताप महाविद्यालय को गोरखपुर विश्वविद्यालय की स्थापना हेतु 1958 ईस्वी में महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज द्वारा समर्पित कर दिये जाने की स्मृतियों को संजोये महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने पुनः 2005 ईस्वी में जंगल धूसड़ में महाराणा प्रताप महाविद्यालय तथा 2006 ईस्वी में गोरखपुर महानगर के रामदत्तपुर में महाराणा प्रताप महिला महाविद्यालय की स्थापना की। शिक्षा के साथ-साथ स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में भी गुरुश्री गोरखनाथ चिकित्सालय, गुरुश्री गोरखनाथ योग संस्थान तथा महन्त दिग्विजयनाथ

आयुर्वेदिक चिकित्सालय की स्थापना एवं उनका उत्तरोत्तर विकास महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज की जन-सेवा के क्षेत्र की उल्लेखनीय उपलब्धि है, जिनके माध्यम से उनकी यशगाथा पुष्प के सुगन्ध की तरह प्रसरित है।

महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज का विराट व्यक्तित्व एक ऐसे मनीषी का विराट स्वरूप है जिसमें 'धर्म' का साक्षात् दर्शन होता है। उन्होंने भारतीय राजनीति को एक नयी दिशा दी; कथित धर्मनिरपेक्ष राजनीति की दूषित अवधारणा को नकारते हुए धर्माधिष्ठित राजनीति की प्रतिष्ठा की। भारतीय समाज में 'जातिवाद' की विषबेलि को समूल उखाड़ फेंका और बिना किसी की परवाह के सामाजिक समरसता का मूलमंत्र देकर भारतीय धर्मगुरुओं का नेतृत्व किया तथा छुआछूत जैसी कुरीतियों के विरुद्ध जन-जागरण अभियान छेड़कर हिन्दू समाज को एकता का पाठ पढ़ाया। शिक्षा और स्वास्थ्य को जन-सेवा का आधार बनाकर 'परहित सरिस धर्म नहिं भाई' उक्ति को चरितार्थ किया। श्रीराम जन्मभूमि मुक्ति आन्दोलन के बहाने पंथों के नाम पर बँटे धर्मगुरुओं को एक मंच पर लाकर राष्ट्रीय स्वाभिमान तथा सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का शंखनाद किया। महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज अपने युग के एक ऐसे महानायक हैं जिन्होंने राजनीतिक, धार्मिक, सामाजिक, शैक्षिक तथा सांस्कृतिक क्षेत्रों में एक साथ पुनर्जागरण का उद्घोष किया। भारत के बीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध के तथा इक्कीसवीं सदी के प्रारम्भिक दशकों में वे जाज्वल्यमान नक्षत्र हैं। वे ऐसे महायोगी हैं जिनका अन्तःकरण समता में स्थित है, जिन्होंने इस जीवित अवस्था में ही सबको जीत लिया है, जो जीवन्मुक्त हो गये हैं और ब्रह्म में ही स्थित हैं; जैसा कि भगवान् श्रीकृष्ण कहते हैं-

इहैव तैर्जितः सर्गो येषां साम्ये स्थितं मनः।
निर्दोषं हि समं ब्रह्मतस्माद्ब्रह्मणि ते स्थिताः॥

परलोक गमन

गोरक्षनाथ मन्दिर में गुरु पूर्णिमा (आषाढ़ पूर्णिमा, वि.सं. 2071) को अपने सभी भक्तों को आशीर्वाद देकर गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज मृत्युलोक से अन्यमनस्क से हो गये। ईश्वर की बनायी इस मायानगरी से उनकी अरुचि भाँपते हुए उनके साथ साये की तरह रहने वाले गोरक्षपीठ उत्तराधिकारी योगी आदित्यनाथ जी महाराज ने 13 जुलाई, 2014 ई. को मानव क्षमताओं के बल पर विधाता को चुनौती देने की क्षमता रखने वाले दुनिया के श्रेष्ठतम चिकित्सा संस्थानों में एक गुड़गाँव, नई दिल्ली के पास 'मेदान्ता मेडिसिटी' में ले जाने की तैयारी प्रारम्भ की। पूज्य महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने मेदान्ता जाने से अपनी अरुचि दिखाई। गुरु-शिष्य के बीच के हठयोग में प्रकृति गुरु के साथ खड़ी हुई और एअर एम्बुलेन्स दिल्ली से गोरखपुर के लिए खराब मौसम के कारण उड़ ही नहीं सका तथापि शिष्य का भाव-हठ भारी पड़ा और विधि के विधान को चकमा देकर योगी आदित्यनाथ जी महाराज ने एअर एम्बुलेन्स से ले जाने में अपनी असफलता महसूस करते

ही 'गोरखधाम एक्सप्रेस' से पूज्य महन्त जी को लेकर 'मेदान्ता' तक पहुँच ही गये। महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज श्रेष्ठतम चिकित्सा सुविधाओं से लैश कर दिये गये और उन्हें इस धराधाम पर रोके रखने का हर प्रकार का प्रयत्न प्रारम्भ हो गया। पूज्य महन्त जी महाराज को अपने बीच बनाये रखने हेतु उपचार के साथ-साथ, ज्योतिषीय विधि-विधान एवं ईश्वरीय शक्तियों के लिए धार्मिक अनुष्ठान जैसे वे सभी प्रयास प्रारम्भ हुए जो विज्ञान एवं आस्था दोनों माध्यमों से सम्भव था। किन्तु स्वयं परमपूज्य महन्त जी महाराज का ही अब इस सांसारिक जीवन से मोहभंग हो चुका था और वे परमात्म तत्त्व के साथ एकाकार होने का हठ ठान चुके थे। बस उन्हें प्रस्थान के लिए अपनी तप:स्थली से दूर 'मेदान्ता' जैसा चिकित्सकीय स्थान मंजूर नहीं था। अपने आराध्य गुरु शिवावतार महायोगी गोरक्षनाथ, गुरुदेव ब्रह्मलीन दिग्विजयनाथ जी महाराज एवं स्वयं की तप:स्थली गोरक्षनाथ मन्दिर से ही ब्रह्मलोक के लिए प्रस्थान करने का जैसे उन्होंने व्रत ले रखा हो। महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज के इस संकल्प साधना के आगे विज्ञान हतप्रभ था, विधाता किंकर्तव्यविमूढ़ थे। अन्ततः शिष्य योगी आदित्यनाथ जी महाराज ने गुरु की इच्छापूर्ति का बीड़ा उठा ही लिया और गोरक्षनाथ मन्दिर परिसर तक उन्हें लाने का वह निर्णय लिया, जो कोई योगी ही ले सकता है। योगी जी के इस निर्णय के साथ पूज्य महन्त जी की स्वयं की इच्छा से उत्पन्न उनकी प्राणिक चेतना को रोक रखने की यौगिक शक्ति थी ही, परमात्मा ने भी साक्षात् उपस्थित होकर सहयोग किया।

12 सितम्बर, 2014 ई. को अपराह्न 4.00 बजे दिल्ली से एअर एम्बुलेंस उड़ा। गोरखपुर के आसमान में तड़कती बिजली ने स्वागत किया, बादलों ने गोरखपुर की धरती को धोकर स्वच्छ कर दिया। 15-20 मिनट की मूसलाधार बारिश के बाद बादलों ने पानी रोक लिया। एअर एम्बुलेंस गोरखपुर की धरती पर सायंकाल 6.00 बजे उतरा। साथ चल रहे मेदान्ता एवं गुरु गोरक्षनाथ चिकित्सालय के चिकित्सक विधाता की लीला और महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज की यौगिक शक्ति का साक्षात् दर्शन कर रहे थे। एअरपोर्ट पर पहले से तैयार गुरु गोरक्षनाथ चिकित्सालय की एम्बुलेंस महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज को लेकर श्री गोरक्षनाथ मन्दिर परिसर की ओर चल पड़ी। योगी आदित्यनाथ जी महाराज साथ थे। उनके चेहरे पर सन्तोष झलक रहा था कि महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज अपनी इच्छानुसार गोरक्षनाथ मन्दिर पहुँचने जा रहे हैं। लगभग सायं सात बजे गोरक्षनाथ चिकित्सालय में पहले से ही पूज्य महन्त जी के लिए तैयार विशेष चिकित्सा कक्ष में उन्हें ले जाया गया। मेदान्ता से साथ आए चिकित्सक और गुरु गोरक्षनाथ चिकित्सालय के चिकित्सकों की टीम ने अपना सर्वश्रेष्ठ उपचारात्मक प्रयास प्रारम्भ कर दिया। किन्तु नाथपंथ के महान साधक के सामने सभी बेबस। पूज्य महन्त जी अपनी ऐहिक यात्रा पूरी कर चुके थे। श्री गोरक्षनाथ मन्दिर परिसर तक पहुँचकर यहाँ की आध्यात्मिक आबोहवा में वे परमशान्ति पा रहे थे। लगभग दो माह तक अपने विधि-विधान को टाल देने वाले विधाता धरती के इस महामानव को अपने में समाहित कर लेने के लिए जैसे स्वयं साक्षात् हों। लगभग डेढ़ घण्टे तक चिकित्सकों की जद्दोजहद काम नहीं आयी। योगी आदित्यनाथ जी महाराज के रूप में अपना ऐहिक जीवन स्थानान्तरित करते हुए गोरक्षपीठाधीश्वर

परमपूज्य महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज रात्रि आठ बजकर तीस मिनट पर ब्रह्मलोक पथ पर चल पड़े ....।

भारतीय राष्ट्रीयता के अनन्य साधक, सामाजिक समरसता के अग्रदूत, हिन्दू धर्म-संस्कृति के पथ-प्रदर्शक का मृत्युलोक को त्याग देने के समाचार से देश हतप्रभ था, शोकमग्न था। देखते-देखते महानगर गोरखपुर की दुकानें बन्द हो गयीं। सड़क पर सन्नाटा तोड़ते शोकाकुल नगरवासी श्री गोरक्षनाथ मन्दिर की ओर चल पड़े। जिला प्रशासन गोरक्षनाथ मन्दिर पहुँच चुका था। अश्रुपूरित नेत्र एवं रुँधे गले से पूज्य योगी आदित्यनाथ जी महाराज ने 13 सितम्बर को जनता दर्शन एवं 14 सितम्बर को समाधि की घोषणा की। गोरक्षनाथ मन्दिर में पशु-पक्षी सभी शान्त थे। पेड़-पौधों ने भी ऐसी चुप्पी साध रखी थी जैसे आज वे हवा के झोंकों के बीच हँसना-मचलना भूल गए हों। शोकमग्न गोरक्षनाथ मन्दिर परिसर के सन्नाटे में शान्तिपाठ का स्वर अपने आराध्य इस महामानव के परलोकगमन का साक्षी बन रहा था।

13 सितम्बर को ब्रह्ममुहूर्त से ही भक्तों का मन्दिर आना प्रारम्भ हो गया। भगवान् भास्कर भी गोरक्षपीठाधीश्वर के ब्रह्मलोक यात्रा पथ को प्रकाशित करने में लगे थे। उनकी इस लीला को मेघों ने ढक रखा था। पूज्य महन्त जी महाराज का समाधियुक्त शरीर दर्शनार्थ स्थापित करने से पूर्व भक्तों एवं दर्शनार्थियों की कतारबद्ध भीड़ बढ़ती जा रही थी। उनके जयघोषों के साथ साढ़े आठ बजे गोरक्षपीठ के उत्तराधिकारी पूज्य योगी आदित्यनाथ जी महाराज ने विधि-विधानपूर्वक परमपूज्य महन्त जी महाराज को भक्तों के दर्शनार्थ प्रस्तुत किया और घण्टों पंक्ति में खड़े रहकर शोकाकुल भक्त पूज्य महन्त जी महाराज का दर्शन कर उन्हें पुष्पांजलि अर्पित करने लगे। उनका दर्शन कर पुष्पांजलि देने का यह क्रम अगले दिन उनके समाधिस्थ होने तक चलता रहा।

14 सितम्बर को निशा की कालिमा का रंग जैसे-जैसे हल्का होता गया, भोर से ही वरुण देवता गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज की समाधि के साक्षी बनने को बेताब हो उठे। उन्होंने अपने कोष का सारा जल ब्रह्मलीन महाराज जी को नहलाने हेतु गोरखपुर में उड़ेल रखा था। मूसलाधार बारिश में भी श्री गोरक्षनाथ मन्दिर का परिसर भक्तों-श्रद्धालुओं से खचाखच भर चुका था। देश भर से साधु-सन्त श्री गोरक्षनाथ मन्दिर पहुँच चुके थे। दस बजकर पचास मिनट पर भारत के इस महान राष्ट्र सन्त की समाधि तय थी। समाधि के समय एकाएक जल-वर्षा बन्द हुई और फिर पुष्पवर्षा के साथ गुरु श्री गोरक्षनाथ मन्दिर की परिक्रमा कर विधि-विधानपूर्वक राष्ट्रीयता के अनन्य साधक एवं इस शताब्दी के महामानव ने महासमाधि ले ली। हम सभी विधि के विधान के आगे बेबस खड़े देखते रह गए........।

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद्, गोरखपुर

अंग्रेजों के आगमन से पूर्व भारत न केवल बौद्धिक व आध्यात्मिक दृष्टि से समुन्नत देश था बल्कि भौतिक दृष्टि से भी काफी समृद्ध था। इसका सहज अनुमान 02 फरवरी 1835 के मैकाले के इस कथन से लगाया जा सकता है कि मैने पूरब से पश्चिम तथा उत्तर से दक्षिण सम्पूर्ण भारत का भ्रमण किया। भारत भ्रमण के दौरान मुझे कोई भिखारी, चोर अथवा व्यभिचारी नहीं दिखा। इस देश में मैंने अपार धन दौलत देखी, ऊचे चारित्रिक आदर्श वाले गुणवान मनुष्य देखें है, ऐसी स्थिति में मैं नहीं समझता कि हम इस देश को जीत पांएगें जब तक कि इसकी रीड़ जो इस देश की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विरासत है, को नहीं तोड़ देते। मैकाले का स्पष्ट अभिमत था कि भारत की पहचान उसकी सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विरासत है। युवा पीढ़ी को इस विरासत से काटने के लिए भारतीय शिक्षा व्यवस्था में विकृति उत्पन्न करना महती आवश्यकता है। मैकाले अपने उद्देश्य में सफल भी रहा। क्योंकि मैकाले ने जिस उद्देश्य से अंग्रेजी शिक्षा पद्धति का सूत्रपात किया तथा उसका परिणाम कुछ दिनों बाद ही दिखाई देने लगा था।

अंग्रेजी शिक्षा की सफलता का उद्घाटन करते हुए अपने माता-पिता को लिखे पत्र में मैकाले लिखता है कि ''हमारे अंग्रेजी स्कूल आश्चर्यजनक ढंग से प्रगति कर रहे हैं। हिन्दुओं पर इसका विलक्षण प्रभाव पड़ रहा है। अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त करने वाला कोई भी हिन्दू अपने धर्म के प्रति आस्थावान नहीं दिखाई दे रहा है। मुझे दृढ़ विश्वास है कि हमारी शिक्षा सम्बन्धी योजना के अनुसार कार्य चलता रहा तो 30 वर्ष पश्चात बंगाल के संभ्रात वर्ग में एक भी मूर्तिपूजक नहीं रह जाएगा। इसके लिए धार्मिक स्वतंत्रता में हस्तक्षेप की तनिक भी आवश्यकता नहीं रहेगी। वह तो ज्ञान और विचारशीलता की सहज प्रक्रियामात्र से स्वत: ही हो जायेगा। इस संभावना पर मैं अति आनंदित हूँ''। अत: अंग्रेजी शिक्षा का परिणाम यह रहा कि इस शिक्षा को प्राप्त करने वाला प्रत्येक भारतवासी हर भारतीय वस्तु को घटिया तथा हर पाश्चात्य वस्तु को उच्च कोटि का समझने लगा था। ऐसी परिस्थिति में शिक्षा के पुनर्निर्माण का आधारभूत लक्ष्य इस प्रक्रिया को नष्ट करना होना चाहिए और शिक्षा के माध्यम से हर सम्भव उपाय किया जाना चाहिए जिससे भारत की नयी पीढ़ी के हृदय में से हीनता की यह भावना नष्ट हो सके तथा नवयुवकों में हमारे देश की प्राचीन सभ्यता तथा संस्कृति पर आधारित एक राष्ट्रीय व्यक्तित्व का विकास हो सके।

उक्त के परिपेक्ष्य में ऐसे शिक्षण संस्थाओं के स्थापना की आवश्यकता थी जहाँ से निकले छात्रों की निष्ठा विदेशी शासकों के प्रति न होकर भारत और भारतीयता के प्रति हो। ज्ञान प्राप्ति के

पश्चात उसके अन्दर अपने समाज तथा संस्कृति के प्रति लज्जा के बजाय गौरव के भाव जागृत हों तथा उन्हें शिक्षा के द्वारा स्वतंत्रता के राष्ट्रीय आन्दोलन में अपने निजी सुखोपभोग का त्याग करके, भाग लेने की प्रबल प्रेरणा मिल सके। इसी उद्देश्य से देश के विभिन्न हिस्सों में राष्ट्रीय शिक्षण संस्थान की स्थापना का प्रयास प्रारम्भ हुआ। इसी क्रम में 1916 में भारतीय आदर्शों और जीवन पद्धति को युवा पीढ़ी के अन्दर आरोपित करने की दृष्टि से पं. मदन मोहन मालवीय ने बनारस में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना की। गोरक्षपीठ के तत्कालीन पीठाधीश्वर युगपुरुष महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज द्वारा 1932 में गोरखपुर में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की स्थापना की गयी। प्राचीन सभ्यता एवं संस्कृति पर आधारित राष्ट्रीय व्यक्तित्व के निर्माण के महान उद्देश्य से अनुप्राणित ये संस्थान आज देश में राष्ट्रवादी शिक्षा के प्रसार के मानक केन्द्र के रूप में कार्य करते हुए दिखाई दे रहे हैं।

अतः अंग्रेजी शिक्षा के दुष्परिणामों से युवा पीढ़ी को बचाने तथा भारत की स्वाधीनता के प्रतीक महाराणा प्रताप के आदर्शों से प्रेरणा प्राप्त करते हुये देश के लिए जीने का संकल्प युवाओं में जागृत करने हेतु महन्त दिग्वियजनाथ जी महाराज ने महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की स्थापना की थी। अशिक्षा तथा गरीबों से संत्रस्त पूर्वांचल की युवा पीढ़ी में राष्ट्रवादी चेतना का विकास हो जहाँ की युवा शक्ति भी भारत की स्वाधीनता आंदोलन में अपनी प्रभावी भूमिका निभा सके, जो ज्ञानवान के साथ ही साथ चरित्रवान भी हो तथा जो व्यक्तिगत हितों के पोषण के बजाय राष्ट्रीय हितों के पोषण हेतु प्रथम पुरूषीय विचार के साथ देश और समाज में अपनी सेवाएँ देने हेतु तत्पर हो, शिक्षा से ऐसी अपेक्षा महन्त जी महाराज की थी।

महन्त दिग्विजयनाथ जी के अनुसार शिक्षा राष्ट्रीय विकास-सांस्कृतिक, सामाजिक तथा आर्थिक विकास का एक सबल साधन है। अतः राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली के विकास को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जानी चाहिए जो कि भारतवासियों में देश की प्राचीन सभ्यता एवं संस्कृति पर आधारित एक राष्ट्रीय व्यक्तित्व का विकास करें।

सर्वाधिक दुर्भाग्यपूर्ण यह है कि आजादी के बाद भी हम अंग्रेजी शिक्षा व्यवस्था को ही लेकर आगे बढ़ रहे थे। यद्यपि कि आजादी के बाद उच्च शिक्षा में सुधार हेतु राधाकृष्णन आयोग (1948-49) माध्यमिक शिक्षा में सुधार हेतु मुदोलियर आयोग (1952-53) का गठन हुआ था फिर भी भारत में प्रचलित अंग्रेजी शिक्षा में आमूल-चूल परिवर्तन लाने हेतु एक समेकित प्रयास की आवश्यकता थी। इसी आवश्यकता की पूर्ति हेतु शिक्षा आयोग का गठन 14 जुलाई 1964 को दौलत सिंह कोठारी की अध्यक्षता में किया गया था। शिक्षा आयोग (1964-66) के प्रतिवेदन पर विचार करते हुये राष्ट्रीय शिक्षा नीति के संदर्भ में एक प्रारूप तैयार करने की दृष्टि से संसद सदस्यों की गठित समिति के सदस्य के रूप में हिन्दू महासभा के एक मात्र सांसद महन्त दिग्वियजनाथ जी

महाराज भी सम्मिलित हुये थे।

संसद सदस्यों की समिति द्वारा तैयार राष्ट्रीय शिक्षा नीति के प्रारूप पत्र पर महन्त दिग्विजयनाथ जी ने जो असहमति के साथ टिप्पणी लिखी वह भारतीय शिक्षा का एक राष्ट्रीय दस्तावेज है। उनके असहमति पत्र को महन्त जी के शिक्षा सम्बन्धी दृष्टिकोण के दर्पण के रूप में देखा जा सकता है। शिक्षा सम्बन्धी महन्त जी के विचारों पर दृष्टिपात करने से ऐसा प्रतीत होता है कि उनके विचार भारतीय शिक्षा के संदर्भ में सार्वकालिक है। वर्तमान शिक्षा के संदर्भ में वे विचार आज की उतने ही प्रासंगिक प्रतीत होते हैं। शिक्षा सम्बन्धी उनकी टिप्पणी में सचमुच महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के उद्देश्य समग्र रूप से दृष्टिगत होते हैं।

महन्त जी का मानना था कि वर्तमान शिक्षा जनता की परम्पराओं पर आधारित न होने के कारण शिक्षित वर्ग अपनी ही संस्कृति से दूर होता जा रहा है। स्थानीय, धार्मिक, भाषायी तथा राज्य सम्बन्धी निष्ठाओं के अभाव में लोग भारत के समूचे रूप को ही भूल गये है। समाज को सूत्रबद्ध करने वाले मूल्य लुप्त हो रहे हैं। उनके स्थान पर सामाजिक उत्तरदायित्व वाला कोई प्रभावी कार्यक्रम नहीं है। इससे सामाजिक विघटन के असंख्य लक्षण सर्वत्र दृष्टिगोचर हो रहे है, और बढ़ते ही जा रहे हैं। अत: महन्त जी शिक्षा को इन समस्याओं के समाधान के साधन के रूप में देखते थे।

महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज ने राष्ट्रवादी शिक्षा के प्रसार के लिए जिस महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद का बीजारोपण किया था उसको अपने ओजस्वी मार्गदर्शन से आगे बढ़ाने का कार्य उनके सुयोग्य उत्तराधिकारी महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने किया। महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज के नेतृत्व में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद ने चतुर्दिक प्रगति करते हुये शिक्षा, चिकित्सा तथा सेवा के क्षेत्र में विशिष्ट पहचान बनायी है। महन्त अवेद्यनाथ जी सामाजिक समरसता को भारत के एकता और अखण्डता की आवश्यक शर्त मानते थे। उनका मानना था कि भारतीय समाज में जब तक ऊँच-नीच का विभेद रहेगा तब तक भारत का पुनरूत्थान सम्भव नहीं है। महन्त जी का मानना था कि ऊँच-नीच, छूत-अछूत के आधार पर हिन्दू समाज को बाँटने का कुत्सित प्रयास चल रहा है, जब तक यह समाप्त नहीं होगा हिन्दू समाज पर अन्यों का अत्याचार बंद नहीं होगा। हिन्दुत्व को यदि बचाना है तो हिन्दू समाज में व्याप्त रूढ़ियों एवं कुरीतियों को त्यागना ही होगा। ऐसी स्थिति में समाज में व्याप्त विभेद का प्रतिकार करते हुए शिक्षा के माध्यम से समरस समाज की स्थापना महाराणा शिक्षा परिषद का उद्देश्य है। सामाजिक समरसता की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका को समझते हुए महन्त जी ने समाज के शोषित, वंचित एवं पिछड़े समूहों को शिक्षित करने हेतु ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षण संस्थाओं की स्थापना की, जिसके परिणाम स्वरूप समाज के वंचित वर्गों को सस्ती शिक्षा का सुअवसर प्राप्त हुआ।

गोरक्षपीठ के वर्तमान पीठाधीश्वर महन्त योगी आदित्यनाथ जी महाराज के प्रेरणादायी नेतृत्व

में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद्, शिक्षा, चिकित्सा सेवा तथा आध्यात्म के क्षेत्र में अपनी विशिष्ट कार्यपद्धति के कारण नये-नये प्रतिमान स्थापित कर रहा है। महन्त जी का मानना है कि शिक्षालय राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के व्यापक संदर्भ में तभी अपनी भूमिका का प्रभावी ढंग से निष्पादन कर सकते है जब वे 'इन्फार्मेशन सेण्टर' के बजाय 'ट्रासफार्मेशन सेण्टर' के रूप में कार्य करें। अनुशासन ट्रांसफार्मेशन के लिए अनिवार्य शर्त है। बिना अनुशासन के निर्माण की प्रक्रिया आगे नहीं बढ़ सकती है। मनुष्य निर्माण तो अनुशासन के बिना सम्भव ही नहीं है। अतः शिक्षालयों को मनुष्य निर्माण के केन्द्र के रूप में कार्य करना है, तो अनुशासन की सर्वोच्च प्राथमिकता देना होगा।

अनुशासन और चरित्र निर्माण के साथ ही साथ महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की संस्थाएँ स्वच्छता के प्रति संकल्पित हो, ऐसा महन्त जी का आग्रह रहता है। उनका मानना है कि व्यक्तित्व के विकास में वातावरण की अहम भूमिका होती है। भौतिक वातावरण से विद्यालय का भौतिक वातावरण स्वच्छ होगा तभी स्वच्छ भारत के लिए संकल्पित युवा समाज को प्राप्त होंगे।

इस प्रकार हम देखते है कि महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के मार्गदर्शन महानुभावों को गोरक्षपीठ के पीठाधीश्वर के नाते धर्म एवं संस्कृति के उत्थान के प्रति उनका स्वाभाविक आग्रह तो दिखता ही है परन्तु इसके साथ ही साथ देश में विज्ञान एवं तकनीकि की शिक्षा के प्रसार के प्रति भी वे सतत सचेष्ट व जागरूक दिखते हैं। विज्ञान की शिक्षा को बढ़ावा देने हेतु अपने द्वारा स्थापित संस्थाओं में प्रमुखता से इसकी पढाई प्रारंभ कराई। वही तकनीकि शिक्षा के प्रसार हेतु 1956 में महाराणा प्रताप पालिटेक्निक की भी स्थापना की। महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद ने अपनी समस्त परिसम्पत्तियों के साथ अपने महाविद्यालय को विश्वविद्यालय की स्थापना हेतु अर्पित कर गोरखपुर में उच्च शिक्षा हेतु विश्वविद्यालय की स्थापना मार्ग प्रशस्त किया। महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद अपने संस्थापकों के शैक्षिक दृष्टि को साकार करने हेतु चौवालीस शिक्षण प्रशिक्षण विज्ञान तकनीकि, चिकित्सा तथा कृषि विज्ञान की संस्थायें एवं सेवा प्रकल्प संचालित कर रही हैं।

हिन्दुआ-सूर्य महाराणा प्रताप

भारतीय इतिहास के विगत कुछ सहस्र वर्षों के कालखण्ड में स्वदेश, स्वजाति और स्वधर्म के प्रति स्वाभिमान, अगाध प्रेम, अटूट निष्ठा, अदम्य साहस, अतुलनीय पराक्रम और अविस्मरणीय तथा अकल्पनीय उत्सर्ग-भावना के लिए यदि किसी एक व्यक्ति का नाम लेना हो तो निश्चय ही वह यशस्वी नाम प्रातःस्मरणीय महाराणा प्रताप का होगा। वे राजपूती आन, बान और शान के ही नहीं, हमारे जातीय गौरव और पराधीनता को कभी स्वीकार न करने वाली अपराजेय भारतीय आत्मा के, चिरस्वतन्त्रा के प्रतीक हैं। मातृभूमि के लिए त्याग और बलिदान की उनकी गौरवमयी गाथा आज भी हमारे लिए उतनी ही गौरवशालिनी, उतनी ही लोमहर्षक, उतनी ही जीवन्त और उतनी ही स्पृहणीय तथा प्रेरणादायिनी है जितनी अतीत में थी जब लोग यह कामना करते थे कि-

'माई एहा पूत जण, जेहा राण प्रताप'

वीर-शिरोमणि महाराणा प्रताप का जन्म यशस्वी सूर्यवंशी क्षत्रियों की महामनस्वी गुहिलौत गोत्री सीसोदिया शाखा में मेवाड़ की तत्कालीन राजधानी चित्तौड़ के दुर्ग में सं. 1567 वि. ज्येष्ठ-शुक्ल तृतीया, रविवार, तदनुसार 9 मई, 1540 ई. को सूर्योदय से 47 घड़ी 13 पल गये हुआ था। वे महाराणा उदय सिंह के 25 पुत्रों में सबसे ज्येष्ठ थे। उनके बचपन के विषय में यद्यपि विशेष कुछ ज्ञात नहीं है तथापि किंवदन्तियों, कुछ ख्यातों और पश्चात्कालीन जीवन से यह अनुमान अवश्य लगता है कि उनमें भावी उदात्त जीवन के अनेक शुभ लक्षण बचपन से ही स्पष्ट होने लगे थे जिसके कारण वे अनायास सबके स्नेह-समादर के भाजन थे। समय बीतने के साथ उन्होंने क्रमशः युवावस्था में पदार्पण किया और प्रशस्त प्रोद्भासित ललाट, वृषभस्कन्ध, सिंहोरस्क, प्रचण्डदोर्दण्ड, कर्णान्त-विश्रान्त विलोचन-श्री और ऊपर उठी हुई खाँड़े जैसी मूँछों वाला यह युवक शीघ्र ही अपनी साहसिकता, धीरता, वीरता और गम्भीरता से राजपरिवार और सामन्तों में ही नहीं अपनी प्रजा में भी सर्वाधिक लोकप्रिय हो गया। लेकिन राजलक्ष्मी ने राम की तरह फिर एक सूर्यवंशी राजकुमार से छल किया। 28 फरवरी 1572 ई. को गोगुंदा में महाराणा उदय सिंह का स्वर्गवास हुआ। भटियानी महारानी के प्रभाव में उन्होंने अन्त समय में नवें पुत्र जगमाल को अपना उत्तराधिकारी बनाया। सर्वसमर्थ होने पर भी, सामन्तों तथा प्रजाजनों में भी लोकप्रियता और अनुकूलता के बावजूद पितृभक्त प्रताप ने छोटे भाई का राजत्व स्वीकार कर पुनः मर्यादापुरुषोत्तम भगवान् राम का उदाहरण प्रस्तुत किया। किन्तु अयोग्य उत्तराधिकारी भरत नहीं था। उसने प्रताप के लोकप्रिय प्रभविष्णु-जिष्णु व्यक्तित्व को अपने लिए बाधक मान कर उन्हें मेवाड़ ही छोड़ देने की आज्ञा दे दी। प्रताप ने पुनः राजीवलोचन राम की तरह

'बाप को राज बटाऊ की नाई' त्याग कर मातृभूमि से विदा ली। किन्तु सामन्तों के साथ ही मेवाड़ी प्रजा ने इस अन्याय को असह्य मानकर विद्रोह कर दिया और चूड़ावत सरदार कृष्ण सिंह ने जगमाल को बलात् गद्दी से उतार कर महाराणा प्रताप को राजगद्दी स्वीकार करने के लिए विवश कर दिया। यह घटना गोगुंदा में ही घटी। बाद में महाराणा प्रताप का विधिवत राजतिलक कुम्भलगढ़ में भी किया गया। यहीं से प्रारम्भ होती है महाराणा प्रताप की धीरता, वीरता और गम्भीरता की परीक्षा तथा पौरुष एवं पराक्रम की चरितार्थता।

महाराणा उदय सिंह के समय से ही चित्तौड़ मुगलों के अधीन था। वे उस समय 28 वर्ष के थे जब अकबर ने चित्तौड़ को 25 फरवरी, 1568 को जीत लिया था। वे उस युद्ध में चित्तौड़ की रक्षा में युवराज के रूप में लड़ना चाहते थे किन्तु पिता की आज्ञा से ऐसा नहीं कर सके और इसकी कसक उनके मन में बराबर बनी रही। गद्दी पर बैठते ही प्रताप ने भीष्म जैसी प्रतिज्ञा की कि चित्तौड़ की पुनः स्वतन्त्रता तक मेरे वंश का कोई भी व्यक्ति राजसी वेश-भूषा तथा खान-पान स्वीकार नहीं करेगा। हमारे सामने जो नगाड़ा बजता हुआ जाता था अब वह हमारी सेना के पीछे बजेगा। सितम्बर सन् 1572 ई. में अकबर की ओर से पहला सन्धि-प्रस्ताव लेकर जलाल खाँ कोरची प्रताप से मिला। दूसरा सन्धि-प्रस्ताव अम्बर के कुँवर मानसिंह द्वारा जून सन् 1573 ई. में आया। दो महीनों बाद तीसरा सन्धि-प्रस्ताव लेकर अकबर की ओर से सन् 1573 में ही अम्बर नरेश भगवानदास स्वयं आया। उसकी भी विफलता के बाद दिसम्बर सन् 1573 में अकबर ने अपने नवरत्नों में एक कुशल-राजनीतिज्ञ राजा टोडरमल को भेजा। किन्तु इस वित्तविशेषज्ञ का भी पाशा चित्त नहीं पड़ा और हर कीमत पर अपनी स्वतन्त्रता के लिए दृढ़-चित्त प्रताप से अपनी शर्तों पर यह भी सौदा नहीं कर सका। प्रताप यदि चाहते तो नाममात्र के लिए झुककर अकबर से ससम्मान सन्धि कर सुख और वैभव में आराम की जिन्दगी बिता सकते थे। किन्तु उनके समक्ष अपनी सुख-सुविध ा से पहले मेवाड़ी कुर्बानी का इतिहास खड़ा हो जाता था। स्वधर्म, स्वदेश और स्वाभिमान की रक्षा के लिए चित्तौड़ में हुए तीनों शाके खड़े हो जाते थे। खानवा के मैदान में एक जीती हुई बाजी को रायसेन (ग्वालियर के निकट स्थित है) के अपने ही सामन्त सिल्लैदी की दगाबाजी से हार में बदलते देख रहे घायल राणा सांगा की तिलमिलाहट खड़ी हो जाती थी। जयमल और फत्ता के बलिदान और स्वयं अकबर द्वारा की गयी चित्तौड़ की विजय ललकारती हुई प्रत्यक्ष हो जाती थी और उसे दुर्लक्ष्य करना उनके जैसे शूरमा के लिए,

''एकान्त विध्वंसिषु मद्विधानाम्।
पिण्डेष्वनास्था खलु भौतिकेषु।।''

की नीति में आस्था रखने वाले के लिए, 'कार्य वा साधयेम, देहं वा पातयेम' मानने वाले के लिए असम्भव ही था।

अकबर की महत्त्वाकांक्षा और अकबर की ही पहल पर किये गये सन्धि प्रयासों की किलता के दारुण परिणाम से प्रताप पूर्णत: अवगत थे किन्तु-

हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं, जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम्।
तस्मादुत्तिष्ठ कौन्तेय, युद्धाय कृत-निश्चयः॥
सुखदुःखे समे कृत्वा लाभालाभौ जयाजयौ।
ततो युद्धाय युज्यस्व नैवं पापमवाप्स्यसि॥
सुखिनः क्षत्रियाः पार्थ, लभन्ते युद्धमीदृशम्।
धर्म्याद्धि युद्धाच्छ्रेयोऽन्यत्क्षत्रियस्य न विद्यते॥
भयाद्रणादुपरतं मंस्यन्ते त्वां महारथाः।
येषां च त्वं बहुमतो भूत्वा यास्यसि लाघवम्॥
तथा 'सम्भावितस्य चाकीर्तिर्मरणादतिरिच्यते।'

अर्थात्, 'यदि युद्ध में मारे गये तो स्वर्ग मिलेगा, जीत गये तो राज्य भोग करोगे। इसलिए हे कौन्तेय! युद्ध के लिए निश्चय कर के खड़े हो जाओ। सुख-दुःख, हानि-लाभ, जय-पराजय को समान मानकर युद्ध के लिए उद्यत हो जाओ। ऐसा करने में तुम्हें पाप नहीं लगेगा। पार्थ! ऐसा युद्ध तो सौभाग्यशाली क्षत्रियों को मिलता है क्योंकि धर्म-युद्ध से बढ़कर क्षत्रियों के लिए कोई कार्य नहीं है। यदि तुम यह धर्म-युद्ध नहीं करोगे तो महारथी यही मानेंगे कि डर कर तुम भाग गये। आज तुम जिनके माननीय हो कल उन्हीं की निगाह से गिर जाओगे। तथा- सम्मानित व्यक्ति का अपमान मृत्यु से भी बढ़ कर होता है।'- जैसे गीता के वाक्य एक ज्वलन्त, ऊर्जस्वल प्रेरणा के रूप में सामने थे और वर्तमान ही नहीं अतीत तथा अनागत के भी आर-पार देखते हुए उन्होंने स्वर्गादपि, मोक्षादपि गरीयसी जन्मभूमि पर बलि-बलि जाने का, वन-वन स्वतन्त्रता दीप लिए फिरने का कण्टकाकीर्ण रास्ता चुना। यह उनकी लोकप्रियता और प्रताप का ही प्रभाव था कि उनके कादार सैनिकों तथा सामन्तों ने ही नहीं बिल्कुल भगवान् राम की तरह वनवासियों, गिरिवासियों ने भी यावज्जीवन उनके साथ ही कण्टकाकीर्ण मार्ग पर चलना, निछावर होना, स्वीकार किया।

समझौता-वार्ताओं के भंग हो जाने पर तीन वर्षों तक प्रकट रूप से शान्ति रही। किन्तु इस बीच भी भीतर-ही-भीतर दोनों ओर से कूटनीतिक तथा सामरिक तैयारियाँ निरन्तर चलती रहीं। 14 मार्च सन् 1576 को अकबर अजमेर आया और उसने हिन्दुत्व की एकमात्र स्वतन्त्र दोधूयमान पताका को भी हिन्दुआ-सूर्य, मेवाड़ मुकुट राणा प्रताप को भी झुकाने की योजना को अन्तिम रूप दिया। 2 अप्रैल को योजनानुसार अम्बर के राजकुमार मानसिंह के सेनापतित्व में एक विशाल शाही सेना ने राणा प्रताप के विरुद्ध कूच किया। सेना का पहला पड़ाव माण्डलगढ़ में पड़ा। अपने संख्याबल से

महाराणा को आतंकित करने के लिए दो महीनों तक सेना वहीं परेड करती रही। इस बीच प्रताप की सैनिक गतिविधियों की भी गुप्त सूचनाएँ ली जाती रहीं। फिर शाही सेना ने माण्डलगढ़ से आगे बढ़ कर नाथद्वारा से दस मील दूर खमनोर के पार्श्ववर्ती मेमिला नामक गाँव के पास डेरा डाला। प्रताप, शाही सेना की माण्डलगढ़ में पहुँच का समाचार पाकर, पहले ही कुम्भलगढ़ से कूच कर गोगुन्दा आ गये थे और जब शाही सेना ने आगे बढ़ कर मेमिला में पड़ाव डाला तो प्रताप ने गोगुन्दा और खामनोर के बीच हल्दीघाटी के पास, जो सामरिक दृष्टि से अपने लिए अत्यन्त लाभप्रद तथा सुरक्षित और शत्रु के लिए उतना ही हानिप्रद और असुरक्षित था, मोर्चा बाँधा। शाही सेना में मानसिंह के अलावा बाराह के सैयद, गाजी खाँ बदख्शी, राव लूणकरण, कछवाहा जगन्नाथ, ख्वाजा शियाबुद्दीन गुरोह, आसफ खाँ, माधोसिंह, मजाहिदबेग, खँगार और मिहतर खाँ आदि शामिल प्रमुख व्यक्ति थे। प्रताप की सेना में प्रताप के साथ बड़ी सादड़ी का मानसिंह (मन्ना) झाला, प्रसिद्ध वीर जयमल्ल का पुत्र राठौड़ रामदास, ग्वालियर का राजा रामसिंह और उसका पुत्र शालिवाहन, पठान हकीम खाँ सूर, भीलों का सरदार, मेरपुर का राणा पुंजा, भामाशाह और उसका भाई ताराचन्द ये प्रमुख लोग थे।

घाटी और खामनोर के बीच के ऊबड़-खाबड़ मैदान में जो बनास नदी तक आगे चला गया है, युद्ध 18 या 21 जून को आरम्भ हुआ। पहल महाराणा प्रताप ने की। उनका आक्रमण इतना प्रबल था कि थोड़ी ही देर में शाही सेना के पैर उखड़ गये और वह युद्धस्थल से लगभग 10-12 मील दूर तक भागती चली गयी। उभयपक्ष की युद्ध की व्यूहरचना, लड़ाई का आँखों देखा हाल बताते हुए मुगल इतिहासकार अल बदायूँनी ने लिखा है- "जब मानसिंह और आसफखान गोगुन्दा से 7 कोस दर्रे (घाटी) के पास सेना सहित पहुँचे तो राणा लड़ने को आया। ख्वाजा मुहम्मदरफी बदख्शी, शियाबुद्दीन, गुरोह, पायन्दा कज्जाक, अलीमुराद उजबेक और राजा लूणकरण तथा बहुत से शाही सवारों सहित मानसिंह हाथी पर सवार होकर मध्य में रहा और बहुत से प्रसिद्ध जवान पुरुष हरावल के आगे रहे। चुने हुए आदमियों में से 80 से अधिक लड़ाके सैयद हाशिम बाराह के साथ हरावल के आगे भेजे गये और सैयद अहमद खान बाराह दूसरे सैयदों के साथ दक्षिण पार्श्व में रहा। शेख इब्राहीम चिस्ती के रिश्तेदार अर्थात् सीकरी के शेखजादों सहित काजी खान वाम पार्श्व में रहा और मिहतर खान चन्दावल (एकदम पीछे) की ओर। राणा कीका (प्रताप) ने दर्रे (हल्दी घाटी) के पीछे से 3,000 राजपूतों सहित आगे बढ़ कर अपनी सेना के दो विभाग किये। एक विभाग ने, जिसका सेनापति हकीम सूर अफगान था, पहाड़ों की तरफ से निकल कर हमारी हरावल (सबसे आगे की टुकड़ी) पर आक्रमण किया। भूमि ऊँची-नीची रास्ते टेढ़े-मेढ़े और काँटों वाले होने के कारण हमारी हरावल में गड़बड़ी मच गयी जिससे हमारी हरावल की पूरी तौर से हार हुई। हमारी सेना के राजपूत, जिनका मुखिया राव लूणकरण था और जिनमें अधिकतर वाम पार्श्व में थे, भेड़ों के झुण्ड की तरह भाग निकले और हरावल को चीरते हुए अपनी रक्षा के लिए दक्षिण पार्श्व की तरफ दौड़े। इस समय मैंने जबकि मैं हरावल के खास सैन्य के साथ था, आसफ खान से पूछा ऐसी अवस्था में हम अपने

और शत्रु के राजपूतों की पहचान कैसे कर सकते हैं? उसने उत्तर दिया 'तुम तो तीर चलाये जाओ, चाहे जिस पक्ष के आदमी मारे जावें, इस्लाम को तो उससे लाभ ही होगा। इसलिए हम तीर चलाते रहे और भीड़ ऐसी थी कि हमारा एक भी वार खाली न गया।

राणा की सेना के दूसरे विभाग ने जिसका नेता स्वयं राणा था, घाटी से निकल कर गाजी खाँ की सेना पर जो घाटी के सिरे पर था, हमला किया और उसकी सेना का संहार करता हुआ उसके मध्य तक पहुँच गया। तब तो सबके-सब सीकरी के शेखजादे भाग निकले। परन्तु मुल्ला होने पर भी गाजी खाँ कुछ देर तक तो दृढ़तापूर्वक डटा रहा। किन्तु जब उसके दाहिने हाथ का अंगूठा कट गया, तब वह भी अपने सैनिकों के पीछे-पीछे भाग गया। ग्वालियर के राजा रामशाह ने, जो सदैव राणा के आगे रहता था, मानसिंह के राजपूतों के विरुद्ध ऐसी वीरता दिखाई जिसका वर्णन लेखनी की शक्ति से बाहर है। ये राजपूत (शाही सेना के) जो हरावल से बाएँ भाग खड़े हुए, जिससे आसफ खाँ को भी भागना पड़ा और उन्होंने दाहिने भाग के सैयदों की शरण ली। हरावल की भागी हुई सेना ने ऐसी स्थिति उत्पन्न कर दी थी कि यदि इस अवसर पर सैयद लोग टिके नहीं रहते तो उससे अवश्य ही अपमानजनक हार होती।

''माधव सिंह के साथ लड़ते समय राणा पर तीरों की बौछार हो गयी और हकीम खाँ सूर सैयदों से लड़ रहा था, भागकर राणा से मिल गया। इस प्रकार राणा के सैन्य के दोनों विभाग एक जगह एकत्र हो गये। फिर राणा लौट कर पहाड़ों में जहाँ चित्तौड़ की विजय के बाद वह रहा करता था और जहाँ वह किले के समान सुरक्षित रहता था, भाग गया। प्रचण्ड ग्रीष्म के मध्य इस दिन गर्मी इतनी पड़ रही थी कि खोपड़ी के भीतर मगज भी उबला जाता था। ऐसे समय भी लड़ाई प्रातःकाल से मध्याह्न तक चली लगभग 500 आदमी खेत रहे जिनमें 120 मुसलमान और शेष 380 हिन्दू थे। 300 से अधिक इस्लाम के वीर घायल हुए। इस समय लू आग के समान चल रही थी हमारे सैनिकों में चलने-फिरने की भी शक्ति नहीं रही थी और सेना में यह भी खबर फैल गयी थी राणा छल के साथ पहाड़ के पीछे घात लगाये खड़ा होगा। इसी कारण हमारे सैनिकों ने राणा का पीछा नहीं किया।''

अल बदायूँनी ने अपने युद्धवृत्त में बीच का हाथियों, राणा प्रताप तथा झाला के युद्धों का महत्त्वपूर्ण विवरण छोड़ दिया है। मेवाड़ी वीरों की मार से जब शाही सेना में भगदड़ मची तो वह कई मील तक बनास नदी के आगे 10-12 मील तक भागती ही चली गयी। तभी मिहतर खाँ ने यह हाँक लगायी कि अजमेर से खुद अकबर मदद के लिए आ गया है। इसको सुनकर भागती हुई सेना में कुछ हिम्मत बँधी और सैनिक फिर युद्ध के लिए तत्पर होकर आगे बढ़े। यहाँ से युद्ध ने दूसरे चरण में प्रवेश किया। हाथियों का युद्ध शुरू हुआ। मेवाड़ी सेना का गजराज 'लूना' मुगल सेना पर कहर ढा रहा था। हुसेन खाँ ने जो मुगल गजसेना का प्रमुख था, अब राणा की सेना की बाढ़ रोकने

के लिए अपने हाथियों को युद्ध में झोंक दिया। जमाल खाँ फौजदार ने मुगल दल के प्रसिद्ध गजमुक्ता हाथी को 'लूना' से टक्कर लेने के लिए बड़े जोश से आगे बढ़ाया। प्रबल आक्रमण था किन्तु प्रतिरोध और प्रत्याक्रमण प्रबलतर साबित हुआ और 'लूना' की असह्य मार से घायल 'गजमुक्ता' अन्ततः भाग खड़ा हुआ। इसके बाद ही बन्दूक की गोली से 'लूना' का महावत मारा गया। बिना महावत का 'लूना' फिर जिस-तिस को रौंदते हुए एक तरफ निकल गया। फिर 'गजराज' पर सवार कमाल खाँ तथा 'रणमौंदर' पर सवार पंजू ने महाराणा को चेतक की तरह ही प्रिय और विख्यात हाथी 'राम प्रसाद' पर आक्रमण कर दिया। राम प्रसाद अपने दोनों प्रतिद्वन्द्वियों को आक्रान्त कर परास्त ही करने वाला था कि बन्दूक की गोली से उसका भी महावत खेत रहा। एक तीर मर्मस्थान पर हाथी को भी लगा और दोतरफा वार तथा तीर से घायल हाथी जमीन पर गिर पड़ा। तब शाही सेना के महावत पंजू ने कमाल की फुर्ती से अपने हाथी पर ही छलाँग लगायी और इसके पहले कि 'राम प्रसाद' सँभलता या प्रताप की सेना का कोई दूसरा महावत उसे सँभालता पंजू ने उसे हाँककर अपनी ओर कर लिया। इस हाथी को अकबर महाराणा से एक बार माँग चुका था जिसे उन्होंने अस्वीकार कर दिया था। बाद में अकबर ने इस हाथी को ससम्मान 'पीरप्रसाद' नाम से अपनी सेना में रखा।

इधर राजचिह्न के साथ चेतक पर आरूढ़ महाराणा अद्‌भुत पराक्रम से लड़ रहे थे। उन्हें सात घाव लगे थे। चेतक भी घायल हो चुका था। इतिहासकार के मतानुसार 'मृगों' के झुण्ड में भूखे शेर के समान महाराणा सजातीय शत्रु मुगल सेनापति मानसिंह को ढूँढ़ते हुए शत्रु सैन्य में कहर ढाते हुए निर्भय विचरण कर रहे थे, तभी उन्होंने देखा सरदारगढ़ का वीर भीम सिंह मुगलसेना को चीरता हुआ दूर गजारूढ़ मानसिंह के पास पहुँच गया। घोड़े की रिकाब पर खड़े होकर उसने बर्छे से मानसिंह पर प्रहार किया। किन्तु मानसिंह फुर्ती से झुककर वार बचा गया। भीम घिर चुका था। अतः तलवार से बीसियों को मौत के घाट उतार कर खुद भी वीरगति को प्राप्त हुआ। महाराणा ने यह दृश्य देखा। चेतक को इशारा किया और हर तरफ बरसती तीरों, तलवारों की परवाह किये बिना शत्रु सेना के मध्य में भारी खतरे में व्यूहबद्ध मानसिंह के पास पहुँच गये। स्वामिभक्त चेतक ने भी महाराणा का आशय समझकर हाथी के मस्तक पर अगले दोनों पैर टिका दिये। राणा ने भाले से एक भरपूर वार किया। मानसिंह हौदे में दुबक गया था। वार से हौदे का पिछला खम्भा टूट गया। फिर महाराणा ने कटार से वार किया। उन्हें लगा निशाना ठीक बैठा है। चेतक ने पैर नीचे किये। हाथी के दाँत में बँधी तलवार से उसकी एक टाँग बुरी तरह जख्मी हो गयी। राणा चौतरफा शत्रुओं से घिर चुके थे। प्रहार पर प्रहार झेल रहे थे। धरती लाशों से पटती जा रही थी। हजारों से अकेले लड़ते रहे थे। राणा तलवार से पराक्रम का महाकाव्य लिख रहे थे। कछवाहा माधो सिंह ने अपने घुड़सवारों के साथ राणा को जीवित या मृत पकड़ने के लिए घेरा और तंग किया। अपने पराक्रम और रण-कौशल के लिए प्रसिद्ध बहलोल खाँ ने तब महाराणा के सिर को लक्ष्य कर एक जबर्दस्त प्रहार किया। किन्तु राणा का रण-कौशल भी, जिससे उन्होंने मुकाबला किया- अद्‌भुत था। अगले ही क्षण एक ही वार में

घोड़े सहित महाबली बहलोल जमींदोज था लेकिन महाराणा पर इस पराक्रम के बावजूद खतरा बढ़ता जा रहा था। युद्ध की हवा भी जो पहले उनके पक्ष में थी अब उनके विरुद्ध बहने लगी थी। वे तीन बार शत्रु के घेरों को तोड़ कर निकले किन्तु फिर-फिर घिर जाते थे। झाला सरदार ने आसन्न खतरे को पहचान लिया। हिन्दुआ-सूर्य खतरे में था। 'मेवाड़ की आशा' खतरे में था। फिर तो राजपूत स्वभाव के पवित्रतम कृत्य का निश्चय करते उसे समय नहीं लगा। घोड़ा बढ़ाकर वह राणा के समीप पहुँचा और युद्ध में व्यस्त राणा कुछ समझें इसके पहले ही वह उनका राजचिह्न उतार कर स्वयं ध ारण कर मुगल सेना को अपनी ओर आकर्षित करता हुआ बगल में बढ़ चुका था। अब तक अनेक स्वामिभक्त सामन्त और सैनिक भी उनके पास पहुँच चुके थे। राजचिह्न हट जाने से उन पर प्रतिपक्ष का दबाव ढीला पड़ गया था, फिर भी राणा युद्धस्थल छोड़ने को तैयार नहीं थे। किन्तु हकीम खाँ सूर आदि ने चेतक का लगाम अपने हाथ में लेकर घाटी की ओर उसका मुँह मोड़ दिया। राणा युद्धस्थल से घाटी में सुरक्षित स्थान की ओर बढ़ रहे थे। उन्हें पहचान कर दो मुगल घुड़सवारों ने उनका पीछा किया। घायल स्वामिभक्त चेतक ने छलाँग लगाकर एक पहाड़ी नाला पार किया। किन्तु अब वह निढाल होकर वहीं पर गिर पड़ा। अपने अनन्य साथी, अनेक वीरकर्मों के साक्षी, महान् चेतक को अश्रुपूरित नयनों से महाराणा ने विदा दी। उसने स्वामी की गोद में सिर रखकर दम तोड़ दिया। सुरक्षित स्थान की ओर बढ़ते राणा के पीछे दो मुगल सवारों के साथ एक आदमी और लग गया था। यह महाराणा का छोटा भाई शक्ति सिंह था। वह भी मुगलों की ओर से राणा के विरुद्ध लड़ने आया था। किन्तु प्रताप की देशभक्ति ने उनके अतुलनीय साहस और पराक्रम ने तथा मुगलों के मेवाड़ तथा राणा विरोधी तानों ने उसकी आँखें खोल दीं। खून ने जोर मारा। भायप जाग उठा। राणा का पीछा करने वाले दोनों मुगल सवारों को घात लगाकर उसने मार गिराया और लज्जित, पश्चातापयुक्त तथा क्षमा प्रार्थी की मुद्रा में वह सविनय राणा से जा मिला। विह्वल राणा ने उसे गले लगा लिया। राम और भरत के मिलाप के बाद यह दूसरा उदाहरणीय भ्रातृ-मिलन था। उधर युद्ध भी वीरवर झाला के उत्सर्ग के बाद समाप्त हो गया। इतिहास साक्षी है कि मुगलों की तथाकथित जीत संख्या और साधनों की जीत थी। वीरता और रण-कुशलता की दृष्टि से प्रताप अपराजेय रहे। मौलाना मुहम्मद हुसैन आजाद ने इस बड़े भारी युद्ध का हाल बताते हुए लिखा है- 'नमक हलाल मुगल और मेवाड़ के शूरमा ऐसे जान तोड़कर लड़े कि हल्दी घाटी के पत्थर ईंगुर हो गये'.......(मेवाड़ियों की) यह वीरता ऐसे शत्रुओं के सामने क्या कर सकती थी जिसके साथ असंख्य तोपें और रहकले आग बरसाते थे और ऊँटों के रिसाले आँधी की तरह दौड़ते थे। हल्दीघाटी का युद्ध निर्णायक युद्ध नहीं था। यह परिणामविहीन युद्ध महत्त्वाकांक्षी अकबर और स्वदेश स्वजाति तथा स्वधर्म की स्वतन्त्रता के लिए जूझ रहे स्वाभिमानी प्रताप के बीच लम्बे काल तक चलने वाली लड़ाई का प्रारम्भ ही था। प्रताप रणनीतिवश युद्ध-क्षेत्र से हटे जरूर थे किन्तु उन्होंने हिम्मत नहीं हारी थी। वे और दृढ़ता तथा उत्साह से रणनीति बदल कर पहाड़ों में चले गये। भारवि ने ठीक ही लिखा है-

''परैरपर्यासितवीर्यसम्दां पराभवोप्युत्सव एव मार्निनाम्।''

''शत्रु जिसके पराक्रम को नष्ट न कर सका हो ऐसे स्वाभिमानियों के लिए पराजय भी उत्सव ही है।'' प्रताप को परास्त और बन्दी न कर सकने के लिए अकबर ने मानसिंह की प्रताड़ना की। 23 जून को हल्दीघाटी के युद्ध के बाद मानसिंह ने 'गोगुन्दा' को अपने अधिकार में ले लिया था। प्रताप की गतिविधियों का केन्द्र अब कोल्यारी था। सितम्बर सन् 1576 तक प्रताप ने गोगुन्दा पुनः हथिया लिया। 13 अक्टूबर सन् 1576 को अकबर ने स्वयं गोगुन्दा के लिए कूच किया। हल्दीघाटी के अनुभव से राणा ने रणनीति बदल दी थी। अब वे छापामार-युद्ध करते थे। उनकी सेना में अप्रशिक्षित भील ही अधिक थे। वे मैदानी लड़ाई के बजाय पहाड़ी लड़ाई ही कर सकते थे। हल्दीघाटी की हार का भी तात्कालिक कारण यही था। प्रारम्भ में जब तक लड़ाई पर्वतीय क्षेत्र में हुई राणा जीतते रहे। लेकिन जैसे ही भागती हुई मुगल सेना का पीछा कर उनकी सेना मैदानी हिस्से में पहुँची मैदानी युद्ध के अभ्यस्त थोड़े से वीर राजपूत विशाल शाही सेना का भयंकर, कल्पनातीत संहार करने के बाद भी देर तक सामना नहीं कर सके। बाकी तीर-कमान वाली भीलों की सेना, प्रशिक्षित तथा तोपखानों से लैस, विशाल सेना से मैदान में भला क्या मुकाबला करती? अस्तु, अकबर आया। प्रताप ने उसे निर्विरोध गोगुन्दा जाने दिया। प्रताप को बन्दी बनाने के लिए उसने भगवन्तदास, भगवानदास और कुतुबुद्दीन आदि को सेना सहित भेजा। किन्तु प्रताप किसी के हाथ नहीं लगा। उल्टे भीलों से अनेकत्र टक्कर में उन्हें धन-जन की भारी क्षति उठानी पड़ी। निराश अकबर ने उस पर्वतीय प्रदेश की नाकेबन्दी कर दी ताकि प्रताप निकल न पायें। लेकिन उसकी यह योजना भी निष्फलवती रही। खीझकर उसने प्रताप समर्थक बूँदी, सिरोही, डूँगरपुर और बाँसवाड़ा पर आक्रमण कर उन्हें जीत लिया। फिर भी अकबर को निराश ही लौटना पड़ा। प्रताप अब भी स्वतन्त्र था और अकबर के जाते ही पहाड़ों से बाहर आकर उसने मेवाड़ राज्य के उन सारे प्रदेशों को जिन्हें अब की अकबर जीत गया था फिर अपने अधिकार में कर लिया। अभियान से लौटा अकबर अभी मेरठ में ही था कि प्रताप की पुनर्विजय का समाचार उसे मिला। अबकी उसने शाहबाज खाँ को सेनापति बनाकर एक सेना फिर मेवाड़ भेजी। सैयद हासिम, सैयद राजू पायन्दा खाँ, मानसिंह और भगवानदास जैसे कई सेनापति साथ थे। लेकिन अकबर को लगा यह सेना कम है। उसने शेख इब्राहिम खाँ के नेतृत्व में एक और टुकड़ी भेजी। अविश्वास और मनमुटाव के कारण बाद में शाहबाज खाँ ने भगवानदास और मानसिंह को बीच रास्ते से वापस कर दिया। 5 जून 1578 ई. को शाहबाज खाँ ने कुम्भलगढ़ पर हमला किया। प्रताप इन दिनों यहीं थे। पर्याप्त रसद और पेयजल संकट के कारण प्रताप ने किला छोड़ दिया। किले के अन्दर की प्रजा भामाशाह के साथ मालवा चली गयी। कुम्भलगढ़ को जीतता हुआ शाहबाज खाँ गोगुन्दा और उदयपुर तक चला गया। अकबर की आँखों में चढ़ने के लिए उसने प्रताप को घेरने और बन्दी बनाने की बड़ी कोशिश की किन्तु निष्फल रहा। प्रताप इस समय चूलिया में थे। बराबर संघर्ष से उत्पन्न साधनहीनता में वन-वन घूमते हुए स्वतन्त्रता की अलख जगा रहे थे। 'जो हठि राखै

धर्म की तिहिं राखै करतार' उक्ति चरितार्थ हुई। प्रताप की तपस्या पूरी हुई। भामाशाह ने आर्थिक सहायता ला दी। फिर साधन मिला। सैन्य-संघटन हुआ और प्रताप ने हमला कर दिवेर के शाही थाने पर अपना अधिकार कर लिया। फिर हमीरसर और कुम्भलगढ़ भी सन् 1578 में ही जीत लिए। इसे ही अपनी पर्वतीय राजधानी बनाकर उन्होंने गोगुन्दा, उदयपुर, छप्पन पहाड़ियाँ, जावर और बाडाण के पर्वतों पर पुन: अधिकार किया। आगे चावण्ड पहुँचकर उन्होंने सब प्रकार से अपने लिए सुरक्षित समझ कर उसे ही मेवाड़ की नयी राजधानी बनाया। इधर से निश्चिन्त होकर उन्होंने चन्द्रसेन की सहायता मे डूँगरपुर और बाँसवाड़ा को भी जिसे अकबर जीत गया था पुनः अपने अधिकार में ले लिया।

प्रताप की निरन्तर सफलताओं के समाचार से अकबर बौखला गया। उसने दिसम्बर सन् 1578 में शाहबाज खाँ को फिर भेजा। जून 1579 में प्रताप ने प्रत्याक्रमण कर उसकी उपलब्धियों को व्यर्थ कर दिया। नवम्बर सन् 1579 में शाहबाज खाँ ने फिर हमला किया जिसे सन् 1580 में प्रताप ने प्रत्याक्रमण कर निष्फल कर दिया। शाहबाज खाँ खाली हाथ लौटा। नाराज अकबर ने कविवर रहीमदास खानखाना को अजमेर का सूबेदार बनाकर भेजा और प्रताप को पकड़ने या परास्त करने की जिम्मेदारी दी। रहीमदास इसके पूर्व भी अकबर और शाहबाज खाँ के साथ प्रताप के विरुद्ध अभियानों में आ चुके थे। अजमेर से कूचकर उन्होंने शेरपुरा में डेरा डाला। प्रताप के पुत्र अमरसिंह ने अचानक हमला कर दिया। खानखाना के साथ की सारी सेना अप्रत्याशित आक्रमण से तितर-बितर हो गयी। खजाना और खानखाना का परिवार भी अमरसिंह के हाथ लगा। पता चलते ही प्रताप ने खानखाना की बेगम को ससम्मान मुगल खेमे में वापस कर दिया। राणा की इस चारित्रिक महानता से कवि रहीमदास पर ऐसा असर हुआ कि फिर उसने राणा के विरुद्ध अपना हथियार नहीं उठाया। प्रताप के विरुद्ध फिर अकबर ने जगन्नाथ कछवाहा के नेतृत्व में दिसम्बर सन् 1584 में एक सेना भेजी। अपने अभियानों में निष्फल यह सेना भी सन् 1587 ई. में निराश होकर वापस चली गयी। इसके बाद मुगलों ने फिर इधर प्रताप के विरुद्ध अभियान की हिम्मत नहीं की। अब तक अपने निरन्तर संघर्षों से राणा प्रताप ने उतना सारा राज्य फिर से अपने अधिकार में कर लिया था जितना उत्तराधिकार में उन्हें मिला था और अकबर तथा उसके सेनापतियों ने प्रताप से जितना कुछ जीता था क्रमशः सब खो दिया। युद्ध से विश्राम पाते ही प्रताप ने अपनी रचनात्मक तथा प्रशासकीय प्रतिभा को भी प्रमाणित किया। युद्ध में साथ रहे, काम आये वीरों एवं उनके परिवारों का सम्मान किया गया, उन्हें जागीरें दी गयीं। ग्राम्य और नगर जीवन जो युद्धों के कारण अस्त-व्यस्त हो गया था फिर से व्यवस्थित किया गया। नयी राजधानी चावण्ड की भूमि बड़ी उर्वर थी। मालवा और गुजरात के व्यापारिक केन्द्र पास थे। फलतः कृषि और वाणिज्य की प्रचुर उन्नति हुई। उस समय बने दुर्ग और महल भी स्थापत्यकला के सुन्दर उदाहरण हैं। कमलनाथ, उबेश्वर, चावण्ड और जावर आदि स्थानों की स्थापत्यकला दर्शनीय है। महाराणा स्वयं भी कवि थे। तत्कालीन 'पद्मिनी चरित्र' और 'दुरसा

आहड़ा' उत्कृष्ट साहित्यिक कृतियाँ हैं। चित्रकला की भी उस समय बड़ी उन्नति हुई। 'चावण्ड चित्र शैली' के चित्र जो संग्रहालयों में अब भी सुरक्षित हैं कई दृष्टियों से उल्लेखनीय हैं। महाराणा की 11 रानियाँ थीं जिनसे 17 राजकुमार हुए थे। इस प्रकार युद्ध और शान्ति दोनों कालों में यशस्वी जीवन जीकर महामनस्वी महाराणा ने उत्तराधिकारी तथा सामन्तों को जातीय गौरव की रक्षा की शपथ दिलाकर माघ सुदी एकादशी सं. 1653 वि. तदनुमार 19 जनवरी सन् 1597 ई. को कुल 57 वर्ष की अवस्था में भौतिक देह छोड़ दी। एक बार जब वे शिकार में धनुष चढ़ा रहे थे, धनुष टूट गयी। उसका एक नुकीला कोना उनके पेट में धँस गया। कहते हैं यही उनकी असामयिक मृत्यु का कारण बना। मृत्यु ऐसे वीर का वरण कर धन्य हो गयी। प्रताप का यश: शरीर आज भी अक्षत है। वह एक ऐसे इतिहास पुरुष हैं जिनसे पीढ़ियाँ प्रेरणा लेती रहेंगी। चावण्ड से डेढ़ मील दूर बंडावली गाँव के पास एक नाले के किनारे महाराणा की अन्त्येष्टि की गयी। वहाँ उनकी स्मृति में संगमरमर की 8 खम्भों वाली एक छतरी बनी हुई है जो अब अच्छी स्थिति में नहीं है। कवि के शब्दों में-

निकल रही जिसकी समाधि से स्वतन्त्रता की आगी।
यहीं कहीं पर छिपा हुआ है वह स्वतन्त्र वैरागी॥

पुनश्च कवीन्द्र रवीन्द्रनाथ के शब्दों में-

जाहार अमर स्थान प्रेमेर आसने, क्षति तार क्षय नय मृत्यूर शासने।
देशेर माटिर थेको निलो जारे हरि, देशेर हृदय तारे राखियाछे वरि॥

अर्थात्, जिनका स्थान प्रेम के आसन हृदय में हैं, मृत्यु के शासन-चक्र में उनकी क्षति कोई मायने नहीं रखती। देश की माटी ने जिसे अपने भीतर छिपा लिया है देश के हृदय ने उसे सर-आँखों पर बिठा लिया है।

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद्
कार्य एवं कार्यपद्धति

''हमारा लक्ष्य ऊँचा और उदात्त है, कार्यपद्धति एकमेव और अद्‌भुत है, निष्ठा असंदिग्ध है, साधना में सातत्य है, समर्पण शर्तहीन है, किन्तु मार्ग कंटकाकीर्ण है। इस पथ पर चलते-चलते कभी-कभी पथ लम्बा और पाथेय अपथ्य लगने लगता है। ऐसा ''किसी एक'' के साथ नहीं ''किसी एक'' के अतिरिक्त अधिकांश लोगों के साथ होता है। जिस ''किसी एक'' के साथ ऐसा नहीं होता वही साधना के तपोवन का दीप होता है। जिस 'किसी एक' को आशा-निराशा, सफलता-असफलता और साधक-बाधक परिस्थितियाँ उसके ध्येय पथ से विचलित नहीं कर पाती, तपते मार्ग की हल्की छाया को मंजिल मानकर जो संतुष्ट नहीं होता, उस वीरव्रती की कालजयी साधना और सनातन सोच ही ध्येय पथ के पथिकों की शक्ति होती है। जितना बड़ा लक्ष्य, उतनी ही बड़ी प्रेरणा और उतना ही लम्बा पथ। छोटे रास्ते से बड़ा काम नहीं हो सकता। परिवर्तन बातों से नहीं आता, परिवर्तन की पहली शर्त है भविष्य के प्रति पूर्ण आस्था और अपने कर्म पर भरोसा। निर्माण निहोरा देने से नहीं होता, निर्माण का प्रथम बिन्दु है साध्य का स्पष्ट ज्ञान, साधन, विधा और मार्ग पर विश्वास। वर्तमान को अतीत की दृष्टि से नहीं, अतीत को आधुनिक सन्दर्भ प्रदान करने से ही भविष्य युगानुकूल वर्तमान बनकर धरती पर उतरता है।''

संकेतरेखा

युगपुरुष गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज ने 1932 ईस्वी में ब्रिटिश शासन में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् की स्थापना की। महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् की स्थापना का उनका उद्देश्य स्पष्ट था। वे भारत में ब्रिटिश शासन द्वारा प्रारम्भ की गई शिक्षा व्यवस्था के प्रबल विरोधी थे। महन्त जी महाराज की स्पष्ट धारणा थी कि शिक्षा राष्ट्रीय विकास (सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक) का एक प्रबल साधन है। अत: राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली के विकास को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जानी चाहिए, जो कि भारतवासियों में देश की प्राचीन सभ्यता एवं संस्कृति पर आधारित एक राष्ट्रीय व्यक्तित्व का विकास कर सके। महन्त जी ने ब्रिटिश शासन द्वारा स्थापित एवं विकसित की जा रही शिक्षा पद्धति का मूल्यांकन करते हुए कहा था कि वर्तमान भारतीय शिक्षा पद्धति का वास्तविक दोष यह है कि वह लार्ड टी.वी. मैकाले के 2 फरवरी 1835 ई. के कुख्यात मिनट पर आधारित है, जिसका मुख्य उद्देश्य शिक्षा के माध्यम से भारतीयों का एक ऐसा वर्ग बनाने का था जो ब्रिटिश शासन तथा करोड़ों भारतीयों के बीच मात्र द्विभाषिए का काम करे तथा वे रक्त

एवं रंग में तो भारतीय हों, किन्तु रूचियों, विचारों, नैतिकता तथा बुद्धि की दृष्टि से अंग्रेज हों। महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज द्वारा यह भी रेखांकित किया गया कि ब्रिटिश शासन की शिक्षा नीति का एक और प्रमुख उद्देश्य प्रत्येक भारतीय वस्तु को निकृष्ट ठहराना तथा भारतीयों में अपनी संस्कृति एवं अपनी परम्परा के प्रति हीनभाव पैदा करना था।

वस्तुतः भारतीय संस्कृति के अनुरूप आजाद भारत पुनर्प्रतिष्ठित एवं पुनर्निमित किया जा सके, इस उद्देश्य से भारत केन्द्रित शिक्षा नीति एवं तद्नुरूप प्रतिमान खड़ा करने का कार्य बीसवी शताब्दी के प्रथम चतुर्थांश में ही प्रारम्भ हो गया था। अनेक भारतीय मनीषियों ने इस दिशा में प्रयत्न प्रारम्भ कर दिए थे। स्वामी दयानन्द सरस्वती (1886, दयानन्द एंग्लोवैदिक संस्थान), महामना मदन मोहन मालवीय (1916, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय), रविन्द्र नाथ टैगोर (1921, विश्वभारती विश्वविद्यालय), और महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज (1932, महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद) एवं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (1950 ई., सरस्वती शिशु मन्दिर) ने अपने-अपने प्रयत्न से भारतीय शिक्षा नीति की वैचारिकी के साथ-साथ उसका प्रतिमान खड़ा किया। महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् की स्थापना इसी प्रयत्न का परिणाम था। भारत के आजाद होते-होते महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् द्वारा प्राथमिक से लेकर उच्च शिक्षा तक के शिक्षा संस्थान (महाराणा प्रताप इण्टर कालेज, महाराणा प्रताप महाविद्यालय एवं महाराणा प्रताप महिला महाविद्यालय) प्रतिष्ठित किए जा चुके थे। महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज के प्रयत्न से 1950 ई. में गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर का शिलान्यास भी इसी प्रयत्न की कड़ी का एक हिस्सा था।

महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज द्वारा प्रतिपादित वैचारिक अधिष्ठान पर महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के अन्तर्गत शिक्षण-प्रशिक्षण संस्थाओं की स्थापना एवं उनका विकास उनके पट्टशिष्य गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने अनवरत जारी रखा। वर्तमान गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त योगी आदित्यनाथ जी महाराज (माननीय मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश) द्वारा महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के मूल उद्देश्यों के अन्तर्गत अपनी शिक्षण-प्रशिक्षण संस्थाओं को युगानुकूल विकसित करने के भगीरथ प्रयत्न के हम सभी साक्षी हैं। वे निरन्तर इस प्रयत्न में लगे हुए हैं कि महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् की संस्थाएँ सरकार एवं समाज के लिए मानक बनें। वे संस्थाध्यक्षों की सभी बैठकों में यह कहते रहते हैं कि महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के मूल उद्देश्य की पूर्ति में सतत सक्रिय रहें। हमारी संस्थाएं लोक-कल्याण के पवित्र उद्देश्य की भी पूर्ति करें। संस्थाओं की पूरी कार्य-प्रणाली पूर्णतः पारदर्शी एवं लोक-कल्याण केन्द्रित होनी चाहिए। संस्थाएं इस बात का मूल्यांकन अवश्य करें कि भारत की वर्तमान एवं भावी पीढ़ी का व्यक्तित्व गढ़ने में हम कितना सफल हैं।

महन्त जी महाराज के प्रयत्नों से महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् की संस्थाएं अनवरत विकास-पथ पर अग्रसर हैं तथापि उनका यह निर्देश है कि हम चाहे जितना अच्छा बन चुके हो,

और अच्छा बनने की गुन्जाइश सदा बनी रहती है। हमें नित-नूतन बने रहने और जहाँ खड़े हैं वहाँ से एक कदम आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है। महन्त योगी आदित्यनाथ जी महाराज द्वारा निरन्तर जो निर्देश प्राप्त होते रहे हैं, उनका सार संक्षेप यहाँ दुहराया जाना उचित होगा -

1. श्री गोरक्षपीठ द्वारा स्थापित महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् द्वारा संचालित संस्थाओं की विशिष्ट पहचान होनी ही चाहिए।
2. संस्थाध्यक्ष/प्राचार्य/निदेशक/प्रभारी स्वयं प्रतिमान बनें।
3. संस्था के सभी पदाधिकारी/सदस्य की प्राथमिकता में संस्था भी होनी चाहिए। जैसे आप हम अपने बारे में सोचते रहते हैं, अपनी बेहतरी के लिए चिन्तित रहते हैं, यही सोच-चिन्ता संस्था के सम्बन्ध में भी होनी चाहिए। संस्था हम सबके जीवन का हिस्सा बने।
4. संस्था प्रमुखों की कार्यप्रणाली पारदर्शी एवं निष्पक्ष होनी चाहिए।
5. अनुशासन किसी भी शिक्षा-चिकित्सा संस्था की आत्मा है। यह उपर से नीचे की ओर लागू होता है। स्वअनुशासित संस्थाध्यक्ष ही अपने शिक्षक/चिकित्सक/ कर्मचारी को अनुशासन का पाठ पढ़ा सकता है। स्वअनुशासित शिक्षक अपने विद्यार्थियों को तथा चिकित्सक अपने कर्मचारियों, मरीजों के सहयोगियों को अनुशासन का पाठ पढ़ा सकता है। अतः स्वअनुशासित परिसर संस्कृति का संस्था में विकास करें।
6. समय-पालन स्वअनुशासन की प्रथम शर्त है। अतः संस्था में समय से उपस्थिति एवं पूरे समय रहकर कार्य करना धर्म भी है और अनुशासन भी।
7. सामूहिक अर्थात् टीम भावना से कार्य करने की पद्धति सभी संस्थाएं विकसित करें।
8. प्रत्येक नए सत्र के प्रारम्भ के पूर्व विस्तृत वार्षिक योजना एवं शैक्षिक पंचांग बनाएँ तथा इसे शत-प्रतिशत लागू करें।
9. महापुरुषों की जयन्तियों पर अवकाश न कर संस्था में कार्यक्रम किए जाएँ, सम्बन्धित महापुरुष के प्रेरणास्पद जीवन से विद्यार्थियों को परिचित कराया जाए।
10. पर्व-त्योहार के अवकाश की पूर्व संध्या पर पर्व-त्योहार का महत्त्व एवं उसकी उपादेयता से विद्यार्थियों को प्रेरित किया जाना चाहिए।
11. पुस्तकालय एवं प्रयोगशाला को अत्याधुनिक बनाते रहना चाहिए।
12. पठन-पाठन में अत्याधुनिक तकनीकों एवं उपकरणों का उपयोग करें।
13. पठन-पाठन के नित-नूतन मौलिक प्रयत्न करते रहना चाहिए।
14. विद्यार्थियों का समग्र व्यक्तित्व विकास शिक्षण संस्था का उद्देश्य है। अतः इस दृष्टि से संस्था

की परिसर संस्कृति विकसित की जानी चाहिए।

15. स्वच्छता उपासना की प्रथम शर्त है। शिक्षा-चिकित्सा संस्थान सेवा के केन्द्र हैं। उपासना के अधिष्ठान है। सेवाभावी तपस्वियों का आश्रम है। अत: संस्था अपने घर/आश्रम/मन्दिर जैसा ही साफ-सुथरी रहनी चाहिए। पेड़-पौधे संस्था को प्राण-वायु देते हैं। उनकी उपासना भी संस्था में दिखनी चाहिए। हरा-भरा एवं साफ-सुथरा परिसर ही उत्कृष्ट कार्य का परिवेश दे सकता है।

16. शिक्षण-प्रशिक्षण चिकित्सा संस्था के आस-पास की बस्तियाँ/मुहल्ले/गाँव में स्वच्छता, स्वास्थ्य, शिक्षा सहित विविध राष्ट्रीय-सामाजिक जागरुकता हमारी सम्बन्धित संस्था की जिम्मेदारी है। शिक्षक-चिकित्सक-विद्यार्थी सेवा एवं सामाजिक कार्य के सहभागी बनने चाहिए।

17. प्रार्थना-सभा (राष्ट्रगान, राष्ट्रगीत, सरस्वती वन्दना, ईशवन्दना इत्यादि) शिक्षण-प्रशिक्षण संस्था का प्रकाशदीप है। पूरी श्रद्धा एवं समर्पण भाव से प्रतिदिन की प्रार्थना-सभा सम्पन्न की जानी चाहिए।

18. राष्ट्रप्रेम, अपनी संस्कृति के प्रति प्रेम एवं गौरव का भाव, अपने समाज-अपनी परम्परा के प्रति श्रद्धाभाव, संस्कार, नैतिकता जैसे जीवन मूल्यों का पाठ संस्थाओं में विविध तौर-तरीकों से पढ़ाया ही जाना चाहिए।

19. ग्रीष्मावकाश में संस्थाध्यक्ष अगले सत्र की तैयारी करें। मरम्मत एवं निर्माण, इसी बीच पूरे किए जाने चाहिए।

20. सत्रान्त से पूर्व संस्थाध्यक्ष शिक्षकों-कर्मचारियों के साथ बैठकर बीते सत्र की समीक्षा करें। इसका मूल्यांकन करें कि सत्रारम्भ में बनायी गयी वार्षिक योजना पूरी हुयी या कहीं कमी रह गयी, कारण एवं निवारण तय कर अगले सत्र की वार्षिक योजना में उसका समायोजन करें।

21. संस्था के पदाधिकारी तथा सदस्य प्रत्येक अगले दिन, बीते दिन से कुछ नया करें, कुछ नया सीखें अर्थात् संस्था प्रत्येक अगले दिन पिछले दिन की अपेक्षा कुछ नया अर्जित करे।

उपर्युक्त महत्त्वपूर्ण निर्देशों के आलोक में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् की संस्थाओं का संचालन होता है। महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् की संस्थाओं में कार्य करने वाले हम सभी महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् का उद्देश्य, तद्नुरूप विकसित कार्यपद्धति एवं अपने संस्थापकों-मार्गदर्शकों की मनसा-वाचा-कर्मणा से परिचित हैं। हमें क्या करना है?, कैसे करना है? क्यों करना है? यह हम जानते हैं और हमें जानना भी चाहिए। हम जानते हैं कि महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् की संस्थाएँ राष्ट्र निर्माण, लोक कल्याण और व्यक्ति निर्माण के उद्देश्य से स्थापित हैं। इसी उद्देश्य से संचालित

की जाती हैं। इस प्रकार स्वभाविक है कि हमारी संस्थाएँ विशिष्ट हैं, हमारा उद्देश्य विशिष्ट है। हमारी कार्यपद्धति भी विशिष्ट है।

हमारे संस्थापक गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज एवं गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज और वर्तमान संचालक गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त योगी आदित्यनाथ जी महाराज इस बात से अनभिज्ञ नहीं थे अथवा नहीं है कि जैसा समाज होगा वैसी ही संस्था होगी, वैसे ही शिक्षक-चिकित्सक होंगे, वैसे ही कर्मचारी होंगे। किन्तु उनका मानना है कि हम इस सामान्यीकरण के लिए नहीं बने हैं। हम प्रतिमान खड़ा करने, प्रकाश स्तम्भ बनने एवं धारा के प्रतिकूल चलने के लिए बने हैं। महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के नीति-नियन्ता यह भी मानते हैं कि वर्तमान परिवेश में शिक्षण-प्रशिक्षण एवं चिकित्सा संस्थान को आदर्श रूप में संचालित करना बहुत कठिन है, किन्तु वे यह भी मानते हैं कि यह असम्भव नहीं। यदि वे आदर्श संस्था का संचालन असम्भव मानते तो शिक्षण- प्रशिक्षण-चिकित्सा संस्थाओं को खोलते ही नहीं और यदि कुछ संस्थाएँ स्थापित ही हो गयी तो वर्तमान में उस शृंखला को नहीं बढ़ाते। जबकि हम सभी जानते हैं कि प्रतिवर्ष कोई न कोई नयी संस्था की स्थापना हो रही है अथवा नया पाठ्यक्रम प्रारम्भ होता है।

वर्तमान युग में अंधेरे को धिक्कारने की बजाय प्रकाश का एक दीपक जलाने की परम्परा के वाहक श्री गोरक्षपीठ के मनीषियों की छत्र-छाया में कार्य करने का सौभाग्य प्राप्त हम सभी शिक्षक-चिकित्सक-कर्मचारी अन्यों से भिन्न ऐसे तपस्वी हैं जिनके समक्ष अपने-अपने क्षेत्र में प्रतिमान बने रहने की चुनौती है। प्रतिमान खड़ा करने की चुनौती है। हमारा लक्ष्य ऊँचा और उदात्त है। हमारी भूमिका साधना के तपोवन में दीप के समान है। हम ऐसे पथ के पथिक हैं जिस पथ पर साधना में सातत्य चाहिए, समर्पण शर्तहीन होनी चाहिए, विचार सनातन के आलोक में युगानुकूल होना चाहिए। आशा-निराशा एवं सफलता-असफलता हमें अपने ध्येय पथ से विचलित न कर सके ऐसा हमारा दृढ़व्रती मानस चाहिए। स्पष्ट है कि महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् की संस्थाओं के हम सभी तपस्वियों का मार्ग कठिन और कंटकाकीर्ण है। हमारा कार्य कठिन है, धारा के प्रतिकूल खड़ा होने वाला है, शिक्षा-चिकित्सा के क्षेत्र में सेवा-भाव के बल पर प्रतिमान निर्मित करने वाला है, अन्य संस्थाओं के लिए प्रकाश दीप बनने वाला है, राष्ट्र-निर्माण, लोक कल्याण और व्यक्ति निर्माण में हमारी महत्त्वपूर्ण भूमिका निर्धारित करने वाला है। इसीलिए कठिन होते हुए भी अत्यन्त महत्वपूर्ण और बड़ा एवं ईश्वरीय कार्य है। स्वाभाविक है कि यह कार्य तपस्या से होगा, समर्पण से होगा, त्याग से होगा, अपने को गलाकर होगा, अपने को खपाकर होगा, यदि इतना नहीं तो भी सेवाभाव से परिश्रम के बल पर होगा।

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् की संस्थाओं में कार्य करने वाले हम सभी को यह बात समझनी होगी कि हम सामान्य लोग नहीं है, हम बड़े भाग्यशाली हैं, कि ईश्वर ने हमें राष्ट्र-समाज

की सेवा का अवसर प्रदान किया है, हम बड़े मन के लोग हैं, हम सेवाभावी तपस्वी हैं, हम नश्वर जीवन को सार्थक करने वाले लोग हैं, यदि नहीं तो भी ऐसा बनने के प्रयत्न करने वाले साधक हैं। हमें समझना होगा कि हमारा पथ साधना का पथ है, सेवा का पथ है, राष्ट्र-पथ है, और अन्ततः देव पथ है।

भारत-माता को समर्पित इस देवपथ पर चलते समय इस बात का एहसास आवश्यक है कि हम समाज के अंग हैं। हममे से अधिकांश पारिवारिक लोग हैं। अतः परिवार एवं समाज के साथ सामंजस्य बनाए बिना हमारा लक्ष्य पूरा नहीं होगा। हम कुशलतापूर्वक अपना कार्य नहीं कर सकते। अतः दूरगामी लक्ष्य पर नजर रखते हुए परिवार समाज के साथ मिलकर उनसे आचरण-व्यवहार-कार्य में एक-दो कदम आगे रहकर बढ़ते रहना होगा ताकि आदर्श और व्यवहार के बीच समन्वय के साथ-साथ औरों से थोड़ा-थोड़ा आगे रहते हुए अपने साधना पथ पर औरों को भी साथ लेकर बढ़ते रहें। उपर्युक्त भाव-विचार-चिन्तन से निर्मित मानस के मजबूत धरातल पर खड़ा होकर ही हम अपने लक्ष्यानुरूप कार्य एवं कार्यपद्धति का निर्धारण कर सकेंगे।

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के उपर्युक्त वैचारिक अधिष्ठान के आलोक में हमारा अर्थात हमारी संस्था का कार्य एवं कार्यपद्धति स्वाभाविक क्रम में आकार लेने लगती है। शिक्षण-प्रशिक्षण संस्थाओं का उद्देश्य स्पष्ट है कि हमारा कार्य भारतीय ज्ञान-परम्परा से भावी वर्तमान पीढ़ी को दीक्षित करते हुए भारतीय संस्कृति के रंग में रंगे राष्ट्रभक्त नागरिक तैयार करना तथा चिकित्सा एवं अन्य सेवा प्रकल्पों का उद्देश्य लोक-कल्याण के लिए मानवता की सेवा एवं प्रकृति के संरक्षण-संवर्धन में अपना योगदान सुनिश्चित करना तथा शिक्षा-चिकित्सा एवं सेवा के क्षेत्र में औरों को ऐसा करने की प्रेरणा देने का उदाहरण बनना। जिससे की वर्तमान शिक्षा व्यवस्था भारतीय शिक्षा के आदर्श एवं उद्देश्य को पूर्ण करने तथा चिकित्सा संस्थान सेवा कार्य करने का वाहक बने।

हमें अपनी शिक्षण संस्थाओं को आदर्श स्वरूप में बनाए रखने एवं निरन्तर विकसित करने के अहर्निश प्रयत्न करते रहने होंगे। यह तभी सम्भव होगा जबकि हम निरन्तर विचारशील एवं क्रियाशील रहें। समग्रता के साथ स्वमूल्यांकन पद्धति का अनुसरण करें। कोई भी शिक्षण संस्था के आदर्श स्वरूप को बनाए रखने एवं तद्नुरूप विकसित करने के लिए संस्था के सभी घटकों की भूमिका स्पष्ट होनी ही चाहिए। सामान्यतः शिक्षण-प्रशिक्षण संस्था के महत्त्वपूर्ण छः घटक हैं-प्रबन्ध तन्त्र, प्राचार्य अथवा संस्थाध्यक्ष, शिक्षक, कर्मचारी, छात्र एवं अभिभावक।

प्रबन्ध-तन्त्र संस्था का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अंग है। प्रबन्ध तन्त्र जैसा होगा संस्था वैसी ही होगी। संस्था का सैद्धान्तिक स्वरूप प्रबन्ध-तन्त्र ही निर्धारित करता है। प्रबन्ध-तन्त्र संस्था का नीति-नियामक होता है। उसके नेतृत्त्व एवं मार्गदर्शन में ही संस्था पलती-बढ़ती है। संस्था के संसाधन के विकास में प्रबन्ध तन्त्र की भूमिका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। संस्था के विकास, संसाधनों

के यथोचित उपयोग, संस्थाध्यक्ष पर सकारात्मक नियन्त्रण, संस्थाध्यक्ष के माध्यम से संस्था में अनुशासन एवं स्वस्थ कार्य पद्धति के विकास में प्रबन्ध तन्त्र का जैसा योगदान होगा, संस्था का वैसा ही विकास होगा। वर्तमान समय में बड़ी संख्या में स्ववित्तपोषित संस्थाओं एवं अनुदानित संस्थाओं में भी स्ववित्तपोषित पाठ्यक्रमों के संचालन के कारण इनमें आर्थिक अनुशासन एवं वेतन निर्धारण में प्रबन्ध तंत्र का लगभग एकाधिकारी की भूमिका है। सौभाग्य से हम जिस प्रबन्ध-तन्त्र के साथ कार्य कर रहे हैं वह प्रबन्ध-तन्त्र अद्वितीय है। ऐसा प्रबन्ध तन्त्र जो लोक-कल्याण के लिए ही समर्पित है। हिन्दुत्व और राष्ट्रीयता को एकाकार रूप में प्रतिष्ठित करने वाले इस प्रबन्ध-तन्त्र के लिए शिक्षा-चिकित्सा संस्थान मात्र सेवा के माध्यम हैं। यह देश-दुनिया का ऐसा प्रबन्ध-तन्त्र है जो अपनी संस्थाओं का आध्यात्मिक-नैतिक-वैचारिक मार्गदर्शन अपने आचरण-व्यवहार से करता है। प्रबन्ध तंत्र के मुखिया श्री गोरक्षपीठ के पीठाधीश्वर का जीवन एवं उनकी जीवन-दृष्टि हमारी संस्थाओं को दिशा-निर्देश देने का प्रत्यक्ष उदाहरण है। यह ऐसा प्रबन्ध तन्त्र है जो अपनी संस्थाओं को प्रतिवर्ष आर्थिक अनुदान देता है, उनसे आर्थिक लाभ की कल्पना को भी यहाँ जगह नहीं है। हम ऐसे प्रबन्ध -तन्त्र के साथ कार्य करते हैं जहाँ संस्था हित के आलोक में पारदर्शी ढंग से अपना वेतन स्वयं संस्था तय करती है। ऐसे प्रबन्ध-तन्त्र के साथ एवं उसकी संस्था में कार्य करने में यदि संस्था का आदर्श स्वरूप नहीं खड़ा हो पाता तो हम संस्थाध्यक्षों, शिक्षकों एवं कर्मचारियों को अपनी-अपनी भूमिका का स्वमूल्यांकन अवश्य करना चाहिए।

दूसरा महत्त्वपूर्ण घटक संस्थाध्यक्ष (प्राचार्य, प्रधानाचार्य, निदेशक, प्रभारी) है। प्रबन्ध तन्त्र के वैचारिक अधिष्ठान पर परिकल्पित संस्था को वास्तविक स्वरूप देने का कार्य संस्थाध्यक्ष का है। संस्थाध्यक्ष के प्रत्यक्ष नेतृत्व में ही संस्था की पूरी टीम कार्य करती है। संस्थाध्यक्ष अपनी संस्था के शिक्षक-कर्मचारी के साथ मिलकर ही संस्था को उत्कर्ष पर पहुँचा सकता है। किन्तु इसके लिए संस्थाध्यक्ष को स्वयं प्रामाणिक बनना होगा। संस्थाध्यक्ष का स्वयं का जीवन पारदर्शी होना चाहिए। सद्चरित्र, ईमानदार एवं परिश्रमी संस्थाध्यक्ष ही शिक्षकों-कर्मचारियों को प्रेरणा दे सकता है। संस्थाध्यक्ष की दृष्टि स्पष्ट होनी चाहिए। संस्थापकों एवं संस्था के उद्देश्य की ठीक-ठीक समझ एवं उसे प्राप्त करने की दृढ़ इच्छाशक्ति वाला संस्थाध्यक्ष अपनी संस्था में वास्तविक कार्य पद्धति लागू कर पाएगा। एक बात जो हम सभी जानते हैं कि शिक्षकों-कर्मचारियों-विद्यार्थियों से जिस आचरण एवं व्यवहार की संस्थाध्यक्ष अपेक्षा करे अथवा उनके व्यक्तित्व में आचरण एवं व्यवहार का विकास करना चाहे उसे सर्वप्रथम संस्थाध्यक्ष को स्वयं पर लागू करना होगा। इन्हीं बातों को पूज्य महन्त योगी आदित्यनाथ जी महाराज संस्थाध्यक्षों की लगभग सभी बैठकों में कहते रहे हैं। यहाँ मै उन्हीं बातों को मात्र दुहरा रहा हूँ। पूज्य महन्त जी महाराज की स्पष्ट अवधारणा है कि संस्था और संस्थाध्यक्ष पूरक होते हैं। अतः जैसा संस्थाध्यक्ष होगा वैसी ही संस्था होगी। इनमें से किसी एक को देखकर दूसरे को जाना जा सकता है।

शिक्षक शिक्षण-प्रशिक्षण संस्था का तीसरा महत्वपूर्ण घटक है। शिक्षक के सम्बन्ध में पूर्व के व्याख्यान 'आदर्श शिक्षक' एवं ''हम और हमारी संस्था'' में विस्तार से बहुत ही स्पष्ट ढंग से कहा जा चुका है। तथापि कुछ उन महत्वपूर्ण अंशों को जिन पर अपने संस्थापकों एवं पूज्य महन्त योगी आदित्यनाथ जी महाराज का अत्यधिक बल रहता है मैं पुनः दुहरा रहा हूँ। प्रबन्ध-तन्त्र एवं संस्थाध्यक्ष संस्था के वाह्य स्वरूप को आकार देते हैं। उनमें प्राण शिक्षक फूंकता है। किन्तु वही शिक्षक संस्था को जीवन्त, मूल्यवान और उद्देश्यपरक उपयोगी बना सकता है जो संस्था को 'अपना' माने। प्रबन्ध-तन्त्र के निर्देशन में कार्य कर रहे संस्थाध्यक्ष के साथ सहयोगी, मित्र अथवा पारिवारिक सदस्य के रूप में समर्पित भाव से कार्य करे। अपने विषय-ज्ञान में वह अद्यतन रहे। कक्षाध्यापन के तौर-तरीकों में मौलिक प्रयोगों के द्वारा निरन्तर विकास करता रहे। पाठ्य सहायक सामग्रियों की स्वयं रचना करे और प्रयोगधर्मी हो। सामाजिक-राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय समसामयिक विषयों पर निरन्तर चिन्तन करता रहे तथा उसके साथ अपने विषय को यथा सम्भव जोड़कर उसे वर्तमान एवं भविष्य में उपयोगी बनाने का निरन्तर प्रयत्न करता रहे।

विद्यार्थियों से अनवरत अनौपचारिक संवाद करता हुआ, उनसे व्यक्तिगत सम्बन्ध स्थापित करते हुए उनका सहयोग करने वाला शिक्षक स्वयं जैसा और अनेकशः स्वयं से भी बहुत अच्छा अपने विद्यार्थियों को बना सकता है। वही विद्यार्थी की मौलिक क्षमताओं का प्रस्फुटन कर अपने विद्यार्थियों को उत्कर्ष पर पहुँचा सकता है। इस कार्य हेतु प्रतिवर्ष कुछ विद्यार्थियों पर विशेष प्रयोग शिक्षक और संस्था दोनों को विशिष्ट बनाते हैं। शिक्षक अपनी कक्षा को प्रतिमान तथा अपने को उदाहरण बनाएँ।

शिक्षण संस्था का चौथा घटक कर्मचारी है। सामान्यतः संस्थाओं की गुणवत्ता में कर्मचारियों की भूमिका नजरअंदाज कर दी जाती है जबकि कर्मचारी भी संस्था की कार्य-संस्कृति के महत्त्वपूर्ण अंग हैं। कर्मचारियों का संस्था केन्द्रित चिन्तन एवं सोच संस्था की कार्य संस्कृति को विशिष्ट बनाता है। विद्यार्थीहित सर्वोपरि के मंत्र पर आधारित कर्मचारियों की कार्यपद्धति से संस्था की पहचान बनती है। कम समय में अधिक कार्य, समयबद्ध कार्य निष्पादन और पारदर्शी आय-व्यय पद्धति किसी भी संस्था के कर्मचारियों का व्यक्तित्व गढ़ता है। संस्था तभी सफल मानी जा सकती है जब उसके सभी सहभागियों एवं सहयोगियों के व्यक्तित्व निर्माण में संस्था की भूमिका हो।

मूलतः संस्था जिसके लिए है वह घटक विद्यार्थी है। हम पठन-पाठन सहित विद्यार्थी के व्यक्तित्व निर्माण के तमाम प्रश्नों से यह कहकर छुटकारा पा लेते हैं कि विद्यार्थी पढ़ना नहीं चाहता, वह सीखना नहीं चाहता, वह अनुशासनहीन हो चुका है, वह किसी की सुनता नहीं है, इत्यादि। यद्यपि कि मेरा अनुभव इससे अलग है। जब मैं पढ़ता था तब भी मुझे विद्यार्थी दोषी नहीं दिखे और जब मैं 1993 से ही पढ़ा रहा हूँ या 2005 ई. से महाविद्यालय में बतौर प्राचार्य कार्य कर रहा हूँ,

मुझे विद्यार्थी दोषी नहीं दिखता। संस्था, संस्थाध्यक्ष, शिक्षक, कर्मचारी जैसे होते हैं उनका विद्यार्थी वैसा ही बनता है। संस्था की परिसर संस्कृति जैसी होगी, विद्यार्थी का आचरण व्यवहार वैसा ही होगा। विद्यार्थी संस्था का निरन्तर प्रवाहमान समूह है। प्रतिवर्ष विद्यार्थियों का एक समूह संस्था से अपनी पढ़ाई पूरी कर निकलता है और प्रतिवर्ष एक नया समूह संस्था में प्रवेश लेता है। प्रतिवर्ष नए समूह के आने के कारण उन्हें संस्था की परिसर संस्कृति में ढालने हेतु प्रतिवर्ष प्रयत्न करने होते हैं। किन्तु यदि हमारा प्रयत्न होता रहा तो हर वर्ष आने वाला नया विद्यार्थी समूह संस्था की परिसर संस्कृति का हिस्सा बन जाता है तथा इन प्रयत्नों से संस्था की परिसर संस्कृति भी निरन्तर प्रवाहमान तथा विकसित होती रहती है।

हमें निरन्तर यह प्रयत्न करना होगा कि विद्यालय का विद्यार्थी अपने को विद्यालय परिवार का सदस्य महसूस करने लगे। इस परिणाम हेतु हमें विद्यालय को परिवार की तरह विकसित करने होंगे। विद्यालय में ऐसे वातावरण का सृजन करना होगा कि विद्यालय में परिवार संस्कृति का विकास हो सके। विद्यार्थियों की गुणवत्तापूर्ण पढ़ाई करानी होगी तथा उनकी रुचि के अनुसार अन्य विविध पाठ्येतर गतिविधियों की उन्हें सुविधा अथवा मंच प्रदान करने होंगे। विद्यार्थी के व्यक्तित्व निर्माण के नाना-विध प्रयत्नों के साथ संस्था के साथ उसका रागात्मक/अपनापन/ पूरकता का सम्बन्ध विकसित करना होगा। उनमें अपने जैसा (संस्थाध्यक्ष-शिक्षक- कर्मचारी) स्व-अनुशासन की प्रवृत्ति विकसित करनी होगी। पढ़ाई सहित अन्यान्य विविध गतिविधियों के साथ-साथ उन्हें संस्कारित बनाने और उनमें श्रम के प्रति श्रद्धाभाव पैदा करने के प्रयत्न करते रहने होंगे। विद्यार्थी को संस्था के संचालन में भी यथासम्भव सहभागी बनाना होगा। हमारे निरन्तर प्रयत्नों से संस्था के साथ भावात्मक-रागात्मक ढंग से जुड़ा विद्यार्थी स्वयं संस्था के अनवरत विकास का सहयोगी एवं सहयात्री बन जाता है। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि जहाँ संस्थाध्यक्ष, शिक्षक, कर्मचारी, स्वभूमिका का निध ारण करने में समर्थ होते हैं वहीं विद्यार्थी को इस दृष्टि से हमें समर्थ बनाना होता है।

संस्था का अप्रत्यक्ष रूप से एक महत्वपूर्ण घटक अभिभावक है। विद्यार्थी 24 घंटे में लगभग 18 घंटे अभिभावक की देख-रेख एवं मार्गदर्शन में रहता है। अतः अभिभावक के साथ संस्था का सम्पर्क एवं संवाद विद्यार्थी को समझने एवं गढ़ने में प्रभावी भूमिका निभाता है। अभिभावक एवं संस्था के समन्वय से विद्यार्थी एवं संस्था दोनों के विकास को उद्देश्यपूर्ण दिशा मिलती है। हमारी राह आसान हो जाती है।

इस प्रकार संस्था के उपर्युक्त सभी घटक मिलकर संस्था का स्वरूप निर्धारित करते हैं तथापि सभी की भूमिका को संयोजित करने का कार्य संस्थाध्यक्ष का होता है। सभी की यथोचित भूमिका का उपयोग करते हुए श्रेष्ठ संस्था का स्वरूप विकसित करते रहना भी हमारा कार्य है जिससे कि हम अपने उद्देश्य के अनुरूप राष्ट्रभक्त, योग्य, संस्कारित एवं कुशल नागरिक अथवा व्यक्ति पैदा

कर सकें तथा भारत-माता की सेवा में अपने प्रयत्नों के पुष्प चढ़ा सकें।

श्रेष्ठ संस्था के स्वरूप को प्रतिष्ठापित करने के कार्य के दो भाग हैं-पहला संस्था का भौतिक स्वरूप अर्थात् संसाधन की उपलब्धता एवं दूसरा अपनी मौलिक विशिष्ट परिसर संस्कृति का निरन्तर विकास। पहला भाग प्रबन्ध-तन्त्र एवं शासन के सहयोग तथा अपने संस्थागत प्रयत्नों से आवश्यकतानुसार सुसज्जित भवन, कक्षाएँ, प्रयोगशाला, पुस्तकालय, वाचनालय का समुचित एवं सुव्यवस्थित विकास करना संस्था के विकास की प्रथम शर्त है। यह विकास भी मात्र आर्थिक संसाध न से नहीं होगा। हमारी दृष्टि, हमारा चिंतन, हमारा मौलिक प्रयत्न इनमें भी दिखना चाहिए। ईंट-पत्थर की दीवालों से बने कक्ष में मात्र कुछ फर्नीचर लगा देने से कक्षा नहीं बनती, कुछ प्रयोगात्मक पाठ्यक्रम की सामग्री रख देने से प्रयोगशाला नहीं बन जाती, कुछ पुस्तकें रख देने से पुस्तकालय और वाचनालय नहीं बन जाते। पठन-पाठन के कक्षों में हमारे पवित्र भाव का दर्शन होना चाहिए। कक्ष यथासम्भव अत्याधुनिक संसाधनों से युक्त सुव्यवस्थित होने चाहिए। प्रतिदिन उसकी सुबह-शाम पूजा घर की तरह साफ-सफाई होनी चाहिए। अध्ययन कक्ष एवं उसकी दीवालें मुखर होनी चाहिए। वह हमसे प्रतिदिन कुछ नया करने की प्रेरणा देने वाला होना चाहिए। उदाहरणार्थ यदि अध्ययनकक्ष किसी महापुरुष के नाम पर हो, उस महापुरुष का प्रेरणादायी चित्र लगा होगा, दीवालों पर उस महापुरुष के जीवन के प्रेरणादायी प्रसंग हो। अध्ययनकक्ष में दीवाल पर कहीं विद्यार्थियों के द्वारा स्व-रचित चित्र, बोध-वाक्य, विचार की प्रस्तुति की व्यवस्था हो। ऐसा अध्ययनकक्ष हमें पठन-पाठन की श्रेष्ठतम् भाव भूमि के साथ-साथ प्रतिदिन-प्रतिक्षण कुछ न कुछ सिखाता रहेगा। प्रयोगशालाएं बाजार से क्रय की गयी प्रायोगिक सामग्रियों के अतिरिक्त शिक्षक-विद्यार्थियों के मौलिक प्रयत्नों एवं स्व-निर्मित प्रायोगिक सामानों से परिपूर्ण होंगी तभी वह विशिष्ट होंगी। प्रयोगशाला का कक्ष एवं उसकी दीवालें भी रचनात्मकता एवं शोधपरकता का दर्शन कराती हुई अच्छी लगेंगी। पुस्तकालय प्राचीनतम से अद्यतन प्रकाशित पुस्तकों तथा पाण्डुलिपियों सहित अत्याधुनिक सुविधाओं से परिपूर्ण होना चाहिए। कम्प्यूटर, इण्टरनेट, आनलाइन पुस्तकालय की सभी आधुनिक परिकल्पनाओं की दिशा में यथासम्भव हमारी प्रगति पुस्तकालय में दिखनी ही चाहिए। वाचनालय को उपासना घर जैसा शान्ति पूर्ण आध्यात्मिक वातावरण का एहसास करता हुआ अध्ययन की सभी आवश्यक शर्ते पूरी करता हुआ बनाना होगा।

संस्था का कार्यालय संस्थागत कार्यों का एक अति महत्वपूर्ण केन्द्र है। हमें विशिष्ट कार्यालयी संस्कृति का निरन्तर विकास करते रहना होगा। कार्यालय में आय-व्यय का पूर्णतः पारदर्शी एवं बैंक की तरह प्रतिदिन का साफ-साफ आय-व्यय का विवरण पूर्ण होना चाहिए। कार्यालय के सभी कर्मचारियों को संस्था की अद्यतन सभी सूचनाओं से अवगत होना चाहिए। शिक्षकों-कर्मचारियों के वेतन सहित किसी प्रकार के कार्य को तत्काल निस्तारित कर उनके टेबल तक परिणाम पहुँचाने की कार्य संस्कृति विकसित करनी होगी, जिससे कि शिक्षक-कर्मचारी अपने-अपने दायित्व के

निर्वहन में अपना अधिक से अधिक समय दे सकें। विद्यार्थियों की माँगी जाने वाली प्रत्येक सूचना उन्हें तत्काल प्राप्त कराना कार्यालय का धर्म है। किसी भी कार्य के लिए किसी भी विद्यार्थी/शिक्षक/कर्मचारी को कार्यालय में एक बार के बाद दूसरी बार आने की आवश्यकता न पड़े, अर्थात् पहली बार में ही उसका कार्य सम्पादित करने वाला कार्यालय ही अनुकरणीय होगा। हमें इस कार्य-संस्कृति का निरन्तर विकास करते रहना होगा।

संस्था के सम्पूर्ण परिसर का वाह्य वातावरण भी संस्था की कार्य-संसकृति को बताता है। वह परिसर संस्कृति का प्रथम दृष्टया भाष्यकार होता है। अतः सम्पूर्ण परिसर में भ्रमण मार्ग, लान, क्रीड़ा का मैदान सुव्यवस्थित, हरे भरे पेड़ पौधों से आच्छादित एवं साफ सुथरे होने चाहिए। परिसर में प्रवेश करते ही आगन्तुक के मन पर सकारात्मक प्रभाव डालने में संस्था के परिसर की सफलता सुव्यवस्थित परिसर का मानक है। भवन, अध्ययनकक्ष, प्रयोगशाला, पुस्तकालय, वाचनालय की तरह परिसर भी मुखर एवं सजीव होना चाहिए। हर आने-जाने वाले का आवभगत, उसके संस्था में आने के सद्-उद्देश्य की पूर्ति, संस्था से जाने के समय तक उस पर सहयोगात्मक एवं संस्था हित में दृष्टि होनी ही चाहिए। संस्थाध्यक्ष, शिक्षक, कर्मचारी, विद्यार्थी के संस्था में उठने-बैठने, आने-जाने, बात-चीत करने इत्यादि में संस्था का संस्कार दिखना चाहिए। पूरा परिसर घर की तरह स्वच्छ रखकर ही हम संस्था में रचनात्मकता का चरमोत्कर्ष पा सकते हैं। पठन-पाठन से लेकर परिसर की समस्त गतिविधियों के साथ विकसित कार्य संस्कृति से किसी भी संस्था की परिसर-संस्कृति निर्मित होती है। अपनी-अपनी संस्थाओं की विशिष्ट परिसर संस्कृति का निर्माण कर ही हम महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के उद्देश्य को पूरा करने की दिशा में बढ़ते रह सकते हैं। यही हमारा कार्य है।

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् की संस्थाओं में कार्य की विशिष्टता के अनुसार ही विशिष्ट कार्यपद्धति का भी विकास हुआ है। हमारी कार्यपद्धति में सर्वाधिक प्रमुखता स्वयं के आचरण-व्यवहार को है। संस्थाध्यक्ष सहित सभी शिक्षकों-कर्मचारियों का स्वयं का जीवन, स्वयं की जीवन-दृष्टि, स्वयं का चिन्तन, स्वयं का मानस संस्था के उद्देश्य पूर्ति हेतु महत्त्वपूर्ण है। महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् की संस्थाओं के उद्देश्य का मूल लोक-कल्याण है। स्पष्ट है कि इस उद्देश्य को प्राप्त करने वाला मार्ग आध्यात्म से होकर ही निकलता है। आध्यात्मिकता हमारी कार्यपद्धति का आधार बिन्दु है। हमारे जीवन में सदाचार, नैतिकता, आस्था, श्रद्धा, विश्वास का महत्त्वपूर्ण स्थान है। शरीर, मन, बुद्धि-विवेक, आत्मा, परमात्मा के अन्तर्सम्बन्धों की समझ एवं इस पर श्रद्धा-विश्वास से ही आध्यात्मिकता का भाव प्रस्फुटित होगा। बिना इन सद्गुणों के आध्यात्मिक मानस की रचना सम्भव नहीं। बिना आध्यात्मिक मानस के लोक-कल्याण हेतु समर्पित एवं तपस्वी जीवन-दृष्टि नहीं मिल सकती। स्वाभाविक है कि आध्यात्मिक-भाव के मजबूत धरातल पर खड़ा व्यक्ति ही हमारी संस्थाओं के भाव-धरातल को छू पाएगा।

कार्यपद्धति में आध्यात्मिकता के गर्भ से अनामिकता का जन्म होता है। अनामिकता हमारी कार्यपद्धति का दूसरा महत्त्वपूर्ण आयाम है। जब हम अपने को संस्था में समाहित कर देंगे, 'हम नहीं संस्था' का भाव जन्म ले लेगा, हमसे संस्था नहीं संस्था से हम हैं की दृष्टि विकसित होगी तो अनाम भाव का जन्म एवं विकास होता है। अनाम भाव से व्यक्तिगत अहंकार, आपसी पैर-खिचाऊँ प्रतिस्पर्धा, राग-द्वेष जैसी प्रवृत्तियों का शमन होता है। चेहरा दिखाने की अपेक्षा दायित्व पूर्ण करने की तत्परता होती है। पिसान-पोत भण्डारी बनने की प्रवृत्ति समाप्त होती है और तब सामूहिकता की प्रवृत्ति पनपती और विकसित होती है।

सामूहिकता हमारी कार्यपद्धति का तीसरा महत्त्वपूर्ण हिस्सा है। कोई व्यक्ति चाहे जितना योग्य हो संस्था का उद्देश्यपूर्ण समग्र विकास अकेले नहीं कर सकता। संस्थागत उत्कर्ष हेतु सामूहिक प्रयत्न की कार्यपद्धति अपरिहार्य है। यद्यपि सामूहिकता के साथ संस्था में कार्यपद्धति का विकास संस्थाध्यक्ष की जवाबदेही होती है तथापि सामूहिक रूप से हम सभी यदि इस कार्यपद्धति का विकास करें तो रास्ता और सुगम, प्रभावपूर्ण और परिणामकारी होगा। सामूहिकता के भाव का विकास परिवार भाव से होता है। संस्था को परिवार के रूप में विकसित किया जाना चाहिए। परिवार के सदस्यों की तरह ही संस्था के सदस्यों में प्रेम-भाव तथा सहयोग-भाव के आधार पर संस्था अपने विकास का चरमोत्कर्ष छू सकती है।

आध्यात्मिकता, अनामिकता एवं सामूहिकता के साथ स्व-अनुशासन की प्रवृत्ति का विकास स्वाभाविक है। स्वयं के लिए जीवन जीने का नियम बनाना एवं प्रतिदिन की दिनचर्या में उसे स्वयं प्रेरणा से लागू करना हमारी कार्यपद्धति का हिस्सा होना ही चाहिए। अपनी दिनचर्या में समय की प्रतिबद्धता कार्य की गुणवत्ता एवं नियत समय में निर्धारित कार्य पूर्ण करने के लिए आवश्यक है। समय-पालन से स्वयं का जीवन निखरता है। हर क्षण-हर पल हर कार्य के मूल्यांकन से कार्यपद्धति विशिष्ट बनती है और कार्य की गुणवत्ता निरन्तर विकासमान होती है। ये सभी कार्य स्व-अनुशासन को स्वभाव का हिस्सा बनाते हैं। स्व-अनुशासन से परिपूर्ण संस्थाध्यक्ष, शिक्षक, कर्मचारी ही विद्यार्थियों को स्व-अनुशासन का पाठ पढ़ा सकते हैं। स्व-अनुशासित संस्था का परिसर एवं संस्था ही महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के मानकों पर खरा उतर सकती है।

हमारी कार्यपद्धति की एक और विशिष्टता दायित्वबोध की है। उपर्युक्त गुणों का निरन्तर विकास करने वाले व्यक्ति अथवा समूह में दायित्वबोध की प्रवृत्ति स्वतः-स्फूर्त जन्म लेती है एवं उपर्युक्त गुणों के विकास के साथ-साथ प्रबलतर होती जाती है। वस्तुतः दायित्वबोध व्यक्तिगत होता है जो संस्था में समूहगत दायित्वबोध का आभास कराता है। अपनी संस्थाओं के हम सभी समर्पित सेवा-भावी लोगों को दायित्वबोधी होना ही होगा। स्वंय के प्रति, परिवार के प्रति, संस्था के प्रति, समाज के प्रति, राष्ट्र के प्रति, और फिर समष्टि के प्रति हमारा दायित्वबोध ही जीवन की हमारी

व्यापक भूमिका सुनिश्चित करेगा। श्री गोरक्षपीठ के वैचारिक अधिष्ठान एवं महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के उद्देश्य के आलोक में विकसित दायित्त्वबोध हमे और हमारी संस्थाओं को समाज-राष्ट्र में विशिष्टता प्रदान करेगा और हम औरों को भी मार्ग दिखाने वाले बन सकेंगे।

जिस प्रकार किसी भी व्यक्ति की व्यवस्थित दिनचर्या उसे निरन्तर .प्रभुता प्रदान करती है उसी प्रकार संस्था की व्यवस्थित दिनचर्या संस्था को प्रभुता सम्पन्न बनाती है। किसी भी उद्देश्य को प्राप्त करने वाली संस्था को तद्नुरूप अपनी दिनचर्या का निर्धारण करना ही होगा। प्रतिदिन संस्था की दिनचर्या प्रारम्भ होने से अगले दिन के लिए स्थगित होने तक का कार्य अपने उद्देश्य प्राप्ति हेतु सुनिश्चित होना चाहिए। यह कार्य संस्थाध्यक्ष द्वारा सामूहिक रूप से तय किया जाना चाहिए और इसका कड़ाई के साथ पालन होना चाहिए। संस्थाध्यक्ष को संस्था प्रारम्भ होने से एक घंटा पूर्व अपनी स्वयं की उपस्थिति सुनिश्चित करनी चाहिए। चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों की उपस्थिति भी संस्थाध्यक्ष के साथ ही होनी चाहिए जिससे कि प्रार्थना-सभा प्रारम्भ होने के पूर्व संस्था के भवन की पूरी सफाई सुनिश्चित हो सके। आधे घंटे पूर्व कर्मचारियों एवं शिक्षकों की उपस्थिति सुनिश्चित की जानी चाहिए, जिससे प्रार्थना-सभा से पूर्व संस्था की व्यवस्थित दिनचर्या हेतु सभी तैयार हो सके, संस्थाध्यक्ष के साथ आपस में दिनभर की गतिविधियों पर अनौपचारिक चर्चा हो सके। प्रतिदिन प्रार्थना सभा में राष्ट्रगान, राष्ट्रगीत, ज्ञान की अधिष्ठात्री देवी माँ सरस्वती की वन्दना, ईश वन्दना सामूहिक रूप से भावपूर्वक किया जाना चाहिए। किसी महापुरुष की जयन्ती/पुण्यतिथि पर उनके बारे में प्रेरणास्पद उद्बोधन के साथ उन्हें याद किया जाना चाहिए। प्रार्थना सभा में संस्थाध्यक्ष, शिक्षक एवं कर्मचारी को अनिवार्यतः उपस्थित ही रहना चाहिए। प्रार्थना सभा के पश्चात प्रारम्भ कक्षाएं स्व-अनुशासित ढंग से सम्पन्न होनी चाहिए। अपने-अपने दायित्व का पालन करते हुए परिसर-संस्कृति के अनुरूप परिसर का संचालन करते हुए उसे बीते कल से बेहतर बनाने का प्रयत्न होना चाहिए। निर्धारित समय पर संस्था का उस दिन का सभी कार्य उसी दिन सम्पन्न हो चुकना सुनिश्चित कर ही अगले दिन के लिए संस्था में दैनिक-कार्य स्थगित किया जाना चाहिए।

नियमित शिक्षणेत्तर गतिविधियाँ भी दिनचर्या का हिस्सा होना चाहिए। पठन-पाठन स्थगित कर सामान्यतः कार्यक्रम शिक्षण-संस्था में आयोजित करने की संस्कृति को नहीं पनपने देना चाहिए। इस दृष्टि से एक प्रमाणित रास्ता है कि किसी व्याख्यान/कार्यक्रम के दिन प्रत्येक कक्षाएँ आवश्यकतानुसार 5 से 10 मिनट कम कर नियोजित समय में व्याख्यान/कार्यक्रम किया जाना चाहिए। इस प्रकार सभी कक्षाएँ संचालित करते हुए व्याख्यान/कार्यक्रम को हम विद्यार्थी के सामूहिक कक्षा का स्वरूप प्रदान कर सकते हैं। इस सन्दर्भ में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् की जिन संस्थाओं ने यह कार्य-संस्कृति विकसित की है उनका अनुकरण किया जा सकता है। इस प्रकार संस्था की विशिष्ट दिनचर्या भी हमारी कार्यपद्धति का हिस्सा है।

उपर्युक्त कार्य एवं कार्यपद्धति को हम अपने-अपने स्तर पर और अधिक परिमार्जित करें। स्वयं के मौलिक प्रयोगों एवं प्रयत्नों से इस कार्य एवं कार्यपद्धति को और विकसित करें। एक-दूसरे के अनुभवों तथा एक-दूसरे के द्वारा विकसित कार्य संस्कृति को सामूहिक कार्य-संस्कृति का हिस्सा बनाएँ। तथापि अभी तक विकसित उपर्युक्त कार्य-संस्कृति के आलोक में हम वार्षिक एवं पंच-वार्षिक योजना बनाकर कार्य करें।

2032 ई. महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के स्थापना का सौंवा वर्ष होगा। 2032 आने में 13 वर्ष हैं। अतः अच्छा होगा कि हम महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के सौ वर्ष पूर्ण होने पर अपनी संस्था का उत्कर्ष बिन्दु निर्धारित कर आज ही से कार्य करें। इस दृष्टि से 13 वर्षों की दीर्घकालिक योजना को पंचवर्षीय योजना बनाकर तथा पंचवर्षीय योजना को वार्षिक योजना बनाकर कार्य करें। योजना बनाते समय संस्था यह ध्यान रखें कि आज वह कहाँ खड़ी है, क्योंकि हर संस्था का प्रस्थान बिन्दु अलग-अलग होगा। कोई संस्था आज जहाँ खड़ी है वहीं से उसे आगे बढ़ना है। बनायी गयी वार्षिक योजना का प्रतिदिन, प्रति सप्ताह, प्रत्येक माह, त्रैमासिक, षट्मासिक स्वयं समीक्षा करते हुए अगला कदम निर्धारित किए जाते रहना चाहिए। संस्थाध्यक्ष, शिक्षक, कर्मचारी, विद्यार्थी द्वारा निरन्तर आत्म-मूल्यांकन के साथ-साथ सामूहिक एवं संस्थागत मूल्यांकन भी किया जाते रहना चाहिए। इस प्रकार अनवरत आत्म-परीक्षण करते हुए हम अपने दूरगामी लक्ष्य की ओर निर्धारित पथ पर तय की गयी गति से बढ़ते हुए महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के उद्देश्यों के अनुरूप अपनी सफल भूमिका सुनिश्चित कर सकेंगे। हाँ हमें हमेशा याद रखना होगा कि हमारा कार्य राष्ट्र एवं समाज को समर्पित होने के कारण ईश्वरीय कार्य है, हमारा उद्देश्य राष्ट्र-निर्माण एवं लोक-कल्याण है और हमारा पथ सेवा-समर्पण एवं साधना का पथ अर्थात् देवपथ है।

हम और हमारी संस्था

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के स्थापना की पृष्ठभूमि

अंग्रेजों के आगमन से पूर्व भारत में शिक्षा की स्थिति बहुत अच्छी थी। सन् 1830-40 के वर्षों में बंगाल और बिहार के गाँवों में लगभग एक लाख पाठशालाएँ थीं। मुम्बई और मद्रास प्रेसिडेंसी के प्रत्येक छोटे या बड़े गाँव में पाठशाला होने के प्रमाण मिलते हैं। अनेक सर्वेक्षणों से प्राप्त जानकारी से यह स्पष्ट होता है कि सन् 1800 ई. में भारत में शालेय शिक्षा प्राप्त करने वालों का अनुपात इंग्लैण्ड के छात्रों की तुलना में कम नहीं था। 19वीं सदी के प्रारम्भ में तथा उसके कुछ बाद यूरोप के किसी देश में शिक्षा का प्रचार इतना नहीं था जितना कि भारत में था। महात्मा गाँधी ने भारत की शिक्षा की तुलना एक मनोहर वृक्ष से की थी। 20 अक्टूबर 1931 को लन्दन की एक सभा में गाँधी जी ने कहा था कि ब्रिटिश राज की आँधी ने इस वृक्ष को ध्वस्त कर दिया और उसके 100 वर्षों के शासन के बाद भारतीय पहले से अधिक संख्या में निरक्षर हो गये।

अंग्रेज शासकों द्वारा भारतवासियों की शिक्षा के विरोध की सीमा का अनुमान 1792 में ईस्ट इण्डिया कम्पनी के चार्टर एक्ट के पास होने के समय एक डायरेक्टर द्वारा दिये गये इस बयान से लगाया जा सकता है- "हम लोग अपनी इसी मूर्खता से अमेरिका हाथ से खो बैठे, क्योंकि हमने इस देश में स्कूल और कॉलेज कायम हो जाने दिये हैं, अब फिर भारत में इसी मूर्खता को दोहराना ठीक नहीं है। 1792 ई. की इस स्थिति के 20 साल बाद तक यानि 1813 तक भारतवासियों को शिक्षित करने के पीछे यही भाव अंग्रेज शासकों के दिल में बना रहा। परन्तु इसके पश्चात् अंग्रेज शासकों का भारत में शिक्षा विरोधी विचार बदलने लगा। इसके दो कारण थे- पहला, शिक्षित भारतीयों की संख्या का दिनों-दिन घटना, जिससे सरकारी काम में अवरोध उत्पन्न होने लगा था; दूसरा, उन्हें थोड़े से इस तरह के भारतवासियों की आवश्यकता थी, जिनके माध्यम से भारतीय जनता के हृदय के भावों की जानकारी उन्हें होती रहे जिससे कि वे इसे अपने हित के अनुकूल परिवर्तित कर सकें। 1830 की पार्लियामेण्टरी कमेटी की रिपोर्ट में इन दोनों आवश्यकताओं का बार-बार जिक्र आता है। कलकत्ता में मुसलमानों का मदरसा, बनारस में संस्कृत कॉलेज व पूना का दक्कन कॉलेज इसी उद्देश्य से खुले थे। अब थोड़े से भारतवासियों को किसी-न-किसी तरह की शिक्षा देना भारत के विदेशी शासकों के लिए अनिवार्य हो गया था। ऐसे समय में मैकाले का यह दृष्टिकोण निर्णायक साबित हुआ कि हमें भारत में इस तरह की श्रेणी पैदा करने का भरसक प्रयास करना चाहिए जो कि हमारे और उन करोड़ों भारतवासियों के बीच जिन पर हम शासन करते हैं, एक दूसरे को समझने

के काम आ सकें। वे लोग ऐसे होने चाहिए जो खून और रंग की दृष्टि से तो भारतीय हों किन्तु रुचि, भाषा, भाव तथा विचार की दृष्टि से अंग्रेज हों। इस प्रकार अंग्रेजी शिक्षा का उद्देश्य शिक्षित भारतीयों में राष्ट्रीयता के भाव कमजोर कर उन्हें सरकारी मशीनरी के उपयोगी पुर्जे के रूप में इस्तेमाल करना था। 1858 ई. में कलकत्ता, मुम्बई तथा मद्रास विश्वविद्यालय की स्थापना हुई। लन्दन विश्वविद्यालय के आदर्श पर स्थापित इन विश्वविद्यालयों का उद्देश्य ज्ञान के प्रसार व चरित्र निर्माण के बजाय देश के नवयुवकों में नौकरशाही की भावना का बीजारोपण कर उन्हें इंग्लैण्ड के प्रति श्रद्धालु तथा परमुखापेक्षी बनाना था।

भारत में अंग्रेजी शिक्षा को प्रारम्भ करते समय मैकाले के मन में एक दूसरा भी लक्ष्य था- प्रत्येक भारतीय वस्तु को निकृष्ट ठहराना। अपने कुख्यात मिनट के 9वें पैरे में उसने लिखा है- "मुझे उन (पूर्वी भाषाओं के समर्थकों) में से एक भी सदस्य ऐसा नहीं मिला जो इस बात से इन्कार करता हो कि किसी एक उच्चस्तरीय यूरोपियन पुस्तकालय की एक आलमारी के एक खाने में जितना ज्ञान भरा होता है, उसकी तुलना में भारत तथा अरब का समूचा साहित्य कुछ भी नहीं होता।" पिछली सात पीढ़ियों में मैकाले की यह धारणा भारतवासियों के मस्तिष्क में निरन्तर इस प्रकार घर कर गयी है कि आज प्रत्येक भारतवासी हर भारतीय वस्तु को घटिया समझता तथा हर पाश्चात्य वस्तु को उच्चकोटि का समझता है। ऐसी परिस्थिति में भारत में शिक्षा के पुनर्निर्माण का आधारभूत लक्ष्य इस प्रक्रिया को नष्ट करना होना चाहिए और शिक्षा के माध्यम से हर सम्भव उपाय किया जाना चाहिए, जिससे भारत की नयी पीढ़ी के हृदय में से हीनता की यह भावना नष्ट हो सके तथा नवयुवकों में हमारे देश की प्राचीन सभ्यता तथा संस्कृति पर आधारित एक राष्ट्रीय व्यक्तित्व का विकास हो सके।

इस परिप्रेक्ष्य में एक ऐसे राष्ट्रीय विद्यालय की स्थापना की आवश्यकता थी जहाँ से निकले छात्रों की निष्ठा विदेशी शासकों के प्रति न होकर भारत और भारतीयता के प्रति हो। ज्ञान प्राप्ति के पश्चात् अपने समाज तथा संस्कृति के प्रति लज्जा के बजाय गौरव के भाव उनके अन्दर हिलोरे लें तथा उन्हें शिक्षा के द्वारा स्वतंत्रता के राष्ट्रीय आन्दोलन में अपने निजी सुखोपभोग का त्याग करके, भाग लेने की प्रबल प्रेरणा मिल सके। इसी उद्देश्य से देश के विभिन्न हिस्सों में राष्ट्रीय शिक्षण संस्थान की स्थापना का प्रयास प्रारम्भ हुआ। इसी क्रम में काशी के राजा मुंशी माधो लाल ने काशी में राष्ट्रीय महाविद्यालय स्थापित करने के लिए तीन लाख रुपये प्रदान किये। लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने अपने मित्रों के सहयोग से पुणे में 'समर्थ विद्यालय' की स्थापना की। अनेक विद्वान ऐसी संस्थाओं में निःशुल्क सेवा के लिए आगे आये। बलरामपुर के राजा ने प्राचीन गुरुकुलों की शैली पर नया संस्थान स्थापित करने के लिए तीन लाख रुपये दिये। भारतीय संस्कृति से अत्यन्त प्रभावित विदुषी श्रीमती एनी बेसेण्ट ने वाराणसी में 1898 में सेण्ट्रल हिन्दू कॉलेज की स्थापना की। 1916 में भारतीय आदर्शों और जीवन पद्धति को युवापीढ़ी के अन्दर आरोपित करने की दृष्टि के साथ पण्डित मदन मोहन मालवीय ने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना की।

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के उद्देश्य

इस प्रकार अंग्रेजी शिक्षा के दुष्परिणामों से देश की युवा पीढ़ी को बचाने की दृष्टि से कुछ बड़े नगरों में राष्ट्रवादी शिक्षा के प्रयास प्रारम्भ हुए। इन्हीं प्रयत्नों की एक महत्त्वपूर्ण कड़ी के रूप में नाथपन्थ के युवा संन्यासी युगपुरुष महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज द्वारा अशिक्षा और गरीबी से संत्रस्त पूर्वांचल की युवा पीढ़ी में शिक्षा के माध्यम से राष्ट्रवादी चेतना विकसित करने हेतु 1932 में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् की स्थापना की गयी। भारतीय स्वतंत्रता के स्वप्नद्रष्टा महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के माध्यम से समाज में एक ऐसी तेजस्वी और तपस्वी युवा शक्ति तैयार करना चाहते थे जो आजाद भारत के पुनर्निर्माण में अपनी महती भूमिका सुनिश्चित करे। ऐसी युवा शक्ति जो ज्ञानवान होने के साथ ही साथ चरित्रवान भी हो तथा व्यक्तिगत हितों के पोषण के बजाय राष्ट्रीय हितों के रक्षार्थ सतत सक्रिय रहे।

महन्त दिग्विजयनाथ जी के अनुसार शिक्षा राष्ट्रीय विकास - सांस्कृतिक, सामाजिक तथा आर्थिक विकास का एक सबल साधन है। अतः राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जानी चाहिए जो कि भारतवासियों में देश की प्राचीन सभ्यता एवं संस्कृति पर आधारित एक राष्ट्रीय व्यक्तित्व का विकास करे।

महन्त जी का मानना था कि अंग्रेजी शिक्षा के द्वारा देश के युवाओं में अपने धर्म तथा संस्कृति के प्रति हीनता का बोध उत्पन्न करने का सुनियोजित प्रयास किया गया था, जिसकी बहुत ही स्पष्ट अभिव्यक्ति 12 अक्टूबर 1936 को मैकाले द्वारा अपने माता-पिता को लिखे पत्र द्वारा होती है जिसमें उसने लिखा था- "हमारे अंग्रेजी स्कूल आश्चर्यजनक ढंग से प्रगति कर रहे हैं। हिन्दुओं पर इस शिक्षा का विलक्षण प्रभाव पड़ रहा है। अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त करने वाला कोई भी हिन्दू अपने धर्म के प्रति आस्थावान नहीं रहता। मुझे दृढ़ विश्वास है कि हमारी शिक्षा सम्बन्धी योजना के अनुसार कार्य चलता रहा तो 30 वर्ष पश्चात् बंगाल के सम्भ्रान्त वर्ग में एक भी मूर्तिपूजक नहीं रह जायेगा। इसके लिए धार्मिक स्वतंत्रता में हस्तक्षेप करने की तनिक भी आवश्यकता नहीं होगी। वह तो ज्ञान और विचारशीलता की सहज प्रक्रिया मात्र से स्वयं ही हो जायेगा। इस सम्भावना पर मैं अति आनन्दित हूँ।" अतः अंग्रेजी शिक्षा की योजना में भारत में ऐसी युवा पीढ़ी तैयार करना था जो भारतीय मूल्यों, परम्पराओं के प्रति हीनता के भाव रखे। इस प्रकार की पृष्ठभूमि में संस्थापित महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् का उद्देश्य था- शिक्षा के माध्यम से भारतीय संस्कृति के प्रति निष्ठावान युवा तैयार करना, हिन्दुत्व के श्रेष्ठतम आदर्शों को छात्रों के सम्मुख प्रस्तुत करना तथा उन आदर्शों को छात्र अपनी जीवन शैली का हिस्सा बनाये इस हेतु उन्हें अभिप्रेरित करना।

इस सन्दर्भ में सर्वाधिक दुर्भाग्यपूर्ण यह है कि आजादी के बाद भी हम अंग्रेजी शिक्षा व्यवस्था को ही लेकर आगे बढ़ रहे थे। यद्यपि कि आजादी के बाद उच्च शिक्षा में सुधार हेतु

राधाकृष्णन आयोग तथा माध्यमिक शिक्षा में सुधार हेतु मुदालियर आयोग का गठन हुआ था फिर भी भारत में प्रचलित अंग्रेजी शिक्षा में आमूल-चूल परिवर्तन हेतु एक समेकित प्रयास की आवश्यकता थी। इसी आवश्यकता की पूर्ति हेतु शिक्षा आयोग का गठन 14 जुलाई 1964 को दौलत सिंह कोठारी की अध्यक्षता में किया गया था, शिक्षा आयोग (1964-66) के प्रतिवेदन पर विचार करते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति के सन्दर्भ में एक प्रारूप तैयार करने की दृष्टि से संसद सदस्यों की गठित समिति के सदस्य के रूप में हिन्दू महासभा के एकमात्र प्रतिनिधि महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज भी सम्मिलित हुए थे।

संसद सदस्यों की समिति द्वारा तैयार राष्ट्रीय शिक्षा नीति के प्रारूप-पत्र पर महन्त दिग्विजयनाथ जी ने जो असहमित के साथ टिप्पणी लिखी वह भारतीय शिक्षा का राष्ट्रीय दस्तावेज है। उनके असहमति-पत्र को महन्त जी के शिक्षा सम्बन्धी दृष्टिकोण के दर्पण के रूप में देखा जा सकता है। शिक्षा सम्बन्धी महन्त जी के विचारों पर दृष्टिपात करने से ऐसा प्रतीत होता है कि उनके विचार भारतीय शिक्षा के सन्दर्भ में सार्वकालिक हैं। वर्तमान शिक्षा के सन्दर्भ में वे विचार आज भी उतने ही प्रासंगिक प्रतीत होते हैं। शिक्षा सम्बन्धी उनकी इस टिप्पणी में सचमुच महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के उद्देश्य समग्र रूप दृष्टिगत होते हैं।

महन्त जी ने लिखा है- "शिक्षा जनता की परम्पराओं पर आधारित न होने के कारण शिक्षित वर्ग अपनी ही संस्कृति से दूर होता जा रहा है। स्थानीय, धार्मिक, भाषायी तथा राज्य सम्बन्धी निष्ठाओं के अभाव में लोग भारत के समूचे रूप को ही भूल गये हैं। समाज को सूत्रबद्ध करने वाले मूल्य लुप्त हो रहे हैं। उनके स्थान पर सामाजिक उत्तरदायित्व वाले कोई प्रभावी कार्यक्रम नहीं हैं। इससे सामाजिक विघटन के असंख्य लक्षण सर्वत्र दृष्टिगोचर हो रहे हैं, और बढ़ते ही जा रहे हैं।" महन्त जी का स्पष्ट अभिमत था कि शिक्षा राष्ट्रीय-सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आर्थिक विकास का एक सबल साधन है। अत: राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली के विकास को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जानी चाहिए जो कि भारतवासियों में देश की प्राचीन सभ्यता और संस्कृति पर आधारित एक राष्ट्रीय व्यक्तित्व का विकास कर सके। महन्त जी की दृष्टि में राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली ऐसी होनी चाहिए जिससे देश में संस्कृतनिष्ठ राष्ट्रभक्त नागरिकों की शृंखला तैयार की जा सके।

महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज ने राष्ट्रवादी शिक्षा के प्रसार के लिए जिस महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् का बीजारोपण किया था उसको अपने ओजस्वी मार्गदर्शन से आगे बढ़ाने का कार्य उनके सुयोग्य उत्तराधिकारी महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने किया। महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज के नेतृत्व में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् ने चतुर्दिक प्रगति करते हुए शिक्षा, चिकित्सा तथा सेवा के क्षेत्र में विशिष्ट पहचान बनायी है। महन्त अवेद्यनाथ जी सामाजिक समरसता को भारत की एकता और अखण्डता की आवश्यक शर्त मानते थे। उनका मानना था कि भारतीय समाज में ऊँच-नीच का

विभेद जब तक रहेगा तब तक भारत का पुनरुत्थान सम्भव नहीं है। महन्त जी का मानना था कि ऊँच-नीच, छूत-अछूत आदि के आधार पर हिन्दू समाज को बाँटने का कुत्सित प्रयास चल रहा है। हिन्दू समाज में ऊँच-नीच, छुआछूत की भावना जब तक समाप्त नहीं होगी, हिन्दू समाज पर अन्यों का अत्याचार बन्द नहीं होगा। हिन्दुत्व को यदि बचाना है तो हिन्दू समाज में व्याप्त रूढ़ियों और कुरीतियों को त्यागना ही होगा। ऐसी स्थिति में समाज में व्याप्त विभेद का प्रतिकार करते हुए समर्थ भारत के लिए समरस समाज के निर्माण हेतु युवा तैयार करना महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् का उद्देश्य बन जाता है।

गोरक्षपीठ के वर्तमान पीठाधीश्वर पूज्य महन्त योगी आदित्यनाथ जी महाराज के नेतृत्व में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् शिक्षा, चिकित्सा, सेवा तथा अध्यात्म के क्षेत्र में अपनी विशिष्ट कार्यपद्धति के कारण नये-नये प्रतिमान स्थापित कर रहा है। महन्त जी का मानना है कि शिक्षालय राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के व्यापक सन्दर्भ में तभी अपनी भूमिका का प्रभावी ढंग से निष्पादन कर सकते हैं जब वे 'इन्फॉर्मेशन सेण्टर' के बजाय 'ट्रांसफॉर्मेशन सेण्टर' के रूप में कार्य करें। अनुशासन ट्रांसफॉर्मेशन के लिए अनिवार्य शर्त है। बिना अनुशासन के निर्माण की प्रक्रिया आगे नहीं बढ़ सकती है। मनुष्य निर्माण तो अनुशासन के बिना सम्भव ही नहीं है। अत: शिक्षालयों को मनुष्य निर्माण के केन्द्र के रूप में कार्य करना है तो अनुशासन को सर्वोच्च प्राथमिकता देनी होगी। महन्त योगी आदित्यनाथ जी महाराज अनुशासन को शिक्षालयों में बहुत ही व्यापक रूप में लागू करना चाहते हैं। इसीलिए यह अनुशासन शिक्षक और छात्र के कक्षागत व्यवहार तक ही सीमित नहीं होता है। उनके अनुशासन का एक प्रमुख आयाम आर्थिक अनुशासन है। महन्त जी का मानना है कि शिक्षा समाज से यदि प्रभावित होती है तो उसका दूसरा पक्ष यह है कि वह समाज को प्रभावित भी करती है। अत: शिक्षालय का वातावरण इस प्रकार से नियोजित किया जाना चाहिए कि सामाजिक जीवन के लिए भी वह प्रेरणास्पद बन सके। इसके लिए आवश्यक है वहाँ देश की भावी पीढ़ी को सभी प्रकार के अनुशासन का प्रशिक्षण प्राप्त हो। प्राचार्य से शिक्षक, शिक्षक से छात्र और छात्र से समाज तक अनुशासन का प्रवाह व्यापक रूप में तथा द्विमार्गी होना चाहिए। इस प्रकार का परिवेश शिक्षालय यदि विद्यार्थी को उपलब्ध कराते हैं तो वहाँ से जो युवा निकलेंगे वे राष्ट्रीय चेतना से युक्त भ्रष्टाचारमुक्त भारत के लिए संकल्पित होंगे। अतः इस प्रकार के परिवेश से युक्त शिक्षालय ही सही अर्थों में राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के जाग्रत केन्द्र बन सकेंगे।

अनुशासन और चरित्र निर्माण के साथ ही साथ महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् की संस्थाएँ स्वच्छता के प्रति संकल्पित हों, ऐसा महन्त जी का आग्रह रहता है। उनका मानना है कि व्यक्तित्व के विकास में वातावरण की अहम भूमिका होती है। भौतिक वातावरण से विद्यालय का शैक्षिक वातावरण प्रत्यक्षतः प्रभावित होता है। यदि शिक्षालय का वातावरण स्वच्छ होगा तभी स्वच्छ भारत के लिए संकल्पित युवा समाज को प्राप्त होंगे। अत: शैक्षिक गुणवत्ता के लिए योगी जी स्वच्छता और

अनुशासन को महत्त्वपूर्ण आयाम के रूप में देखते हैं।

इस प्रकार अपने संस्थापकों की शैक्षिक दृष्टि को साकार करने हेतु महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के निम्नांकित उद्देश्य निर्धारित किये जा सकते हैं-

- संस्कृतनिष्ठ राष्ट्रभक्त युवा तैयार करना।
- ज्ञानवान के साथ-साथ संस्कारवान युवा तैयार करना।
- युवाओं में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास करना।
- देश के महापुरुषों व प्रतीकों के प्रति गौरवभाव का विकास करना।
- स्वच्छ भारत के लिए संकल्पित युवा शक्ति तैयार करना।
- समर्थ भारत के लिए अनुशासित छात्र शक्ति तैयार करना।
- राष्ट्रीय एकता व अखण्डता को सुदृढ़ करने हेतु सामाजिक समरसता को जीवन पद्धति का हिस्सा बनाना।
- छात्रों के अन्दर रचनात्मक दृष्टिकोण का विकास करना।
- प्रबन्धकीय व संगठनात्मक दक्षता विकसित करना।
- छात्रों को उभरते हुए मुद्दों जैसे- पर्यावरण, पारिस्थितिकी, जनसंख्या, लैंगिक समानता, कानूनी साक्षरता आदि के प्रति संवेदनशील बनाना।
- उनमें समुदाय की आकांक्षाओं व अपेक्षाओं की समझ उत्पन्न करना तथा शिक्षालय और समुदाय के परस्पर सम्बन्धों को सुदृढ़ करना।

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के उद्देश्यों के संदर्भ में हमारी भूमिका

शैक्षिक प्रशासक, शिक्षाविद्, प्रबन्धक, प्राचार्य, शिक्षक, छात्र, अभिभावक, समुदाय तथा पुरातन छात्र की भूमिका शिक्षण संस्थानों के संचालन में किसी-न-किसी रूप में रहती है। 'हमारी भूमिका' से आशय मुख्य रूप से शिक्षक की भूमिका से है। यद्यपि कि शिक्षालयों की दशा और दिशा के निर्धारण में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण भूमिका संस्थाध्यक्ष/प्राचार्य की होती है। इसकी भूमिका को रेखांकित करते हुए कहा गया है कि शिक्षालय एक ऐसा जलपोत है जिसकी पतवार प्राचार्य के हाथ में होती है। यदि प्राचार्य सक्षम, प्रतिबद्ध तथा प्रभावी है तो शिक्षालय अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में सफल होते हैं। परन्तु यदि प्राचार्य के अन्दर संस्था को कहाँ ले जाना है इसकी स्पष्ट दृष्टि नहीं है तथा इस दृष्टि को साकार करने की कार्य योजना नहीं है, ऐसी दशा में संस्था की स्थिति उस जलपोत की हो जाती है जो दिशाहीनता के कारण अपने गंतव्य को नहीं प्राप्त कर पाती है।

शिक्षा के व्यापक उद्देश्यों के परिप्रेक्ष्य में शिक्षक की भूमिका सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण होती है। शिक्षा की प्रक्रिया में शिक्षक की भूमिका को रेखांकित करते हुए कोठारी आयोग (1964-66) ने कहा है कि भारत के भाग्य का निर्माण उसकी कक्षाओं में हो रहा है। कक्षाओं के संचालन का दायित्व शिक्षक के हाथ में होता है। अत: शिक्षक भारत के भाग्य का निर्माता हैं। 1986 की शिक्षा नीति में शिक्षा की भूमिका पर प्रकाश डालते हुए कहा गया है कि शिक्षक देश के सामाजिक और सांस्कृतिक सन्दर्भों को उद्घाटित करता है। अत: कोई भी राष्ट्र अपने शिक्षक के स्तर से ऊपर नहीं उठ सकता है।

आज शिक्षा में बढ़ती हुई बाजारवादी प्रवृत्ति के कारण भौतिक संसाधनों को गुणवत्ता के प्रमुख निर्धारक के रूप में देखा जाने लगा है, जबकि गुणवत्ता के निर्धारण में भौतिक संसाधनों की भूमिका अत्यन्त ही सीमित है। गुरुकुल में पेड़ के नीचे पढ़ाई होती थी लेकिन वहाँ शिक्षा की गुणवत्ता बेमिसाल थी परन्तु आज ऊँची-ऊँची अट्टालिकाओं में पढ़ाई होती है परन्तु वहाँ शिक्षा की गुणवत्ता प्रश्नों के घेरे में है। वास्तव में मनुष्य निर्माण के केन्द्र के रूप में शिक्षण संस्थानों में शिक्षक की भूमिका असीमित है। 1986 की शिक्षा नीति में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि कोई नहीं कह सकता है कि व्यक्ति निर्माण की प्रक्रिया में शिक्षक की भूमिका कहाँ समाप्त होती है।

इस प्रकार राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् ने गुणात्मक विद्यालयी शिक्षा हेतु शिक्षक की प्रतिबद्धता, दक्षता तथा प्रदर्शन को आवश्यक मानते हुए पाँच प्रतिबद्धता के क्षेत्रों, दस दक्षता के क्षेत्रों तथा पाँच प्रदर्शन के क्षेत्रों का उल्लेख किया है-

शिक्षक के पाँच प्रतिबद्धता के क्षेत्र

अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में आम तौर पर प्रतिबद्धता को सर्वाधिक प्रभावी घटक माना जाता है। दुर्भाग्य से अब यही मुद्दा पूरी तरह से पृष्ठभूमि में चला गया है। अब अध्यापक शिक्षा के कार्यक्रमों में प्रेरणा, प्रतिबद्धता व निष्ठा पर पर्याप्त जोर नहीं दिया जाता है। यह वह क्षेत्र है जिसके लिए मनोवृत्ति में परिवर्तन की जरूरत होती है। शिक्षक की मनोवृत्ति में सकारात्मक परिवर्तन आता है तो उसके प्रत्येक कार्य-व्यवहार में शैक्षिक गुणवत्ता प्रत्यक्षत: दृश्यमान होने लगती है। राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् ने अध्यापकों के अन्दर पाँच प्रकार की प्रतिबद्धताओं की आवश्यकता पर जोर दिया है-

शिक्षार्थी के लिए प्रतिबद्धता (Commitment to students): युवावस्था में विद्यार्थी की बहुत ही संवेदनशील तरीके से देखभाल की आवश्यकता होती है। शिक्षक द्वारा उनके रुझानों, प्रवृत्तियों, आकांक्षाओं और शैक्षणिक योग्यताओं को समझना, जिससे कि उनके शरीर, मस्तिष्क और आत्मा का समग्र विकास हो सके। बच्चों की गलतियों और बालपन से जुड़ी शरारतों के प्रति सहनशीलता विकसित करना और शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में उसके सही निहितार्थ निकालना जिससे कि

उसका स्वस्थ तथा समरस विकास हो सके। व्यक्तित्व विकास की प्रक्रिया में बच्चों के प्रति स्नेह का प्रदर्शन तथा सुखद परिस्थितियों के साथ उन्हें जोड़ना प्रतिबद्धता की दिशा में महत्त्वपूर्ण प्रयास हो सकता है। शिक्षक को बच्चों के प्रति अपने व्यवहार का आत्मपरीक्षण तथा स्वमूल्यांकन करते रहना चाहिए जिससे कि स्वयं के विस्तार के लिए आवश्यक जानकारियाँ मिलती रहें।

समाज के लिए प्रतिबद्धता (Commitment to society): आज शिक्षालय और समाज के अन्तर्सम्बन्ध कमजोर पड़ते दिख रहे हैं। शिक्षण की प्रक्रिया सामाजिक सन्दर्भों में सम्पन्न होती है अत: समाज की आवश्यकताओं को समझना और उसकी पूर्ति हेतु प्रयत्न करना शिक्षालयों का दायित्व बनता है। समाज के लिए प्रतिबद्ध अध्यापक ही उसके सदस्यों के बीच अपनत्व के भाव विकसित कर सकते हैं। शिक्षकों को स्थानीय समुदाय के सन्दर्भ को समझना होगा, उसकी सभी गतिविधियों में भागीदार होना पड़ेगा और उसे आश्वस्त करना होगा कि वे उसी के अंग हैं और जब भी आवश्यकता समाज को पड़ेगी उसकी मदद के लिए तत्पर रहेंगे।

प्राकृतिक आपदाओं, अकाल, बाढ़, आग आदि की स्थिति में शिक्षालय मूकदर्शक बनकर नहीं रह सकते। 1931 में द्वितीय गोलमेज सम्मेलन के दौरान जब मदन मोहन मालवीय जी लन्दन गये थे तो उनको वहाँ जानकारी हुई कि काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के बगल में जनान्दोलन को दबाने के लिए पुलिस ने गोली चलायी और स्थानीय समाज के कुछ लोग उसमें हताहत हुए हैं तब मालवीय जी ने कहा कि मुझे प्रसन्नता हुई होती जब काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के छात्र भी जनता के उस संघर्ष में शामिल हुए होते। स्थानीय समाज की समस्याओं से विमुख होकर शिक्षक और शिक्षार्थी शिक्षा के वास्तविक निहितार्थ को नहीं समझ सकते। अत: शिक्षक का यह दायित्व है कि वह समाज की समस्याओं को समझे तथा उसके समाधान हेतु सतत सचेष्ट व प्रयत्नशील रहे।

व्यवसाय के लिए प्रतिबद्धता (Commitment to Profession): भारत में शिक्षा व ज्ञान के प्रसार की लम्बी परम्परा रही है इसीलिए अध्यापन को भारत में सबसे सम्मानजनक व्यवसायों में से एक माना जाता रहा है। परन्तु अब स्थिति बिल्कुल अलग है। अध्यापक को अब अर्थव्यवस्था के बाकी श्रम-शक्ति की ही तरह कर्मचारी समझा जाता है। अत: अध्यापन के व्यवसाय की गरिमा को कम करने वाले कारकों की पहचान करना और उसे दूर करना शिक्षकों का शिक्षकीय दायित्व बनता है। व्यवसाय के रूप में अध्यापन की गरिमा के प्रति आन्तरिक विश्वास होना और यह मानना कि अध्यापन एक ऐसा कार्य है जो शिक्षक को राष्ट्र निर्माण के लिए तैयार करता है। यह एक जोरदार प्रेरणा और संतुष्टि उपलब्ध कराता है।

उत्कृष्टता हासिल करने के लिए प्रतिबद्धता (Commitment to Excellence): 'आज जो मैंने किया है, उससे बेहतर करने का तरीका भी है।' यह वाक्य उत्कृष्टता की ओर सतत उन्मुखीकरण हेतु शिक्षक को अभिप्रेरित करता है। व्यावसायिक उत्कृष्टता हासिल करने के लिए

प्रतिबद्धता विकसित कर शिक्षक इस व्यवसाय को सबसे सम्मानित व्यवसाय होने का दर्जा पुनः दिला सकता है। उत्कृष्टता की कोई अन्तिम सीमा नहीं होती है, इस मान्यता के साथ उत्कृष्टता की यात्रा हेतु सतत प्रयत्नशील रहकर शिक्षक मित्र, मार्गनिर्देशक और दार्शनिक की भूमिका निभाने हेतु अपने को तैयार कर सकता है। व्यक्ति को व्यक्तित्व के रूप में रूपान्तरित करने, उसे मनुष्य से देवत्व की ओर ले जाने के गुरुतर दायित्व का निर्वहन करने हेतु यह अपेक्षित है कि वह ज्ञान के साथ ही साथ कार्य-व्यवहार व आचरण की श्रेष्ठता की ओर सदैव अग्रसर होता रहे।

बुनियादी मूल्यों के लिए प्रतिबद्धता (Commitment to basic human values): शिक्षक छात्रों के लिए आदर्श होता है। इसीलिए शिक्षा की प्रक्रिया में शिक्षक का ज्ञानवान होने के साथ ही साथ चरित्रवान होना आवश्यक है। शिक्षा वास्तव में दबाव उत्पन्न करने की नहीं अपितु प्रभाव उत्पन्न करने की प्रक्रिया है। जब छात्र शिक्षक के सम्पर्क में आता है तो उसके व्यक्तित्व के प्रभाव से उसके निर्माण की प्रक्रिया प्रारम्भ हो जाती है। यह कहा जाता है कि शिक्षक वास्तव में वह नहीं पढ़ाता है जो वह पढ़ाना चाहता है; वह वही पढ़ाता है, जो वह है।

मूल्यों को आत्मसात करना, मूल्यों को विकसित करना, मूल्य आधारित शिक्षा प्रदान करना आदि ऐसे मुद्दे हैं जिनकी अपेक्षा समाज शिक्षक से करता है। शिक्षा नीतियों में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि शिक्षक के प्रमुख दायित्वों में से एक मूल्यों को आत्मसात करना है। यह दायित्व शिक्षक के ऊपर थोपा नहीं गया है शिक्षक ने इसे स्वयं स्वीकार किया है। शिक्षालय के भीतर अथवा बाहर शिक्षक के व्यवहार में सत्य, प्रेम, सहयोग, ईमानदारी, नियमितता, प्रामाणिकता, पारदर्शिता, वस्तुनिष्ठता आदि बुनियादी मूल्यों का प्रकटन होना चाहिये। पाठ्यक्रम के निष्पादन और व्यक्तिगत उदाहरण के द्वारा शिक्षक शाश्वत मानवीय मूल्यों को आत्मसात् करने हेतु छात्र को अभिप्रेरित कर सकता है। इसके लिए मूल्यों को बढ़ावा देने वाली गतिविधियों जैसे भूमिका-खेल, प्रश्नोत्तरी, कहानी सुनाना, नाटक, महान व्यक्तियों की आत्मकथाएँ सुनाना, विभिन्न सामाजिक शैक्षिक एवं सांस्कृतिक विषयों पर कार्यशालाएँ एवं इन विषयों पर अन्य जीवन्त आयोजनों के द्वारा शिक्षक शिक्षार्थियों के बीच मानवीय मूल्य विकसित कर सकता है।

दस दक्षताएँ (Ten Competencies)

राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् ने शिक्षकों, शिक्षक अध्यापकों (Teacher educators), पाठ्यक्रम विकसित करने वालों व विभिन्न श्रेणी के विशेषज्ञों के साथ सघन वाद-संवाद के जरिये दस परस्पर सम्बद्ध दक्षताओं की पहचान की है, जो एक योग्य अध्यापक हेतु अपेक्षित हैं।

प्रासंगिक दक्षताएँ (Contextual Competencies): शिक्षा की प्रक्रिया सामाजिक तथा सांस्कृतिक सन्दर्भों में सम्पन्न होती है। इसीलिए शिक्षक को सामाजिक तथा सांस्कृतिक सन्दर्भों की गहरी समझ तथा उसमें प्रभावी ढंग से काम करने की दक्षता होनी चाहिए। उसे अपने विषय के ज्ञान

के साथ ही साथ विकासात्मक गतिविधियों, पर्यावरणीय समस्याओं, सामाजिक संरचना तथा सांस्कृतिक मूल्यों, संवैधानिक प्रावधानों तथा सूचना प्रौद्योगिकी आदि की समझ होनी चाहिए। सीखे हुए ज्ञान का विभिन्न परिस्थितियों में प्रयोग की दक्षता शिक्षक की प्रभावशीलता के लिए आवश्यक है। शैक्षिक समस्याओं को चिह्नित करना, उनको प्रभावित करने वाले कारकों को जानना तथा समस्या के निराकरण हेतु प्रभावी प्रयास करना शिक्षक का दायित्व होता है। अत: उसे इस दृष्टि से भी दक्ष और प्रभावी होना चाहिए।

अवधारणात्मक दक्षताएँ (Conceptual Competencies): शिक्षार्थी की बदलती सामाजिक, आर्थिक व सांस्कृतिक आवश्यकताओं के सन्दर्भ में शिक्षा की अवधारणा को समझने की आवश्यकता है। इसका अर्थ है कि हमें केवल मौजूदा सन्दर्भों में ही नहीं बल्कि नये घटनाक्रमों के सन्दर्भ को समझने की जरूरत है। जब शिक्षक वैश्वीकरण, आधुनिकीकरण और सूचना प्रौद्योगिकी की अवधारणा को समझने लगता है तब पाठ्यक्रम आदान-प्रदान करने की उसकी रणनीति में बदलाव आ जाता है।

पाठ्यक्रम सम्बन्धी दक्षताएँ (Content Competencies): शिक्षक की अपने विषय-वस्तु अथवा पाठ्यक्रम पर गहरी पकड़ होनी चाहिए। शिक्षक को इतना दक्ष व योग्य होना चाहिए कि वह तथ्यों के बीच समन्वय स्थापित कर सके, रटने की प्रवृत्ति को कम कर सके तथा कक्षा-शिक्षण को रोचक उदाहरणों व दृष्टान्तों के माध्यम से आनन्ददायक बना सके। बच्चों की अधिगम सम्बन्धी समस्याओं को जानना तथा उनका मूल्यांकन करना तथा प्रत्येक शिक्षार्थी की व्यक्तिगत जरूरतों को पूरा करने के लिए समाधानात्मक अध्यापन रणनीतियाँ विकसित करने के लिए प्रयास करना, तथा उसमें निपुणता हासिल करना, अध्यापक का दायित्व होता है।

कार्य निष्पादन दक्षताएँ (Transactional Competencies): निष्पादन सम्बन्धी योग्यताओं को अध्यापक शिक्षा की रीढ़ माना जा सकता है। अगर इन्हें व्यापक रूप से विकसित किया जाये तो इससे शिक्षक के अन्दर कक्षा में कार्य करने की क्षमता में अभिवृद्धि हो सकती है। शिक्षार्थियों के स्तर के अनुरूप कक्षा के भीतर सम्पर्क-संवाद को प्रभावी बनाने हेतु विभिन्न प्रकार की पाठ-योजनाओं को तैयार करने में सुविधा हो सकती है।

अन्य शैक्षणिक गतिविधियों से जुड़ी दक्षताएँ (Competencies in other Educational Activities): निर्धारित पाठ्यक्रम की गतिविधियों के माध्यम से बच्चों का संज्ञानात्मक विकास हो पाता है इस प्रकार का प्रयास शिक्षार्थी के समग्र विकास के लिए अपर्याप्त है। शिक्षा में अन्य शैक्षिक गतिविधियों पर ध्यान न दिये जाने के कारण कई समस्याएँ खड़ी हो जाती हैं। अत: शिक्षार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए शिक्षालय में प्रार्थना-सभा, वार्षिकोत्सव, गणतंत्र दिवस, स्वतंत्रता दिवस, पर्यावरण दिवस आदि कार्यक्रमों का कुशलतापूर्वक आयोजन करना शिक्षक का दायित्व बनता है।

अध्ययन व अध्यापन सामग्री विकसित करने सम्बन्धी दक्षताएँ (Competencies related to Teaching-Learning Material): स्कूली शिक्षा विशेषकर अध्यापक शिक्षा अब केवल निर्धारित पाठ्यपुस्तकों तक ही सीमित नहीं रह गये हैं। छात्रों की रुचियों एवं आवश्यकताओं के अनुसार अध्ययन-अध्यापन सामग्री का निर्माण कर शिक्षक अपनी प्रभावशीलता को बढ़ा सकता है। इसके लिए अध्यापक के स्तर पर अन्तर्दृष्टि, संसाधन-सम्पन्नता और योग्यता की आवश्यकता होती है। ज्ञान ग्रहण करने की परिस्थितियाँ इतनी तेजी से बदल रही हैं, उनके अनुरूप अपनी प्रासंगिकता को बनाये रखने हेतु शोध-पत्रिकाओं, पत्रिकाओं, ममाचार-पत्र, दूर संचार माध्यमों, पुस्तकालय का कुशलतापूर्वक प्रयोग शिक्षक के लिए अनिवार्य आवश्यकता बन गयी है।

मूल्यांकन दक्षताएँ (Evaluation Competencies): मूल्यांकन शिक्षा प्रणाली की सबसे कमजोर कड़ी है। अंकों व श्रेणियों के आवंटन पर आधारित परीक्षा प्रणाली ने बच्चों को विफल या दोयम दर्जे का घोषित कर भारी नुकसान पहुँचाया है। वर्ष भर में एक या दो बार मूल्यांकन के बजाय सतत व व्यापक मूल्यांकन की प्रक्रिया को अपनाकर छात्रों के सीखने सम्बन्धी कमजोरी का निदान किया जा सकता है। केवल संज्ञानात्मक विकास तक मूल्यांकन को सीमित रखना शैक्षिक उद्देश्यों के साथ न्याय नहीं है क्योंकि शिक्षा का उद्देश्य ज्ञानात्मक, भावात्मक तथा मनोगत्यात्मक विकास है। ऐसी स्थिति में मूल्यांकन को उत्तीर्ण और अनुत्तीर्ण बनाने के साधन के बजाय छात्रों की कमजोरियों को दूर करने तथा प्रतिपुष्टि प्रदान करने के तंत्र के रूप में व्यापक तथा सतत रूप से इसका उपयोग शिक्षक द्वारा किया जाना चाहिए।

प्रबन्धन दक्षताएँ (Management Competencies): प्रबन्धन सबसे महत्त्वपूर्ण योग्यताओं में से एक है लेकिन इसकी सबसे ज्यादा उपेक्षा की जाती है। स्कूली शिक्षा के अंग के रूप में शैक्षणिक प्रबन्धन की योग्यताओं के प्रति उदासीनता से यह स्पष्ट है कि स्कूली शिक्षा और स्कूली नवोन्मेषों की गुणवत्ता का सच क्या है? कई देशों में कक्षा प्रबन्धन को एक महत्त्वपूर्ण चुनौती के रूप में देखा जाने लगा है। कक्षा प्रबन्धन तथा कक्षा के बाहर की गतिविधियों के प्रबन्धन में दक्षता शिक्षक के लिए अत्यन्त ही महत्त्वपूर्ण पक्ष है। कक्षा में अध्यापन, स्कूल प्रबन्धन, परिसर संस्कृति के निर्माण और व्यक्तिगत व संस्थागत स्तर पर मानव सम्बन्धों का प्रबन्धन करने के लिए प्रबन्धन की विभिन्न शैली और कुशलताओं को सीखना गुणवत्तायुक्त शिक्षा हेतु अपेक्षित है।

अभिभावकों के साथ कार्य करने सम्बन्धी दक्षताएँ (Competencies related to parental contact and co-operation) : इस बात को शाश्वत रूप से स्वीकार किया जाता है कि बच्चे के शिक्षण का कार्य उसके घर से ही शुरू हो जाता है और उसके अभिभावक ही उसके पहले अध्यापक होते हैं। बच्चा जब घर से विद्यालय जाता है तो उसके लिए नये वातावरण के साथ सामंजस्य स्थापित करना एक चुनौती होता है। कई बार घर की परिस्थितियाँ बच्चे के स्कूल की उपलब्धियों को

प्रभावित करती हैं। ऐसी स्थिति में अभिभावक के साथ सम्पर्क तथा उसके सहयोग से बच्चे के स्वस्थ तथा समरस विकास की रणनीति बनाना तथा उसे लागू करना शिक्षक का एक महत्त्वपूर्ण दायित्व है। अभिभावकों की अपेक्षाओं को जानना तथा उसके अनुरूप शैक्षिक गतिविधियों का संचालन करना आवश्यकतानुसार अभिभावकों से सहयोग लेने की दक्षता से शैक्षिक समस्याओं के समाधान तथा उद्देश्यों की प्राप्ति का मार्ग सुगम हो जाता है।

समुदाय सम्पर्क तथा सहयोग सम्बन्धी दक्षताएँ (Competencies related to Community Contact and Co-operation) : आज शिक्षा की बड़ी विडम्बना यह है कि वह अपने परिवेश से विमुख है। शिक्षालय जिस समाज में स्थित है, उस समाज के साथ प्राय: सहयोग व समन्वय का अभाव दिखायी देता है। शिक्षालयों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे सामुदायिक गतिविधियों के केन्द्र के रूप में कार्य करें। समुदाय की परम्पराओं, मूल्यों, लोकसाहित्य, उत्सवों आदि को जानना तथा उसके संरक्षण एवं सम्वर्द्धन हेतु प्रयास करना शिक्षा का एक महत्त्वपूर्ण दायित्व है। शिक्षालयों का यह दायित्व है कि समाज के प्रश्नों का उत्तर वहाँ से निकले। वहीं दूसरी ओर शिक्षालयों की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु समाज को आगे आना चाहिए और समग्र स्कूली शिक्षा के सुधार हेतु सामुदायिक संसाधनों का उपयोग सुनिश्चित किया जाना चाहिए।

प्रदर्शन के पाँच क्षेत्र

शिक्षक जो कहता है वह महत्त्वपूर्ण नहीं है बल्कि छात्र के लिए वह अधिक महत्त्वपूर्ण है जो शिक्षक करता है। अत: शिक्षक का करणीय पक्ष छात्र के लिए विशेष रूप से प्रेरणादायी होता है। यहाँ पाँच ऐसे प्रदर्शन के क्षेत्रों की चर्चा उल्लेखनीय है, जिसके द्वारा शिक्षक का शिक्षकीय जीवन छात्रों के साथ ही साथ देश और समाज के लिए उदाहरण बन सकता है।

कक्षा के भीतर प्रदर्शन (Performance in Classroom): शिक्षक कक्षा का नायक होता है। कक्षा की सम्पूर्ण गतिविधियाँ शिक्षक द्वारा निर्देशित तथा नियंत्रित होती हैं। छात्र-केन्द्रित शिक्षा भी शिक्षक की योजना से ही संचालित होती है। शिक्षक छात्र के केवल मस्तिष्क को ही नहीं प्रभावित करता है अपने व्यवहार से उसके हृदय को भी प्रभावित करता है। इसी दृष्टि से शिक्षक का कक्षागत व्यवहार केवल छात्र के लिए ही नहीं वरन् पूरे राष्ट्र के लिए महत्त्वपूर्ण है। इसीलिए कहा जाता है कि शिक्षक का कार्य एक राष्ट्रीय कार्य है। प्रो. जे.एस. राजपूत कहते हैं कि शिक्षक कक्षा में यदि 5 मिनट विलम्ब से पहुँचता है, तो एक सामान्य घटना मानकर इसकी उपेक्षा नहीं की जानी चाहिए क्योंकि उसकी कक्षा में बैठे 50 छात्रों, जो कि भारत के भाग्य के निर्माता हैं (कोठारी आयोग 1964-66), का 5 मिनट बर्बाद हुआ है। इसका अर्थ यह हुआ कि भारत के भाग्य से उसने 250 मिनट चुरा लिया। शिक्षक के कक्षागत व्यवहार को इस दृष्टि से समझना होगा क्योंकि महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् की स्थापना के पीछे हमारे संस्थापकों की मूल दृष्टि यही है। इसी को ध्यान में

रखकर हमें कक्षा में अपने प्रत्येक व्यवहार का प्रदर्शन करना चाहिए क्योंकि हमारा प्रत्येक व्यवहार राष्ट्र जीवन को समृद्ध करेगा।

विद्यालय स्तर का प्रदर्शन (School Level Performance): शिक्षक से यह अपेक्षा रहती है कि वह विकास के जितने आयाम हो सकते हैं, उन सभी आयामों पर छात्रों को विकसित करे। इसके लिए कक्षा के बाहर विद्यालय परिसर की गतिविधियाँ महत्त्वपूर्ण हो जाती हैं। शिक्षक से छात्रों में स्वच्छता, अनुशासन, नेतृत्व क्षमता के साथ ही साथ विभिन्न शैक्षिक, सामाजिक व सांस्कृतिक मूल्यों के विकास की अपेक्षा की जाती है। इन सारी अपेक्षाओं को पूरा करना सामान्य बात नहीं है। यह बहुत ही चुनौतीपूर्ण कार्य है। महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् का उद्देश्य संस्कृतनिष्ठ राष्ट्रभक्त नागरिक तैयार करना है। ऐसे युवा तैयार करने हेतु विद्यालय स्तर पर ऐसी गतिविधियों का नियोजन करना होगा जिससे छात्रों का सर्वसार्विक पटल पर तो विकास हो ही साथ ही साथ देश, समाज व राष्ट्र के लिए कार्य करने की प्रेरणा भी जागृत हो। संस्थापक सप्ताह समारोह के साथ ही साथ वर्षपर्यन्त विभिन्न प्रकार के सामाजिक व सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन हमारी संस्थाओं में होता है। इन कार्यक्रमों की गुणवत्ता वृद्धि हेतु शिक्षक के अन्दर रचनात्मक दृष्टि के साथ ही साथ नवोन्मेष की प्रवृत्ति भी होनी चाहिए। इसके लिए शिक्षक को छात्रों को पढ़ाने के बजाय उन्हें पढ़ना होगा। उनकी क्षमताओं और रुचियों के अनुसार विकास के अवसर सृजित करने होंगे। अतः कक्षा के बाहर परिसर की प्रत्येक गतिविधि को जीवन्त बनाने हेतु स्वयं को कक्षा तक सीमित न रखकर उसके बाहर भी उतना ही सक्रिय तथा समर्पित होना होगा।

विद्यालय के बाहर का प्रदर्शन (Performance in Out of School Activities): विद्यालय के बाहर अन्य विद्यालयों में आयोजित होने वाले कार्यक्रमों के सन्दर्भ में जानकारी रखना, छात्रों को प्रतिभाग हेतु प्रेरित करना तथा उत्कृष्ट प्रदर्शन हेतु उन्हें तैयार करना भी शिक्षक का दायित्व होता है। स्वस्थ प्रतिस्पर्धा के माध्यम से छात्र अपनी प्रतिभा का विकास सतत करता रहे इसकी चिन्ता शिक्षक को करनी चाहिए। इस हेतु महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् की विविध प्रतियोगिताओं में उसका गुणात्मक प्रतिभाग बढ़े, इस दृष्टि से अपनी भूमिका को प्रदर्शित करना साथ ही साथ परिषद् से बाहर जनपद विश्वविद्यालय, राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर संस्था का प्रतिभाग तथा प्रदर्शन बढ़े, इसके लिए शिक्षक को न केवल अभिप्रेरक का कार्य बल्कि अपनी संस्था के प्रभाव विस्तार हेतु इसे एक महत्त्वपूर्ण आयाम मानकर प्रदर्शन करना चाहिए। महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् का शिक्षक अपनी संस्था में अपने कार्य व व्यवहार से मानक स्थापित करे साथ ही साथ अन्य संस्थाओं के लिए मानक बने, ऐसी अपेक्षा रहती है। इस अपेक्षा पर खरा उतरने हेतु हमको परिसर से बाहर रक्तदान, साक्षरता अभियान, वृक्षारोपण आदि कार्यक्रमों के माध्यम से सतत समाज व राष्ट्र जागरण का कार्य करना चाहिए।

अभिभावकों से सम्पर्क सम्बन्धी प्रदर्शन (Performance related to Parental Contact):

सामान्य तौर पर अभिभावकों व अध्यापकों का सम्पर्क बच्चे के स्कूल में प्रवेश के समय और वार्षिक परिणामों की घोषणा के समय ही हो पाता है। शिक्षण संस्थानों के ठीक प्रकार से संचालन के लिए शिक्षक-अभिभावक संवाद नियमित अन्तराल पर पर्याप्त समय के लिए होते रहने चाहिए। शिक्षक को अभिभावक के साथ सतत संवाद के माध्यम से पाठ्यक्रम से लेकर पाठ्येतर गतिविधियों के बारे में उनके अभिमत प्राप्त करते रहना चाहिए। शिक्षार्थियों की उपलब्धियों को अभिभावकों के समक्ष प्रस्तुत कर अभिभावकों व विद्यालय के बीच गतिशील सम्बन्ध स्थापित किया जा सकता है। अभिभावकों के साथ अध्यापक का व्यक्तिगत सम्बन्ध शिक्षालय को अपनी कमजोरियों को दूर करने में मार्गदर्शन का कार्य करता है। शिक्षकों को चाहिए कि वे पूरी निष्ठा, धैर्य व ऊर्जा के साथ अभिभावक के साथ सम्पर्क व सहयोग के कार्य को सम्पादित करें।

समुदाय से सम्पर्क व सहयोग सम्बन्धी प्रदर्शन (Performance related to Community Contact and Co-operation)**:** समुदाय के साथ शिक्षालय के सम्पर्क और सहयोग का कार्य अब तक प्रायः उपेक्षित ही रहा है। यद्यपि कि हम सब इस बात को स्वीकार करते हैं कि शिक्षा की पहुँच प्रत्येक व्यक्ति तक उसी अवस्था में हो सकती है जब समुदाय व ग्रामीण लोग अपनी जिम्मेदारी को समझें जिससे कि हर बच्चे को गुणवत्तायुक्त शिक्षा उपलब्ध करायी जा सके। हमारी संस्थाएँ विभिन्न स्तरों पर सामुदायिक विकास के कार्यों में संलग्न हैं परन्तु इस दिशा में शिक्षकों से और प्रभावी भूमिका की अपेक्षा की जाती है। शिक्षालय और समाज के बीच आत्मीयभाव के विकास हेतु शिक्षक सबसे महत्त्वपूर्ण कड़ी है। शिक्षक के प्रयत्न और प्रभाव से यह आत्मीय भाव इस स्तर तक पहुँच सकता है कि शिक्षालय समुदाय के समग्र विकास के वाहक बनें तथा समुदाय अपने संसाधनों का नियोजन शिक्षालय के हित में करें। एक संवेदनशील व बेहतर प्रदर्शन करने वाला शिक्षक ही अपने इस सामाजिक दायित्व के साथ न्याय कर सकता है।

संक्षेप में यह कह सकते हैं कि महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् की स्थापना जिन उद्देश्यों को लेकर हुई है उन उद्देश्यों के साथ स्वयं को जोड़ना, उनकी सिद्धि हेतु योग्यता व कुशलता प्राप्त करना तथा तदनुरूप कक्षा के अन्दर व बाहर व्यवहार करना हम सभी का दायित्व बनता है। संस्था में कार्य करते हुए प्राचार्य, शिक्षक, कर्मचारी व छात्र शैक्षिक परिवार के आदर्श के साथ जब स्वयं को संस्था की पहचान के साथ जोड़ लेते हैं तभी संस्थाएं अपने अभीष्ट को प्राप्त कर पाती हैं। 'यह संस्था हमारी है और मैं इस संस्था के लिए हूँ' इस भाव के साथ कार्य करने का संकल्प विकसित हो, यही संदर्भित विषय का निहितार्थ है।

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की स्वर्ण जयन्ती 2032 तक

गोरखपुर को ज्ञान का शहर बनाएं

भारत के माननीय राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविन्द जी 9-10 दिसम्बर 2018 ई. को गोरखपुर में थे। वे महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के संस्थापक सप्ताह समारोह के मुख्य महोत्सव में मुख्य अतिथि के रूप में सम्मिलित होने आए थे। 10 दिसम्बर 2018 ई. को श्रीगोरक्षनाथ मन्दिर के दिग्विजयनाथ स्मृति सभागार में गोरखपुर को उन्हें सुनने का गौरव प्राप्त हुआ। उन्होंने अपने उद्बोधन में गोरखपुर के बहुआयामी विकास पर जहाँ संतोष जताया वहीं महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की शताब्दी वर्ष 2032 तक गोरखपुर को ज्ञान शहर के रूप में विकसित करने का लक्ष्य भी दे दिया। प्रस्तुत है उनका प्रेरक उद्बोधन।

– सम्पादक

नाथ-परम्परा के महान योगी, गुरु गोरक्षनाथ की स्मृति से जुड़े, राप्ती और रोहिन नदियों के संगम क्षेत्र में बसे, गोरखपुर नगर में आना, सबके लिए बड़े सौभाग्य की बात होती है। उससे भी बढ़ कर, शिक्षा से जुड़े हुए कार्यक्रम में भाग लेना, और भी सुखद संयोग है। गोरखपुर मेरा कई बार आना हुआ है। मैं आश्वस्त हूँ कि गोरखपुर बदल रहा है।

विगत पूरे सप्ताह के दौरान आयोजित कार्यक्रमों और प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले सभी विद्यार्थियों को मेरी हार्दिक बधाई। पारितोषिक प्राप्त करने वाले सभी विद्यार्थी-गण, विशेष बधाई के पात्र हैं।

स्वाभिमान और आत्म-गौरव के लिए सदैव सचेत रहने वाले, पूर्वी उत्तर प्रदेश और गोरखपुर परिक्षेत्र को, अठारह सौ सत्तावन के स्वाधीनता संग्राम के बाद, विदेशी शासन की क्रूरता और उदासीनता का सामना करना पड़ा था।

20वीं सदी में, भारतीय दर्शन और क्रिया योग के प्रति, देश और विदेश में आकर्षण उत्पन्न करने वाले, **परमहंस योगानन्द** का जन्म गोरखपुर में ही हुआ था। हजरत **रोशन अली शाह** जैसे संतों (**मोहम्मद सैयद हसन, बाबू बंधु सिंह** और **राम प्रसाद बिस्मिल** जैसे शहीदों की स्मृतियों से जुड़ा यह गोरखपुर क्षेत्र, **बाबा राघव दास** जैसे राष्ट्र-सेवी संत और महान साहित्यकार **मुंशी प्रेमचन्द** की कर्म-स्थली भी रहा है। **मुंशी प्रेमचंद** के कथा-संसार में हमें गोरखपुर, खासकर यहाँ के ग्रामीण अंचल की झलक दिखाई देती है। **फिराक 'गोरखपुरी'** ने इस शहर के नाम को, उर्दू साहित्य में अमर कर दिया है।

गोरखपुर में स्थित 'गीता प्रेस' ने, आध्यात्मिक और नैतिक मूल्यों को प्रसारित करने वाला

प्रामाणिक साहित्य उपलब्ध कराके, अपना अतुलनीय योगदान दिया है। गीता प्रेस से नियमित रुप से प्रकाशित होने वाली, मासिक पत्रिका **'कल्याण'** ने, एक बहुत बड़े पाठक वर्ग को, भारत की अमूल्य विरासत से जोड़ रखा है। 'कल्याण' के प्रथम सम्पादक, विद्वान मनीषी **हनुमान प्रसाद पोद्दार जी** ने, लोगों के संस्कार-निर्माण द्वारा, समाज को सात्विक ऊर्जा प्रदान की है। मुझे बताया गया है कि सन् 1923 में स्थापित किए गए इस प्रेम में छपी पुस्तक-प्रतियों की कुल संख्या अब 62 करोड़ से भी अधिक हो चुकी है।

इस क्षेत्र में, तथा पूरे उत्तर प्रदेश में, समग्र विकास हेतु, पूरी कर्म-निष्ठा के साथ नेतृत्व प्रदान करने के लिए, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी प्रशंसा के पात्र हैं। प्रदेश के मुख्यमंत्री का पदभार संभालने से पहले, एक सक्रिय सांसद के रुप में, गोरखपुर को उनका निरंतर, नेतृत्व लगभग दो दशकों से, प्राप्त हो रहा था। उन्होंने निरंतर राष्ट्रीय और प्रादेशिक मुद्दों के साथ-साथ, इस क्षेत्र की समस्याओं की ओर, सबका ध्यान आकृष्ट किया और उनके समाधान के लिए सक्रिय योगदान दिया है।

यह उत्तर प्रदेश के निवासियों का सौभाग्य है कि, आप सबको, राज्यपाल श्री राम नाईक जी के रुप में, एक ऐसे वरिष्ठ एवं अनुभवी व्यक्तित्व का मार्गदर्शन प्राप्त है, जिनकी योग्यता तथा सार्वजनिक जीवन में विपुल योगदान की जितनी भी प्रशंसा की जाए, वह कम है।

शिक्षा विकास की कुंजी होती है। भारत के विकास का अर्थ है, भारत में शिक्षा का विकास। शिक्षा ही अच्छे व्यक्ति और समाज के निर्माण की आधारशिला भी है। सही मायने में, उसी समाज और व्यक्ति को शिक्षित माना जा सकता है, जहाँ प्रेम, करुणा, और सद्भाव जैसे मूल्यों को सर्वाधिक महत्व दिया जाता है। शिक्षा के इस व्यापक अर्थ के अनुसार, **गौतम बुद्ध** और **संत कबीर** महान शिक्षक थे। यह इस अंचल का सौभाग्य है कि गौतम बुद्ध से जुड़े कुशीनगर, श्रावस्ती, कपिलवस्तु और लुम्बिनी तथा कबीर से जुड़ा मगहर, जो संत कबीर नगर में है, गोरखपुर के ही परिक्षेत्र में स्थित है।

भक्ति आंदोलन से लेकर, अठारह सौ सत्तावन के स्वाधीनता संग्राम तक, 'नाथ-पंथ' के योगी जन-जागरण के सूत्रधार रहे हैं। समाज की एकता, देश की अखंडता और इस क्षेत्र के लोगों को अज्ञानता व अशिक्षा से मुक्ति दिलाने के लिए, गोरखनाथ पीठ से जुड़े महानुभावों ने, परिस्थिति व तत्कालीन समय के अनुसार, महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

आजादी की लड़ाई के दौरान, राष्ट्रीय-स्वाभिमान से जुड़ी आधुनिक शिक्षा प्रदान करने का एक अभियान शुरू हुआ। **महामना मदन मोहन मालवीय** द्वारा स्थापित 'बी.एच.यू.' से लेकर **महंत दिग्विजय नाथ** द्वारा 'महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद' की स्थापना, गोरखपुर तथा पूर्वी उत्तर प्रदेश में शिक्षा के विकास को गति और दिशा प्रदान करने में मील का पत्थर साबित हुई है।

'परिषद' ने, अपने दो महत्वपूर्ण महाविद्यालयों का, गोरखपुर विश्वविद्यालय में पूर्ण विलय करके, निर्माणाधीन विश्वविद्यालय को एक बना-बनाया परिसर उपलब्ध कराया था। आज इसका नाम **'दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय'** है।

संयोग से, 'परिषद' के सेवा-कार्यों को भी, **योगी आदित्यनाथ जी** अपना मार्गदर्शन प्रदान कर रहे है। मुझे बताया गया है कि उनकी सक्रियता के कारण ही गोरखपुर नगर को **'गुरु श्री गोरक्षनाथ चिकित्सालय'** जैसा एक बड़ा एवं अत्याधुनिक चिकित्सा केन्द्र प्राप्त हुआ है। मुझे यह जानकर प्रसन्ता हुई है कि आज 'परिषद' द्वारा शिक्षा एवं समाज सेवा के लिए कार्यरत, 44 संस्थान चलाए जा रहे हैं।

गोरखपुर में, **'मदन मोहन मालवीय प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय'** और **'बाबा राघव दास मेडिकल कालेज'** द्वारा तकनीकी और मेडिकल शिक्षा की सुविधा उपलब्ध कराई गई है। यहाँ AIIMS का निर्माण भी प्रगति पर है, जिसके पूरी तरह से विकसित हो जाने के बाद, इस क्षेत्र में, चिकित्सा और मेडिकल एजुकेशन के स्तर में वृद्धि होगी। यहाँ, टेक्निकल, मेडिकल और प्रोफेशनल एजुकेशन के क्षेत्र में अनेक निजी संस्थान भी अपना योगदान दे रहे हैं। मुझे विश्वास है कि, इन संस्थानों में, शिक्षा की गुणवत्ता पर विशेष जोर दिया जाएगा, और युवाओं को, समय की मांग के अनुसार, और अधिक समर्थ बनाया जाएगा।

यह स्पष्ट ही है कि इस 'परिषद' के संस्थापकों नें, बहुत सोच-समझकर, इसे महाराणा प्रताप के नाम से स्थापित किया था। जैसा हम सभी जानते हैं कि असाधारण राष्ट्र-गौरव, वीरता, और आत्म-सम्मान के प्रतीक, महाराणा प्रताप ने, जन-भावना की रक्षा करने के लिए, हँसते-हँसते, वनवासी जीवन के असहनीय कष्टों को सहन किया था। उन्होंने समाज के प्रत्येक वर्ग को साथ लेकर, आजीवन संघर्ष करते हुए, पराक्रम और बलिदान के एक ऐसे स्वर्णिम अध्याय की रचना की है, जो सदैव हम सब के लिए प्रेरणा का स्रोत बना रहेगा। आप सब के कार्यों की सार्थकता की पुष्टि तभी होगी, जब उनमें, महाराणा प्रताप के जीवन-आदर्शों के अनुपालन की झलक दिखाई पड़े।

मुझे यह जानकर प्रसन्ता हो रही है कि, 'परिषद' द्वारा सन् 1981 से हर वर्ष यह 'संस्थापक सप्ताह समारोह' मनाया जाता है, जिसमें हजारों विद्यार्थी विभिन्न प्रतियोगिताओं तथा शोभा-यात्रा में भाग लेते हैं। संस्कृति के प्रति आदर, राष्ट्र के प्रति समर्पण तथा सामाजिक कार्यों के लिए तत्परता पर बल देकर, 'परिषद' द्वारा, युवाओं के व्यक्तित्व निर्माण में सराहनीय योगदान दिया जा रहा है। यह समारोह, इस 'परिषद' के संस्थानों से जुड़े प्रत्येक व्यक्ति के लिए, संस्थापकों के आदर्शों के प्रति अपनी आस्था को दोहराने का भी अवसर है।

मुझे विश्वास है कि महान विभूतियों के नाम से आज पदक प्राप्त करने वाले सभी युवा, देश के भविष्य के लिए अपना सार्थक योगदान देंगे। साथ ही, वे अपने संगी-साथियों में प्रेरणा का

भी संचार करेंगे।

देश में युवाओं की सबसे बड़ी संख्या, उत्तर प्रदेश में ही है। यह अपने-आप में एक बहुत ही बड़ी संपदा है। इस 'यंग वर्क-फोर्स' के बल पर प्रदेश की उपजाऊ जमीन, प्रचुर जल-संसाधन, बहुत बड़ा घरेलू बाजार तथा अच्छी कनेक्टिविटी जैसी अनेक विशेषताओं का पूरा लाभ उठाया जा सकता है। मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि प्रदेश में 'इन्फोर्मेशन टेक्नालॉजी' और 'स्टार्ट-अप' को प्रोत्साहित करने के लिए, नई नीति लागू की गई है। इस नीति के तहत, उत्तर प्रदेश 'स्टार्ट-अप फंड' , 'आई.टी. पार्क्स', तथा 'ईज ऑफ डूइंग बिजनेस' के सुधारों पर विशेष जोर दिया जा रहा है। युवाओं को 'जॉब क्रिएटर' बनने के लिए प्रोत्साहन और सुविधाएं प्रदान की जा रही हैं। इन प्रयासों से, प्रदेश के विकास में, युवाओं की भागीदारी, और बढ़ेगी।

पूर्वांचल क्षेत्र के विकास के बिना, उत्तर प्रदेश के समग्र विकास की कल्पना नहीं की जा सकती है। मुझे विश्वास है कि अपने पूर्वांचल के विकास से समृद्ध होकर, उत्तर प्रदेश, प्रगति के पथ पर और तेज गति से आगे बढ़ेगा।

लगभग एक दशक पहले, सन् 2007 में, 'महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद' का 'हीरक जयंती' वर्ष था। प्राय: सभी संस्थान, ऐसे अवसरों पर, अपनी उपलब्धियों का उत्सव मनाते हैं, और अपने भविष्य के लक्ष्य निश्चित करते हैं। आज से लगभग डेढ़ दशक बाद सन् 2032 में इस 'परिषद' का 'शताब्दी-वर्ष' मनाया जाएगा। मेरा सुझाव है कि, 'परिषद' के 'शताब्दी-वर्ष' तक, सुविचारित योजनाओं और प्रयासों के बल पर, गोरखपुर को **'सिटी ऑफ नॉलेज'** के रूप में स्थापित करने का, आप सभी को संकल्प लेना चाहिए। आप लोगों की कर्मठता को देखकर, मुझे पूरा विश्वास है कि आप सभी, इस लक्ष्य को प्राप्त करने में अवश्य सफल होंगे।

मैं एक बार फिर, पारितोषिक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को विशेष बधाई देता हूँ तथा आप सभी के, उज्ज्वल भविष्य के लिए, अपनी शुभकामनाएँ देता हूँ।

धन्यवाद,

जय हिन्द!

श्री गोरक्षपीठ, गोरखनाथ मन्दिर के सानिध्य में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद्, गोरखपुर के अन्तर्गत संचालित संस्थाएं

1. **गुरु श्रीगोरक्षनाथ संस्कृत विद्यापीठ,** गोरखनाथ, गोरखपुर
2. **दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय,** गोरखपुर
3. **दिग्विजयनाथ एल.टी. प्रशिक्षण (बी.एड. पाठ्यक्रम) महाविद्यालय,** गोरखपुर
4. **महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय,** जंगल धूसड़, गोरखपुर
5. **महाराणा प्रताप महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय,** रामदत्तपुर, गोरखपुर
6. **गुरु श्रीगोरक्षनाथ कालेज आफ नर्सिंग,** गोरखनाथ, गोरखपुर
7. **गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त अवेद्यनाथ महाविद्यालय,** चौक बाजार, महराजगंज
8. **महाराणा प्रताप इण्टर कालेज,** गोरखपुर
9. **गुरु श्रीगोरक्षनाथ संस्कृत उच्चतर माध्यमिक विद्यालय,** गोरखनाथ, गोरखपुर
10. **दिग्विजयनाथ इण्टर कालेज,** चौक बाजार, महराजगंज
11. **महाराणा प्रताप बालिका इण्टर कालेज,** सिविल लाइन्स, गोरखपुर
12. **महाराणा प्रताप कन्या इण्टर कालेज,** रामदत्तपुर, गोरखपुर
13. **महाराणा प्रताप कृषक इण्टर कालेज,** जंगल धूसड़, गोरखपुर
14. **दिग्विजयनाथ इण्टर कालेज,** चौक माफी, पीपीगंज, गोरखपुर
15. **महाराणा प्रताप सीनियर सेकेण्डरी स्कूल,** मंगला देवी मन्दिर, बेतियाहाता, गोरखपुर
16. **गुरू गोरखनाथ विद्यापीठ,** भरोहिया, पीपीगंज, गोरखपुर
17. **आदि शक्ति माँ पाटेश्वरी पब्लिक स्कूल,** भवनियापुर, तुलसीपुर, बलरामपुर
18. **महाराणा प्रताप शिशु शिक्षा विहार,** लालडिग्गी, गोरखपुर
19. **दिग्विजयनाथ बालिका विद्यालय,** चौक बाजार, महराजगंज
20. **दिग्विजयनाथ शिशु शिक्षा विहार,** चौक बाजार, महराजगंज
21. **महाराणा प्रताप चिल्ड्रेन एकेडमी,** सिविल लाइन्स, गोरखपुर
22. **आदिशक्ति माँ पाटेश्वरी नन्दमहरी,** तुलसीपुर, बलरामपुर।
23. **हिन्दू विद्यापीठ,** जंगल तिनकोनिया नं. 1, गोरखपुर
24. **गुरू गोरक्षनाथ संस्कृत उ.मा. विद्यालय,** मैदागिन, वाराणसी
25. **गुरू श्रीगोरक्षनाथ संस्कृत छात्रावास,** श्री गोरखनाथ मन्दिर, गोरखपुर
26. **प्रताप आश्रम,** गोलघर, गोरखपुर
27. **महाराणा प्रताप मीराबाई महिला छात्रावास,** सिविल लाइन्स, गोरखपुर
28. **दिग्विजयनाथ महिला छात्रावास,** सिविल लाइन्स, गोरखपुर
29. **योगिराज बाबा गम्भीरनाथ सेवाश्रम,** जंगल धूसड़, गोरखपुर
30. **श्री माँ पाटेश्वरी वनवासी छात्रावास,** देवीपाटन, तुलसीपुर, बलरामपुर
31. **महाराणा प्रताप पालिटेक्निक,** गोरखपुर
32. **महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केन्द्र,** चौक माफी, पीपीगंज, गोरखपुर
33. **गुरू श्रीगोरक्षनाथ चिकित्सालय,** गोरखनाथ, गोरखपुर
34. **महन्त दिग्विजयनाथ आयुर्वेद चिकित्सालय,** गोरखनाथ, गोरखपुर
35. **ब्रह्मलीन गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त अवेद्यनाथ नि:शुल्क प्राथमिक उपचार केन्द्र,** गोरखपुर
36. **ब्रह्मलीन गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त अवेद्यनाथ नि:शुल्क प्राथमिक उपचार केन्द्र,** जंगल धूसड़, गोरखपुर
37. **ब्रह्मलीन गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त अवेद्यनाथ नि:शुल्क प्राथमिक उपचार केन्द्र,** चौक माफी, पीपीगंज
38. **ब्रह्मलीन गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त अवेद्यनाथ नि:शुल्क प्राथमिक उपचार केन्द्र,** चौक बाजार, महराजगंज
39. **श्री माँ पाटेश्वरी शक्तिपीठ सेवाश्रम चिकित्सालय,** देवीपाटन, तुलसीपुर, बलरामपुर
40. **महायोगी गुरू श्रीगोरक्षनाथ योग संस्थान,** गोरखनाथ, गोरखपुर
41. **गुरु श्रीगोरक्षनाथ आधुनिक व्यायामशाला,** गोरखनाथ, गोरखपुर
42. **महाराणा प्रताप टेलरिंग कालेज,** गोरखपुर
43. **योगिराज बाबा गम्भीरनाथ नि:शुल्क सिलाई-कढ़ाई प्रशिक्षण केन्द्र,** जंगल धूसड़, गोरखपुर
44. **महायोगी गुरू श्री गोरक्षनाथ गौ सेवा केन्द्र,** गोरखनाथ मन्दिर, गोरखपुर
45. **गुरू श्रीगोरक्षनाथ सेवा संस्थान,** गोरखनाथ, गोरखपुर

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद्
के
बढ़ते कदम .....

परम्परागत-आधुनिक
एवं
तकनीकी शिक्षा के साथ
स्वास्थ्य शिक्षा एवं वृहत्तर चिकित्सा सेवा
का
लोक-कल्याणकारी अभियान

महाराणा प्रताप जी अद्भुत शौर्य, अदम्य साहस और दृढ़ संकल्प के अद्वितीय प्रतीक हैं। वो एक ऐसे महान योद्धा व शासक थे जिन्होंने राष्ट्र एवं धर्म की रक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुति तक दे दी, पर अधर्म के आगे झुके नहीं। उनका उद्घोष –

'जो हठि राखे धर्म को, तिहि राखे करतार'

हमारा बोध वाक्य है।

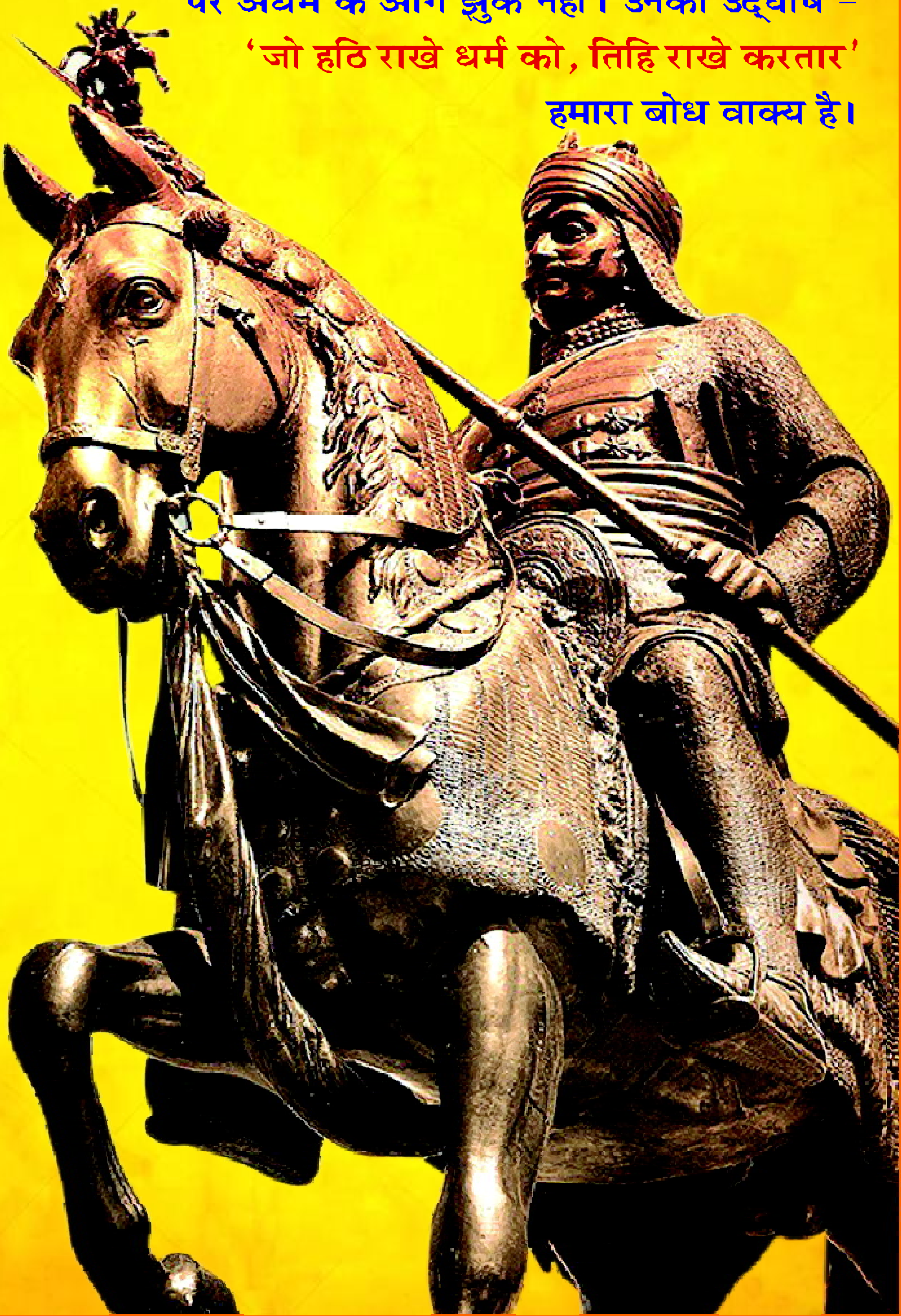

श्री गोरक्षनाथ संस्कृत विद्यापीठ (स्नातकोत्तर महाविद्यालय), गोरखनाथ मन्दिर, गोरखपुर

स्थापना का वर्ष - सन् 1949-50

स्थापना के समय खोले गये विषय/संकाय

वेद, व्याकरण, ज्योतिष तथा साहित्य विषयों का पारम्परिक शिक्षण स्थापना वर्ष से होता आ रहा है।

संस्था की वर्षवार प्रगति

- सन् 1965-66 में महाविद्यालय को शास्त्री की मान्यता प्राप्त हुई।

स्थापना के समय महाविद्यालय भवन

महाविद्यालय का वर्तमान भवन एवं परिसर

- सन् 1973 में स्नातकोत्तर (आचार्य) की मान्यता प्राप्त हुई।
- सन् 1977 में वेद, व्याकरण, पुराणेतिहास तथा आधुनिक विषय की मान्यता प्राप्त हुई।
- सन् 2002 में स्नातकोत्तर (शास्त्री/आचार्य) एवं माध्यमिक (पूर्व मध्यमा/उत्तर मध्यमा) की अलग-अलग मान्यता।
- 09 मार्च 2017 को महाविद्यालय मानव संसाधन विकास मंत्रालय से 2(f)12(b) में यू.जी.सी. एक्ट 1956 के अन्तर्गत रजिस्टर्ड हुआ।
- 26.07.2018 को उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज द्वारा अध्ययन केन्द्र की स्थापना।

प्रधानाचार्य

क्र.सं.	नाम	कब से कब तक
1.	श्री मुरलीधराचार्य	01.07.1949 से 06.07.1966 तक
2.	पं. श्यामवर्ण द्विवेदी	07.07.1966 से 05.12.1975 तक
3.	श्री राघव प्रसाद त्रिपाठी	06.12.1975 से 16.01.1976 तक
4.	आचार्य पूर्णचन्द्र उपाध्याय	17.01.1976 से 30.06.1995 तक
5.	डॉ. उमाकान्त शर्मा	01.07.1995 से 15.08.2002 तक
6.	आचार्य रंगराज शुक्ल	16.08.2002 से 30.06.2011 तक
7.	डॉ. रामनरेश पाण्डेय	01.07.2011 से 30.06.2015 तक
8.	डॉ. अरविन्द कुमार चतुर्वेदी	01.07.2015 से अद्यतन

वर्तमान में विद्यार्थियों की संख्या : 576

शिक्षकों की संख्या : 12

शिक्षणेतर कर्मचारियों की संख्या : 01

संस्था का ई-मेल (e-mail) : sgsvidyapith@gmail.com

वेबसाइट (website) : sgsvidyapeeth.org

दूरभाष (Telephone) : 9415853007

संस्था की स्थापना से लेकर अब तक की विशेष उपलब्धियाँ

1. डॉ. हरिद्वार शुक्ल - राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित।
2. डॉ. अरविन्द कुमार चतुर्वेदी - उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान में सदस्य नामित।

संस्था के विशिष्ट स्थान प्राप्त पुरातन छात्र

क्र.सं.	नाम	पद/कार्यस्थल
1.	डॉ. जयप्रकाश मिश्र	राजस्थान विश्वविद्यालय
2.	प्रो. सन्तोष कुमार शुक्ल	जवाहरलाल विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
3.	प्रो. विनय कुमार पाण्डेय	काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
4.	प्रो. सुभाष चन्द्र पाण्डेय	काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
5.	श्री छविनाथ सिंह	पूर्व प्रधानाचार्य, श्री दिग्विजयनाथ इण्टर कॉलेज
6.	श्री मुकुन्द पौडेल	सचिव, नेपाल परराष्ट्र मंत्रालय
7.	श्री एक नारायण भण्डारी	महाविद्यालय नेपाल कैम्पस
7.	श्री शैलेष शुक्ल	पी.सी.एस.

10 दिसम्बर 2018 को महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ एवं राष्ट्रसंत महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज का दर्शन करते भारत के महामहिम राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद जी साथ में उ.प्र. के तत्कालीन मा. राज्यपाल श्री राम नाईक जी तथा मा. मुख्यमंत्री गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त योगी आदित्यनाथ जी महाराज।

श्रीगोरक्षनाथ मन्दिर परिसर में संस्थापक सप्ताह समारोह के मुख्य महोत्सव में भारत के महामहिम राष्ट्रपति का स्वागत एवं अभिनन्दन।

संस्थापक सप्ताह समारोह के मुख्य महोत्सव में महन्त दिग्विजयनाथ स्मृति सभागार के लिए प्रस्थान करते भारत के महामहिम राष्ट्रपति, मा. राज्यपाल, मा. मुख्यमंत्री।

दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गोरखपुर

स्थापना का वर्ष - 25 अगस्त, 1969 ई.

दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय की स्थापना 25 अगस्त, 1969 ई. को दिग्विजयनाथ डिग्री कॉलेज के रूप में हुई थी। यह संस्था 1932 ई. में स्थापित उत्तर प्रदेश की गौरवभूत अग्रणी शैक्षिक संस्था महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद्, गोरखपुर के अन्तर्गत संचालित है। इस संस्था को राष्ट्रीय पुनर्निर्माण और शैक्षिक पुनर्जागरण के अग्रदूत युगपुरुष ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज के

दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय (विज्ञान, शिक्षा संकाय एवं प्रशासनिक भवन)

दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय (कला एवं वाणिज्य संकाय) का वर्तमान भव्य भवन

कर-कमलों द्वारा काल के वक्ष पर स्थापित अन्तिम कीर्ति-स्तम्भ होने का गौरव प्राप्त है।

यह स्नातकोत्तर महाविद्यालय गोरखपुर महानगर के हृदयस्थल गोलघर, सिविल लाइन्स क्षेत्र में गोरखपुर रेलवे स्टेशन से मात्र 1.5 किमी. की दूरी पर स्थित है। पूर्वी एवं पश्चिमी दो परिसरों में विभक्त यह महाविद्यालय जिलाधिकारी कार्यालय, न्यायालय तथा दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के परिसरों से संलग्न है। अपने संस्थापक युगपुरुष ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज एवं ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज के स्वप्नों को साकार करने के लिए प्रखर राष्ट्र चेतना एवं सेवा-समर्पण की भावना से लोकहित में तत्पर उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री एवं वर्तमान गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त योगी आदित्यनाथ जी महाराज के कुशल नेतृत्व में संचालित यह महाविद्यालय अध्यापन और अनुशासन दोनों दृष्टियों से न केवल इस नगर में अपितु दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय से सम्बद्ध महाविद्यालयों में अग्रणी स्थान रखता है।

स्थापना के समय खोले गये विषय/संकाय सहित विवरण

क्र.सं.	विषय	संकाय	वर्ष	स्थायी/अस्थायी
1.	प्राचीन इतिहास	कला	1969	स्थायी
2.	हिन्दी	कला	1969	स्थायी
3.	अर्थशास्त्र	कला	1969	स्थायी
4.	अंग्रेजी	कला	1969	स्थायी
5.	राजनीतिशास्त्र	कला	1969	स्थायी
6.	संस्कृत	कला	1969	स्थायी
7.	समाजशास्त्र	कला	1969	स्थायी

संस्था की वर्षवार प्रगति आख्या : नवीन विषय/संकाय का शुभारम्भ

स्नातक स्तर पर

क्र.सं.	विषय	संकाय	वर्ष	स्थायी/अस्थायी
1.	भूगोल	कला	1970	स्थायी
2.	शिक्षाशास्त्र	कला	1970	स्थायी
3.	बी.एड.	शिक्षा	1972	स्थायी
4.	रक्षा अध्ययन	कला/विज्ञान	1974	स्थायी
5.	मनोविज्ञान	कला	1974	स्थायी
6.	वनस्पति विज्ञान	विज्ञान	1974	स्थायी

7.	रसायन विज्ञान	विज्ञान	1974	स्थायी
8.	जन्तु विज्ञान	विज्ञान	1974	स्थायी
9.	वाणिज्य	वाणिज्य	2003	स्थायी
10.	भौतिक विज्ञान	विज्ञान	2010	स्थायी
11.	कम्प्यूटर विज्ञान	विज्ञान	2010	स्थायी
12.	गणित	विज्ञान	2010	स्थायी
13.	शारीरिक शिक्षा	कला/विज्ञान	2018	स्थायी

स्नातकोत्तर स्तर पर

क्र.सं.	विषय	संकाय	वर्ष	स्थायी/अस्थायी
1.	प्राचीन इतिहास	कला	1983	स्थायी
2.	हिन्दी	कला	2010	स्थायी
3.	भूगोल	कला	2010	स्थायी
4.	राजनीति विज्ञान	कला	2018	अस्थायी
5.	समाजशास्त्र	कला	2018	अस्थायी
6.	शिक्षाशास्त्र	कला	2018	अस्थायी
7.	रक्षा अध्ययन	कला	2018	अस्थायी
8.	रसायन विज्ञान	विज्ञान	2018	अस्थायी
9.	वाणिज्य	वाणिज्य	2018	अस्थायी

स्थापना से अब तक के प्राचार्य

क्र.सं.	नाम	कब से कब तक
1.	श्री ब्रजमोहन सिंह	26.09.1969 से 30.06.1993 तक
2.	डॉ. कुँवर नरेन्द्र प्रताप सिंह	01.07.1993 से 20.07.2006 तक
3.	डॉ. योगेन्द्र सिंह	28.07.2006 से 17.05.2009 तक
4.	डॉ. मयाशंकर सिंह	18.05.2009 से 30.06.2013 तक
5.	डॉ. गीता दत्त	01.07.2013 से 30.06.2014 तक
6.	डॉ. डी.पी.एन. सिंह	01.07.2014 से 07.08.2014 तक
7.	डॉ. शेर बहादुर सिंह	08.08.2014 से 30.06.2016 तक
8.	डॉ. शैलेन्द्र प्रताप सिंह	01.07.2016 से अद्यतन

वर्तमान में विद्यार्थियों की संख्या : 3440

शिक्षकों की संख्या : 61

कर्मचारियों की संख्या : 56 (तृतीय श्रेणी - 21, चतुर्थ श्रेणी - 35)

संस्था का ई-मेल (e-mail) : dnpggkp@gmail.com

वेबसाइट (website) : www.dnpgcollege.edu.in

दूरभाष (Telephone) : 0551-2334549

विशेष उपलब्धियाँ

i) राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन

देश, समाज, शिक्षा, पर्यावरण, अर्थव्यवस्था इत्यादि से जुड़े ज्वलन्त विषयों पर महाविद्यालय द्वारा यू.जी.सी., आई.सी.डब्ल्यू.ए, आई.सी.एच.आर., आई.सी.एस.एस.आर. उत्तर प्रदेश राज्य सरकार द्वारा वित्तपोषित राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें कुछ महत्वपूर्ण आयोजन निम्नवत् है:-

क्र. सं.	तिथि	विषय	विभाग का नाम	अनुदान देने वाली संस्था
1.	08-09 अप्रैल 2018	वर्तमान वैश्विक परिप्रेक्ष्य में बौद्ध शिक्षा की प्रासंगिकता	बी.एड.	आई.सी.एच.आर. नई दिल्ली
2.	25-26 मार्च 2018	एडवांसेज इन हेल्थ एण्ड वेलबिईंग रिसर्च	मनोविज्ञान	उ.प्र. सरकार
3.	23-24 मार्च 2018	ग्रामीण आर्थिक विकास में सहकारिता की भूमिका	अर्थशास्त्र	उ.प्र. सरकार
4.	20-21 अक्टूबर 2016	उच्च शिक्षण संस्थानों में गुणवत्ता प्रबन्धन	आई.क्यू.ए.सी.	नैक, बंगलुरू
5.	17-18 अक्टूबर 2016	ग्रामीण आर्थिक विकास में महिलाओं की भूमिका	अर्थशास्त्र	यू.जी.सी., नई दिल्ली
6.	06 अक्टूबर 2016	भारतीय विदेश नीति-भारत नेपाल सम्बन्ध	रक्षा अध्ययन	आई.सी.डब्ल्यू.ए. नई दिल्ली
7.	06-07 नवम्बर 2015	भूमण्डलीकरण एवं भारतीय कृषि: परिप्रेक्ष्य एवं सम्भावनाएँ	अर्थशास्त्र	आई.सी.एस.एस. आर., नई दिल्ली
8.	16-17 फरवरी 2013	सामाजिक एवं शैक्षिक संदर्भ में उच्च शिक्षा में महिलाओं की सहभागिता: वैश्वीकरण के विशेष सन्दर्भ में	बी.एड्.	यू.जी.सी., नई दिल्ली

क्र. सं.	तिथि	विषय	विभाग का नाम	अनुदान देने वाली संस्था
9.	25-26 फरवरी 2012	प्राचीन भारतीय अर्थव्यवस्था के विविध आयाम : पूर्वी उ.प्र. के विशेष सन्दर्भ में	प्राचीन इतिहास	यू.जी.सी., नई दिल्ली
10.	18-19 फरवरी 2012	भारत का वर्तमान आर्थिक परिवेश: चुनौतियाँ एवं सम्भावनाएँ	वाणिज्य	यू.जी.सी., नई दिल्ली
11.	13-14 अक्टूबर 2012	ग्रामीण रोजगार योजनाएँ एवं आर्थिक सामाजिक विकास	अर्थशास्त्र	यू.जी.सी., नई दिल्ली
12.	05-06 मार्च 2011	भारत में आन्तरिक सुरक्षा : चुनौतियाँ एवं विकल्प	रक्षा अध्ययन	यू.जी.सी., नई दिल्ली
13.	19-20 फरवरी 2011	वैश्वीकरण के युग में अध्यापक शिक्षा : अनुभव एवं सम्भावनाएँ	बी.एड.	यू.जी.सी., नई दिल्ली
14.	27-28 नवम्बर 2010	भारत में गठबन्धन की राजनीति चुनौतियाँ एवं विकल्प	राजनीतिशास्त्र	यू.जी.सी., नई दिल्ली
15.	02-03 नवम्बर 2010	पर्यावरण शिक्षा एवं हरित शिक्षक	बी.एड.	यू.जी.सी., नई दिल्ली
16.	22-23 दिसम्बर 2007	भारतीय इतिहास लेखन : चुनौतियाँ एवं नए आयाम	प्राचीन इतिहास	यू.जी.सी., नई दिल्ली

ii) शोध परियोजना

महाविद्यालय को यू.जी.सी. द्वारा वृहद एवं लघु शोध परियोजनाओं हेतु अनुदान प्राप्त हुआ, जिसका विवरण निम्नवत है-

वृहद् शोध परियोजना

क्र. सं.	शोध का विषय	शोधकर्ता	विभाग	वर्ष	अनुदान देने वाली संस्था
1.	पूर्वी उत्तर प्रदेश में स्व-वित्तपोषित स्व-वित्तपोषित योजनान्तर्गत संचालित महाविद्यालयों की समस्याओं एवं सम्भावनाओं का अध्ययन	डॉ. मयाशंकर सिंह	बी.एड्.	2010	यू.जी.सी., नई दिल्ली

लघु शोध परियोजना

क्र. सं.	शोध का विषय	शोधकर्ता	विभाग	वर्ष	अनुदान देने वाली संस्था
1.	पूर्वी उत्तर प्रदेश की ग्रामीण एवं शहरी महिलाओं में पर्यावरण संरक्षण की अभिवृत्ति जागरूकता एवं दायित्व बोध का अध्ययन	डॉ. शीला सिंह	मनोविज्ञान	2010	यू.जी.सी., नई दिल्ली
2.	महात्मा गाँधी के आर्थिक चिन्तन की इक्कीसवीं शताब्दी में प्रासंगिकता	डॉ. वीणा गोपाल मिश्रा	राजनीतिशास्त्र	2010	यू.जी.सी., नई दिल्ली
3.	भूमण्डलीकरण के युग में अध्यापक शिक्षा की दिशा एवं दशा का अध्ययन : उत्तर प्रदेश के विशेष सन्दर्भ में	डॉ. गीता सिंह	बी.एड.	2012	यू.जी.सी., नई दिल्ली

फेलोशिप

क्र. सं.	शोध का विषय	शोधकर्ता	विभाग	वर्ष	अनुदान देने वाली संस्था
1.	प्राचीन भारत में कुसीद	श्री अनिल श्रीवास्तव (शोध-छात्र)	प्राचीन इतिहास	2011	आई.सी.एच.आर., नई दिल्ली
2.	भारत के पूर्वमध्यकालीन धार्मिक सम्प्रदाय	कु. दिव्या सोनकर (शोध-छात्र)	प्राचीन इतिहास	2011	यू.जी.सी., नई दिल्ली
3.	पांचाल क्षेत्र का पुरातात्त्विक एवं सांस्कृतिक अध्ययन	श्री देवव्रत त्रिपाठी (शोध-छात्र)	प्राचीन इतिहास	2016	यू.जी.सी., नई दिल्ली
4.	पालि बौद्धकालीन वांगमय में प्रतिबिम्बित समाज : एक अनुशीलन	श्री ओमकार सिंह (शोध-छात्र)	प्राचीन इतिहास	2017	यू.जी.सी., नई दिल्ली

iii) महिला छात्रवास की स्थापना

महाविद्यालय में यू.जी.सी. द्वारा अनुदानित दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महिला छात्रावास की स्थापना 11 जून 2011 में की गयी। महिला छात्रावास के भूतल एवं प्रथम तल के कुल 30 कमरों में 121 छात्राओं की आवासीय व्यवस्था है।

iv) व्यायामशाला की स्थापना

महाविद्यालय में यू.जी.सी. द्वारा अनुदानित आधुनिक व्यायामशाला की स्थापना 2012 में की गयी है जिसमें अत्याधुनिक उपकरण उपलब्ध हैं। महाविद्यालय के विद्यार्थी, शिक्षक एवं कर्मचारी नि:शुल्क व्यायामशाला की सेवाएँ प्राप्त करते हैं।

v) नेटवर्क रिसोर्स सेण्टर की स्थापना

महाविद्यालय में यू.जी.सी. द्वारा अनुदानित कम्प्यूटर नेटवर्क रिसोर्स सेण्टर की स्थापना 2012 में की गयी है।

पुरस्कार एवं सम्मान

शिक्षक

1. हिन्दी विभाग के प्राध्यापक डॉ. सत्येन्द्र प्रताप सिंह 2013 में तीन वर्षों के लिए भारत सरकार के केन्द्रीय युवा कार्यक्रम एवं खेलकूद मंत्रालय की राजभाषा समिति के सदस्य नामित हुए।
2. डॉ. शैलेन्द्र प्रताप सिंह, एसोसिएट प्रोफेसर, रक्षा अध्ययन विभाग को महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् द्वारा वर्ष 2015 का श्रेष्ठतम शिक्षक का 'योगिराज बाबा गम्भीरनाथ स्वर्णपदक' उत्तर प्रदेश के माननीय राज्यपाल श्री रामनाईक जी द्वारा प्रदान किया गया।
3. डॉ. राजशरण शाही, एसोसिएट प्रोफेसर, बी.एड्. विभाग को महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् द्वारा वर्ष 2017 का श्रेष्ठतम शिक्षक का 'योगिराज बाबा गम्भीरनाथ स्वर्णपदक' डॉ. सत्यपाल सिंह, मानव संसाधन विकास राज्य मंत्री द्वारा प्रदान किया गया।
4. डॉ. नीरज कुमार सिंह, असिस्टेण्ट प्रोफेसर, वाणिज्य विभाग को महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् द्वारा वर्ष 2018 का श्रेष्टतम शिक्षक का 'योगिराज बाबा गम्भीरनाथ स्वर्णपदक' भारत के राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविन्द जी द्वारा प्रदान किया गया।

विद्यार्थी

5. बी.कॉम. तृतीय वर्ष की छात्रा कु. आराधना शुक्ला ने 01 से 31 जनवरी 2013 तक आर. डी. कैम्प, नई दिल्ली में प्रतिभाग किया तथा 26 जनवरी 2013 को गणतंत्र दिवस परेड में सम्मिलित हुई।
6. बी.ए. प्रथम वर्ष के छात्र श्री आदित्य जायसवाल को वर्ष 2015 का स्नातक के श्रेष्ठतम विद्यार्थी 'ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ स्वर्णपदक' उत्तर प्रदेश के माननीय राज्यपाल श्री रामनाईक जी द्वारा प्रदान किया गया।
7. बी.ए. भाग तीन के छात्र (2017-18) श्री आदित्य जायसवाल को ताइक्वाण्डो फेडरेशन ऑफ इण्डिया द्वारा ब्लैक बेल्ट एवं नेशनल रेफरी का खिताब प्राप्त हुआ। साथ ही श्री जायसवाल को उक्त संस्था द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय प्लेयर के लिए चयनित किया गया एवं

खिलाड़ी के रूप में खेल में प्रतिभाग किया।

8. बी.ए. तृतीय वर्ष के छात्र श्री अभिषेक प्रताप सिंह एवं एम.कॉम. प्रथम वर्ष की छात्रा कु. अंकिता त्रिपाठी 01 मे 31 जनवरी 2018 तक गणतंत्र दिवस परेड में संयुक्त रूप मे सम्मिलित हुए।
9. एम.कॉम. की छात्रा कु. अंकिता त्रिपाठी ने 03 से 10 जुलाई 2018 तक युवा कल्याण एवं खेल मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा यूथ एक्सचेंज प्रोग्राम के तहत चाइना में प्रतिभाग किया।
10. एम.ए. प्रथम वर्ष के छात्र श्री मिथिलेश कुमार यादव ने 12 से 16 जनवरी 2018 तक राष्ट्रीय युवा उत्सव, ग्रेटर नोएडा उत्तर प्रदेश में प्रतिभाग किया।
11. एम.कॉम. प्रथम वर्ष की छात्रा कु. करिश्मा वारसी को महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् वर्ष 2018 का स्नातकोत्तर में श्रेष्ठतम विद्यार्थी का 'ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ स्वर्णपदक' भारत के राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविन्द जी द्वारा प्रदान किया गया।

महाविद्यालय 'अ' श्रेणी में

उत्तर प्रदेश शासन द्वारा दिनांक 13 जुलाई 2007 को महाविद्यालय की गुणवत्ता का मूल्यांकन कर 'अ' श्रेणी प्रदान किया गया।

राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद् (NAAC) द्वारा महाविद्यालय का मूल्यांकन

राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद् 'नैक', बंगलुरू द्वारा मार्च 2007 में प्रथम बार महाविद्यालय की गुणवत्ता जाँचने हेतु तीन सदस्यीय पीयर टीम ने महाविद्यालय के विविध गतिविधियों एवं आयामों का मूल्यांकन कर C श्रेणी प्रदान किया था तथा पुनः सितम्बर 2014 में मूल्यांकन कर 'B' श्रेणी (CGPA 2.78) प्रदान किया।

ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी की प्रतिमा का लोकार्पण

25 मई 2013 को महाविद्यालय के संस्थापक ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज की आदमकद प्रस्तर प्रतिमा की स्थापना तथा प्रतिमा का लोकार्पण उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री एवं वर्तमान गृहमंत्री श्री राजनाथ सिंह जी द्वारा किया गया।

कैण्टीन की स्थापना

महाविद्यालय में सितम्बर 2013 में एक अल्पाहार केन्द्र की स्थापना की गयी है, जिससे कि महाविद्यालय के शिक्षकों, कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों को शुद्ध अल्पाहार प्राप्त हो सके।

छात्रसंघ भवन की स्थापना

शासन के दिशा-निर्देशानुसार प्रतिवर्ष छात्रसंघ का चुनाव सम्पन्न कराया जाता है। छात्रसंघ के पदाधिकारियों को बैठने के लिए नया सुसज्जित छात्रसंघ भवन की स्थापना 2013 में महाविद्यालय में की गयी।

संग्रहालय की स्थापना

1. महाविद्यालय के प्राचीन इतिहास एवं पुरातत्त्व विभाग में एक संग्रहालय का लोकार्पण 25 मई 2013 को गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज के कर-कमलों से किया गया जिसका उद्देश्य अपने प्राचीन भारतीय संस्कृति, धर्म कला का साक्षात् अध्ययन मूर्तियों, स्मारकों, मन्दिरों और पुरानिधियों से हो सके।
2. रक्षा अध्ययन विभाग में युवाओं को अभिप्रेरित करने के उद्देश्य से राष्ट्रगौरव/राष्ट्रदर्शन संग्रहालय की स्थापना - इसके अन्तर्गत देश के प्रेरणा-स्थलों यथा- हल्दीघाटी, जलियांवाला बाग, कारगिल, मोइरांग, चौरीचौरा, सेल्यूलर जेल अण्डमान आदि की पवित्र मिट्टी और साहित्य के संग्रह से एक संग्रहालय स्थापित है।

पुस्तकालय एवं विभागीय पुस्तकालय

महाविद्यालय का केन्द्रीय ग्रन्थालय गोरखपुर के प्रतिष्ठित पुस्तकालयों में एक है। ग्रन्थालय में 35440 सन्दर्भ ग्रन्थ एवं पाठ्य पुस्तक उपलब्ध हैं। विभागीय पुस्तकालय भी विभागों द्वारा व्यवस्थित रूप से संचालित हैं।

महाविद्यालय के प्रकाशन

विद्यार्थियों की रचनात्मक प्रतिभा को विकसित करने के लिए महाविद्यालय द्वारा वार्षिक पत्रिका 'अरावली' का प्रकाशन होता है। प्रकाशक के रूप में महाविद्यालय-सहविद्यालय एवं स्वयं प्रकाशक के रूप में पंजीकृत है। वर्ष 2019 ई. में महाविद्यालय को ISBN प्राप्त हो चुका है।

ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ नि:शुल्क प्राथमिक उपचार केन्द्र

गुरुश्री गोरखनाथ चिकित्सालय के सहयोग से ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ प्राथमिक उपचार केन्द्र के द्वारा महाविद्यालय के शिक्षकों, कर्मचारियों, विद्यार्थियों एवं आसपास के आर्थिक रूप से कमजोर लोगों के लिए सप्ताह में दो दिन (मंगलवार व बुधवार) नि:शुल्क चिकित्सीय परामर्श एवं औषधि वितरण किया जाता है।

प्रार्थना सभा

महाविद्यालय की दिनचर्या का आरम्भ प्रार्थना सभा के साथ होता है। प्रार्थना-सभा में प्रार्थना, राष्ट्रगान एवं महापुरुषों के जन्मदिवस/पुण्यतिथि पर उनका परिचय व उपलब्धियों की चर्चा की जाती है।

विद्यार्थियों हेतु ड्रेस कोड

महाविद्यालय में अनुशासन व्यवस्था को बनाये रखने हेतु छात्र/छात्राओं हेतु ड्रेस कोड 2015 से लागू है।

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय अध्ययन केन्द्र की स्थापना

महाविद्यालय में 26 अगस्त 2009 से उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय का

अध्ययन केन्द्र (कोड एस-520) संचालित है। इसके माध्यम से नौकरीपेशा, व्यवसाय में लगे पुरुषों तथा महिलाओं हेतु अनेक पाठ्यक्रम जैसे- स्नातक स्तर पर - बी.ए., बी.कॉम., बी.एस-सी. (बायो एवं मैथ ग्रुप), बी.लिब., बी.सी.ए., बी.बी.ए.(स्नातकोत्तर स्तर पर एम.ए., एम.कॉम., एम.लिब., एम.जे., एम.सी.ए., एम.बी.ए.(डिप्लोमा कोर्स- पी.जी.डी.सी.ए., पी.जी.डी.आर.एस.सी., पी.जी.डी. वाई. ओ., पी.जी.डी.जे.एम.सी., पी.जी.डी.एफ.एम., पी.जी.डी.ई.ए., पी.जी.डी.वी.जी.सी.सी., पी.जी. डी.आई.एम., पी.जी.डी.पी.एम., पी.जी.डी.एम.एम., पी.जी.डी.एच.आर.डी., पी.जी.डी.डी.ई., डी.आर. डी., डी.एच.ई.एन., डी.सी.डी.एम., डी.ई.सी.ई., डी.टी.एस., डी.आई.आई.एच., डी.आई.एस., डी.आई. जे.वाई., डी.एफ.डी., डी.ए.जी., डी.ए.एस.सी., डी.डी.टी., डी.वाई.एस., डी.आई.एच.टी., डी.कॉम., डी.डब्ल्यू.टी., डी.आई.सी. (तथा सर्टिफिकेट कोर्स- सी.सी.वाई., सी.एन.एफ., सी.सी.सी., सी.डी. एम., सी.एच.आर., सी.एल.पी.एस., सी.आई.एस., सी.आई.जे.वाई., सी.आई.ई.टी., सी.एच.एफ.ई., सी.टी.ई.आई.एम., सी.ए.सी., सी.आर.जे.एम.सी., सी.आई.पी. संचालित होते हैं।

महाविद्यालय परिसर में पंजाब नेशनल बैंक शाखा की स्थापना

महाविद्यालय के शिक्षकों, कर्मचारियों, विद्यार्थियों एवं अन्य लोगों को बैंक सुविधा प्रदान करने हेतु महाविद्यालय परिसर में 2010 में पी.एन.बी. शाखा की स्थापना हुई है।

परिसर में विशिष्ट व्यक्तियों का आगमन (राष्ट्रीय संगोष्ठी/अतिथि व्याख्यान हेतु)

1. पद्मश्री प्रकाश सिंह, पूर्व डी.जी.पी., उत्तर प्रदेश शासन।
2. एअर वाइस मार्शल एम माथेश्वरन
3. पद्मविभूषण प्रोफेसर यशपाल
4. प्रो. जगमोहन सिंह राजपूत, पूर्व निदेशक, राष्ट्रीय शैक्षिक एवं अनुसन्धान परिषद्, नई दिल्ली।
5. प्रो. सीमा सिंह, कैलीफोर्निया विश्वविद्यालय, बर्कले।
6. प्रो. अमर सिंह, पूर्व अध्यक्ष, अंग्रेजी विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय।
7. प्रो. गिरीशचन्द्र त्रिपाठी, पूर्व कुलपति, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी।
8. प्रो. हरिकेश सिंह, कुलपति, छपरा विश्वविद्यालय, बिहार।
9. प्रो. रामजन्म सिंह, पूर्व कुलपति, महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी।
10. प्रो. एन.एस. गजभिए, पूर्व कुलपति, सागर विश्वविद्यालय, मध्य प्रदेश।
11. प्रो. एस.एल. मलिक, पूर्व कुलपति, गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर।
12. डॉ. नरेन्द्र कोहली, नई दिल्ली।
13. प्रो. बी.पी. सिंह, अध्यक्ष, दिल्ली स्कूल ऑफ इकनॉमिक्स, दिल्ली।
14. प्रो. रामअचल सिंह, पूर्व कुलपति, राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद।
15. प्रो. आर.एस. दूबे, कुलपति, तिलका माझी विश्वविद्यालय, भागलपुर, बिहार।
16. प्रो. पी. नाग, कुलपति, महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी।
17. प्रो. गिरीश्वर मिश्र, कुलपति, अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र।

18. प्रो. ईश्वरशरण विश्वकर्मा, अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश उच्चतर शिक्षा सेवा चयन आयोग, प्रयागराज।
19. प्रो. विजय कृष्ण सिंह, कुलपति, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर।
20. प्रो. सुरेन्द्र दूबे, कुलपति, सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर।

महाविद्यालय के पूर्व विद्यार्थी

क्र.सं.	नाम	पद/कार्यस्थल
1.	श्री शशिधर शाही	डिप्टी कमिश्नर, सेल्स टैक्स, आगरा
2.	श्री राजेश कुमार	संयुक्त निदेशक, समाजकल्याण विभाग, उत्तर प्रदेश
3.	श्री ज्ञानप्रकाश सिंह	जिला जज, मेरठ
4.	प्रो. राजवन्त राव	पूर्व अध्यक्ष, प्राचीन इतिहास विभाग, दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर एवं पूर्व सदस्य लोक सेवा आयोग, प्रयागराज
5.	प्रो. सतीश चन्द्र पाण्डेय	विभागाध्यक्ष, रक्षा अध्ययन विभाग, दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर
6.	प्रो. विनोद कुमार सिंह	रक्षा अध्ययन विभाग, दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर
7.	श्री मंगलेश कुमार सिंह	कोषागार अधिकारी, गोरखपुर
8.	डॉ. पी.एन. सिंह	ई.एन.टी. विभाग, बी.आर.डी. मेडिकल कॉलेज, गोरखपुर
9.	डॉ. मनीषा शाही	स्त्री रोग विशेषज्ञ, गोरखपुर
10.	डॉ. विश्व मोहन भाटिया	बाल रोग विशेषज्ञ, बी.आर.डी. मेडिकल कॉलेज, गोरखपुर
11.	श्री महेन्द्र पाल सिंह	विधायक, पिपराइच विधान सभा, गोरखपुर

10 दिसम्बर 2018 को संस्थापक सप्ताह समारोह के मुख्य महोत्सव में महामहिम राष्ट्रपति, मा. राज्यपाल, गोरक्षपीठाधीश्वर मा. मुख्यमंत्री एवं महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के मा. अध्यक्ष।

दिग्विजयनाथ एल.टी. प्रशिक्षण महाविद्यालय, गोरखपुर

स्थापना का वर्ष – जुलाई 1972

महाविद्यालय का मुख्य भवन

प्राचार्य

क्र.सं.	नाम	कब से कब तक
1.	श्री मारकण्डेय सिंह	01.07.1972 से 30.06.2018 तक
2.	प्रो. सुमित्रा सिंह	30.06.2018 से अद्यतन

वर्तमान में विद्यार्थियों की संख्या : 294

शिक्षकों की संख्या : 21

शिक्षणेतर कर्मचारियों की संख्या : 07

संस्था का ई-मेल (e-mail) : contactdnlttcollege@gmail.com

वेबसाइट (website) : www.dnlttcollege.org

दूरभाष (Telephone) : 8738890013

स्थापना काल से 27 वर्षों तक एल.टी. पाठ्यक्रम का संचालन तथा जुलाई 1999 से बी.एड. पाठ्यक्रम एवं 2008 से एम.एड. पाठ्यक्रम प्रारम्भ।

महाविद्यालय के पूर्व विद्यार्थी

क्र.सं.	नाम	पद/कार्यस्थल
1.	डॉ. व्रजेश पाण्डेय	एसो. प्रो., शिक्षाशास्त्र, संत विनोबा पी.जी. कालेज, देवरिया
2.	डॉ. उमेश यादव	प्राचार्य, जवाहरलाल पी.जी. कालेज, महाराजगंज
3.	श्री शुभेन्दु श्रीवास्तव	नेट, एन.ई.आर., गोरखपुर
4.	श्री बृजेश कुमार राय	नेट, पंचायत अधिकारी, गोरखपुर
5.	श्री पवन सिंह	अनुदेशक, भारतीय वायु सेना
6.	प्रो. मधु यादव	प्रवक्ता, जैन कन्या इण्टर कालेज, मुजफ्फरनगर
7.	डॉ. सुनील केशरवानी	असि. प्रो., एल.टी. प्रशिक्षण महाविद्यालय, गोरखपुर
8.	श्रीमती अभिलाषा कौशिक	नेट, असि. प्रो., एल.टी. प्रशिक्षण महाविद्यालय, गोरखपुर
9.	श्री पंकज दूबे	नेट, असि. प्रो., एल.टी. प्रशिक्षण महाविद्यालय, गोरखपुर
10.	डॉ. बबित दीप श्रीवास्तव	नेट, असि. प्रो., एल.टी. प्रशिक्षण महाविद्यालय, गोरखपुर
11.	डॉ. अर्पिता सिंह	नेट, असि. प्रो., एल.टी. प्रशिक्षण महाविद्यालय, गोरखपुर
12.	पूजा दूबे	जेआरएफ, शिक्षा शास्त्र
13.	श्री सुजीत कुमार	जेआरएफ, शिक्षा शास्त्र
14.	निधि मल्ल	जेआरएफ, शिक्षा शास्त्र
15.	श्री अजीत	जेआरएफ, शिक्षा शास्त्र
16.	श्री राम कुमार	नेट, शिक्षा शास्त्र
17.	प्रियंका सिंह	जेआरएफ, शिक्षा शास्त्र
18.	ज्योति सिंह	नेट, शिक्षा शास्त्र
19.	आभा चौबे	नेट, शिक्षा शास्त्र

10 दिसम्बर 2018 को संस्थापक सप्ताह समारोह के मुख्य महोत्सव में विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं अन्य गणमान्य उपस्थित अतिथियों को सम्बोधित करते महामहिम राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद जी

महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर

स्थापना का वर्ष - 2005 ई.

1932 ई. में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् की स्थापना गोरक्षपीठाधीश्वर युगपुरुष ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज द्वारा पूर्वी उत्तर प्रदेश में शिक्षा के प्रसार को लोकजागरण और राष्ट्रीय पुनर्निर्माण का सशक्त माध्यम स्वीकार करते हुए किया गया था। उन्होंने अपने द्वारा स्थापित **'महाराणा प्रताप महाविद्यालय'** एवं **'महाराणा प्रताप महिला महाविद्यालय'** को तत्कालीन

महाविद्यालय भवन, स्थापना के समय

महाविद्यालय का वर्तमान भवन

गोरखपुर विश्वविद्यालय की स्थापना हेतु भूमि-भवन एवं अध्यापक-छात्र सहित सरकार को प्रदान कर दिया। सम्प्रति गोरखपुर विश्वविद्यालय की नींव पड़ी। उसी स्मृति को पुनर्जीवित करते हुए गोरखपुर महानगर की नगरीय शिक्षा-सुविधाओं से वंचित महानगर के उत्तरी-पूर्वी छोर पर स्थित जंगल धूसड़ ग्राम में अत्याधुनिक सुविधाओं से युक्त गुणवत्तापरक उच्च शिक्षा का प्रतिष्ठित केन्द्र **'महाराणा प्रताप महाविद्यालय'** का शिलान्यास 29 मई 2004 को तत्कालीन गोरक्षपीठाधीश्वर राष्ट्रसन्त महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज के कर-कमलों द्वारा किया गया। 29 जून 2005 को महाविद्यालय का लोकार्पण भारत सरकार के पूर्व मानव संसाधन विकास मंत्री डॉ. मुरली मनोहर जोशी जी के कर-कमलों एवं गोरक्षपीठाधीश्वर राष्ट्रसन्त महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ।

स्थापना के समय खोले गये विषय/संकाय

सत्र 2005-2006

स्नातक स्तर :

- *कला संकाय-* भूगोल, समाजशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, हिन्दी, अंग्रेजी, अर्थशास्त्र, प्राचीन इतिहास (अस्थायी मान्यता)
- *विज्ञान संकाय-* रसायन विज्ञान, भौतिक विज्ञान, गणित, प्राणि विज्ञान, वनस्पति विज्ञान (अस्थायी मान्यता)
- *वाणिज्य संकाय-* बी.कॉम. (अस्थायी मान्यता)

संस्था की वर्षवार पाठ्यक्रम प्रगति

सत्र 2006-2007

स्नातक स्तर :

- *कला संकाय-* भूगोल, समाजशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, हिन्दी, अंग्रेजी, अर्थशास्त्र, प्राचीन इतिहास (स्थायी मान्यता)
- *विज्ञान संकाय-* रसायन विज्ञान, भौतिक विज्ञान, गणित, प्राणि विज्ञान, वनस्पति विज्ञान (स्थायी मान्यता)
- *वाणिज्य संकाय-* बी.कॉम. (स्थायी मान्यता)

सत्र 2007-2008

- विश्वविद्यालय अनुदान आयोग नई दिल्ली में धारा 2 (f) में महाविद्यालय पंजीकृत (22 जून 2007)
- बी.एड्. पाठ्यक्रम हेतु प्रस्ताव प्रेषित।

सत्र 2008-2009

- स्नातक विज्ञान संकाय में कम्प्यूटर साइंस, इलेक्ट्रॉनिक्स, सांख्यिकी विषय की मान्यता हेतु प्रस्ताव प्रेषित।
- स्नातक कला संकाय में रक्षा अध्ययन, मनोविज्ञान, इतिहास विषय की मान्यता हेतु प्रस्ताव प्रेषित।
- स्नातकोत्तर स्तर पर विज्ञान संकाय के अन्तर्गत रसायनशास्त्र विषय की मान्यता हेतु प्रस्ताव प्रेषित।
- स्नातकोत्तर स्तर पर कला संकाय के अन्तर्गत प्राचीन इतिहास विषय की मान्यता हेतु प्रस्ताव प्रेषित।

सत्र 2009-2010

- बी.एड्. पाठ्यक्रम हेतु निरीक्षण मण्डल द्वारा महाविद्यालय का निरीक्षण।
- स्नातक विज्ञान संकाय में कम्प्यूटर साइंस, इलेक्ट्रॉनिक्स, सांख्यिकी विषय में अस्थायी मान्यता।
- स्नातक कला संकाय में रक्षा अध्ययन, मनोविज्ञान, इतिहास विषय में अस्थायी मान्यता।
- स्नातकोत्तर स्तर पर विज्ञान संकाय के अन्तर्गत रसायनशास्त्र विषय में अस्थायी मान्यता।
- स्नातकोत्तर स्तर पर कला संकाय के अन्तर्गत प्राचीन इतिहास विषय में अस्थायी मान्यता।

सत्र 2010-2011

- विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की धारा 12 (b) में पंजीकृत (30 अगस्त 2010)।
- डी.एल.एड्. (बी.टी.सी.) पाठ्यक्रम हेतु प्रस्ताव प्रेषित।

सत्र 2011-2012

- स्नातकोत्तर स्तर पर विज्ञान संकाय के अन्तर्गत रसायनशास्त्र विषय की मान्यता एक वर्ष विस्तारित।
- स्नातकोत्तर स्तर पर कला संकाय के अन्तर्गत प्राचीन इतिहास विषय की मान्यता एक वर्ष विस्तारित।

सत्र 2012-2013

- स्नातक कला संकाय में रक्षा अध्ययन, मनोविज्ञान, इतिहास विषय की स्थायी मान्यता।
- स्नातक विज्ञान संकाय में कम्प्यूटर साइंस, सांख्यिकी, इलेक्ट्रॉनिक्स विषय की मान्यता एक वर्ष के लिए विस्तारित।

सत्र 2014-2015

- स्नातकोत्तर स्तर पर कला संकाय में प्राचीन इतिहास विषय की स्थायी मान्यता।
- स्नातकोत्तर स्तर पर विज्ञान संकाय में रसायन विज्ञान विषय की स्थायी मान्यता।

- स्नातक विज्ञान संकाय में कम्प्यूटर साइंस, सांख्यिकी, इलेक्ट्रॉनिक्स विषय की मान्यता एक वर्ष के लिए विस्तारित।

सत्र 2015-2016

- स्नातक विज्ञान संकाय के अन्तर्गत कम्प्यूटर साइंस, सांख्यिकी, इलेक्ट्रॉनिक्स विषय की स्थायी मान्यता।
- स्नातक कला संकाय में गृह विज्ञान, शिक्षाशास्त्र, संस्कृत विषय की अस्थायी मान्यता।
- स्नातकोत्तर स्तर पर कला संकाय के अन्तर्गत राजनीतिशास्त्र पाठ्यक्रम की अस्थायी मान्यता।
- स्नातकोत्तर स्तर पर वाणिज्य संकाय के अन्तर्गत एम.कॉम. पाठ्यक्रम हेतु अस्थायी सम्बद्धता।
- बी.एड्. पाठ्यक्रम हेतु अस्थायी मान्यता।

सत्र 2016-2017

- स्नातक कला संकाय में गृह विज्ञान, शिक्षाशास्त्र, संस्कृत विषय की स्थायी मान्यता।

सत्र 2017-2018

- स्नातकोत्तर स्तर पर कला संकाय के अन्तर्गत राजनीतिशास्त्र पाठ्यक्रम की स्थायी मान्यता।
- स्नातकोत्तर स्तर पर वाणिज्य संकाय के अन्तर्गत एम.कॉम. पाठ्यक्रम की स्थायी मान्यता।
- स्नातक स्तर पर बैचलर ऑफ जर्नलिज्म (बी.जे.) पाठ्यक्रम हेतु प्रस्ताव प्रेषित।
- स्नातकोत्तर स्तर पर कला संकाय में भूगोल, समाजशास्त्र, इतिहास विषय में पी.जी., प्राणिविज्ञान, वनस्पति विज्ञान में पी.जी.।

वृहद शोध परियोजना

भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद (ICHR)

विषय	निदेशक	राशि
• पितृ तीर्थ-गया	प्रो. महेश कुमार शरण	5,00,000
• नाथपंथ : योग, अध्यात्म एवं साधना	डॉ. प्रदीप कुमार राव	5,00,000
• दक्षिण पूर्व एशिया में कौण्डिन्य एवं अगस्त्य ऋषि की ऐतिहासिकता तथा उनके सांस्कृतिक प्रभाव	डॉ. सुशील कुमार पाण्डेय	3,50,000

संस्था की वर्षवार प्रगति का विवरण : महाविद्यालय भवन

सत्र 2004-2005

- प्रशासनिक भवन, भूमितल 10000 वर्गफीट
- प्रशासनिक भवन, प्रथम तल 10000 वर्गफीट
- प्रयोगशाला भवन, भूमितल 7000 वर्गफीट
- प्रयोगशाला भवन, प्रथम तल 2000 वर्गफीट

सत्र 2010-2011

- प्रयोगशाला भवन, प्रथम तल 5000 वर्गफीट

सत्र 2011-2012

- प्रशासनिक भवन, द्वितीय तल 10000 वर्गफीट

सत्र 2012-2013

- प्रयोगशाला भवन, द्वितीय तल 7000 वर्गफीट

योगिराज बाबा गम्भीरनाथ सेवाश्रम : छात्रावास

सत्र 2014-2015

- भूमितल 15800 वर्गफीट

सत्र 2016-2017

- प्रथम तल 15800 वर्गफीट

सत्र 2018-2019

- महाविद्यालय की चाहरदीवारी उच्चीकृत एवं नवनिर्मित

प्राचार्य : डॉ. प्रदीप कुमार राव : 25.05.2005 से अद्यतन

वर्तमान में विद्यार्थियों की संख्या : 2348

शिक्षकों की संख्या : 68

शिक्षणेतर कर्मचारियों की संख्या : 36 (तृतीय श्रेणी–22, चतुर्थ श्रेणी–14)

संस्था का ई-मेल (e-mail) : mpmpg5@gmail.com

वेबसाइट (website) : www.mpm.edu.in

दूरभाष (Telephone) : 7897475917, 9794299451

महत्वपूर्ण विशेषताएँ

प्रार्थना सभा

प्रतिदिन महाविद्यालय की दिनचर्या का आरम्भ प्रार्थना सभा के साथ होता है, प्रार्थना सभा में सरस्वती वन्दना, प्रार्थना, राष्ट्रगान, राष्ट्रगीत के साथ श्रीमद्भगवद्गीता के तीन श्लोक का संस्कृत, हिन्दी एवं अंग्रेजी में वाचन एवं उसके भावार्थ का श्रवण अथवा महापुरुषों के जन्मदिन अथवा पुण्यतिथि पर उनका परिचय एवं उपलब्धियाँ अथवा महत्वपूर्ण दिवस होने पर उससे सम्बन्धित व्याख्यान।

वार्षिक पाठ्यक्रम योजना

प्रतिवर्ष जुलाई माह में विषयवार प्रत्येक कक्षा की वार्षिक पाठ्यक्रम योजना तैयार कर 15 जुलाई तक महाविद्यालय की वेबसाइट (**www.mpm.edu.in**) पर अपलोड कर दिया जाता है और पाठ्यक्रम के योजनानुसार ही कक्षाओं का संचालन सुनिश्चित करने की सुचारु व्यवस्था होती है।

विद्यार्थियों द्वारा कक्षाध्यापन

विद्यार्थियों के अन्दर से झिझक समाप्त करने और उनके व्यक्तित्व विकास की दृष्टि से शिक्षक द्वारा प्रत्येक पाँच व्याख्यान के उपरान्त छठें व्याख्यान के दिन शिक्षक की उपस्थिति में विद्यार्थियों द्वारा पूर्वनिर्धारित विषय/शीर्षक पर व्याख्यान कराया जाता है। इस योजना से विद्यार्थियों के अन्दर किसी विषय पर अपनी बात रखने, समझने के साथ-साथ आत्मविश्वास का भी भाव पैदा होता है। उस दिन शिक्षक विद्यार्थियों के बीच में बैठते हैं। विद्यार्थी द्वारा कक्षाध्यापन पाठ्यक्रम योजना में उल्लिखित होता है।

विद्यार्थियों का मासिक मूल्यांकन

प्रत्येक विषय की कक्षा में माह में पढ़ाये गये पाठ्यक्रम में से माह के अन्त में (पाठ्यक्रम योजना में निर्धारित तिथि पर) शिक्षक द्वारा विद्यार्थियों का मासिक मूल्यांकन किया जाता है। प्रत्येक माह के मासिक मूल्यांकन में पूछे गये प्रश्न को एक साथ करने पर विश्वविद्यालय पूर्व परीक्षा का प्रश्न पत्र हो जाता है जो विद्यार्थियों के लिए विश्वविद्यालय परीक्षा से पूर्व तैयारी में महत्वपूर्ण होता है।

विश्वविद्यालय पूर्व परीक्षा

विद्यार्थियों को आगामी विश्वविद्यालयी परीक्षा की तैयारी की दृष्टि से प्रत्येक सत्र में पूर्व निर्धारित योजना के अनुसार 30 जनवरी को पाठयक्रम पूर्ण होने के उपरान्त विश्वविद्यालय पूर्व परीक्षा आयोजित की जाती है। प्रत्येक विषय का प्रश्न पत्र शिक्षक द्वारा निर्मित कर परीक्षा प्रभारी के पास 31 अक्टूबर तक उपलब्ध करा दिया जाता है। यह परीक्षा पूर्णतः विश्वविद्यालय पैटर्न पर आयोजित होता है।

विशिष्ट व्याख्यान

महाविद्यालय योजनानुसार विशिष्ट व्याख्यान की वर्ष भर अनवरत क्रम चलता है महाविद्यालय स्तर पर एवं विभागीय स्तर पर विश्वविद्यालय सहित विभिन्न शैक्षणिक संस्थाओं के शिक्षाविदों के

सहयोग के आधार पर छात्र-छात्राओं में ज्ञान-विज्ञान की अनवरत ज्ञान-गंगा बहाने का कार्य महत्वपूर्ण है। परम्परागत रूप से अगस्त माह में महन्त अवेद्यनाथ स्मृति सप्तदिवसीय व्याख्यानमाला कार्यक्रम प्रतिवर्ष आयोजित होता है।

विद्यार्थियों का महाविद्यालय प्रशासन में सहभागिता

महाविद्यालय के प्रशासनिक कार्यों में विद्यार्थियों का सक्रिय सहभाग, महाविद्यालयी कार्य-संस्कृति का हिस्सा है। विभिन्न समितियों के माध्यम से विद्यार्थी महाविद्यालय के शैक्षणिक एवं प्रशासनिक निकायों में प्रतिनिधित्व करते हैं (यथा- प्रवेश समिति, नियन्ता मण्डल, पुस्तकालय समिति, क्रीड़ा समिति, प्रयोगशाला समिति, सांस्कृतिक कार्यक्रम समिति, छात्र समिति, स्वच्छता समिति, बागवानी समिति, प्रार्थना समिति इत्यादि।

प्रगति आख्या

प्रत्येक माह (जुलाई से जनवरी) प्रत्येक विषय की प्रत्येक कक्षा से समस्त विद्यार्थियों का अलग-अलग विवरण प्रगति आख्या के प्रपत्र पर विभाग के शिक्षक द्वारा अंकित कर अगले माह के पाँचवें कार्यदिवस तक प्राचार्य कार्यालय में उपलब्ध करने की महत्वपूर्ण योजना निरंतर लागू है। जिसमें माह में संचालित हुयी कुल कक्षा, विद्यार्थी की उपस्थिति, कक्षाध्यापन में सहभागिता एवं मासिक मूल्यांकन का अंक सहित विश्वविद्यालय पूर्व परीक्षा एवं विश्वविद्यालय परीक्षा में प्राप्त अंक विषयवार अर्थात् प्रत्येक विद्यार्थी का सत्र में सम्पूर्ण रिकार्ड एक स्थान पर उपलब्ध रखने की यह महत्वकांक्षी योजना प्रभावी रूप से लागू।

पुस्तकालय

महाविद्यालय में पुस्तकालय आनलाइन है। महाविद्यालय की वेबसाइट पर वर्तमान में 30731 पुस्तक शीर्षक, लेखक, प्रकाशन और विषय के साथ अपलोड है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा विकसित SOUL साफ्टवेयर पर भी पुस्तकालय की पुस्तकें अंकित है। N-LIST लाइब्रेरी की सदस्यता पुस्तकालय द्वारा प्राप्त की गयी है। जिसके माध्यम से ई-बुक्स, ई-जनरलस की एक लाख पच्चीस हजार से अधिक पुस्तकें पढ़ने का अवसर विद्यार्थी-शिक्षक को प्राप्त है। पुस्तकालय की एक महत्वकांक्षी योजना के अन्तर्गत समाज के लोगों से 5000 पुस्तक दान के रूप में सत्र 2018-2019 तक प्राप्त कर विद्यार्थियों एवं शिक्षकों के लिए पठन-पाठन के अवसर को और सुगम बनाने का प्रयत्न महत्वपूर्ण है।

विद्यार्थी द्वारा शिक्षक-मूल्यांकन

वर्ष में दो बार (सितम्बर एवं दिसम्बर) छात्र-छात्राओं द्वारा शिक्षक प्राचार्य के माध्यम से अपने बारें में फीडबैक लेने एवं गुणात्मक सुधार के उद्देश्य से महाविद्यालय द्वारा निर्धारित शिक्षक प्रतिपुष्टि प्रपत्र पर भर कर जमा करते हैं। प्राचार्य द्वारा उस प्रपत्र को सम्बन्धित शिक्षक को आत्ममूल्यांकन करने के लिए दिया जाता है तदोपरान्त प्राचार्य कार्यालय के रिकार्ड में उसे सुरक्षित कर लिया जाता है।

शिक्षक-स्वमूल्यांकन

प्रत्येक शिक्षक द्वारा प्रत्येक माह का (जुलाई-फरवरी) में अपने द्वारा किये गये सभी कार्य (शैक्षिक एवं शिक्षणेत्तर) निर्धारित प्रपत्र (स्वमूल्यांकन प्रपत्र) पर भरकर प्राचार्य कार्यालय के पास

अगले माह के प्रथम दो कार्य दिवस के अन्दर जमा करना होता है। प्राचार्य के समीक्षापरान्त इसे शिक्षक की व्यक्तिगत पत्रावली में सुरक्षित कर दिया गया है।

शिक्षकों द्वारा गोद लिये गये विद्यार्थी

सत्रारम्भ में शिक्षकों द्वारा अपनी-अपनी कक्षाओं से चार-चार विद्यार्थियों का चयन किया जाता है तथा एक विद्यार्थी प्राचार्य द्वारा प्रत्येक शिक्षक को दिया जाता है अथवा किसी शिक्षक के पास पूर्व में गोद लिये गये विद्यार्थी की पढ़ाई महाविद्यालय से पूर्ण हो गयी है तो रिक्त स्थान पर शिक्षक द्वारा विद्यार्थी गोद लिये जाते हैं। शिक्षक विद्यार्थियों के साथ आत्मीय सम्बन्ध विकसित करते हैं और उनके सर्वांगीण व्यक्तित्व विकास हेतु योजना बनाकर कार्य करते हैं। यह भी योजना महाविद्यालय की महत्वाकांक्षी योजनाओं में से एक है।

सामूहिक व्यक्तित्व विकास योजना

गोद लिये गये विद्यार्थियों, राष्ट्रीय सेवा योजना, छात्रसंघ कक्षा प्रतिनिधि एवं छात्रावास से एक समूह बनाकर सामूहिक व्यक्तित्व विकास की योजना लागू की गयी है। यह अनिवार्य किया गया है कि छात्रावास के सभी विद्यार्थी गोद लिये जाएं एवं राष्ट्रीय सेवा योजना में सम्मिलित हो। प्रयास होता है कि छात्रसंघ में कक्षा प्रतिनिधि अपने क्षमता के आधार पर इन्हीं में से चुनें जाएं। इस प्रकार एक विद्यार्थी के व्यक्तित्व विकास पर शिक्षक, राष्ट्रीय सेवा योजना, छात्रसंघ एवं छात्रावास एक साथ कार्य करती है।

साप्ताहिक स्वैच्छिक श्रमदान

महाविद्यालय में स्थापना काल से प्रत्येक शनिवार को तीसरी घण्टी के पश्चात् (12:10 से 01:10 बजे) एक घण्टे का स्वैच्छिक श्रमदान कार्यक्रम योजनापूर्वक सम्पन्न होता है। उस दिन कक्षाएँ 40 मिनट की चलती हैं तथा मध्यावकाश स्थगित रहता है। श्रमदान में प्राचार्य, शिक्षक, कर्मचारी और छात्र-छात्राएँ सभी सम्मिलित होते हैं। इस योजना से साफ-सफाई हेतु जागरूक करने के साथ-साथ तत्सम्बन्धित लोगों का महाविद्यालय से अपनेपन का भी जुड़ाव होता है।

छात्रसंघ

महाविद्यालय में स्थापना काल से ही छात्रसंघ का गठन प्रत्येक सत्र में शैक्षिक पंचांग में उल्लिखित तिथि के अनुसार सम्पन्न होता है। छात्रसंघ में अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, महामंत्री एवं पुस्तकालय मंत्री का चुनाव केवल कक्षा प्रतिनिधि ही लड़ सकते हैं। कक्षा प्रतिनिधि बनने के लिए अपनी-अपनी कक्षा में सर्वाधिक अंक प्राप्त करना, सर्वाधिक उपस्थित रहना एवं सर्वाधिक उच्च अनुशासन, अच्छा आचरण व्यवहार वाला होना आवश्यक होता है। छात्रसंघ के प्रतिनिधि एवं पदाधिकारी को महाविद्यालय की विभिन्न समितियों में सहभागिता के माध्यम से प्रबन्धन तथा नेतृत्व-कौशल का प्रशिक्षण दिया जाता है।

तकनीकी विकास

महाविद्यालय की वेबसाइट अद्यतन, प्रतिदिन के महाविद्यालयी कार्यक्रम फेसबुक, व्हाट्सएप, ट्वीटर, यू-ट्यूब पर नियमित रूप से अपलोड करने की सुनिश्चित व्यवस्था, प्रोजेक्टर युक्त कक्षाएं, स्मार्ट क्लास, वाई-फाई युक्त परिसर, आनलाईन प्रवेश इत्यादि तकनीकि प्रसार के माध्यम से

पठन-पाठन एवं अन्य गतिविधियों का विस्तार।

प्राचार्य-शिक्षक मासिक बैठक

प्राचार्य-शिक्षक मासिक समीक्षा बैठक प्रत्येक माह के अन्त में उस माह के पठन-पाठन सहित समस्त गतिविधियों की समीक्षा तथा अगले माह की योजनाओं को कार्यान्वित करने हेतु प्राचार्य-शिक्षक बैठक महाविद्यालय की विकास यात्रा में मील का पत्थर साबित हो रही है।

समावर्तन संस्कार समारोह

महाविद्यालय में पढ़ रहे अन्तिम वर्ष के विद्यार्थियों के लिए प्रति वर्ष समावर्तन संस्कार समारोह के माध्यम से देश समाज के प्रति उनके अन्दर दृष्टि पैदा करने के उद्देश्य मे समावर्तन उपदेश के माध्यम से समारोह का आयोजन किया जाता है। समावर्तन संस्कार समारोह का विशेष गणवेश सम्पूर्ण भारत के लिए गाउन के विकल्प के रूप में उच्च शिक्षण संस्थाओं के सामने महाविद्यालय ने प्रस्तुत किया है। इसका विस्तृत उल्लेख इण्डिया टूडे नामक प्रतिष्ठित पत्रिका में भी किया गया था।

राष्ट्रीय संगोष्ठी/कार्यशाला

महाविद्यालय की योजनानुसार वर्ष में दो राष्ट्रीय संगोष्ठी तथा कार्यशाला का आयोजन भव्य रूप में किया जाता है।

सप्तदिवसीय शिक्षक कार्यशाला

विश्वविद्यालय पूर्व परीक्षा के उपरान्त (फरवरी-मार्च माह) शिक्षकों के व्यक्तित्व विकास एवं पठन-पाठन में तकनीकी तथा गुणात्मक विकास हेतु सप्तदिवसीय कार्यशाला का आयोजन प्रत्येक सत्र में किया जाता है। जिसमें प्रतिष्ठित शिक्षाविद् एवं आधुनिक ज्ञान-विज्ञान की जानकारी रखने वाले विद्वानों का मार्गदर्शन सात दिन तक चलने वाले कार्यशाला में शिक्षकों को प्राप्त होता है।

विभाग द्वारा गाँव-गोद लेकर जनजागरण

महाविद्यालय के प्रत्येक विभाग द्वारा एक गाँव गोद लेकर शिक्षा, स्वास्थ्य, सरकारी योजनाओं की जानकारी, स्वच्छता, सामाजिक समरसता इत्यादि विषय पर कम-से-कम वर्ष में चार बार जनजागरण अभियान चलाया जाता है। इससे गाँवों में जागरूकता के साथ-साथ विद्यार्थियों में भी सामाजिक संवेदना का विकास होता है।

महाविद्यालय के प्रमुख प्रकाशन

महाविद्यालय वार्षिक शोध पत्रिका **'विमर्श'** (ISSN-0976-0849) एवं अर्द्धवार्षिक शोध पत्रिका **'मानविकी'** (ISSN-0976-0830) नाम से दो शोध पत्रिकाएँ प्रकाशित करता है। अर्द्धवार्षिक शोध पत्रिका **'शोध संचयन'** (ISSN-0975-1254) के प्रकाशन में महाविद्यालय सहभागी है।

योगिराज बाबा गम्भीरनाथ नि:शुल्क सिलाई-कढ़ाई केन्द्र

महाविद्यालय द्वारा अपने आस-पास की ग्रामीण महिलाओं, छात्राओं और अपने महाविद्यालय की छात्राओं को आत्मनिर्भर बनाने के उद्देश्य से सिलाई-कढ़ाई का 6 माह के पाठ्यक्रम का नि:शुल्क संचालन वर्ष 2010 से किया जा रहा है।

महन्त अवेद्यनाथ निःशुल्क कम्प्यूटर प्रशिक्षण कार्यक्रम

महाविद्यालय अपने आस-पास के गाँवों तथा महाविद्यालय के इच्छुक छात्र-छात्राओं को निःशुल्क कम्प्यूटर प्रशिक्षण के माध्यम से उन्हें दक्ष एवं कौशलयुक्त युवा गढ़ने की भूमिका का निर्वहन वर्ष 2009 से कर रहा है।

ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ निःशुल्क प्राथमिक उपचार केन्द्र

गुरुश्री गोरक्षनाथ चिकित्सालय के सहयोग से ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ निःशुल्क प्राथमिक उपचार केन्द्र द्वारा महाविद्यालय के आस-पास के गाँवों के गरीब लोगों के लिए सप्ताह में दो दिन (बुधवार एवं बृहस्पतिवार) निःशुल्क चिकित्सकीय परामर्श एवं औषधि वितरण किया जाता है।

सांसद आदर्श गाँव जंगल औराही में सम्पूर्ण साक्षरता

सांसद आदर्श गाँव जंगल औराही को महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं के बल पर साक्षर बनाया गया। इस अभियान में गाँव के 14 टोलों में 34 साक्षरता केन्द्र में 52 स्वयंसेवकों द्वारा 407 निरक्षर लोगों को साक्षर बनाया गया।

सांसद आदर्श गाँव डांगीपार में सम्पूर्ण साक्षरता

महाविद्यालय के 50 छात्र-छात्राओं ने 13 नवम्बर से 26 नवम्बर 2017 तक सांसद आदर्श गाँव डांगीपार के 216 निरक्षर लोगों को सम्पूर्ण साक्षर बनाने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

देश की स्वच्छता रैंकिंग में महाविद्यालय भी

- 25 अगस्त 2017 ई. को केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्रालय एवं विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली द्वारा देश भर के विश्वविद्यालयों-महाविद्यालयों में 'स्वच्छता रैंकिंग ऑफ हायर एजुकेशनल इन्स्टीट्यूशन्स' के अन्तर्गत चयनित 170 विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों में महाराणा प्रताप पी.जी. कॉलेज, जंगल धूसड़ ने भी अपना स्थान बनाया। देश भर से 2600 से अधिक विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों के मूल्यांकन के बाद 170 कॉलेजों को स्वच्छता रैंकिंग हेतु चुना गया। इसी क्रम में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा गठित तीन सदस्यीय समिति ने महाविद्यालय का निरीक्षण किया।
- 17 सितम्बर 2019 को पुनः मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा महाविद्यालय में स्वच्छता मूल्यांकन हेतु तीन सदस्यीय टीम ने निरीक्षण किया।

पुरस्कार एवं सम्मान

- डॉ. विजय कुमार चौधरी, असिस्टेण्ट प्रोफेसर भूगोल को उच्च शिक्षा के क्षेत्र में सराहनीय योगदान के लिए उत्तर प्रदेश शासन द्वारा 'शिक्षकश्री सम्मान 2008' से अलंकृत किया गया।
- महाविद्यालय के राष्ट्रीय सेवा योजना को समाज में अनुकरणीय एवं सक्रिय योगदान के लिए दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय द्वारा दीनदयाल उपाध्याय राष्ट्रीय सेवा योजना 2010-2011 का महाविद्यालय पुरस्कार प्रदान किया गया।

- महाविद्यालय को महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् संस्थापक सप्ताह समारोह के मुख्य महोत्सव में वर्ष 2014 का श्रेष्ठतम संस्था का 'गुरुश्री गोरक्षनाथ स्वर्णपदक' उत्तर प्रदेश के माननीय राज्यपाल श्री रामनाईक जी द्वारा प्रदान किया गया।
- डॉ. अविनाश प्रताप सिंह, असिस्टेण्ट प्रोफेसर, राजनीतिशास्त्र, को महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के वर्ष 2014 का श्रेष्ठतम शिक्षक का 'योगिराज बाबा गम्भीरनाथ स्वर्णपदक' उत्तर प्रदेश के माननीय राज्यपाल श्री रामनाईक जी द्वारा प्रदान किया गया।
- दैनिक 'हिन्दुस्तान' द्वारा आयोजित 'हरियाली प्रतियोगिता' में पर्यावरण संरक्षण में योगदान के लिए महाविद्यालय को हरा-भरा परिसर का द्वितीय स्थान प्राप्त हुआ।
- महाविद्यालय को सामाजिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए सांस्कृतिक, साहित्यिक एवं सामाजिक संस्था 'संगम' द्वारा 'स्वर्गीय चन्द्रकान्ति चन्द स्मृति संगम सारस्वत सम्मान' प्रदान किया गया।
- महाविद्यालय के राष्ट्रीय सेवा योजना को विशेष उपलब्धि अर्जित करने के कारण सत्र 2014-2015 हेतु 'दीनदयाल उपाध्याय राष्ट्रीय सेवा योजना सर्वश्रेष्ठ महाविद्यालय पुरस्कार' प्रदान किया गया।
- महाविद्यालय को गुरुश्री गोरक्षनाथ ब्लड बैंक द्वारा महाविद्यालय द्वारा नियमित तथा ब्लड बैंक को जब कभी भी रक्त की आवश्यकता हो, रक्तदान करते रहने पर 2015 का प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया।
- महाविद्यालय को महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् संस्थापक सप्ताह समारोह के मुख्य महोत्सव में वर्ष 2018 का श्रेष्ठतम संस्था का 'गुरुश्री गोरक्षनाथ स्वर्णपदक' भारत के माननीय राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविन्द जी द्वारा प्रदान किया गया।

राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद् (NAAC) द्वारा महाविद्यालय का मूल्यांकन

राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद् जो विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली का स्वायत्त संस्थान है, के द्वारा 05 से 07 नवम्बर 2015 को महाविद्यालय की गुणवत्ता जाँचने हेतु तीन सदस्यीय पीयर टीम ने महाविद्यालय के विविध गतिविधियों एवं आयामों का मूल्यांकन कर 'बी' श्रेणी प्रदान किया।

परिसर संस्कृति

महाविद्यालय के सम्पूर्ण परिसर को पूर्णतः हरा-भरा परिसर बनाने के अनवरत प्रयत्न तथा सम्पूर्ण परिसर औषधिय एवं आध्यात्मिक तथा विलुप्त हो रहे वृक्षों से आच्छादित है। पठन-पाठन की महत्ता के साथ स्वच्छता भी महाविद्यालय की वरीयता में शामिल है। बिजली-पानी संरक्षण के लिए जागरूकता तथा ठोस कार्य योजना लागू है। सिंगल यूज प्लास्टिक मुक्त परिसर एवं नशा मुक्त परिसर की ओर अत्यन्त सार्थक कदम बढ़ाये गये हैं।

महाराणा प्रताप महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामदत्तपुर गोरखपुर

स्थापना का वर्ष - 2006 ई.

स्थापना के समय खोले गये विषय/संकाय - कला संकाय के अन्तर्गत हिन्दी, समाजशास्त्र, शिक्षाशास्त्र, गृहविज्ञान, अंग्रेजी, राजनीतिशास्त्र, इतिहास में मान्यता प्राप्त हुयी।

महाविद्यालय भवन - स्थापना के समय

वर्तमान में महाविद्यालय का भव्य भवन

प्राचार्य

क्र.सं.	नाम	कब से कब तक
1.	डॉ. नम्रता प्रसाद	01.07.2006 मे 17.12.2007 तक
2.	डॉ. सरिता सिंह	18.12.2007 से अद्यतन

वर्तमान में विद्यार्थियों की संख्या : 402

शिक्षकों की संख्या : 14

शिक्षणेतर कर्मचारियों की संख्या : 06

संस्था का ई-मेल (e-mail) : mpwoman94@gmail.com

दूरभाष (Telephone) : 0551-2240423, 9450101052

विशेष उपलब्धियाँ

सन्	उपलब्धि
2006	कला संकाय के अन्तर्गत बी.ए. की अस्थायी मान्यता
2008	बी.ए. की स्थायी मान्यता
2014	स्नातकोत्तर स्तर पर शिक्षाशास्त्र विषय में अस्थायी मान्यता
	स्नातक स्तर पर वाणिज्य संकाय के अन्तर्गत बी.कॉम. की अस्थायी मान्यता
2016	स्नातकोत्तर स्तर पर शिक्षाशास्त्र विषय में स्थायी मान्यता
2018	स्नातकोत्तर स्तर पर गृहविज्ञान एवं समाजशास्त्र की अस्थायी मान्यता
2018	स्नातक स्तर पर वाणिज्य संकाय के अन्तर्गत बी.कॉम. की स्थायी मान्यता

पुरस्कार एवं सम्मान

- महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद, गोरखपुर द्वारा विद्यार्थी के सर्वांगीण प्रदर्शन के आधार पर 'ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ स्वर्ण पदक' संस्थापक सप्ताह समारोह 2018 में भारत के महामहिम राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद जी के कर कमलों से बी.ए. तृतीय वर्ष की छात्रा श्रेया त्रिपाठी को प्रदान किया गया।
- महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के तत्वावधान में आयोजित संस्थापक सप्ताह समारोह 2018 में एम.ए. की छात्रा गरिमा जायसवाल एवं शिखा सिंह को सर्वोच्च अंक के आधार पर 'स्व. कृष्ण मुरारी चौधरी स्मृति पुरस्कार' प्रदान किया गया।

गुरू श्री गोरक्षनाथ कालेज ऑफ नर्सिंग, गोरखनाथ, गोरखपुर

स्थापना का वर्ष - 2009 ई.

गुरु श्री गोरक्षनाथ कॉलेज ऑफ नर्सिंग का स्थापना के समय का भवन

गुरु श्री गोरक्षनाथ कॉलेज ऑफ नर्सिंग का नवीन प्रस्तावित निर्माणाधीन भवन

सर्वप्रथम वर्ष 2009 ई. में ए.एन.एम. (सहायक नर्स तथा मिडवाइफ) पाठ्यक्रम एवं वर्ष 2010 में जी.एन.एम. पाठ्यक्रम (जनरल नर्सिंग तथा मिडवाइफ) संचालित। प्रारम्भ में ही स्कूल उत्तर प्रदेश मेडिवाइफ फैकेल्टी से सम्बद्ध तथा भारतीय परिचर्या परिषद से मान्यता प्राप्त है। शुरू से ही शिक्षण-प्रशिक्षण बहुत ही शान्त वातावरण में तमाम अनुदेशकों के साथ सम्पन्न होता है।

संस्था की वर्षवार प्रगति

उच्चीकृत कर गुरू श्री गोरक्षनाथ कालेज ऑफ नर्सिंग के रूप में दो पाठ्यक्रम बेसिक बी.एस. सी. (नर्सिंग) तथा पोस्ट बेसिक बी.एस.मी. (नर्सिंग) की मान्यता दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर से तथा भारतीय परिचर्या परिषद से मान्यता प्राप्त है। बेसिक बी.एस.सी. (नर्सिंग) कोर्स की क्षमता वर्ष-2018-19 से 60 हो गई है। पाठ्यक्रम बेसिक बी.एस.सी. (नर्सिंग) 04 वर्ष एवं पोस्ट बी.एस.सी. (नर्सिंग) 02 वर्ष के पाठ्यक्रम है।

प्रधानाचार्य

क्र.सं.	नाम	कब से कब तक
1.	रश्मि शर्मा	01.02.2009 से 31.12.2014 तक
2.	नीना मैरी रोबट	01.01.2015 से 30.09.2015 तक
3.	डी.एस. अजिथा	01.11.2015 से अद्यतन

वर्तमान में विद्यार्थियों की संख्या : 431

शिक्षकों की संख्या : 24

शिक्षणेत्तर कर्मचारियों की संख्या : 15

संस्था का ई-मेल (e-mail) : gsgcon99@gmail.com

वेबसाइट (website) : www. gsgsn.in

दूरभाष (Telephone) : 0551-2250045

प्रयोगशाला

भारतीय परिचर्या परिषद के मानक के अनुरूप प्रयोगशालाएं उपलब्ध हैं। जैसे- फाउण्डेशन लैब, चाइल्ड हेल्थ नर्सिंग लैब, मैटननिटी लैब, कम्युनिटी हेल्थ नर्सिंग लैब, न्यूट्रीशियन लैब, कम्प्यूटर लैब, फ्री क्लीनिकल लैब

अतिरिक्त कक्षाएं

- कई विषयों में वाह्य प्रबुद्ध संकाय की कक्षाएं भी चलती हैं।
- परिचर्या संकाय द्वारा पाठ्यक्रम के अनुसार अतिरिक्त कक्षाएं चलती हैं।
- प्रबुद्ध परिचारिका संकाय की ज्ञानवर्धन हेतु इन सर्विस शिक्षण के अन्तर्गत प्रत्येक माह के द्वितीय शनिवार को कालेज समय के बाद 01 घण्टा का परिचर्चा अपडेट या वर्तमान प्रवृत्ति पर व्याख्यान होते हैं।

शिक्षण योजना

- कुल आवश्यक शिक्षण घण्टों को बराबर बांटकर, संकाय में बांट दी जाती है। शिक्षक की अभिरूचि एवं उपलब्धता का भी ध्यान दिया जाता है।
- वरिष्ठ शिक्षक भ्रमण के समय शिक्षण कक्षाओं का मूल्यांकन भी करते रहते हैं।
- शिक्षक चयन के समय डेमो क्लास का आयोजन आवश्यक है।
- प्रशिक्षु एवं शिक्षक हेतु स्मार्ट क्लास का भी आयोजन होता है।
- पूर्ण शिक्षित एवं प्रायोगिक कक्षा हेतु तमाम बिन्दुओं पर परिचर्चा होती रही है। जैसे- डेमो विधि, उद्देश्य, वार्तालाप, विविध प्रकार के वर्कशाप

शिक्षकों का व्यक्तित्व विकास

- कार्य अवधि के साथ ही साथ प्रशिक्षण।
- वरिष्ठ शिक्षक, कनिष्ठ शिक्षकों को पाल्य के रूप में विकसित करते हैं।
- लेखन प्लान के साथ ही साथ कक्षाएं भी चलती हैं।

अनुशासन

- अनुशासन हमारी शिक्षण संस्थानों का आभूषण है।
- पूर्ण अनुशासन का पालन होता है।
- एक अनुशासनिक कमेटी बनी है जो समय-समय पर समीक्षा करती रहती है।

सामाजिक उत्थान हेतु गतिविधि

- प्रशिक्षु ग्रामीण क्षेत्रों में अनेक प्रकार के सामाजिक एवं स्वास्थ शिक्षा के कार्यक्रम का आयोजन करते रहते हैं।
- क्रमिक रूप से ग्रामीण क्षेत्र में घर-घर जाकर स्वास्थ्य की स्थिति को भी पहचानना तथा स्वास्थ्य सम्बन्धी जानकारी देना।

- आकस्मिक चिकित्सा की सुविधा देना।
- व्यक्ति-परिवार तथा समाज के छोटे-छोटे समूह को स्वास्थ्य, स्वच्छता तथा हाईजिन के विषय में प्रशिक्षित करना।
- चिकित्सालय में भर्ती रोगी/रोगों के सम्बन्ध में परिजन को शिक्षित करना।

दीप प्रज्वलन समारोह

- परिचर्या प्रशिक्षु के जीवन में दीप प्रज्वलन का बहुत महत्व है। इस गरिमापूर्ण समारोह में शिक्षक के प्रज्वलित दीप से अपनी दीप प्रज्वलित कर ज्ञान की तरंगों का प्रवाह शिक्षक से प्रशिक्षु में प्रवाहित होता है। पवित्र दीप ज्वाला के सानिध्य में मानव सेवा का संकल्प लिया जाता है। यह आयोजन प्रतिवर्ष सम्पन्न होता है। वर्ष 2018 में इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि उ.प्र. के महामहिम राज्यपाल श्री रामनाईक जी का तथा 2019 भारत सरकार के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री माननीय जे.पी. नड्डा जी का प्रेरणास्पद मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

आनलाईन प्रवेश

- जी.एन.एम. एवं ए.एन.एम. की प्रवेश प्रक्रिया वर्ष 2018-19 से आनलाईन।

गुरु श्रीगोरक्षनाथ कालेज ऑफ नर्सिंग कालेज में प्रशिक्षुओं का दीप प्रज्वलन कार्यक्रम

गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त अवेद्यनाथ महाविद्यालय, चौक बाजार, महराजगंज

स्थापना का वर्ष - 2011 ई.

स्थापना के समय खोले गये विषय/संकाय

संकाय	सत्र	विषय
स्नातक कला (बी.ए.)	2011-2012	हिन्दी, संस्कृत, राजनीतिशास्त्र, समाजशास्त्र, शिक्षाशास्त्र, भूगोल।
स्नातक वाणिज्य (बी.कॉम.)	2011-2012	वित्तीय लेखांकन, प्रबन्ध के सिद्धान्त, व्यावसायिक अर्थ, व्यावसायिक सांख्यिकी, व्यावसायिक संचार, मुद्रा एवं वित्तीय प्रणाली।

संस्था की वर्षवार प्रगति

संकाय	सत्र	विषय
स्नातक (बी.एस-सी.)	2015-2016	गणित, भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, प्राणि विज्ञान वनस्पति विज्ञान।

महाविद्यालय भवन

प्राचार्य

क्र.सं.	नाम	कब से कब तक
1.	डॉ. अविनाश प्रताप सिंह	01.07.2011 से 30.06.2012 तक
2.	डॉ. रजनीश कुमार मल्ल	01.07.2012 से 31.12.2014 तक
3.	डॉ. परशुराम गुप्त	01.01.2014 से 31.12.2017 तक
4.	डॉ. संजय कुमार त्रिपाठी	01.01.2018 से अद्यतन

वर्तमान में विद्यार्थियों की संख्या : 497

शिक्षकों की संख्या : 14

शिक्षणेतर कर्मचारियों की संख्या : 11

संस्था का ई-मेल (e-mail) : sanjaytripathi2017st@gmail.com

वेबसाइट (website) : www.gmamahavidyalaya.org

दूरभाष (Telephone) : 9453866497, 9795129653

10 दिसम्बर 2018 को संस्थापक सप्ताह समारोह के मुख्य महोत्सव में उपस्थित लोगों को सम्बोधित करते उ.प्र. के मा. राज्यपाल एवं मंचासीन महामहिम राष्ट्रपति तथा गोरक्षपीठाधीश्वर मा. मुख्यमंत्री।

महाराणा प्रताप इण्टर कॉलेज, गोरखपुर

स्थापना का वर्ष - सन् 1932 ई.

स्थापना के समय खोले गये विषय

जूनियर हाई स्कूल - समस्त अनिवार्य विषय

संस्था की वर्षवार प्रगति

- हाईस्कूल वर्ग (क) साहित्यिक, ख) विज्ञान, ग) वाणिज्य, (घ) कृषि/कताई-बुनाई - 1937
- इण्टरमीडिएट वर्ग (क) साहित्यिक, और (ग) वाणिज्य - 1946
- इण्टरमीडिएट (ख) विज्ञान वर्ग - 1954
- इण्टरमीडिएट (आई) व्यावमायिक वर्ग - 1989
- कक्षा-9, कम्प्यूटर विषय का प्रारम्भ - 2002
- कक्षा-6, कम्प्यूटर विषय का प्रारम्भ - 2003
- इण्टरमीडिएट, कम्प्यूटर विषय का प्रारम्भ - 2004
- अंग्रेजी माध्यम कक्षा-9 की कक्षाएँ प्रारम्भ - 2011-12
- कक्षा-9 के साथ कक्षा-10 की कक्षाएँ प्रारम्भ - 2012-13

महाराणा प्रताप इण्टर कॉलेज

- कक्षा-9,10 के साथ कक्षा 11 गणित विषय प्रारम्भ - 2014-15
- कक्षा 9,10,11 के साथ कक्षा 6 एवं कक्षा 12 (गणित विषय) की कक्षाएँ प्रारम्भ - 2015-16
- कक्षा 6,9,10 एवं 11,12 (गणित विषय) की कक्षाओं के साथ कक्षा 7 की कक्षा प्रारम्भ - 2016-17
- कक्षा 6,7,9,10 एवं 11,12 (गणित विषय) की कक्षाओं के साथ कक्षा 8 की कक्षा प्रारम्भ - 2017-18
- कक्षा 6,7,8,9,10 एवं 11,12 (गणित विषय) की कक्षाओं के साथ कक्षा 11 वाणिज्य विषय प्रारम्भ - 2017-18
- कक्षा 6,7,8,9,10 एवं 11,12 (गणित एवं वाणिज्य विषय) के साथ कक्षा 11 जीवविज्ञान विषय प्रारम्भ - 2018-19

भवन विकास यात्रा

- व्यावसायिक भवन का निर्माण - 1989
- क्रीड़ा कक्ष एवं बॉस्केटबाल कोर्ट का निर्माण - 1989
- कम्प्यूटर कक्ष का निर्माण - 2002
- बैडमिण्टन कोर्ट का निर्माण - 2005
- गुरु गोरक्षनाथ शिक्षक कक्ष का निर्माण - 2007
- पुस्तकालय भवन का निर्माण - 2008
- व्यावसायिक भवन के ऊपर 04 कमरों का निर्माण - 2010

प्रधानाचार्य

क्र.सं.	नाम	कब से कब तक
1.	पंडित यदुनाथ चक्रवर्ती	01.07.1934 से 30.06.1939 तक
2.	श्री राघव प्रसाद सिंह	01.07.1939 से 30.06.1942 तक
3.	श्री पारस नाथ सिंह	01.07.1942 से 31.12.1959 तक
4.	श्री कमला प्रसाद सिंह	01.01.1960 से 30.09.1967 तक
5.	श्री महाप्रसाद तिवारी	01.10.1967 से 19.07.1968 तक
6.	श्री जगन्नाथ सिन्हा	20.07.1968 से 24.09.1970 तक
7.	श्री रामव्यास सिंह	25.09.1970 से 30.09.1971 तक
8.	श्री महाप्रसाद तिवारी	01.10.1971 से 30.06.1973 तक

क्र.सं.	नाम	कब से कब तक
9.	श्री सुरेन्द्र बहादुर सिंह कौशिक	01.07.1973 से 30.06.1995 तक
10.	श्री सिंहासन सिंह	01.07.1995 से 30.06.2001 तक
11.	श्री रामजन्म सिंह	01.07.2001 से 31.08.2017 तक
12.	श्री नर्वदेश्वर शाही	01.09.2017 से 31.10.2017 तक
13.	डॉ. अरुण कुमार सिंह	01.11.2017 से अद्यतन

वर्तमान में विद्यार्थियों की संख्या : 3943

शिक्षकों की संख्या : 87

कर्मचारियों की संख्या : 31 (तृतीय श्रेणी-8, चतुर्थ श्रेणी-23)

संस्था का ई-मेल (e-mail) : mpicgkp@rediffmail.com

दूरभाष (Telephone) : 0551-2333155

विद्यालय के पूर्व छात्र

क्र.सं.	नाम	पद/कार्यस्थल
1.	श्री बी.पी. खण्डेलवाल	पूर्व शिक्षा निदेशक, उत्तर प्रदेश
2.	श्री सुब्रत चटर्जी	फुटबाल खिलाड़ी, अन्तर्राष्ट्रीय स्तर
3.	श्री राहुल सिंह	हॉकी खिलाड़ी, अन्तर्राष्ट्रीय स्तर
4.	श्री एल.पी. पाण्डेय	शिक्षा निदेशक, उत्तर प्रदेश
5.	श्री आर.पी. शाही	मेजर जनरल (भारत)
6.	श्री मनीष कुमार मल्ल	मेजर (सेवानिवृत्त)
7.	श्री राम अचल सिंह	पूर्व कुलपति, अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद
8.	श्री अविनाश जैन	भारत पेट्रोलियम में मुख्य अभियन्ता (बिहार राज्य)
9.	श्री अवधेश सिंह	यू.पी. कॉलेज, वाराणसी
10.	श्री राजीव कुमार सिंह	यू.पी. कॉलेज, वाराणसी
11.	श्री विनय कुमार पाण्डेय	प्रोफेसर, वाणिज्य विभाग, दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय
12.	श्री रवि प्रताप सिंह	प्रोफेसर, वाणिज्य विभाग, दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय
13.	श्री सैयद जमाल	प्राचार्य, इस्मालिया कामर्स कॉलेज, गोरखपुर
14.	श्री अनन्तकीर्ति तिवारी	एसो. प्रोफेसर, हिन्दी
15.	श्री के.डी. शाही	जज हाईकोर्ट, इलाहाबाद (से.नि.)

16.	श्री प्रेम प्रकाश मिश्रा	मजिस्ट्रेट, पटना
17.	श्री शाश्वत सिंह	आई.आई.टी., खड़गपुर
18.	श्री देवेन्द्र प्रताप शाही	पी.सी.एस., बिहार
19.	श्री विकास चन्द त्रिपाठी	ए.एस.पी., लखनऊ
20.	श्री राजेश त्रिपाठी	उपनिदेशक, डी.आर. डी.ओ.
21.	श्री अफाक अहमद	रणजी क्रिकेट
22.	डॉ. पंकज कुमार	चिकित्सक
23.	श्री मनोज कुमार मिश्रा	शिक्षाधिकारी
24.	श्री बजरंग बहादुर सिंह	विधायक, फरेन्दा भाजपा
25.	श्री विनोद कुमार निषाद	स्काउटिंग में राष्ट्रपति पदक
26.	प्रो. गोपाल प्रसाद	अध्यक्ष, राजनीति शास्त्र विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

पुरस्कार/सम्मान

1.	श्री रामजन्म सिंह (तत्कालीन प्रधानाचार्य)	राष्ट्रपति पुरस्कार से 2010 में सम्मानित
2.	डॉ. फूलचन्द प्रसाद गुप्त (शिक्षक)	उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ द्वारा 2016 में 'भिखारी ठाकुर सम्मान' एवं श्रेष्ठतम शिक्षक का 'योगिराज बाबा गम्भीरनाथ स्वर्णपदक 2016'

राष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ी

क्र.सं.	छात्र का नाम	वर्ष	खेल/स्तर
1.	अमर सिंह	1982 एवं 1983	फुटबाल/राष्ट्रीय स्तर
2.	सुरेन्द्र दीवान	1983	टेनिस/राष्ट्रीय स्तर
3.	अश्वनी कुमार यादव	1983 एवं 1984	फुटबाल/राष्ट्रीय स्तर
4.	घनश्याम सिंह	1983 एवं 1984	फुटबाल/राष्ट्रीय स्तर
5.	दिनेश शर्मा	1984	कबड्डी/राष्ट्रीय स्तर
6.	अजय बत्रा	1984	टेनिस/राष्ट्रीय स्तर
7.	सेते मल्ल	1986	फुटबाल/राष्ट्रीय स्तर
8.	कुन्तू यादव	1986	कबड्डी/राष्ट्रीय स्तर

9.	भारत भूषण	1986	टेनिस/राष्ट्रीय स्तर
10.	अशफाक अहमद	1986	क्रिकेट/राष्ट्रीय स्तर
11.	प्रवीण कुमार पाण्डेय	1988	कबड्डी/राष्ट्रीय स्तर
12.	अखिलेश सिंह	1991	बास्केटबाल/राष्ट्रीय स्तर
13.	राजेश्वर यादव	1992	बास्केटबाल/राष्ट्रीय स्तर
14.	राजकुमार यादव	1992	बास्केटबाल/राष्ट्रीय स्तर
15.	अरुण कुमार राय	1992	बास्केटबाल/राष्ट्रीय स्तर
16.	अरविन्द कुमार पाण्डेय	1993	कबड्डी/राष्ट्रीय स्तर
17.	सुनील कुमार	1995	बास्केटबाल/राष्ट्रीय स्तर
18.	देवानन्द यादव	1996 एवं 1998	बास्केटबाल/राष्ट्रीय स्तर
19.	सूर्यप्रकाश पाल	2011	हैण्डबाल/राष्ट्रीय स्तर
20.	कृष्ण कुमार	2012	हैण्डबाल/राष्ट्रीय स्तर
21.	महेश्वर मानस	2012	फुटबाल/राष्ट्रीय स्तर
22.	शम्स आलम	2012	बास्केटबाल/राष्ट्रीय स्तर
23.	जितेन्द्र प्रताप सिंह	2012	हैण्डबाल/राष्ट्रीय स्तर
24.	बलवन्त यादव	2013	फुटबाल/राष्ट्रीय स्तर
25.	धर्मेन्द्र साहनी	2013	फुटबाल/राष्ट्रीय स्तर
26.	शिवकुमार यादव	2013	फुटबाल/राष्ट्रीय स्तर
27.	किशन राना	2013	फुटबाल/राष्ट्रीय स्तर
28.	अविनाश कुमार राठौर	2013	हैण्डबाल/राष्ट्रीय स्तर
29.	मनीष त्रिपाठी	2013	हैण्डबाल/राष्ट्रीय स्तर
30.	कृतिक कुमार गौड़	2013	हैण्डबाल/राष्ट्रीय स्तर
31.	अजीत यादव	2013 एवं 2015	क्रिकेट/राष्ट्रीय स्तर
32.	एहतेशाम सिद्दीकी	2013 एवं 2015	बास्केटबाल/राष्ट्रीय स्तर
33.	अमर यादव	2013	बास्केटबाल/राष्ट्रीय स्तर
34.	शेखर कुमार यादव	2013	बास्केटबाल/राष्ट्रीय स्तर
35.	रजत यादव	2013	बास्केटबाल/राष्ट्रीय स्तर
36.	विकास तिवारी	2013	बास्केटबाल/राष्ट्रीय स्तर
37.	धीरज कुमार गुप्ता	2013	बास्केटबाल/राष्ट्रीय स्तर
38.	विश्व आत्मा पासवान	2014	ताइक्वाण्डो/राष्ट्रीय स्तर
39.	दुर्गेश पासवान	2014	ताइक्वाण्डो/राष्ट्रीय स्तर

40.	आलोक वर्मा	2014	स्केटिंग/राष्ट्रीय स्तर
41.	सुगम यादव	2014	बास्केटबाल/राष्ट्रीय स्तर
42.	अभिषेक गिरि	2014	बास्केटबाल/राष्ट्रीय स्तर
43.	मनीष यादव	2014	बास्केटबाल/राष्ट्रीय स्तर
44.	कलिमुल्ला खाँ	2014	बास्केटबाल/राष्ट्रीय स्तर
45.	सुरेन्द्र कुमार गुप्ता	2015	बास्केटबाल/राष्ट्रीय स्तर
46.	प्रियांशु सिंह	2015	बास्केटबाल/राष्ट्रीय स्तर
47.	रितेश यादव	2015	बास्केटबाल/राष्ट्रीय स्तर
48.	अंगद यादव	2015,2016,2017	क्रिकेट/राष्ट्रीय स्तर
49.	मिथुन कुमार	2015,2016,2017	फुटबाल/राष्ट्रीय स्तर
50.	आदर्श कुमार	2016	बास्केटबाल/राष्ट्रीय स्तर
51.	ऋषभ त्रिपाठी	2016	बास्केटबाल/राष्ट्रीय स्तर
52.	विघ्नेश्वर उपाध्याय	2016	बास्केटबाल/राष्ट्रीय स्तर
53.	प्रवेश उपाध्याय	2015	हैण्डबाल/राष्ट्रीय स्तर
54.	रोहन यादव	2015,2016	कुश्ती/राष्ट्रीय स्तर
55.	सत्य प्रकाश यादव	2015	कबड्डी/राष्ट्रीय स्तर
56.	राजन कुमार मौर्य	2015,2016,2017	हैण्डबाल/राष्ट्रीय स्तर
57.	प्रदीप कुमार	2017	कबड्डी/राष्ट्रीय स्तर
58.	सीतांशु सिंह कुशवाहा	2017	बास्केटबाल/राष्ट्रीय स्तर
59.	विश्वम्भर मिश्र	2017	बास्केटबाल/राष्ट्रीय स्तर
60.	ज्ञान गौरव प्रकाश	2018	हैण्डबाल/राष्ट्रीय स्तर
61.	बलवन्त पटेल	2018	हैण्डबाल/राष्ट्रीय स्तर
62.	जनार्दन यादव	2018	कुश्ती/राष्ट्रीय स्तर
63.	रणविजय चौरसिया	2018	फुटबाल/राष्ट्रीय स्तर
64.	शशांक गुप्ता	2018	फुटबाल/राष्ट्रीय स्तर
65.	आशीष कुमार पासवान	2018	फुटबाल/राष्ट्रीय स्तर
66.	अभय विश्वकर्मा	2018	फुटबाल/राष्ट्रीय स्तर
67.	आकाश	2018	क्रिकेट/राष्ट्रीय स्तर
68.	राम प्रवेश यादव	2018	कुश्ती राष्ट्रीय स्तर

श्री गोरक्षनाथ संस्कृत उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, गोरखनाथ मन्दिर, गोरखपुर

स्थापना का वर्ष - सन् 1949 ई.

स्थापना के समय खोले गये विषय/संकाय

विद्यालय की स्थापना काल से ही सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय से साहित्य, व्याकरण, वेद, ज्योतिष विषयों की मान्यता प्राप्त।

संस्था की वर्षवार प्रगति

'उत्तर प्रदेश माध्यमिक संस्कृत शिक्षा परिषद् लखनऊ' के गठन के पश्चात् 'श्री गोरक्षनाथ संस्कृत उच्चतर माध्यमिक विद्यालय' के नाम से संस्था का जुलाई 2001 से नवीनीकरण।

प्रधानाचार्य

क्र.सं.	नाम	कब से कब तक
1.	श्री इन्द्रजीत शुक्ल	01.06.2001 से 30.06.2015 तक
2.	श्री कलाधार पौड्याल	01.07.2015 से अद्यतन

वर्तमान में विद्यार्थियों की संख्या : 370

शिक्षकों की संख्या : 12

शिक्षणेतर कर्मचारियों की संख्या : 01

विशेष उपलब्धियाँ

पूर्व स्थापना काल से ही छात्र संख्या में लगातार वृद्धि एवं परीक्षाफल में अपेक्षाकृत सफलता प्राप्त।

- 21 दिसम्बर 2017 को लोकमान्य बालगंगाधर तिलक जी के जन्मशताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में उत्तर प्रदेश शासन द्वारा माध्यमिक कक्षा में आयोजित गीता सस्वर गायन प्रतियोगिता में पूर्व मध्यमा भाग-एक (कक्षा-9) के छात्र पुनीष कुमार पाण्डेय को मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश के करकमलों द्वारा प्रथम पुरस्कार 51 हजार एवं प्रशस्ति पत्र प्राप्त।
- वर्ष 2018 में संस्कृत माध्यमिक बोर्ड की परीक्षा में कक्षा में प्रथम दस स्थान प्राप्त छात्रों में तृतीय स्थान प्राप्त मोहित वासोतिया कक्षा प्रथमा (8) को प्रशस्ति-पत्र के साथ एक लाख रुपये तथा सप्तम व नवम स्थान प्राप्त अंकित कुमार व विश्वजीत शर्मा को प्रशस्ति-पत्र के साथ इक्कीस-इक्कीस हजार का पुरस्कार मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश के करकमलों द्वारा प्राप्त।
- महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् द्वारा आयोजित साप्ताहिक संस्थापक समारोह अन्तर्गत संस्कृत भाषण प्रतियोगिता में संस्थागत चल वैजयन्ती के साथ प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान में से लगभग प्रतिवर्ष दो स्थान प्राप्त।

दिग्विजयनाथ इण्टर कॉलेज, चौक बाजार, महराजगंज

स्थापना का वर्ष - सन् 1950 ई.

स्थापना के समय खोले गये विषय - जूनियर हाईस्कूल

दिग्विजयनाथ इण्टर कॉलेज, चौक बाजार

दिग्विजयनाथ इण्टर कॉलेज, चौक बाजार का विशाल परिसर

संस्था की वर्षवार प्रगति

- **हाईस्कूल वर्ष - 1969 :** मान्य विषय- 1. हिन्दी, 2. संस्कृत, 3. अंग्रेजी, 4. गणित, प्रा. गणित, 5. गृहविज्ञान, 6. विज्ञान, 7. सा. विज्ञान, 8. चित्रकला
- **इण्टरमीडिएट वर्ष - 1973 :** मान्य विषय- 1. हिन्दी, 2. संस्कृत, 3. भूगोल, 4. नागरिकशास्त्र, 5. अर्थशास्त्र, 6. समाजशास्त्र
- **व्यावसायिक वर्ग वर्ष - 1996 :** मान्य विषय - 1. सामान्य हिन्दी, 2. रंगीन फोटोग्राफी, 3. औद्योगिक संगठन, 4. सामान्य आधारिक विषय, 5. टंकण, हिन्दी एवं अंग्रेजी
- **विज्ञान वर्ग वर्ष - 2014 :** मान्य विषय- 1. सामान्य हिन्दी, 2. भौतिक विज्ञान, 3. रसायन विज्ञान, 4. जीवविज्ञान, 5. गणित, 6. अंग्रेजी
- **वाणिज्य वर्ग वर्ष - 2014 :** मान्य विषय- 1. सामान्य हिन्दी, 2. बहीखाता तथा लेखाशास्त्र, 3. व्यापारिक संगठन एवं पत्र व्यवहार, 4. अधिकोषण तत्त्व, 5. गणित तथा प्रारम्भिक सांख्यिकी, 6. औद्योगिक संगठन

प्रधानाचार्य

क्र.सं.	नाम	कब से कब तक
1.	श्री महातम प्रसाद दीक्षित	स्थापना से 30.06.1998 तक
2.	श्री ओमकार नाथ मिश्रा	01.07.1998 से 30.06.1999 तक
3.	श्री गोपीनाथ मिश्रा	01.07.1999 से 30.06.2008 तक
4.	श्री जयप्रकाश शाही	01.07.2008 से 30.06.2011 तक
5.	श्री छविनाथ सिंह	01.07.2011 से 30.06.2012 तक
6.	डॉ. हरिन्द्र यादव	01.07.2012 से अद्यतन

वर्तमान में विद्यार्थियों की संख्या : 4162

शिक्षकों की संख्या : 43

कर्मचारियों की संख्या : 10 (तृतीय श्रेणी-2, चतुर्थ श्रेणी-8)

संस्था का ई-मेल (e-mail) : dnicmrj@gmail.com

दूरभाष (Telephone) : 9451567579

दिग्विजयनाथ शिशु शिक्षा विहार

दिग्विजयनाथ इण्टर कालेज, चौक बाजार में 1972 से मान्यता प्राप्त दिग्विजयनाथ शिशु शिक्षा विहार के अन्तर्गत प्राथमिक स्तर की कक्षाएं संचालित हैं। वर्तमान में 718 विद्यार्थी तथा 12 शिक्षक अध्ययन-अध्यापन कर रहे हैं।

महाराणा प्रताप बालिका इण्टर कॉलेज, सिविल लाइन्स, गोरखपुर

स्थापना का वर्ष - सन् 1962 ई.

स्थापना के समय खोले गये विषय

प्रारम्भ में 'महाराणा प्रताप शिशु शिक्षा विहार' के नाम से इस विद्यालय की स्थापना हुई जिसमें कक्षा शिशु से कक्षा पाँच तक की पढ़ाई होती थी।

महाराणा प्रताप बालिका इण्टर कॉलेज, सिविल लाइन्स, गोरखपुर

संस्था की वर्षवार प्रगति

- सन् 1977 में महाराणा प्रताप जूनियर हाईस्कूल की मान्यता मिली और कक्षा 6 से 8 तक की कक्षाएँ संचालित होने लगीं।
- तत्कालीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज के प्रयास से सन् 1982 में विद्यालय को महाराणा प्रताप जूनियर हाईस्कूल सिविल लाइन्स, गोरखपुर नाम से वित्तीय सहायता सरकार द्वारा प्राप्त हुई।
- सन् 1995 में हाईस्कूल (कला वर्ग एवं विज्ञान वर्ग) की मान्यता महाराणा प्रताप उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के नाम से प्राप्त हुई।
- सन् 2000 में इण्टरमीडिएट कला वर्ग में हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, गृहविज्ञान, इतिहास, नागरिकशास्त्र विषयों की मान्यता महाराणा प्रताप बालिका इण्टर कॉलेज सिविल लाइन्स, गोरखपुर के नाम से प्राप्त हुई।
- सन् 2005 में समाजशास्त्र एवं कला विषय की मान्यता प्राप्त हुई।
- सन् 2006 में इण्टरमीडिएट विज्ञान वर्ग (गणित एवं जीवविज्ञान) की मान्यता मिली।
- सन् 2013 में कामर्स वर्ग एवं कम्प्यूटर विषय और संगीत विषय की मान्यता मिली।

प्रधानाचार्य

क्र.सं.	नाम	कब से कब तक
1.	श्रीमती इन्दिरा श्रीवास्तवा	1962 से 1995 तक
2.	श्रीमती डॉ. शान्ति पाण्डेय	1995 से 2010 तक
3.	श्रीमती शान्ति गौड़	2010 से 2013 तक
4.	श्रीमती सुधा गुप्ता	2013 से 2016 तक
5.	कैप्टन मंजू सिंह	2016 से 2019
6.	सुश्री कृष्णा चटर्जी	2019 से अद्यतन

वर्तमान में विद्यार्थियों की संख्या : 2440

शिक्षकों की संख्या : 34

कर्मचारियों की संख्या : 18

संस्था का ई-मेल (e-mail) : mpgirlsintercollege@gmail.com

दूरभाष (Telephone) : 0551-2332059

विशेष उपलब्धियाँ

- प्रार्थना सभा में सरस्वती वन्दना, ईश वन्दना, गीता श्लोक, संतवाणी, रामायण चौपाई, समसामयिक घटनाओं का उल्लेख निर्धारित तिथि अनुसार सम्पन्न होता है।
- बोर्ड परीक्षा की तैयारी हेतु प्रीबोर्ड परीक्षा।
- छात्राओं के लिए NCC एवं नि:शुल्क सिलाई-कढ़ाई प्रशिक्षण।

विद्यालय के पूर्व छात्र

क्र.सं.	नाम	पद/कार्यस्थल
1.	शालिनी त्रिपाठी	प्रवक्ता, आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, गोरखपुर
2.	कृष्णा त्रिपाठी	प्रवक्ता, गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर
3.	रचना सिंह	प्रवक्ता, गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर
4.	ज्योति टामटा	प्रवक्ता, अल्मोड़ा डिग्री कॉलेज, अल्मोड़ा
5.	तन्वी सिंह	प्रवक्ता, एन.ई. रेलवे गर्ल्स इण्टर कॉलेज, गोरखपुर
6.	शिखा सिंह	प्रवक्ता, एन.ई. रेलवे गर्ल्स इण्टर कॉलेज, गोरखपुर
7.	नीतू यादव	प्रवक्ता, जे.एन.यू., दिल्ली
8.	राजलक्ष्मी	असिस्टेण्ट प्रोफेसर, गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

9.	निधि सिंह	एफ.सी.आई. क्वालिटी कण्ट्रोल इन्जीनियर, दिल्ली
10.	रूबी चौधरी	एम.एम.एम. प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, गोरखपुर
11.	नयनिका राज	एअर होस्टेज
12.	पल्लवी सिंह	अल्मोड़ा डिग्री कॉलेज, आई.आई.टी. रुड़की
13.	रेखा मौर्या	डी.आई.एम.पी.जी. कॉलेज शारीरिक शिक्षा
14.	शुभ्रा पाठक	लॉ ऑफिसर के.एन.एम.
15.	शिवानी त्रिपाठी	जी.न्यूज एंकर
16.	इरम खान	चिकित्सक – आगरा मेडिकल कॉलेज
17.	प्रीति शाही	पोस्ट डॉक्टोरल रिसर्च ऑफ कनाडा
18.	प्रतिमा योगी	शास्त्रीय गायिका, मुम्बई
19.	बिन्दू शुक्ला	गायिका, गोरखपुर दूरदर्शन
20.	स्वाति सिंह	सहायक अध्यापिका, कस्तूरबा गाँधी बाल विद्यालय, गोरखपुर
21.	शिखा पाण्डेय	सहायक अध्यापिका, बेसिक शिक्षा, गोरखपुर
22.	रेनुका राव	सहायक अध्यापिका, बेसिक शिक्षा, गोरखपुर
23.	दीपाली त्रिपाठी	सहायक अध्यापिका, बेसिक शिक्षा, गोरखपुर
24.	बीनू सिंह	सहायक अध्यापिका, बेसिक शिक्षा, गोरखपुर
25.	विजय लक्ष्मी	सहायक अध्यापिका, बेसिक शिक्षा, गोरखपुर
26.	निधि चौबे	एअर होस्टेज
27.	वर्षा नायक	बैंक पी.ओ.
28.	पूजा दूबे	एम.बी.बी.एस., बी.आर.डी. मेडिकल कॉलेज, गोरखपुर

पुरस्कार एवं सम्मान

1.	कु. खुशी (कक्षा 10–बी$_1$)	जनपदीय राइफल शूटिंग प्रतियोगिता, प्रथम स्थान एवं गोल्ड मेडल प्राप्त किया 2017–18 में गीडा में विज्ञान मॉडल प्रतियोगिता
2.	प्रेमलता गुप्ता, कैडेट	सहारा स्कॉलरशिप रु. 15000.00 सन् 2003 में
3.	अदिति मिश्रा, कैडेट	सहारा स्कॉलरशिप रु. 12000.00 सन् 2005 में
4.	रश्मि त्रिपाठी (सीनियर अण्डर ऑफिसर)	सहारा स्कॉलरशिप रु. 12000.00 सन् 2006 में
5.	निधि सिंह (सीनियर अण्डर ऑफिसर)	मुख्यमंत्री पुरस्कार रु. 5000.00 सन् 2004 में।
6.	सुप्रिया त्रिपाठी	मुख्यमंत्री पुरस्कार रु. 5000.00
7.	ज्योति टामटा (सीनियर अण्डर ऑफिसर)	बेस्ट कैडेट पुरस्कार रु. 5000.00 सन् 2003 में

8.	गुंजन पाण्डेय (सीनियर अण्डर ऑफिसर)	बेस्ट कैडेट पुरस्कार रु. 5000.00 सन् 2005 में
9.	कु. वन्दना गिरि (सीनियर अण्डर ऑफिसर)	इस वर्ष 2019 के R.D.C. कैम्प में राजपथ पर परेड में प्रतिभाग किया
10.	निशा चौधरी एवं तृप्ति चौधरी को 2019 एन.सी.सी. कैडेट्स सीएटीसी कैम्प में गोल्ड मेडल।	
11.	अंशिका पाण्डेय को एन.सी.सी. टी.एस.सी. नेशनल कैम्प बरेली में फायरिंग में स्वर्ण पदक तथा उमा ओझा को रजत पदक।	
12.	अंगिरा सैनी को एन.सी.सी. के आई.जी.सी. राज्य स्तर कैम्प सन्तकबीरनगर में स्वर्ण पदक।	
13.	अंगिरा सैनी एवं सुरभि पाण्डेय गोरखपुर डिस्ट्रिक्ट कैडेट कैम्प में प्रथम स्थान प्राप्त किया।	
14.	नेहा यादव कक्षा 11 की राष्ट्रीय जेमनास्टिक प्रतियोगिता में कांस्य पदक।	
15.	आस्था एवं गौरी कक्षा 7 मण्डलीय बॉस्केटबॉल प्रतियोगिता में प्रथम स्थान।	
16.	गौरी गोड़ नेशनल बास्केटबॉल प्रतियोगिता में चयन।	
17.	अंजली कुमारी कक्षा 11 यूथ नेशनल बास्केटबॉल प्रतियोगिता मेरठ में 30वाँ स्थान।	
18.	अंजली कुमारी, आस्था, गौरी की बीआईटी इंटर स्कूल बास्केटबॉल प्रतियोगिता में प्रथम स्थान।	

महाराणा प्रताप चिल्ड्रेन एकेडमी

महाराणा प्रताप बालिका इण्टर कालेज में वर्ष 2016 से महाराणा प्रताप चिल्ड्रेन एकेडमी संचालित है। वर्तमान में 97 विद्यार्थी तथा 7 अध्यापक अध्ययन-अध्यापन कर रहे हैं।

10 दिसम्बर 2018 को संस्थापक सप्ताह समारोह के मुख्य महोत्सव में भारत के मा. राष्ट्रपति जी से श्रेष्ठतम संस्थान का 'महायोगी गुरु श्री स्वर्ण पदक' प्राप्त करते महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़ के प्राचार्य डॉ. प्रदीप कुमार राव।

महाराणा प्रताप कन्या इण्टर कॉलेज, रामदत्तपुर, गोरखपुर

स्थापना का वर्ष - सन् 1972 ई. (महाराणा प्रताप शिशु शिक्षा विहार, रामदत्तपुर, गोरखपुर)

स्थापना के समय खोले गये विषय

बेसिक शिक्षा परिषद् द्वारा संचालित समस्त विषय।

महाराणा प्रताप कन्या इण्टर कॉलेज, रामदत्तपुर, गोरखपुर

महाराणा प्रताप कन्या इण्टर कॉलेज, रामदत्तपुर, गोरखपुर का नवीन भवन

संस्था की वर्षवार प्रगति

सन्	उपलब्धियाँ
1972	महाराणा प्रताप शिशु शिक्षा विहार, रामदत्तपुर, गोरखपुर (अस्थायी मान्यता)
1977	महाराणा प्रताप पूर्व माध्यमिक विद्यालय, रामदत्तपुर, गोरखपुर (अस्थायी मान्यता)
1989	महाराणा प्रताप पूर्व माध्यमिक विद्यालय, रामदत्तपुर, गोरखपुर (स्थायी मान्यता)
2003	महाराणा प्रताप कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, रामदत्तपुर, गोरखपुर (स्थायी मान्यता)
2018	महाराणा प्रताप शिशु शिक्षा विहार, रामदत्तपुर, गोरखपुर (स्थायी मान्यता)
2108	महाराणा प्रताप कन्या इण्टर कॉलेज, रामदत्तपुर, गोरखपुर (स्थायी मान्यता)

प्रधानाचार्य

क्र.सं.	नाम	कब से कब तक
1.	श्री जटाशंकर सिंह	1972 से 1980 तक
2.	श्री दयानन्द त्रिपाठी	1980 से 1990 तक
3.	श्री बलराम श्रीवास्तव	1990 से 1995 तक
4.	श्रीमती इन्दिरा श्रीवास्तव	1995 से 2000 तक
5.	श्रीमती रानू बनर्जी	2000 से 2006 तक
6.	श्रीमती पूनम श्रीवास्तव	2006 से 2016 तक
7.	श्रीमती वन्दना त्रिपाठी	2016 से अद्यतन

वर्तमान में विद्यार्थियों की संख्या : 480

शिक्षकों की संख्या : 18

कर्मचारियों की संख्या : 04

संस्था का ई-मेल (e-mail) : st16135@gmail.com

दूरभाष (Telephone) : 9519340862

पुरस्कार

- महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद द्वारा वर्ष 2018 में सभी प्रतियोगिताओं में विजयी प्रतिभागी विद्यालय की छात्रा आंशिका श्रीवास्तव को भारत के माननीय राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविन्द जी द्वारा पण्डित बब्बन मिश्र स्मृति पुरस्कार प्रदान किया गया।

महाराणा प्रताप कृषक इण्टर कॉलेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर

स्थापना का वर्ष - सन् 1972 ई.

महाराणा प्रताप कृषक इण्टर कॉलेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर के पूर्वोत्तर सीमा पर स्थित ग्रामीण अंचल का विद्यालय है जिसकी स्थापना सन् 1972 ई. में तत्कालीन गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त

महाराणा प्रताप कृषक इण्टर कॉलेज, जंगल धूसड़

महाराणा प्रताप कृषक इण्टर कॉलेज, जंगल धूसड़ का नवीन परिसर

अवेद्यनाथ जी महाराज के आशीर्वाद स्वरूप हुई थी। जनपद का यह क्षेत्र शैक्षिक एवं आर्थिक रूप से अत्यन्त पिछड़ा हुआ था। शोषित और वंचित लोगों में शिक्षा की लौ प्रज्वलित करना इस विद्यालय का मुख्य उद्देश्य रहा है। महज दो कमरों से शिक्षण कार्य प्रारम्भ करने वाली इस संस्था के पास अब एक विशाल शैक्षिक परिसर है। विद्यालय के पास एक बड़ी छात्र संख्या है जो इस बात की पुष्टि करता है कि हमारे संस्थापकों ने जिस ध्येय मे इस विद्यालय की स्थापना की थी हम उस दिशा में अग्रसर हैं।

स्थापना के समय खोले गये विषय

1972 ई. में जूनियर हाई स्कूल की कक्षाओं के संचालन की मान्यता।

संस्था की वर्षवार प्रगति

सन् 1972 ई. में कृषक माध्यमिक विद्यालय को जूनियर हाई स्कूल की मान्यता प्राप्त हुई। विद्यालय को हिन्दी, गणित, अर्थशास्त्र, नागरिक शास्त्र, अंग्रेजी, इतिहास आदि विषयों के साथ हाईस्कूल की मान्यता प्राप्त हुई। मार्च 1984 ई. को विद्यालय सरकार की अनुदानित सूची में शामिल हुआ। विद्यालय को प्रधानाचार्य (01), सहायक शिक्षक (15), लिपिक (01) तथा अनुचरों (10) पदसृजन के फलस्वरूप प्राप्त हुए। विद्यालय को सत्र 1997-98 ई. में इण्टरमीडिएट कलावर्ग कक्षा-11 एवं 1998-99 में इण्टरमीडिएट कला वर्ग कक्षा-12 के कक्षा संचालन की अनुमति मिली। इण्टरमीडिएट साहित्य वर्ग की मान्यता प्राप्त हुई। विद्यालय को 2007 में सामान्य हिन्दी, भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, जीवविज्ञान, गणित के साथ मानविकी वर्ग के अतिरिक्त विषय के रूप में संस्कृत, गृहविज्ञान एवं भूगोल विषय की मान्यता हो चुकी है।

प्रधानाचार्य

क्र.सं.	नाम	कब से कब तक
1.	श्री नवल किशोर पाण्डेय	01.01.1972 से 30.06.1994 तक
2.	श्री ब्रह्मदेव यादव	01.04.1994 से 31.03.2017 तक
3.	श्री संदीप कुमार	01.04.2017 से अद्यतन

वर्तमान में विद्यार्थियों की संख्या : 2502

शिक्षकों की संख्या : 33

शिक्षणेतर कर्मचारियों की संख्या : 10

संस्था का ई-मेल (e-mail) : mpkic.jungledhushan1113@gmail.com

दूरभाष (Telephone) : 9794983386

विशेष उपलब्धियाँ

- विद्यालय के छात्र सुरेन्द्र यादव ने 54 किलोग्राम भार वर्ग में एशियन चैम्पियनशिप सन् 2008 में देश का प्रतिनिधित्व किया तथा ताशकन्द उजबेकिस्तान में सम्पन्न हुई इस प्रतियोगिता में जापान व कोरिया के पहलवानों को 25 व 28 जुलाई 2008 को हराकर कांस्य पदक जीता।
- विद्यालय के छात्र चन्द्रेश पटेल ने भी 42 किलोग्राम भार वर्ग में उसी प्रतियोगिता में देश का प्रतिनिधित्व किया था। आज ये दोनों छात्र भारतीय रेल को अपनी सेवाएँ दे रहे हैं।

10 दिसम्बर 2018 को संस्थापक सप्ताह समारोह के मुख्य महोत्सव में भारत के मा. राष्ट्रपति जी से श्रेष्ठतम शिक्षक का 'योगिराज बाबा गम्भीरनाथ स्वर्ण पदक' प्राप्त करते दिग्विजनाथ पी.जी. कालेज के असि. प्रो. डॉ. नीरज कु. सिंह।

10 दिसम्बर 2018 को संस्थापक सप्ताह समारोह के मुख्य महोत्सव में भारत के मा. राष्ट्रपति जी से स्नातकोत्तर के श्रेष्ठतम विद्यार्थी का 'ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ स्वर्ण पदक', स्नातक के श्रेष्ठतम विद्यार्थी का 'ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ स्वर्ण पदक' तथा हाई स्कूल-इण्टरमीडिएट के श्रेष्ठतम विद्यार्थी का 'महाराणा मेवाड़ स्वर्ण पदक' प्राप्त करती क्रमशः दिग्विजनाथ पी.जी. कालेज की छात्रा करिश्मा वारसी, महाराणा प्रताप महिला पी.जी. कालेज, रामदत्तपुर की छात्रा श्रेया त्रिपाठी तथा महाराणा प्रताप बालिका इण्टर कालेज की छात्रा कृष्णा मणि त्रिपाठी।

दिग्विजयनाथ इण्टर कॉलेज, चौकमाफी, गोरखपुर

स्थापना का वर्ष - सन् 1982 ई.

स्थापना के समय खोले गये विषय

उच्च प्राथमिक स्तर तक समस्त विषय

दिग्विजयनाथ इण्टर कॉलेज, चौकमाफी

संस्था की वर्षवार प्रगति

- सन् 1982 ई. - जूनियर स्तर अस्थायी
- सन् 1990 ई. - प्राथमिक स्तर अस्थायी
- सन् 1994 ई. - जूनियर स्तर स्थायी
- सन् 2000 ई. - हाईस्कूल स्तर तक समस्त विषय
- सन् 2007 ई. - इण्टर मानविकी वर्ग
- सन् 2013 ई. - इण्टर वाणिज्य वर्ग एवं मानविकी वर्ग का अतिरिक्त विषय
- सन् 2015 ई. - इण्टर विज्ञान वर्ग एवं मानविकी वर्ग का अतिरिक्त विषय

प्रधानाचार्य -

1.	श्री तीर्थराज गुप्ता	01.03.1982 से 08.03.1989
2.	श्री केशव प्रसाद तिवारी	09.03.1989 से अद्यतन

वर्तमान में विद्यार्थियों की सं. : 1390 **शिक्षकों की सं.** : 24

संस्था का दूरभाष : 9956714156 **कर्मचारियों की सं.** : 2

ई-मेल : dniccmgkp@gmail.com

महाराणा प्रताप सीनियर सेकण्डरी स्कूल, मंगला देवी मन्दिर, बेतियाहाता, गोरखपुर

स्थापना का वर्ष - सन् 2007 ई.

स्थापना के समय खोले गये विषय

कक्षा 6 से 8 तक बालक वर्ग की मान्यता

वर्ष 2014 में हाईस्कूल एवं इण्टरमीडिएट (अंग्रेजी माध्यम) की बालक वर्ग में विज्ञान वर्ग एवं वाणिज्य वर्ग से मान्यता प्राप्त।

महाराणा प्रताप सीनियर सेकण्डरी स्कूल, मंगला देवी मन्दिर, बेतियाहाता

प्रधानाचार्य

क्र.सं.	नाम	कब से कब तक
1.	श्री रामाशीष	02 जुलाई 2007 से अप्रैल 2010
2.	श्रीमती पूनम सिंह	05 अप्रैल 2010 से 12 जून 2013
3.	श्रीमती आभा राज	12 जून 2013 से 18 अगस्त 2015
4.	श्री अरविन्द कुमार राय	21 सितम्बर 2015 से 04 जून 2019
5.	श्री पंकज कुमार	04 जून 2019 से अद्यतन

वर्तमान में विद्यार्थियों की संख्या : 1338
शिक्षकों की संख्या : 29
कर्मचारियों की संख्या : 12
संस्था का ई-मेल : mpsssmdgkp@gmail.com
दूरभाष : 0551-2201708

विशेष उपलब्धियाँ

- विद्यालय के छात्रों द्वारा भारतीय अन्तर्राष्ट्रीय विज्ञान महोत्सव, नई दिल्ली (आई.आई.एस.एफ.) 2016 में उत्कृष्ट प्रदर्शन
- गोरखपुर, गोरखनाथ खिचड़ी के मेले में विज्ञान प्रदर्शनी (2017) में विद्यालय के छात्रों द्वारा उत्कृष्ट प्रदर्शन।
- विद्यालय के छात्रों द्वारा वर्ष 2016 से 2018 के बीच कबड्डी, बैडमिण्टन एवं टेबिल टेनिस में प्रदेश स्तर तक उत्कृष्ट प्रदर्शन।
- विद्यालय के छात्रों द्वारा ललित कला महोत्सव, गोरखपुर 2018 में विज्ञान प्रदर्शनी एवं नृत्य में उत्कृष्ट प्रदर्शन।
- ललित कला में सागर सहानी नृत्य में द्वितीय श्रेणी।
- भारतीय अन्तर्राष्ट्रीय विज्ञान महोत्सव, नई दिल्ली (आई.आई.एस.एफ.) 2016 में उत्कृष्ट प्रदर्शन।

4 दिसम्बर 2018 को संस्थापक सप्ताह समारोह के उद्घाटन कार्यक्रम के अवसर पर गॉर्ड ऑफ ऑनर के उपरान्त एन.सी.सी. कैडेटों के साथ छत्तीसगढ़ के तत्कालीन मा. मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह, उ.प्र. के मा. मुख्यमंत्री गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त योगी आदित्यनाथ जी महाराज तथा उ.प्र. के मा. मंत्री श्री चेतन चौहान जी एवं अन्य।

गुरु गोरखनाथ विद्यापीठ, पित्तेश्वरनाथ मन्दिर, भरोहिया, पीपीगंज, गोरखपुर

स्थापना का वर्ष - सन् 2015 ई.

गुरु गोरखनाथ विद्यापीठ, भरोहिया, पीपीगंज का परिसर

गुरु गोरखनाथ विद्यापीठ, भरोहिया, पीपीगंज का भवन

स्थापना के समय खोले गये विषय

कक्षा 8 तक बेसिक शिक्षा परिषद् से सम्बद्धता के साथ 15 फरवरी 2015 को विद्यालय का लोकार्पण हुआ।

संस्था की वर्षवार प्रगति

- वर्ष 2016 में केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से कक्षा दसवीं तक की मान्यता प्राप्त हुई।
- वर्ष 2018 में केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से कक्षा बारहवीं तक की विज्ञान तथा वाणिज्य वर्ग की मान्यता प्राप्त हुई।

प्रधानाचार्य : श्री मनीष कुमार दूबे फरवरी 2015 से अद्यतन

वर्तमान में विद्यार्थियों की संख्या : 1166

शिक्षकों की संख्या : 29

कर्मचारियों की संख्या : 20

संस्था का ई-मेल (e-mail) : ggvpgkp.co.in

वेबसाइट (website) : ggvgkp.org.in

दूरभाष (Telephone) : 7408793393

विशेष उपलब्धियाँ

कक्षा दसवीं की छात्रा निशा भारती ने 2018 की बोर्ड परीक्षा में 90 फीसदी अंक प्राप्त करके पीपीगंज उपनगर में प्रथम स्थान प्राप्त किया।

4 दिसम्बर 2018 को संस्थापक सप्ताह समारोह के उद्घाटन कार्यक्रम के अवसर पर मुख्य अतिथि डॉ. रमन सिंह जी को गॉर्ड ऑफ ऑनर देते एन.सी.सी. के मेजर पाटेश्वरी सिंह।

आदि शक्ति माँ पाटेश्वरी पब्लिक स्कूल, भवनियापुर, तुलसीपुर, जिला बलरामपुर

स्थापना का वर्ष - 2016 ई.

स्थापना के समय खोले गए विषय

कक्षा सात तक बेसिक शिक्षा परिषद् से सम्बद्धता के साथ 12 फरवरी 2016 को विद्यालय का लोकार्पण हुआ। वर्ष 2018 में केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से कक्षा 10 तक की मान्यता प्राप्त हुई।

आदि शक्ति माँ पाटेश्वरी पब्लिक स्कूल, भवनियापुर, तुलसीपुर

आदि शक्ति माँ पाटेश्वरी पब्लिक स्कूल, भवनियापुर, तुलसीपुर

प्रधानाचार्य

क्र.सं.	नाम	कब से कब तक
1.	श्री वीर गौरव सिंह	फरवरी 2016 से 2019
2.	श्री अरविन्द त्रिपाठी	2019 से अद्यतन

वर्तमान में विद्यार्थियों की संख्या : 870

शिक्षकों की संख्या : 31

कर्मचारियों की संख्या : 19 (तृतीय श्रेणी-2, चतुर्थ श्रेणी-17)

संस्था का ई-मेल (e-mail) : asmpps2016@gmail.com

वेबसाइट (website) : www.asmpateshwarips.in

दूरभाष (Telephone) : 8957654733

विशेष उपलब्धियाँ

- कक्षा पाँचवी की छात्रा दिव्यांशी यादव एवं छात्र शिवांश वर्मा का सत्र 2018 में जवाहर नवोदय विद्यालय में चयन
- देवीपाटन मंडल स्तर पर आयोजित डी.टी.एस.सी. प्रतियोगिता परीक्षा 2018 में विद्यालय के छात्र शिवांश वर्मा कक्षा 5, उत्कर्ष सिंह कक्षा 8, अतुल यादव कक्षा 8 के द्वारा प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त किया गया।

आदि शक्ति माँ पाटेश्वरी विद्यापीठ, नन्दमहरा, तुलसीपुर

देवी पाटन मन्दिर से 15 किमी. की दूरी पर श्री नन्दमहरा के पावन स्थान पर आदि शक्ति माँ पाटेश्वरी विद्यापीठ ग्रामीण बच्चों विशेषकर थारू जनजाति बच्चों के लिए अंग्रेजी माध्यम का यह विद्यालय कक्षा 8 तक कुशलतापूर्वक संचालित हो रहा है।

श्री माँ पाटेश्वरी वनवासी छात्रावास, देवीपाटन मन्दिर, तुलसीपुर

श्री माँ पाटेश्वरी शक्तिपीठ मन्दिर देवीपाटन परिसर के एक भाग में ब्रह्मलीन महन्त महेन्द्रनाथ जी महाराज द्वारा थारू जनजाति के 100 बच्चों के लिए निःशुल्क शिक्षा एवं निःशुल्क आवासीय व्यवस्था की गयी है। विद्यालय परिसर में ही एक 22 कमरों का अत्याधुनिक सुविधाओं से युक्त वनवासी थारू जनजाति के बच्चों के लिए एक नवीन छात्रावास का भी निर्माण कार्य प्रगति पर है।

श्री महन्त महेन्द्रनाथ योगी स्मारक श्री माँ पाटेश्वरी शक्तिपीठ सेवाश्रम चिकित्सालय

उत्तर प्रदेश का अत्याधिक पिछड़ा एवं 2007 तक सरकारी उपेक्षाओं का क्षेत्र तुलसीपुर का वह क्षेत्र जहाँ गोरक्षपीठ द्वारा निरंतर शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा के माध्यम से राष्ट्र निर्माण की अविरल

यात्रा गतिमान है। उसी क्रम में श्री माँ पाटेश्वरी मन्दिर परिसर में श्री महन्त महेन्द्रनाथ योगी स्मारक श्री माँ पाटेश्वरी शक्तिपीठ सेवाश्रम चिकित्सालय की स्थापना तत्कालीन गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त योगी आदत्यिनाथ जी महाराज के पुरुषार्थ से स्थापित हुआ है। इस चिकित्सालय ने आस-पास के हजारों लोगों के लिए स्वास्थ्य सेवा की दृष्टि से आशा की बड़ी किरण के रूप में अपनी पहचान बनायी है। 60 शैय्या वाला चिकित्सालय में लगभग सभी प्रकार की रोगों के निदान तथा विभिन्न प्रकार के जाँच मशीन के माध्यम से आरोग्य की साधना का सेवा कार्य संचालित हो रहा है।

4 दिसम्बर 2018 को संस्थापक सप्ताह समारोह के उद्घाटन कार्यक्रम के अवसर पर उपस्थित विद्यार्थियों एवं गणमान्य जन को सम्बोधित करते उ.प्र. के मा. मुख्यमंत्री गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त योगी आदित्यनाथ जी महाराज तथा शोभायात्रा प्रस्थान के समय शंख ध्वनि करते श्रीगोरक्षनाथ संस्कृत विद्यालय के विद्यार्थी।

4 दिसम्बर 2018 को संस्थापक सप्ताह समारोह के उद्घाटन कार्यक्रम के अवसर पर शोभायात्रा के पथ संचलन में परेड करती महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् संस्थाओं की एन.सी.सी. कैडेट (छात्राएं)।

महाराणा प्रताप शिशु शिक्षा विहार, लालडिग्गी, गोरखपुर

स्थापना का वर्ष - सन् 1977 ई., प्राथमिक स्तर की स्थायी मान्यता।

महाराणा प्रताप शिशु शिक्षा विहार, लालडिग्गी

वर्तमान में विद्यार्थियों की संख्या : 45

शिक्षकों की संख्या : 05

कर्मचारियों की संख्या : 01

संस्था का ई-मेल (e-mail) :

mpjhslaldiggigkp@gmail.com

दूरभाष (Telephone) : 9838341294

प्रधानाचार्य

क्र.सं.	नाम	कब से कब तक
1.	श्री उपेन्द्र मोहन तिवारी	01.07.1977 से 02.07.1980 तक
2.	श्री मुरलीधार	01.07.1980 से 08.11.1996 तक
3.	श्री मोतीलाल	08.11.1996 से 20.10.2003 तक
4.	श्री विपिनचन्द्र श्रीवास्तव	21.10.2003 से 25.02.2009 तक
5.	श्री संजय कुमार गुप्ता	26.02.2009 से 31.12.2012 तक
6.	श्री हरिवंश ओझा	01.01.2013 से 31.03.2014 तक
7.	श्री शिवजी सिंह	01.04.2014 से अद्यतन

दिग्विजयनाथ बालिका पूर्व माध्यमिक विद्यालय, चौकबाजार, महराजगंज

स्थापना का वर्ष - सन् 1992 ई.

स्थापना के समय खोले गये विषय

हिन्दी, गणित, सामाजिक अध्ययन, विज्ञान, संस्कृत, अंग्रेजी, गृहशिल्प, कला/संगीत, पर्यावरण शिक्षा, शारीरिक शिक्षा, स्काउट/गाइड, नैतिक शिक्षा।

दिग्विजयनाथ बालिका पूर्व माध्यमिक विद्यालय, चौकबाजार

प्रधानाचार्या

क्र.सं.	नाम	कब से कब तक
1.	श्रीमती कालिन्दी सिंह	जनवरी 1993 से दिसम्बर 2004
2.	श्रीमती शीला मिश्रा	जनवरी 2005 से नवम्बर 2010
3.	सपना कुमारी सिंह	दिसम्बर 2010 से अद्यतन

वर्तमान में विद्यार्थियों की संख्या : 428
शिक्षकों की संख्या : 04
कर्मचारियों की संख्या : 01
संस्था का ई-मेल (e-mail) : sapnadnbchowk@gmail.com
दूरभाष (Telephone) : 9956210302

श्री गोरक्षनाथ संस्कृत छात्रावास, गोरखनाथ, गोरखपुर

स्थापना का वर्ष - सन् 1951 ई.

गोरक्षपीठाधीश्वर ब्रह्मलीन दिग्विजयनाथ जी महाराज के कर कमलों से श्री गोरखनाथ मन्दिर परिसर में 1951 में श्री गोरक्षनाथ संस्कृत छात्रावास लोकार्पित हुआ, तदोपरान्त तत्कालीन गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने 1980 में छात्रावास को भव्य एवं विस्तार स्वरूप प्रदान किया। वर्तमान गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त योगी आदित्यनाथ जी महाराज के सतत आशीर्वाद से 2018 में छात्रावास नवीन स्वरूप में बहुमंजिला भवन के रुप में स्थापित हो सका है।

श्रीगोरक्षनाथ संस्कृत छात्रावास का भव्य एवं बहुमंजिला भवन

4 दिसम्बर 2018 को संस्थापक सप्ताह समारोह के उद्घाटन कार्यक्रम के अवसर पर पथ संचलन करते श्रीगोरक्षनाथ संस्कृत विद्यालय के विद्यार्थी।

प्रताप आश्रम, गोलघर, गोरखपुर

स्थापना का वर्ष - सन् 1977 ई.

प्रताप आश्रम, गोलघर

अधीक्षक

क्र.सं.	नाम	कब से कब तक
1.	श्री जटाशंकर सिंह	जुलाई 1977 से दिसम्बर 1977 तक
2.	श्री मारकण्डेय सिंह	जनवरी 1978 से फरवरी 2015 तक
3.	श्री राजेन्द्र सिंह	फरवरी 2015 से 31 जनवरी 2017 तक
4.	श्री सत्यप्रकाश सिंह	फरवरी 2017 से 30 जून 2017 तक
5.	श्री धर्मेन्द्र चन्द	अगस्त 2017 से नवम्बर 2017 तक
6.	श्री रघुप्रताप सिंह	नवम्बर 2017 से जनवरी 2018 तक
7.	डॉ. बसन्त नारायण सिंह	08 अक्टूबर 2018 से अद्यतन

वर्तमान में छात्रावासियों के रहने की संख्या : 241

कर्मचारियों की संख्या : 08 (तृतीय श्रेणी-2, चतुर्थ श्रेणी-6)

संस्था का दूरभाष (Telephone) : 8969168505

महाराणा प्रताप मीराबाई महिला छात्रावास, सिविल लाइन्स, गोरखपुर

स्थापना का वर्ष - सन् 1995 ई.

महाराणा प्रताप मीराबाई महिला छात्रावास, सिविल लाइन्स

अधीक्षिका

क्र.सं.	नाम	कब से कब तक
1.	डॉ. कु. प्रतिमा सिंह	01.11.1995 से 15.02.1996 तक
2.	कु. लक्ष्मी सिंह	22.08.1996 से 30.09.1996 तक
3.	डॉ. रंजना जायसवाल	07.01.1996 से 31.12.1996 तक
4.	श्रीमती कमला वर्मा	01.01.1997 से 25.07.2002 तक
5.	श्रीमती दुलारमती सिंह	27.02.2002 से अद्यतन

वर्तमान में छात्रावासियों की संख्या : 160

कर्मचारियों की संख्या : ... (तृतीय श्रेणी-..., चतुर्थ श्रेणी-..)

संस्था का दूरभाष (Telephone) :

दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महिला छात्रावास, सिविल लाइन्स, गोरखपुर

स्थापना का वर्ष – सन् 2011 ई.

दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महिला छात्रावास, सिविल लाइन्स

प्रभारी

क्र.सं.	नाम	कब से कब तक
1.	डॉ. कैलाश सिंह	2011 से 2012 तक
2.	डॉ. जयराम यादव	2012 से 2013 तक
3.	श्रीमती आरती पाण्डेय	2013 से 2014 तक
4.	डॉ. गीता सिंह	2014 से 2015 तक
5.	डॉ. सुनीता श्रीवास्तव	2015 से अद्यतन

वर्तमान में छात्रावासियों की संख्या : 121

कर्मचारियों की संख्या : 04 (तृतीय श्रेणी-1, चतुर्थ श्रेणी-3)

संस्था का दूरभाष (Telephone) :

योगिराज बाबा गम्भीरनाथ सेवाश्रम : छात्रावास

महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़ परिसर से सटे बुढ़िया माई मन्दिर परिसर में योगिराज बाबा गम्भीरनाथ सेवाश्रम का लोकार्पण 2016 ई. में उत्तर प्रदेश के तत्कालीन राज्यपाल श्री राम नाईक द्वारा गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त योगी आदित्यनाथ जी महाराज के सानिध्य में हुआ। सेवाश्रम में 28 कक्षों में 80 विद्यार्थियों की रहने की व्यवस्था है।

छात्रावास का लोकार्पण के अवसर पर

योगिराज बाबा गम्भीरनाथ सेवाश्रम

महाराणा प्रताप पालीटेक्निक, गोरखपुर

स्थापना का वर्ष - सन् 1956 ई.

स्थापना के समय खोले गये विषय/संकाय

संस्था में प्रथम बार सिविल इंजीनियरिंग में प्रवेश लिया गया। उस समय इस पाठ्यक्रम को ओवरसीयर पाठ्यक्रम के नाम से जाना जाता था। इस पाठ्यक्रम की अवधि दो वर्षों की थी। संस्था सम्बन्धी महत्त्वपूर्ण विवरण इस प्रकार है-

युगपुरुष ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज (तत्कालीन गोरक्षपीठाधीश्वर गोरखनाथ मन्दिर, गोरखपुर) द्वारा सन् 1932 ई. में स्थापित महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के अन्तर्गत यह संस्था वर्ष 1956 में महाराणा प्रताप इंजीनियरिंग इन्स्टीट्यूट के नाम से स्थापित हुई थी। संस्था में सर्वप्रथम ओवरसीयर कोर्स प्रारम्भ हुआ था।

महाराणा प्रताप पालीटेक्निक

संस्था की वर्षवार प्रगति

- सन् 1962 में इस संस्था का नाम परिवर्तित कर महाराणा प्रताप पालीटेक्निक, गोरखपुर कर दिया गया तथा राज्य सरकार द्वारा इसे अनुदानित संस्था के रूप में मान्यता प्रदान की गयी एवं तीन वर्षीय सिविल इंजीनियरिंग डिप्लोमा पाठ्यक्रम प्रारम्भ किया गया।
- सत्र 1963-64 में तीन वर्षीय इलैक्ट्रिकल इंजीनियरिंग एवं मैकेनिकल इंजीनियरिंग डिप्लोमा पाठ्यक्रम प्रारम्भ किया गया।

- शासन द्वारा सत्र 1978-79 में एक अतिरिक्त दो वर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम 'कामर्शियल प्रैक्टिस' प्रारम्भ किया गया जिसकी न्यूनतम शैक्षिक अर्हता इण्टरमीडिएट रखी गयी।
- वर्ष 1981-82 में संस्था की रजत जयंती मनायी गयी।
- वर्ष 1990 में विश्व बैंक परियोजना द्वारा संस्था के जीर्णोद्धार हेतु रु. 2.5 करोड़ की धनराशि आवंटित की गयी जिससे 120 शैय्याओं वाला छात्रावास, प्रयोगशाला तथा दो मंजिला भवन एवं 12 आवासीय भवन तथा ओवर हेड टैंक का निर्माण कार्य तथा कार्यशाला एवं प्रयोगशाला के आधुनिकीकरण का कार्य भी सम्पन्न हुआ।
- सत्र 1995-96 में 'मैकेनिकल कैड' नामक पाठ्यक्रम प्रारम्भ हुआ तथा शासन की नीति के अनुसार सत्र 2000-2001 में कामर्शियल प्रैक्टिस को बन्द कर उसके स्थान पर एक वर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम 'पोस्ट ग्रेजुएट मार्केटिंग एण्ड सेल्स मैनेजमेण्ट' प्रारम्भ किया गया।
- स्ववित्तपोषित योजना के अन्तर्गत वर्ष 2009 में तीन नये पाठ्यक्रम इलेक्ट्रॉनिक्स इंजी., कम्प्यूटर साइंस एण्ड इंजी. तथा आर्किटेक्चरल असिस्टेण्टशिप नामक त्रिवर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम प्रारम्भ किया गया तथा पूर्व से संचालित पाठ्यक्रमों सिविल इंजी., इलैक्ट्रिकल इंजी., मैकेनिकल प्रोडक्शन, मैकेनिकल कैड एवं पी.जी.डी.एम.एस.एम. पाठ्यक्रमों में स्ववित्तपोषित योजना के अन्तर्गत द्वितीय पाली में भी कक्षाएँ चलाने की मान्यता प्राप्त हुई तथा सभी पाठ्यक्रमों की प्रवेश क्षमता 60 कर दी गयी।

वर्ष 2017

- इस वर्ष संस्था में कुल 1799 छात्र-छात्राएँ प्रवेशित हैं।
- सत्र 2016-17 में संस्था का समेकित परीक्षा परिणाम शत-प्रतिशत रहा है। कुल 20 छात्र-छात्राएँ प्रथम श्रेणी ऑनर्स के साथ परीक्षा उत्तीर्ण हुई।
- सत्र 2017-18 में संस्था का समेकित परीक्षा परिणाम शत-प्रतिशत रहा है। कुल 15 छात्र-छात्राएँ प्रथम श्रेणी ऑनर्स के साथ परीक्षा उत्तीर्ण हुई।
- लाइब्रेरी में लगभग 17000 पुस्तकें उपलब्ध हैं।
- संस्था के 14 अध्यापकों ने अपने अध्यापित विषय पर पुस्तकें लिखी हैं।
- छात्र-छात्राओं के खेलों हेतु क्रीड़ांगन उपलब्ध है। दो बैडमिण्टन कोर्ट एवं बास्केटबाल कोर्ट, दो वॉलीबाल कोर्ट की सुविधा उपलब्ध है।
- तृतीय वर्ष के छात्र-छात्राओं द्वारा प्रोजेक्ट एवं मॉडल का निर्माण प्रत्येक वर्ष किया जाता है जिसकी प्रदर्शनी भी लगायी जाती है।

- संस्था में NCC इकाई संचालित है जिसमें छात्र तथा छात्राएँ कैडेट के प्रवेश हेतु कुल 100 सीट उपलब्ध है।
- निकट भविष्य में संस्था को सेण्टर ऑफ एक्सीलेन्स के रूप में विकसित करने तथा संस्था का विस्तार कर संस्था में डिग्री पाठ्यक्रम की कक्षाएँ भी संचालित हो सकें इस हेतु प्रयास शुरू कर दिया गया है।

प्रधानाचार्य

क्र.सं.	नाम	कब से कब तक
1.	श्री ब्रजमोहन सिंह	26.09.1969 से 30.06.1993 तक
1.	श्री रामाधार सिंह	19.02.1957 से 07.10.1958 तक
2.	श्री विशन स्वरूप (कार्यवाहक)	08.10.1958 से 19.06.1959 तक
3.	श्री मोहन लाल	20.06.1959 से 30.06.1985 तक
4.	श्री पी.सी. अग्रवाल (कार्यवाहक)	01.07.1985 से 20.05.1986 तक
5.	श्री जी.डी. श्रीवास्तव	21.05.1986 से 31.10.2000 तक
6.	श्री निसार अहमद (कार्यवाहक)	01.11.2000 से 31.11.2001 तक
7.	श्री शिवशंकर लाल गुप्ता (कार्यवाहक)	01.12.2001 से 11.10.2002 तक
8.	श्री योगेन्द्र प्रसाद सिंह	12.10.2002 से 20.12.2015 तक
9.	मेजर पाटेश्वरी सिंह (कार्यवाहक)	21.12. 2015 से अद्यतन

वर्तमान में विद्यार्थियों की संख्या : 1799

शिक्षकों की संख्या : 76

शिक्षणेतर कर्मचारियों की संख्या : 31

संस्था का ई-मेल (e-mail) : mppolygorakhpur@rediffmail.com

: mppolygorakhpur@gmail.com

वेबसाइट (website) : mppolytechnic.ac.in

दूरभाष (Telephone) : 0551-2255551

विशेष उपलब्धियाँ

संस्था में प्रदेश में स्थान पाने वाले छात्र निम्नलिखित हैं-

परीक्षा वर्ष	छात्र	पिता का नाम	पाठ्यक्रम	मेरिट में स्थान
2006-07	मो. तौहिद	एस.एम. लतीफ	यांत्रिक कैड	दसवाँ (यांत्रिक ग्रुप)
2007-08	अभिषेक पाल	जितेन्द्र पाल	सिविल इंजी.	प्रथम (सिविल ग्रुप)
2008-09	अवधेश कुमार यादव	सीताराम यादव	विद्युतिक अभि.	तृतीय (विद्युतिक ग्रुप)
2016-17	अमन तिवारी	श्रद्धानन्द तिवारी	कम्प्यूटर साइंस	तृतीय (कम्प्यूटर साइंस ग्रुप)
2016-17	अभय मिश्रा	अश्वनी कुमार मिश्रा	विद्युतिक अभि.	तृतीय (विद्युतिक ग्रुप)
2017-18	कु. सोनाली	शेखर चन्द्र यादव	कम्प्यूटर साइंस	द्वितीय (कम्प्यूटर साइंस ग्रुप)
2017-18	सुष्मिता पाण्डेय	राधारंजन पाण्डेय	एम.एस.एम.	द्वितीय (मैनेजमेण्ट ग्रुप)

पुरस्कार/सम्मान

मेजर पाटेश्वरी सिंह को 1998 ई. में कमीशन प्रशिक्षण के दौरान अखिल भारतीय स्तर पर सेना प्रशिक्षण के सभी अंगों में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर एन.सी.सी. द्वारा 'आल राउण्ड बेस्ट ऑफिसर कैडेट घोषित करते हुए अल्फा ग्रेडिंग एवं डी.जी. बेटन ऑफ ऑनर से सम्मानित किया गया'।

4 दिसम्बर 2018 को संस्थापक सप्ताह समारोह के उद्घाटन कार्यक्रम के अवसर पर भव्य शोभायात्रा में मुख्य अतिथि को सलामी देते मुख्य ध्वजवाहक एवं अन्य।

महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केन्द्र, चौकमाफी (पीपीगंज), जंगल कौड़िया, गोरखपुर

स्थापना का वर्ष - सन् 2016 ई.

23 अक्टूबर 2016 को महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केन्द्र, चौकमाफी, पीपीगंज, गोरखपुर का शिलान्यास माननीय राधा मोहन सिंह जी, केन्द्रीय मंत्री, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय भारत सरकार के द्वारा किया गया।

पादप रोग विज्ञान, पशुपालन, शस्य विज्ञान, उद्यान विज्ञान, मृदा विज्ञान, कृषि प्रसार, गृहविज्ञान विषय के वैज्ञानिकों की नियुक्ति हो चुकी है। प्रशासनिक भवन का लोकार्पण 2 मार्च 2019 को हुआ।

प्रशासनिक भवन, महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केन्द्र

संस्थाध्यक्ष : डॉ. राजेन्द्र प्रताप सिंह, सीनीयर साइंटिस्ट

साइंटिस्ट : डॉ. अजीत कुमार श्रीवास्तव, स्पेशलिस्ट, हॉर्टीकल्चर
डॉ. राहुल कुमार सिंह, स्पेशलिस्ट, एग्रिल. एक्सटेंशन
डॉ. विवेक प्रताप सिंह, स्पेशलिस्ट, एनिमल साइंस
श्री अविनाश कुमार सिंह, स्पेशलिस्ट, एग्रोनॉमी
श्री संदीप प्रकाश उपाध्याय, स्पेशलिस्ट, स्वायल साइंस

संस्था का ई-मेल (e-mail) : gorakhpurkvk2@gmail.com
वेबसाइट (website) : www.mgkvk.in
दूरभाष (Telephone) : 0551-2255453, 2255454
फैक्स (Fax) : 0551-2255455

प्रयत्न

- 28 अगस्त 2018 को कृषकों के लिए प्रधानमंत्री के महत्त्वाकांक्षी कार्यक्रम 'संकल्प से सिद्धि' का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया।
- 'गुड़ प्रसंस्करण इकाई' का शिलान्यास वर्ष 2016-17 में हुआ।
- भारतीय गेहूँ एवं जौ अनुसन्धान संस्थान, करनाल, हरियाणा द्वारा गेहूँ की नयी विकसित प्रजाति **DBW-187** का विमोचन महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केन्द्र चौकमाफी के परिसर से किया गया।
- राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के अन्तर्गत 6.49 करोड़ (649 लाख) रुपये का महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केन्द्र के स्ट्रेंथनिंग एवं विभिन्न प्रदर्शन इकाई स्थापित करने हेतु प्राप्त हुआ है।
- कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा धान का **SAMBHA SUB-1, CO-51, HUR-105** एवं **NDR-2065** एवं गेहूँ का **HD-2967, DBW- 107** का बीज उत्पादन किया गया।
- भारत के माननीय प्रधानमंत्री जी की महत्त्वाकांक्षी योजना कृषकों की आय दुगुना करने के क्रम में मृदा स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए किसानों के खेत की मिट्टी जाँच कर मृदा स्वास्थ्य कार्ड वितरित किया जा रहा है।
- कृषकों को विभिन्न विषयों पर प्रशिक्षण उनकी रुचि के अनुरूप केन्द्र के विषय-वस्तु विशेषज्ञों द्वारा समय-समय पर दिया गया।
- सोशल मीडिया जैसे- वाट्स एप्प समूह 'कृषक मोबाइल सन्देश', फेसबुक तथा यू-ट्यूब द्वारा कृषि एवं पशुपालन तथा मत्स्यपालन से सम्बन्धित नई तकनीकियों के प्रचार-प्रसार हेतु कार्य किया जा रहा है।
- कृषकों की आय दुगुना करने हेतु नई प्रजातियों/तकनीकियों का प्रदर्शन केन्द्र के वैज्ञानिकों की देख-रेख में किसानों के प्रक्षेत्र पर कराया गया।
- महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केन्द्र तथा रिलायंस फाउण्डेशन के संयुक्त प्रयास से कृषकों को कृषि एवं पशुपालन से सम्बन्धित सम-सामयिक जानकारियाँ श्रव्य-सूचना के माध्यम से मोबाइल फोन पर भेजे जा रहे हैं।
- कृषकों को कृषि विभाग द्वारा कृषकों के लिए कराये जाने वाले प्रशिक्षणों में केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा प्रशिक्षण दिया गया।
- राज्य सरकार के कृषि प्रसार कर्मियों को भी केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा प्रशिक्षण दिया गया।
- बाबा बिल्लौरनाथ किसान समिति, चौकमाफी का गठन केन्द्र द्वारा कराया गया जिसमें समिति के सदस्यों को मशरूम उत्पादन, खाद्य प्रसंस्करण, आई.पी.एम. जैसी तकनीकियों पर आय वर्धन हेतु प्रशिक्षित किया गया एवं मासिक बैठक कर अन्य कृषि एवं पशुपालन से सम्बन्धित समस्याओं का समाधान कर आय वर्धन हेतु कार्य किया जा रहा है।
- केन्द्र द्वारा आय वर्धन के प्रयास के क्रम में व्यावसायिक बकरीपालन पर जानकारी एवं मार्गदर्शन पाकर राजू कुमार गुप्ता ग्राम पचगांवां, पीपीगंज द्वारा बकरीपालन का कार्य शुरू किया गया।
- Global Extension Excellence Award in 2018 by GEWSS(UP) in international conference at Kuala Lampur, Malasiya.
- Technical Advisor for "Krishak Chetna-Ek Sampoorna Krishi Patrika" Jabalpur, Madhyapradesh.

गुरु श्री गोरक्षनाथ चिकित्सालय, गोरखनाथ, गोरखपुर

लोक कल्याणकारी रचनात्मक कार्यों के लिए सदा समर्पित शिवावतार महायोगी गुरु गोरक्षनाथ जी की पवित्र भूमि श्री गोरक्षनाथ मन्दिर के उत्तरी परिसर में **परमपूज्य गोरक्षपीठाधीश्वर ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज** के आशीर्वाद एवं प्रेरणा से वर्ष 2003 ई. में **गुरु श्री गोरक्षनाथ चिकित्सालय** की स्थापना हुई।

यद्यपि चिकित्सालय 07 मार्च सन् 2003 ई. से प्रारम्भ हो गया था परन्तु इसका औपचारिक उद्घाटन दिनांक 16 जुलाई 2003 को भारत के तत्कालीन **उप प्रधानमंत्री एवं गृहमंत्री श्री लालकृष्ण आडवाणी** तथा अन्य राष्ट्रीय तथा प्रदेश स्तर के विभूतियों एवं धर्माचार्यों की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ

चिकित्सालय का प्रारम्भ 50 बिस्तर से किया गया था। आज गुरु श्री गोरक्षनाथ चिकित्सालय अत्याधुनिक सुविधाओं से युक्त 350 बिस्तर का चिकित्सालय है। चिकित्सालय स्थापना का उद्देश्य जनता को व्यवसायिकता के बजाय सेवाभाव से स्वास्थ्य सम्बन्धी सभी आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध कराना है, विशेषतया धनाभाव के कारण जो लोग खर्चीले एवं महंगे दर पर विश्वसनीय उपलब्ध चिकित्सकी सलाह, जांच एवं उपचार का भार नहीं उठा सकते, उन लोगों को यथासम्भव सस्ती, सही एवं विश्वसनीय चिकित्सकीय सुविधाएं गुणवत्ता के साथ उपलब्ध कराना मुख्य लक्ष्य है। इसके लिए गुरु श्री गोरक्षनाथ चिकित्सालय में जहां एक ओर विभिन्न रोगों से सम्बन्धित विशेषज्ञ चिकित्सकों की सेवायें न्यूनतम दर पर व्यवस्था की गयी है वहीं दूसरी ओर चिकित्सालय को यथासम्भव सभी

गुरु श्री गोरक्षनाथ चिकित्सालय, गोरखनाथ, गोरखपुर

आवश्यक आधुनिक उपकरण एवं सुविधाओं से सुसज्जित भी किया गया है।

स्थापना के समय सामान्य उपकरणों के साथ 50 रोगी शैय्या की चिकित्सालय आरम्भ हुआ। जो आगे प्रगति के पद पर अग्रसर होकर 350 शैय्या का मल्टी-स्पेसियलिटी सुपर स्पेसिलाइज हास्पिटल का रूप धारण किया।

हमारा दृष्टिकोण

प्राथमिक, माध्यमिक और टर्शियरी सेवाओं में बेमिसाल, सर्वोच्च गुणवत्ता के निवारक, समर्थक, उपचारात्मक और पुनर्वासिक उपचार करने हेतु गोरखपुर के अस्पतालों के बीच में अद्वितीय पहचान स्थापित करना।

हमारा उद्देश्य

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के अभिलाषित सपनों को पूरा करने के लिए गुरु श्री गोरक्षनाथ चिकित्सालय द्वारा लोगों के दुखों को कम करने एवं सौहार्द के साथ नवाचारी रोगी केन्द्रित देखभाल के असाधारण मानदंडो को स्थापित कर समाज में स्वास्थ्य लाभ नियोजित करना।

हमारे मार्गदर्शक मान

- उत्कृष्टता प्रदान करने के लिए प्रयास
- अखंडता, सम्मान और करुणा के साथ व्यवहार करना
- प्रभावी संपर्कता एवं सामूहिक कार्य का उपयोग करना
- हमारे ब्रह्मांड के प्रति प्रतिबद्धता का प्रदर्शन, पर्यावरण, समुदाय, संगठन और एक दूसरे के लिए

उपलब्ध चिकित्सकीय सुविधाएं

- **मेडिसीन विभाग** - चिकित्सकीय परामर्श, ई.सी.जी., इकोकार्डियोग्राफी, गहन चिकित्सा, सभी प्रकार के रोगियों के उपचार की सुविधा।
- **सर्जरी विभाग** - हर प्रकार के छोटे बड़े आपरेशन जैसे पित्त की थैली की पथरी, गुर्दे की पथरी, सभी प्रकार के ट्यूमर, प्रोस्टेड ग्लैण्ड, अपेन्डिक्स एवं बवासीर तथा बच्चेदानी का ट्यूमर, NDVH, सर्जिकल आई.सी.यू. की सुविधा।
- **अस्थिरोग विभाग** - चिकित्सकीय परामर्श, प्लास्टर, टूटी हड्डी का आपरेशन से इलाज, नेल प्लेट, प्रोस्थोसिस एजिजारोव आदि आपरेशन, स्पाइनल सर्जरी, कूल्हे एवं घुटने के जोड़ो का प्रत्यारोपण एवं अन्य आर्थोस्कोपिक सर्जरी।
- **स्त्री एवं प्रसूति रोग विभाग** - डिलेवरी, सिजेरियन, बच्चेदानी (यूटरेस) के ट्यूमर आपरेशन बिना पेट चीरे (NDVH) कार्लस्कोपी की सुविधा।
- **बाल रोग विभाग** - चिकित्सकीय परामर्श, नवजात शिशु की गहन चिकित्सा (NICU) फोटोथिरेपी वार्मर (इन्क्यूवेटर) द्वारा इलाज।
- **नेत्र विभाग** - चिकित्सकीय परामर्श, चश्मे की जांच, मोतियाबिन्द का आपरेशन एवं लेन्स

प्रत्यारोपण, समलबाई का आपरेशन, विटियोरेटिनल, पलक, आर्बिट, भैंगापन, नासून, रेटिना से सम्बन्धित आपरेशन एवं अन्य आपरेशन।

- **गैस्ट्रोइन्ट्रालॉजी** –

  क. विडियो इण्डोस्कोपी-पेट के रोगों का दूरबीन विधि से जांच एवं इलाज।

  ख. लेप्रोस्कोपी-दूरबीन विधि से पित्त की थैली की पथरी, अपेन्डिक्स एवं हार्निया का आपरेशन।

- **यूरोलाजी** –

  क. सिस्टेस्कोपी, T.U.R.P. (प्रोस्टेट ग्रन्थि का आपरेशन), दूरबीन विधि से गुर्दे की नली (यूरेटर) की पथरी का निकालना, पेशाब के रास्ते की सिकुड़न, P.N.C.L. आदि आपरेशन

  ख. हीमोडायलिसिस यूनिट, आर.ओ. प्लांट एवं 12 मशीनों के साथ सुविधा उपलब्ध।

- **न्यूरो सर्जरी** – Head injury, Spinal injury का इलाज, ब्रेन ट्यूमर/स्पाइनल कार्ड का ट्यूमर, सरवाइकल डिस्क Lumbar Disc स्पोन्डिलाइटिस का आपरेशन, बच्चों के मिनिगोशिल, हाइड्रोसिफेलस के आपरेशन के अलावा कृत्रिम श्वांस की मशीन व ICU, आपरेटिंग माइक्रोस्कोप की सुविधा।
- **नाक-कान-गला विभाग** – कान के पर्दे एवं हड्डी के सम्बन्धित सभी आपरेशन जैसे-टिम्पैनोप्लास्टी, मैस्ट्वायड सर्जरी, गले के आपरेशन जैसे टान्सिल, थाइरायड, एडिनायड एवं नाक की हड्डी के आपरेशन जैसे- सेप्टोप्लास्टी, राईनोप्लास्टी एवं आपरेटिंग माइक्रोस्कोप तथा इण्डोस्कोप की सुविधा उपलब्ध।
- **कैंसर सर्जरी** – सभी प्रकार के कैंसर का इलाज, किमोथिरैपी एवं अन्य आपरेशन जैसे मुख एवे जबड़े का कैंसर, गले का कैंसर की गांठे, मुख, जबड़े के कैंसर की प्लास्टिक सर्जरी, जीभ का कैंसर, स्तन का कैंसर, बच्चेदानी के मुख (सरविक्स) का आपरेशन, पेशाब की थैली का कैंसर, गुर्दे का कैंसर, मलाशय का कैंसर।
- **रेडियोलाजी तथा दिल की जांच** – 500 एम.ए., 300 एम.ए. डिजिटल एक्स-रे, डिजिटल अल्ट्रासाउण्ड, कम्प्यूटराइज्ड ई.सी.जी., थ्री-डी कलर डाप्लर with 4 probe इकोकार्डियोग्राफी।
- **पैथालॉजी विभाग** – हर प्रकार के आधुनिक जांच, ब्लड शुगर, यूरिया क्रिएटिनीन, एच.आइ. वी., हिपैटाइटिस, सिफिलिस, इलेक्ट्रोलाइट, सारे हृदय रोग यकृत तथा गुर्दे सम्बन्धित इन्जाइम।
- **डेन्टल विभाग** – डेन्टल एक्स-रे, अल्ट्रासाउण्ड स्केलर, लाइट क्योर, ओरल सर्जरी।
- **टी.बी. रोग विभाग** – पी.एफ.टी. एवं फाइवरऔपटिक ब्रान्कोस्कोपी (Fibreoptic Broncho Scopy)।
- **आई.सी.यू. (इन्टेसिव केयर यूनिट)**
- **सी.सी.यू.**
- **सर्जिकल आई.सी.यू.**

- ब्लड बैंक तथा ब्लड कम्पोनेन्ट यूनिट – उन रोगियों के लिए जो इन्सेफेलाइटिस, डेंगू, बुखार तथा चिकेनगुनिया आदि विषाणुजनित बीमारी आदि से ग्रसित हैं जिसके कारण रक्त में प्लेटलेट कोशिकाओं की मात्रा कम हो जाती है और शरीर के कई स्थानों में रक्तस्राव होने लगता है। ऐसे में प्लेटलेट कोशिकाओं का चढ़ना, जीवन बचाने के लिए आवश्यक ही नहीं अनिवार्य हो जाता है। ऐसे रोगियों के लिए **एफेरेसिस विधि द्वारा अति प्रभावशाली प्लेटलेट्स की सुविधा उपलब्ध है।**

चिकित्सालय में कार्यरत परामर्श चिकित्सक, अधिकारी एवं कर्मचारी की संख्या- 577

संस्था प्रमुख पदाधिकारी

क्र.सं.	नाम	पद	कब से कब तक
1.	डॉ. घनश्याम सिंह	मुख्य चिकित्सा अधिकारी	07 मार्च 2003 से अब तक)
2.	डॉ. एम.एल. श्रीवास्तव	मुख्य चिकित्सा अधीक्षक	जुलाई 2004 से जुलाई 2005
3.	स्व. डॉ. ए.के. सिंह	मुख्य चिकित्सा अधीक्षक	सितम्बर 2005 से जून 2006
4.	डॉ. अवधेश अग्रवाल	उप मुख्य चिकित्सा अधिकारी	जुलाई 2006 से अब तक
5.	डॉ. सी.एम. सिन्हा	मुख्य चिकित्सा अधीक्षक	सितम्बर 2006 से अब तक
6.	ब्रिगे. (डॉ.) के.पी.बी. सिंह	निदेशक	जनवरी 2008 से अद्यतन
7.	डॉ. कामेश्वर सिंह	अपर निदेशक	मार्च 2016 से अब तक)

चिकित्सालय का वार्षिक कार्य भार

	विभाग	2017-18	2018-19
1	आपात ओ.पी.डी.	14657	12647
2	सामान्य ओ.पी.डी.	226368	224942
3	पैथालोजी	60981	60121
4	एक्स-रे	25885	28471
5	अल्ट्रासाउण्ड	13980	15201
6	ई.सी.जी.	10800	10872
7	रक्त कोश	32833	29845
8	फिजियोथिरेपी	4588	4427
9	दन्त विभाग	5475	5651
10	नेत्र विभाग	831	736
11	पी.एफ.टी. (चेस्ट विभाग)	2105	1518

12	सर्जरी विभाग	2959	2460
13	आई.सी.यू.	1013	1053
14	डायलिसिस	15121	14858
15	भर्ती रोगी	16060	16675
16	डिलेवरी - नार्मल	136	103
17	डिलेवरी - सिजेरियन	303	289

स्वास्थ्य शिविर

ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य एवं नेत्र शिविर का आयोजन भी किया जाता है।

प्रगति

- गुरु श्री गोरक्षनाथ स्कूल आफ नर्सिंग की स्थापना वर्ष 2009।
- महन्थ दिग्विजयनाथ आयुर्वेद चिकित्सालय की स्थापना वर्ष 2010।
- गुरु श्री गोरक्षनाथ कॉलेज ऑफ नर्सिंग की स्थापना वर्ष 2016।
- गुरु श्री गोरक्षनाथ इन्स्टीच्यूट आफ मेडिकल साइन्सेज की स्थापना हेतु संसाधनों की व्यवस्था प्रगति की ओर अग्रसित।

विशेष उपलब्धियाँ

- चिकित्सालय हर परिस्थिति में रोगियों को उत्कृष्ट सेवा प्रदान करती चली आ रही है। जिसे समाज समय पर प्रोत्साहित करती है एंव सम्मान भी देती है। इसी कड़ी में नेत्र विभाग के उत्कृष्ट कार्य को विदेशो में प्रोत्साहित किया गया।

क. चिकित्सालय के वरिष्ठ परामर्श चिकित्सक डॉ. शशांक कुमार के कार्यो की सराहना में "द ब्रिटिश एक्सीलेंस एवार्ड 2019" जो इंटोड रिसर्च सेल यू.के. (ब्रिटेन) द्वारा प्रति वर्ष दिया जाता है। डॉ. शशांक कुमार को फ्रांस के राजदूत ने भारतीय नेत्र सर्जन के सम्मान में आयोजित समारोह में वर्ष 2019 की अवार्ड डॉ. शशांक कुमार को प्रदान किया।

ख. डॉ. शशांक कुमार ने माह सितम्बर 2019 में यूरोपियन सोसाइटी ऑफ कैटरेक्ट एवं रिफ्रैक्टिव सर्जरी द्वारा आयोजित कान्फ्रेन्स में भाग लिया- जो पेरिस में सम्पन्न हुई। वह भारत के फ्रांस में राजदूत द्वारा सम्मानित किये गए। डॉ शशांक कुमार माह अक्टूबर 2019 में अमेरिकन एकेडमी ऑफ आफ्थैल्मोलाजिक द्वारा आयोजित कान्फ्रेन्स में सैन्फ्रांसिस्को में शिरकत की।

ग. गुरु श्री गोरक्षनाथ रक्त कोष स्थापना वर्ष से उत्कृष्ट कार्य करते हुए श्रेष्ठता की पथ पर अग्रसित है। प्रदेश में अपना स्थान, श्रेष्ठतम् 03 रक्त कोष में अंकित की है। जिसकी प्रदेश में ही नहीं परन्तु राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित कान्फ्रेन्स में प्रशंसा होती रहती है।

- टेक्नोलॉजी एवं उच्च गुणवत्ता को बनाये रखने हेतु सीमित साधनों के साथ प्रदेश के तीन सर्वश्रेष्ठ ब्लड बैंक में अपनी उपस्थिति अंकित कर रहा है। यहां कि कार्यप्रणाली एवं गुणवत्ता को देखते हुए हमारी विनियामक संस्था नाको के उच्च अधिकारियों के द्वारा निरीक्षण के पश्चात ब्लड बैंक प्रशंसा का पात्र बना। उक्त अधिकारियों ने इसे एक मॉडल ब्लड बैंक एवं उच्च कोटि का आदर्श ब्लड बैंक घोषित किया तथा यह संदेश अन्य ब्लड बैंकों को देने की बात भी कही कि सभी ब्लड बैंक को हमारे ब्लड बैंक के अनुरूप ही कार्य करना चाहिए। भविष्य मे कोई भी आवेदन यदि ब्लड बैंक खोलने के लिए आता है अथवा नवीनीकरण हेतु आए आवेदकों को यह सुझाव दिया जायेगा कि गुरु श्री गोरक्षनाथ ब्लड बैंक की कार्यप्रणाली एवं गुणवत्ता तथा प्रबंधन को पहले एक बार अवलोकित कर लें तो श्रेयस्कर होगा।
- चिकित्सालय स्थापना वर्ष के साथ ही साथ प्रगति के पथ पर अग्रसर होती गयी। गुरु श्री गोरक्षनाथ चिकित्सालय प्रदेश के स्वास्थ्य सेवा में एक विशिष्ट पहचान स्थापित कर ली है। गुरु श्री गोरक्षनाथ रक्त कोष प्रदेश में विशिष्ट स्थान, अपनी उत्कृष्ट सेवाओं के द्वारा अर्जित की है। स्थापना वर्ष से ही गुरु श्री गोरक्षनाथ चिकित्सालय समाज के प्रत्येक वर्ग को सटीक, समुचित एवं सस्ती चिकित्सा सुविधा प्रदान कर रही है। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि भविष्य में भी इसी प्रकार समाज के प्रति समर्पित रहेगी।

महन्त दिग्विजयनाथ आयुर्वेदिक चिकित्सालय

स्थापना वर्ष	-	1973 ई.
चिकित्सालय का उच्चीकरण	-	2010 ई.
वर्तमान अधीक्षक	-	डॉ. डी.पी. सिंह

महन्त दिग्विजयनाथ आयुर्वेदिक चिकित्सालय

राष्ट्रसंत महन्त अवेद्यनाथ प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र

स्वास्थ्य सेवा के अपने अनवरत अभियान एवं पवित्र अनुष्ठान के अनुक्रम में गुरुश्री गोरखनाथ मन्दिर द्वारा स्थापित गुरु गोरखनाथ चिकित्सालय ने अपने संस्थापक परम पूज्य गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त अवेद्यनाथ की पावन स्मृति में गोरखपुर और महाराजगंज जनपद के ग्रामीण और स्वास्थ्य सुविधाओं से वंचित क्षेत्र के आमजन के लिए 2015 में राष्ट्रसंत महन्त अवेद्यनाथ प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र की स्थापना किया। यह केन्द्र गोरखपुर जनपद में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद द्वारा संचालित संस्था महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, दिग्विजयनाथ पी.जी. कालेज, गोरखपुर, दिग्विजयनाथ एल.टी. (बी.एड्. पाठ्यक्रम) प्रशिक्षण महाविद्यालय, गोरखपुर, दिग्विजयनाथ इण्टर कालेज, चौकमाफी, गुरु गोरखनाथ विद्यापीठ पित्तेश्वरनाथ भरोहिया पीपीगंज तथा महाराजगंज जनपद में चौकबाजार स्थित दिग्विजयनाथ इण्टर कालेज परिसर में संचालित है। स्वास्थ्य केन्द्र के माध्यम से गोरक्षनाथ चिकित्सालय की चिकित्सा टीम जिसमें डॉक्टर, कम्पाउण्डर, आवश्यक दाईयाँ सहित एम्बुलेंस की सुविधा उपलब्ध रहती है, मरीजों के रोग का इलाज किया जाता है। नि:शुल्क स्वास्थ्य परीक्षण के साथ नि:शुल्क दवाईयाँ भी वितरित की जाती हैं। गम्भीर रोगों से ग्रस्त मरीजों को गुरु गोरखनाथ चिकित्सालय में विशेषज्ञ चिकित्सकीय परामर्श की सुदृढ़ व्यवस्था है।

राष्ट्रसंत महन्त अवेद्यनाथ प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, जंगल धूसड़ में आस-पास के ग्रामीण का स्वास्थ्य परीक्षण करती गुरु श्रीगोरक्षनाथ चिकित्सालय के चिकित्सक टीम।

राष्ट्रसंत महन्त अवेद्यनाथ प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, जंगल धूसड़ के तत्वावधान में ग्राम मंझरिया में स्वास्थ्य शिविर के अन्तर्गत ग्रामीणों का स्वास्थ्य परीक्षण करते गुरु श्रीगोरक्षनाथ चिकित्सालय के चिकित्सक।

संस्थापक सप्ताह समारोह-2018 के मुख्य महोत्सव के मुख्य अतिथि भारत के
महामहिम राष्ट्रपति, उ.प्र. के मा. राज्यपाल एवं मा. मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी महाराज

संस्थापक सप्ताह समारोह-2018 के उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह,
मा. मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी महाराज एवं अतिथिगण तथा शोभायात्रा में सम्मिलित विद्यार्थी

साधना-पथ

10 दिसम्बर 2019 ई.
मार्गशीर्ष शुक्ल त्रयोदशी, संवत् 2076

© महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद्

मुख्य संरक्षक
गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त योगी आदित्यनाथ जी महाराज
मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश
मंत्री, महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद्

संरक्षक
प्रो. उदय प्रताप सिंह
पूर्व कुलपति एवं अध्यक्ष, महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद्

सम्पादक
अविनाश प्रताप सिंह

सम्पादक मण्डल
डॉ. राजशरण शाही
डॉ. नीरज कुमार सिंह
श्री मनोज प्रताप चन्द
डॉ. प्रसून कुमार मल्ल
डॉ. बसन्त नारायण सिंह

प्रकाशक
महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद्
प्रताप आश्रम, गोलघर, गोरखपुर-273 001

मुद्रक
मोती पेपर कन्वर्टर्स
बेतियाहाता, गोरखपुर

'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी'

'जो दृढ़ राखे धर्म को तिहि राखे करतार'

प्रकाशक

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद्

प्रताप आश्रम, गोलघर, गोरखपुर-273 001

ई-मेल : mpspgkp@gmail.com • वेबसाइट : www.mpspgkp.in